Ze.0[illegible]
Σ[illegible]

Rs 8 - P 00

भूतनाथ

वाबू देवकीनन्दन खत्री

॥ श्रीः ॥

भूतनाथ

उपन्यास

पहिला खंड

(भाग १ से ३ तक)

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

—०—

Rs 6 - P 50

Rs 8 - P 00

प्रकाशक—
श्री कमला पति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी ।

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन)

Rs 8 - P 00

मुद्रक—
लहरी प्रेस,
वाराणसी ।

॥ श्रोः ॥

भूतनाथ

पहिला भाग

पहिला बयान

मेरे पिता ने तो मेरा नाम गदाधरसिंह रक्खा था और बहुत दिनों तक मैं इसी नाम से प्रसिद्ध भी था परन्तु समय पड़ने पर मैंने अपना नाम भूतनाथ रख लिया था और इस समय यही नाम बहुत प्रसिद्ध हो रहा है। आज मैं श्रीमान् महाराज सुरेन्द्रसिंहजी की आज्ञानुसार अपनी जीवनी लिखने बैठा हूं, परन्तु मैं इस जीवनी को वास्तव में जीवनी के ढंग और नियम पर न लिख कर उपन्यास के ढंग पर लिखूंगा, क्योंकि यद्यपि लोगों का कथन यही है कि तेरी जीवनी से लोगों को नसीहत होगी परन्तु ऐबों और भयानक घटनाओं से भरी हुई मेरी नीरस जीवनी कदाचित लोगों को रुचिकर न हो, इस खयाल से जीवनी का रास्ता छोड़ इस लेख को उपन्यास के रूप में लाकर रस पैदा करना ही मुझे आवश्यक जान पड़ा। प्रेमी पाठक महाशय यही समझें कि किसी दूसरे ही आदमी ने भूतनाथ का हाल लिखा है, स्वयं भूतनाथ ने नहीं, अथवा इसका लेखक कोई और ही है।

जेठ का महीना और शुक्ल-पक्ष की चतुर्दशी का दिन है। यद्यपि रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है और आंखों में ठण्ढक पहुंचाने वाले चन्द्रदेव भी दर्शन दे रहे हैं परन्तु दिन भर की धूप और लू की बदौलत गरम भई हुई जमीन मकानों की छतें और दीवारें अभी तक अच्छी तरह ठण्ढी नहीं हुईं, अब भी कभी कभी सहारा दे देने वाले हवा के झपेटे में गर्मी मालूम पड़ती है और बदन से पसीना निकल रहा है। बाग में सैर करने वाले शौकीनों को भी पंखे की जरूरत है,

और जंगल में भटकने वाले मुसाफिरों को भी पेड़ों की आड़ बुरी मालूम पड़ती है।

ऐसे समय में मिर्जापुर से बाईस कोस दक्खिन की तरफ हट कर छोटी सी पहाड़ी के ऊपर जिस पर बड़े बड़े और घने पेड़ों की कमी तो नहीं है मगर इस समय पत्तों की कमी के सबब से जिसकी खूबसूरती नष्ट हो गई है, एक पत्थर की चट्टान पर हम ढाल तलवार तथा तीर कमान लगाए हुए दो आदमियों को बैठे देखते हैं जिनमें से एक औरत और दूसरा मर्द है। औरत की उम्र चौदह या पन्द्रह वर्ष की होगी मगर मर्द की उम्र बीस वर्ष से कम मालूम नहीं होती। यद्यपि इन दोनों की पोशाक मामूली सादी और बिल्कुल ही साधारण ढंग की है मगर सूरत शक्ल से यही जान पड़ता है कि ये दोनों साधारण व्यक्ति नहीं हैं बल्कि किसी अमीर बहादुर और क्षत्री खानदान के होनहार हैं। जिस तरह मर्द चपकन पायजामा कमरबन्द और मुड़ासा पहिरे हुए है उसी तरह औरत ने भी चपकन पायजामा कमरबन्द और मुड़ासे से अपनी सूरत मर्दाने ढंग की बना रक्खी है। यकायकी सरसरी निगाह से देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि यह औरत है, मगर हम खूब जानते हैं कि यह कमसिन औरत नौजवान लड़की है जिसकी खूबसूरती मर्दानी पौशाक पहिरने पर भी यकताई का दावा करती है, मगर जिसकी शर्मीली आंखें कहे देती हैं कि इसमें ढिठाई और दबंगता बिल्कुल नहीं है। इस समय ये दोनों परेशान और बदहवास हैं, दिन भर के चले और थके हुए हैं, चेहरे पर गर्द पड़ी है, सुस्त होकर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए हैं, तथा रात्रि का समय भी है, इसलिए यहां पर इन दोनों की खूबसूरती तथा नखशिख का वर्णन करके हम शृंगार रस पैदा करना उचित नहीं समझ कर केवल इतना ही कह देना काफी समझते हैं कि ये दोनों सौ दो सौ खूबसूरतों में खूबसूरत हैं। इन दोनों की अवस्था इनकी बातचीत से जानी जायगी अस्तु आइए और छिप कर सुनिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

औरत०। वास्तव में हम लोग बहुत दूर निकल आए।

मर्द०। अब हमें किसी का डर भी नहीं है।

औरत०। है तो ऐसा ही परन्तु घोड़ों की तरफ से जरा सा खुटका होता है, क्योंकि हम दोनों के मरे हुए घोड़े अगर कोई जान पहिचान का आदमी देख लेगा तो जरूर इसी प्रान्त में हम लोगों को खोजेगा।

मर्द०। फिर भी कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि उन घोड़ों को भी हम लोग कम से कम दो कोस पीछे छोड़ आए हैं।

औरत०। बेचारे घोड़े अगर मर न जाते तो हमलोग और भी कुछ दूर आगे निकल गए होते।

मर्द०। यह गर्मी का जमाना, इतने कड़ाके की धूप और इस तेजी के साथ इतना लम्बा सफर करने पर भी घोड़े जिन्दा रह जायं तो बड़े ताज्जुब की बात है !!

औरत०। ठीक है, अच्छा यह बताइए कि अब हम लोगों को क्या करना होगा ?

मर्द०। इसके सिवाय और किसी बात की जरूरत नहीं है कि हम लोग किसी दूसरे राज्य की सरहद में जा पहुंचें। ऐसा हो जाने पर फिर हमें किसी का डर न रहेगा, क्योंकि हम लोग किसी का खून करके नहीं भागे हैं, न किसी की चोरी की है, और न किसी के साथ अन्याय या अधर्म करके भागे हैं, वल्कि एक अन्यायी हाकिम के हाथ से अपना धर्म बचाने के लिए भागे हैं। ऐसी अवस्था में किसी न्यायी राजा के राज्य में पहुंच जाते ही हमारा कल्याण होगा।

औरत०। निःसन्देह ऐसा ही है, फिर आपने क्या विचार किया, किसके राज्य में जाने का इरादा है ?

मर्द०। मुझे तो राजा सुरेन्द्रसिंह का राज्य बहुत ही पसन्द है, वह राजा धर्मात्मा और न्यायी हैं तथा उनका राज्य भी बहुत दूर नहीं है, यहां से केवल तीन ही चार कोस और आगे निकल चलने पर उनकी सरहद में पहुंच जायेंगे।

औरत०। वाह वाह ! तो इससे बढ़ कर और क्या बात हो सकती है ! आप यहां क्यों अटके हुए हैं ? आगे बढ़ कर चलिए, जहां इतनी तकलीफ उठाई तहां थोड़ी और सही।

मर्द०। मैं भी इसी खयाल में हूं मगर अपने नोकरों का इन्तजार कर रहा हूं क्योंकि उन्हें अपने से मिलने के लिए यही ठिकाना बताया हुआ है।

औरत०। जब राजा सुरेन्द्रसिंह की सरहद इतनी नजदीक है और रास्ता आपका देखा हुआ है तो ऐसी अवस्था में यहां ठहर कर नौकरों का इन्तजार करना मेरी राय में तो ठीक नहीं है।

मर्द०। तुम्हारा कहना ठीक है और नौगढ़ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ है परन्तु रात का समय है और इस तरफ का जंगल बहुत ही घना और भयानक है तथा रास्ता भी पथरीला और पेचीदा है, सम्भव है कि रास्ता भूल जाऊं और किसी दूसरी ही तरफ जा निकलूं। यदि मैं अकेला होता तो कोई गम न था मगर तुमको साथ लेकर रात्रि के समय भयानक जानवरों से भरे हुए ऐसे घने

जंगल में घुसना उचित नहीं जान पड़ता। मगर देखो तो सही (गर्दन उठा कर और गौर से नीचे की तरफ देख कर) वे शायद हमारे ही आदमी तो आ रहे हैं ? मगर गिनती में कम मालूम होते हैं।

औरत०। (गौर से देख कर) ये तो केवल तीन ही चार आदमी हैं, शायद कोई और हों।

मर्द०। देखो ये लोग भी इसी पहाड़ी के ऊपर चले आ रहे हैं, अगर ये कोई और हैं तो उनका यहां आकर तुम्हें देख लेना अच्छा न होगा ! इसलिए मैं जरा आगे बढ़ कर देखता हूं कि कौन हैं।

इतना कह कर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ बढ़ा जिधर से वे लोग आ रहे थे, कुछ ही दूर आगे बढ़ने और पहाड़ी से नीचे उतरने पर उन लोगों का सामना हो गया। यद्यपि रात का समय था और केवल चांदनी ही का सहारा था, तथापि सामना होते ही एक ने दूसरे को पहिचान लिया। हमारे नौजवान को मालूम हो गया कि ये हमारे दुश्मन के आदमी हैं और उन लोगों को निश्चय हो गया कि हमारे मालिक को इसी नौजवान के गिरफ्तारी की जरूरत है।

ये लोग जो दूर से गिनती में तीन चार मालूम पड़ते थे वास्तव में छः आदमी थे जो हर तरह से मजबूत और लड़ाई के सामान से दुरुस्त थे। ढाल तलवार के अलावे सभों के कमर में खञ्जर और हाथ में नेजा था। उन सभों में से एक ने आगे बढ़ कर नौजवान से कहा, "बड़ी खुशी की बात है कि आप स्वयम् हम लोगों के सामने चले आए। कल से हम लोग आपकी खोज में परेशान हो रहे हैं बल्कि सच तो यों है कि ईश्वर ही ने हम लोगों को यहां तक पहुंचा दिया और यहां आपका सामना हो गया। क्षमा कीजिएगा, आप हमारे अफसर और हाकिम रह चुके हैं इसलिए हम लोग आपके साथ बेअदबी नहीं करना चाहते मगर क्या करें मालिक के हुक्म से लाचार हैं, जिसका नमक खाते हैं। इस बात को हम लोग खूब जानते हैं कि आप बिल्कुल बेकसूर हैं और आप पर व्यर्थ ही जुल्म किया जा रहा है, परन्तु...

नौजवान०। ठीक है, ठीक है, मेरे प्यारे गुलाबसिंह ! मैं तुम्हें अभी तक वैसा ही समझता हूं और प्यार करता हूं क्योंकि तुम वास्तव में नेक हो और मुझ से मुहब्बत रखते हो। तुम बेशक मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये हो और मालिक के नमक का हक अदा किया चाहते हो, अस्तु मैं खुशी से तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम मुझे गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले चलो, परन्तु क्षत्रियों का धर्म

निबाहने के लिए मैं गिरफ्तार न होकर तुमसे लड़ाई अवश्य करूंगा, इसी तरह तुम्हें भी मेरा मुलाहिजा न करना चाहिए।

गुलाब०। ठीक है, बेशक ऐसा ही चाहिए, परन्तु (कुछ सोच कर) मेरा हाथ आपके ऊपर कदापि न उठेगा! मुझे अपने जालिम मालिक की तरफ से बदनामी उठाना मंजूर है परन्तु आप ऐसे बहादुर और धर्मात्मा के आगे लज्जित होना स्वीकार नहीं है। हां मैं अपने साथियों को ऐसा करने के लिए मजबूर न करूंगा, ये लोग जो चाहें करें।

यह सुनते ही गुलाबसिंह के साथियों में से एक आदमी बोल उठा, "नहीं नहीं, कदापि नहीं, हम लोग आपके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते और आपकी ही आज्ञापालन अपना धर्म समझते हैं। सज्जनों और धर्मात्माओं की आज्ञा पालने का नतीजा कभी बुरा नहीं होता!"

इसके साथ ही गुलाबसिंह के बाकी साथी भी बोल उठे, "बेशक ऐसा ही है, बेशक ऐसा ही है!"

गुलाब०। (प्रसन्नता से) ईश्वर की कृपा है कि मेरे साथी लोग भी मेरी इच्छानुसार चलने के लिए तैयार हैं। (नौजवान से) अब आप ही आज्ञा कीजिए कि हम लोग क्या करें? क्योंकि अब भी मैं अपने को आपका दास ही समझता हूं।

नौजवान०। मेरे प्यारे गुलाबसिंह, शाबाश! इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे ऐसे नेक और बहादुर आदमी का साथ बड़े भाग्य से होता है। मैं तुम्हें अपने आधीन पाकर बहुत ही प्रसन्न था और अब भी यही इच्छा रहती है कि ईश्वर तुम्हें मेरा साथी बनाये, मगर क्या करूं लाचार हूं, क्योंकि आज मेरा वह समय नहीं है। आज मुसीबत के फन्दे में फंस जाने से मैं इस योग्य नहीं रहा कि तुम्हारे ऐसे बहादुरों का साथ ... ... (लम्बी सांस लेकर) अस्तु ईश्वर की मर्जी, जो कुछ वह करता है अच्छा ही करता है, कदाचित् इसमें भी मेरी कुछ भलाई ही होगी। (कुछ सोच कर) मैं तुम्हें क्या बताऊं कि क्या करो? तुम्हारे मालिक ने बेशक धोखा खाया कि मेरी गिरफ्तारी के लिए तुम्हें भेजा, इतने दिनों तक साथ रहने पर भी उसने तुम्हें और मुझे नहीं पहिचाना। मुझे इस समय कुछ भी नहीं सूझता कि तुम्हें क्या नसीहत करूं और किस तरह उस दुष्ट का नमक खाने से तुम्हें रोकूं।

गुलाब०। (कुछ सोच कर) खैर कोई चिन्ता नहीं, जो होगा देखा जायगा। इस समय मैं आपका साथ कदापि न छोड़ूंगा और इस मुसीबत में आपको अकेले

भी न रहने दूंगा। जो कुछ आप पर बीतेगी उसे मैं भी सहूंगा। (अपने साथियों से) भाइयो! अब तुम लोग जहां चाहे जाओ और जो मुनासिब समझो करो, मैं तो अब इनके दुःख सुख का साथी बनता हूं। यद्यपि ये (नौजवान) उम्र में मुझसे बहुत छोटे हैं परन्तु मैं इन्हें अपना पिता समझता हूं और पिता ही की तरह इन्हें मानता हूं, अस्तु जो कुछ पुत्र का धर्म है मैं उसे निबाहूंगा। मैं इनको गिरफ्तार करने की आज्ञा पाकर बहुत प्रसन्न था और यही सोचे हुए था कि इस बहाने से इन्हें ढूंढ़ निकालूंगा और सामना होने पर इनको सेवा स्वीकार करूंगा।

गुलाबसिंह की बातें सुन कर उसके साथियों ने जवाब दिया, "ठीक है, जो कुछ उचित था आपने किया परन्तु आप हम लोगों का तिरस्कार क्यों कर रहे हैं! क्या हम लोग आपकी सेवा करने योग्य नहीं है? या हम लोगों को आप बेईमान समझते हैं?"

गुलाब०। नहीं नहीं ऐसा कदापि नहीं है, मगर बात यह है कि जो कोई मुसीबत में पड़ा हो उसका साथ देने वाले को भी मुसीबत झेलनी पड़ती है, अस्तु मुझ पर तो जो कुछ बीतेगी उसे झेल लूंगा, तुम लोगों को जान बूझ कर क्यों मुसीबत में डालूं! इसी ख्याल से कहता हूं कि जहां जी में आवे जाओ और जो कुछ मुनासिब समझो करो।

गुलाबसिंह के साथी०। नहीं नहीं, ऐसा कदापि न होगा और हम लोग आपका साथ कभी न छोड़ेंगे। आप आज्ञा दें कि अब हम लोग क्या करें।

गुलाब०। (कुछ सोच कर) अच्छा, अगर तुम लोग हमारा साथ देना ही चाहते हो तो जो कुछ हम कहते हैं उसे करो। यहां से इसी समय चले जाओ, (नौजवान की तरफ बता कर) इनके मकान में जिसे राजा साहब ने जब्त कर लिया है रात के समय जिस तरह सम्भव हो घुस कर जहां तक दौलत हाथ लगे और उठा सको निकाल कर ले आओ और पिपलिया घाटी में जहां का पता तुम लोगों को मालूम है हमसे मिलो, अगर वहां हमसे मुलाकात न हो तो टिक कर हमारा इन्तजार करो।

गुलाबसिंह की बात सुन कर उसके साथियों ने "जो आज्ञा" कह कर सलाम किया और वहां से चले गए। उनके जाने के बाद गुलाबसिंह ने नौजवान से कहा, "इस समय इन लोगों को बिदा कर देना ही मैंने उचित जाना। यद्यपि ये लोग मेरे साथ रहने में प्रसन्नता प्रकट करते हैं परन्तु कुछ टेढ़ा काम लेकर जांच कर लेना जरूरी है।"

नौजवान०। ठीक है, तुम्हारे ऐसे होशियार आदमी के लिए यह कोई नई

बात नहीं है।

गुलाब०। अच्छा अब यह बताइये कि आपको मुझ पर विश्वास है या नहीं? या इस विषय में आपको कुछ जांच करने की आवश्यकता है?

नौजवान०। नहीं नहीं, मुझे कुछ जांच करने की जरूरत नहीं है, मुझे तुम पर पूरा पूरा विश्वास और भरोसा है, मैं तुमसे मिल कर बहुत ही प्रसन्न हुआ। ऐसी अवस्था में यकायक सामना हो जाने पर भी मुझे किसी तरह का खुटका नहीं हुआ था।

गुलाब०। ईश्वर आपका मंगल करे, अब कृपा कर यह बताइये कि आप मुझे अकेले क्यों दिखाई देते हैं और अब आपका इरादा क्या है?

नौजवान०। मैं अकेला नहीं हूं मेरी स्त्री भी मेरे साथ है, हाथ का इशारा करके) इस पहाड़ी के ऊपर उसे अकेला छोड़ आया हूं। हम दोनों आदमी वहां बैठे अपने नौकरों का इन्तजार कर रहे थे कि यकायक तुम लोगों पर निगाह पड़ी, अस्तु उसे उसी जगह छोड़ कर तुम लोगों का पता लगाने के लिए मैं नीचे उतर आया था, अब तुम मेरे साथ वहां चलो और उससे मिलो, वह तुम्हें देख कर बहुत ही प्रसन्न होगी। इस आफत में भी वह तुम्हें बराबर याद करती रही।

गुलाब०। चलिए शीघ्र चलिए।

गुलाबसिंह को साथ लेकर नौजवान उस तरफ रवाना हुआ जहां अपनी स्त्री को अकेला छोड़ आया था।

गुलाबसिंह क्षत्री खानदान का एक बहादुर और ताकतवर आदमी था। वह बहुत ही नेक रहमदिल और धर्म का सच्चा पक्षपाती था, साथ ही साथ वह बदमाशों की चालबाजियों को खूब समझता था और अच्छे लोगों में से बेईमानों और दगाबाजों को छांट निकालने में भी विचित्र कारीगर था। वह उस नौजवान और उसकी स्त्री से सच्ची मुहब्बत और हमदर्दी रखता था, जिसका बहुत बड़ा सबब यह था कि उस स्त्री के पिता ने बहुत संकट के समय में गुलाबसिंह की सच्ची सहायता की थी और गुलाबसिंह को लड़के की तरह मानता था।

इस जगह पर हम इस नौजवान और इसकी सुशीला स्त्री का नाम खोल देना उचित समझते हैं, मगर इस बात को अभी न खोलेंगे कि ये दोनों कौन हैं और इनके इस तरह बेसरोसामान भागने का सबब क्या है।

नौजवान का नाम प्रभाकरसिंह था और स्त्री का नाम इन्दुमति। प्रभाकरसिंह की शादी इन्दुमति के साथ भये हुए आज एक वर्ष और सात महीने हो चुके हैं।

प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह बातचीत करते हुए इन्दुमति की तरफ रवाना हुए और बहुत जल्द वहां जा पहुंचे जहां इन्दुमति चिन्ता निमग्न बैठी हुई अपने पति का इन्तजार कर रही थी। पति को देख कर वह प्रसन्नता के साथ उठ बैठी और जब उसने गुलाबसिंह को पहिचाना तो बहुत खुश होकर बोली—

इन्दु०। मैं पहिले ही कहती थी कि गुलाबसिंह को हम लोगों के विषय में बड़ी चिन्ता होगी और वे जरूर हमारी सुध लेंगे।

गुलाब०। बेशक ऐसा ही है। इसी लिए जिस समय राजा साहब ने आप लोगों की गिरफ्तारी का काम मेरे सुपुर्द किया तो मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ और...

गुलाबसिंह अपनी बात पूरी न करने पाये थे कि लगभग चालीस पचास गज की दूरी पर से सीटी बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़े और उसी तरफ देखने लगे। बेचारी इन्दु को दुश्मन का ध्यान आ गया और वह डरी हुई आवाज से बोली, "यहां तक भाग आने पर भी हम लोगों का खुटका न गया, इसी से मैं कहती थी कि जहां तक जल्द हो सके नौगढ़ की सरहद में हमें पहुंच जाना चाहिए!"

गुलाब०। (इन्दु से) डरो मत, हम दोनों क्षत्रियों के रहते किसकी मजाल है कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ पहुंचा सके। इसके अतिरिक्त इस बात को भी समझ रक्खो कि आज दिन सिवाय उस बेईमान राजा के और कोई तुम्हारा दुश्मन नहीं है और उसकी तरफ से इस काम के लिए मैं ही भेजा गया हूं, ऐसी अवस्था में किसी वास्तविक दुश्मन का ध्यान लगाना वृथा है, हां चोर डाकू में से यदि कोई हो तो मैं नहीं कह सकता।

इन्दु०। खैर पेड़ों की आड़ में तो हो जाइए।

गुलाब०। हां इसके लिए कोई हर्ज नहीं।

इतने ही में पुनः सीटी की आवाज आई, मगर अबकी दफे की आवाज कुछ अजीब ढंग की थी। मालूम होता था कि कोई बंधे हुए इशारे के साथ झिरनी की आवाज देकर सीटी बुला रहा है। इस आवाज को सुन कर गुलाबसिंह हंस पड़ा और इन्दु तथा प्रभाकरसिंह की तरफ देख के बोला, "बस मालूम हो गया, डरने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि यह मेरे एक दोस्त की बजाई हुई सीटी है, मैं अभी जरूरी बातों से छुट्टी पाकर थोड़ी ही देर में आप लोगों से कहने वाला था कि यहीं मेरे एक दोस्त का मकान है जिससे मिल कर आप बहुत प्रसन्न होंगे, और उससे आपको सहायता भी पूरी पूरी मिल सकती है। मैं अब इस सीटी का

जवाब देता हूं। बहुत अच्छा हुआ जो अकस्मात वे खुद यहां आ पहुंचे। मालूम होता है कि मेरा यहाँ आना उन्हें मालूम हो गया!"

इतना कह कर गुलाबसिंह ने भी कुछ अजीब ढंग की सीटी बजाई अर्थात् उस सीटी का जवाब दिया।

प्रभा०। भला अपने इस अनूठे दोस्त का नाम तो बता दो?

गुलाब०। आज कल इन्होंने अपना नाम भूतनाथ रख छोड़ा है।

प्रभा०। (कुछ सोच कर) यह नाम तो कई दफे मेरे कानों में पड़ चुका है और एक दफे ऐसा भी सुन चुका हूँ कि इस नाम का एक आदमी बड़ा ही भयानक है जिसके रहन सहन का किसी को कुछ पता नहीं चलता।

गुलाब०। ठीक है, आपने ऐसा ही सुना होगा, परन्तु यह केवल दुष्टों और पापियों के लिए भयानक हैं।

गुलाबसिंह इससे ज्यादा कुछ कहने न पाया था कि सीटी बजाने वाला अर्थात् भूतनाथ वहां आ पहुंचा। प्रभाकरसिंह को सलाम करने बाद भूतनाथ गुलाबसिंह के गले मिला और इसके बाद चारो आदमी पत्थर की चट्टानों पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगे :—

गुलाब०। (भूतनाथ से) यहां यकायक आपका इस तरह आ पहुंचना बड़े आश्चर्य की बात है!!

भूतनाथ०। आश्चर्य काहे का है! यहां तो मेरा ठिकाना ही ठहरा, या यों कहिये कि यह दिन रात का मेरा रास्ता ही है।

गुलाब०। ठीक है, मगर फिर भी आपका घर यहां से आधे घंटे की दूरी पर होगा ऐसी अवस्था में क्या जरूरी है कि आप दिन रात इसी पहाड़ी पर दिखाई दें?

भूत०। (हंस कर) हां सो तो सच है, मगर आप जो यहाँ आ पहुँचे तो फिर क्या किया जाय, आखिर मुलाकात करना भी तो जरूरी ठहरा!

गुलाब०। (हंसी के साथ) बस तो सीधे यही क्यों नहीं कहते कि मेरा यहां आना आपको मालूम हो गया।

भूत०। बेशक आपका आना मुझे मालूम हो गया बल्कि और भी कई बातें मालूम हुई हैं जिनसे आप लोगों को होशियार कर देना जरूरी है। (प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर) अभी तक दुश्मनों से आपका पीछा नहीं छूटा, खाली गुलाबसिंह ही आपकी गिरफ्तारी के लिए नहीं भेजे गये बल्कि इनको भेजने के बाद आपके राजा साहब ने और भी बहुत से आदमी आप लोगों को पकड़ने के लिये भेजे जो

इस समय इस पहाड़ी के इधर उधर आ गये हैं और आपके आदमियों को भी उन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया है जिनका शायद आप इन्तजार करते होंगे।

प्रभा०। (ताज्जुब में आकर) आपकी जुबानी बहुत सी बातें मालूम हुईं! मुझे इन सब की कुछ भी खबर न थी। आप तो इस तरह बयान कर रहे हैं जैसे कोई जादूगर आइने के अन्दर जमाने भर की हालत देख देख कर सभा में बयान करता हो!

गुलाब०। यही तो इनमें एक अनूठी बात है जिससे बड़े बड़े नामी ऐयार दंग रहा करते हैं। इनसे किसी भेद का छिपा रहना बहुत ही कठिन है। (भूतनाथ से) अच्छा तो मेरे प्यारे दोस्त, मैं प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को आपके सुपुर्द करता हूं। जिससे इनका कल्याण हो सो कीजिए। यह बात आपसे छिपी हुई नहीं है कि मैं इन्हें कैसा मानता हूं।

भूत०। मैं सब जानता हूं और इसीलिए यहां आया भी हूं, परन्तु अब विशेष बातचीत करने का मौका नहीं, आप उठिए और मेरे पीछे पीछे आइए।

प्रभा०। (उठते हुए) मुझे अपने लिए कुछ भी फिक्र नहीं है, केवल बेचारी इन्दु के लिए मुझे नामर्दों की तरह भागने और अदने अदने आदमियों से छिप कर चलने...

भूत०। (बात काट कर) मैं खूब जानता हूं, मगर क्या कीजिएगा, समय पर सब कुछ करना पड़ता है, आंख रहते भी टटोलना पड़ता है!

सब कोई उठ कर भूतनाथ के पीछे पीछे रवाना हुए।

जो कुछ हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं इसमें कई घंटे गुजर गये।

पिछले पहर की रात बीत रही है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, इन चारों के पैरों के तले दबने वाले सूखे पत्तों की चरमराहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं देती। भूतनाथ इन तीनों को साथ लिए हुए एक अनूठे और अनजान रास्ते से बात की बात में पहाड़ी के नीचे उतर आया और इसके बाद दक्षिण की तरफ जाने लगा। जंगल ही जंगल लगभग आधा कोस के जाने के बाद ये लोग पुनः एक पहाड़ के नीचे पहुंचे। इस जगह का जंगल बहुत ही घना तथा रास्ता घूमघुमौवा और पथरीला था। भूतनाथ इस तरह घूमता और चक्कर देता हुआ पेचीली पगडंडियों पर जाने लगा कि कोई अनजान आदमी उसकी नकल नहीं कर सकता था, अथवा यों समझना चाहिये कि एक दो दफे का जानकार आदमी भी धोखे में आकर भटक सकता था, किसी अनजान का जाना तो बहुत ही कठिन बात है।

कुछ ऊपर चढ़ने के बाद घूमता फिरता भूतनाथ एक ऐसी जगह पहुँचा जहां पत्थरों के बड़े बड़े ढोंकों के अन्दर छिपी हुई एक गुफा थी। इन तीनों को लिए हुए भूतनाथ उस गुफा के अन्दर घुसा। आगे आगे भूतनाथ, उसके पीछे गुलाबसिंह, उसके बाद इन्दुमति और सबसे पीछे प्रभाकरसिंह जाने लगे। कुछ दूर गुफा के अन्दर जाने बाद भूतनाथ ने अपने ऐयारों के बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उसकी रोशनी के सहारे अपने साथियों को ले जाने लगा। लगभग पचीस गज के जाने बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् जहां से एक रास्ता सीधी तरफ चला गया था, दूसरा बाईं तरफ, और तीसरी सुरंग दाहिनी तरफ चली गई थी, तथा चौथा रास्ता वह था जिधर से ये लोग आये थे। यहां तक तो रास्ता खुलासा था मगर आगे का रास्ता बहुत ही बारीक और तंग था जिसमें दो आदमी बराबर से मिल कर नहीं चल सकते थे।

यहां पर आकर भूतनाथ अटक गया और मोमबत्ती की रोशनी में आगे की दोनों सुरंगों को बता कर अपने साथियों से बोला, "हमारे मकान में जाने वाले को इस दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसना चाहिए। सामने अथवा बाईं तरफ वाली सुरंग में जाने वाला किसी तरह जीता नहीं बच सकता है।"

इतना कह कर भूतनाथ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसा और कुछ दूर जाने बाद उसने मोमबत्ती बुझा दी।

लगभग दो सौ कदम चले जाने के बाद यह सुरंग खतम हुई और उसका दूसरा मुहाना नजर आया। सबके पहले भूतनाथ सुरंग से बाहर हुआ, उसके बाद गुलाबसिंह और उसके पीछे इन्दुमति बाहर हुई, मगर प्रभाकरसिंह न निकले। तीनों आदमी घूम कर उनका इन्तजार करने लगे कि शायद पीछे रह गए हों मगर कुछ देर इन्तजार करने पर भी वे नजर न आये। इन्दुमति का कलेजा उछलने लगा, उसकी दाहिनी भुजा फड़क उठी और आंखों में आंसू डबडबा आये। भूतनाथ ने इन्दुमति और गुलाबसिंह को कहा, "तुम जरा इसी जगह दम लो, मैं सुरंग में घुस कर प्रभाकरसिंह का पता लगाता हूं।" इतना कह कर भूतनाथ पुनः उसी सुरंग में घुस गया।

दूसरा बयान

प्रभाकरसिंह पीछे पीछे चले आते थे, यकायक कैसे और कहां गायब हो गये? क्या उस सुरंग में कोई दुश्मन छिपा हुआ था जिसने उन्हें पकड़ लिया? या उन्होंने

खुद हमें धोखा देकर हमारा साथ छोड़ दिया ? इत्यादि तरह तरह की बातें सोचती हुई इन्दु बहुत ही परेशान हुई, मगर इस आशा ने कि अभी अभी भूतनाथ उनका पता लगा के सुरंग से लौटता ही होगा, उसे बहुत कुछ सम्हाला और वह एकदम सुरंग की तरफ टकटकी लगाये खड़ी देखती रही, परन्तु थोड़ी ही देर में उसकी यह आशा भी जाती रही जब उसने भूतनाथ को अकेले ही लौटते देखा और दुःख के साथ भूतनाथ ने बयान किया कि 'उनसे मुलाकात नहीं हुई ! मेरी समझ में नहीं आता कि क्या भेद है और उन्होंने हमारा साथ क्यों छोड़ा ? क्योंकि अगर किसी छिपे हुए दुश्मन ने हमला किया होता तो कुछ मुंह से आवाज तो आई होती या चिल्लाते तो सही !'

गुलाब०। नहीं भूतनाथ ऐसा तो नहीं हो सकता। प्रभाकरसिंह पर हम भागने का इलजाम तो नहीं लगा सकते।

भूत०। जी तो मेरा भी नहीं चाहता कि उनके विषय में मैं ऐसा कहूं परन्तु घटना ऐसी विचित्र हो गई है कि मैं किसी तरफ अपनी राय पक्की कर नहीं सकता। हां इन्दुमति कदाचित् इस विषय में कुछ कह सकती हों !

इतना कह कर भूतनाथ ने इन्दु की तरफ देखा मगर इन्दु ने कुछ जवाब न दिया, सिर झुकाये जमीन को देखती रही, मानों उसने कुछ सुना ही नहीं ! अबकी दफे गुलाबसिंह ने उसे सम्बोधन किया जिससे वह चौंकी और एकदम फूट फूट कर रोने और कहने लगी, "बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी। मालूम हो गया कि मेरा बदकिस्मती मेरा साथ न छोड़ेगी। मैं व्यर्थ ही आशा में पड़ कर दुःखी हुई और उन्हें भी दुःख दिया। मेरे ही लिए उन्हें इतना कष्ट भोगना पड़ा और मुझ अभागिन के ही कारण उन्हें जंगल की खाक छाननी पड़ी। हाय ! क्या अब मैं पुनः इस दुनिया में रह कर उनके दर्शन की आशा कर सकती हूं ? क्यों न इसी समय अपने दुखान्त नाटक का अन्तिम पर्दा गिरा कर निश्चिन्त हो जाऊं ?"

इत्यादि इसी ढंग की बातें करती हुई इन्दु प्रलापावस्था को लांघ कर बेहोश हो गई और जमीन पर गिर पड़ी।

गुलाबसिंह और भूतनाथ को उसके विषय में बड़ी चिन्ता हुई और वे लोग उसे होश में लाकर समझाने बुझाने तथा शान्त करने की चिन्ता करने लगे।

भूतनाथ का यह स्थान कुछ विचित्र ढंग का था। इसमें भूतनाथ की कोई कारीगरी न थी, इसे प्रकृति ही ने कुछ अनूठा और सुन्दर बनाया हुआ था। इसके विषय में अगर भूतनाथ की कुछ कारीगरी थी तो केवल इतनी ही कि

उसने इसे खोज निकाला था, जिसका रास्ता बहुत ही कठिन और भयानक था। जिस जगह इन्दुमति भूतनाथ और गुलाबसिंह खड़े हैं वहां से दिन के समय यदि आप आंख उठा कर चारो तरफ देखिये तो आपको मालूम होगा कि लगभग चौदह या पंद्रह बिगहे के चौरस जमीन, चारो तरफ के ऊंचे ऊंचे और सरसब्ज पहाड़ों से सुन्दर और सोहावने सरोवर के जल को तरह घिरी हुई है। जिस तरह चारो तरफ के पहाड़ों पर खुशरंग फूल पत्ती की बहुतायत दिखाई दे रही है उसी तरह यह जमीन भी नर्म घास की बदौलत सब्ज मखमली फर्श का नमूना बन रही है और जगह जगह पर पहाड़ से गिरे हुए छोटे छोटे चश्मे भी बह रहे हैं। यद्यपि आजकल पहाड़ों के लिये सरसब्जी का मौसम नहीं है मगर यहां पर कुछ ऐसी कुदरती तरावट है कि जिसके सबब से 'पतझड़' के मौसिम का कुछ पता नहीं लगता, यों समझ सकते हैं कि बरसात के मौसिम में आजकल से कहीं बढ़ चढ़ कर खूबी खूबसूरती और सरसब्जी नजर आती होगी।

इस स्थान में किसी तरह की इमारत बनी हुई न थी मगर चारो तरफ के पहाड़ों में सुन्दर और सुहावनी गुफाओं और कन्दराओं की इतनी बहुतायत थी कि हजारों आदमी बड़ी खुशी और आराम के साथ यहां गुजारा कर सकते थे। इन्हीं गुफाओं में भूतनाथ तथा उसके तीस चालीस संगी साथियों का डेरा था और इन्हीं गुफाओं में उसके जरूरत की सब चीजें और हर्बे इत्यादि रहा करते थे, तथा उसके पास जो कुछ दौलत थी वह भी कहीं इन्हीं जगहों में होगी, जिसका ठीक ठीक पता उसके साथियों को भी न था। भूतनाथ का कथन है कि ऐसे ऐसे कई स्थान उसके कब्जे में हैं और इस बात का कोई निश्चय नहीं है कि कब या कितने दिनों तक वह किस स्थान में अपना डेरा रखता है या रक्खेगा।

सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी जब भूतनाथ और गुलाबसिंह के उद्योग से इन्दुमति होश में आई। यद्यपि वह खुद इस खोह के बाहर होकर प्रभाकरसिंह की खोज में जान तक देने के लिए तैयार थी और ऐसा करने के लिए वह जिद्द भी कर रही थी मगर भूतनाथ और गुलाबसिंह ने उसे बहुत समझा बुझा कर ऐसा करने से बाज रक्खा और वादा किया कि बहुत जल्द उनका पता लगा कर उनके दुश्मनों को नीचा दिखाएंगे।

ये सब बातें हो ही रही थीं कि भूतनाथ के आदमी गुफाओं और कन्दराओं में से निकल कर वहां आ पहुंचे जिन्हें भूतनाथ ने अपनी ऐयारी भाषा में कुछ समझा बुझा कर बिदा किया। इसके बाद एक स्वच्छ और प्रशस्त गुफा में जो

उसके डेरे के बगल में थी इन्दुमति का डेरा दिला कर और गुलाबसिंह को उसां
·ास छोड़ कर वह भी उन दोनों से बिदा हुआ और अपने एक शागिर्द को सा॥
लेकर उसी सुरंग की राह अपनी इस दिलचस्प पहाड़ी के बाहर हो गया।

जब भूतनाथ सुरंग के बाहर हुआ तो सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। जं जरूरी कामों अथवा नहाने धोने खाने पीने की कुछ भी फिक्र न थी, वह केवा प्रभाकरसिंह का पता लगाने की धुन में था।

यह वह जमाना था जब चुनार की गद्दी पर महाराज शिवदत्त को बैठे वर्ष का समय बीत चुका था। उसकी ऐयाशी की चर्चा घर घर में फैल रही और बहुत से नालायक तथा लुच्चे शोहदे उसकी जात से फायदा उठा रहे थे उधर जमानिया में दारोगा साहब की बदौलत तरह तरह की साजिशें हो रही और उनकी कुमेटी का दौरदौरा खूब अच्छी तरह तरक्की कर रहा था* इस समय खड़े होकर सोचते हुए भूतनाथ का ध्यान एक दफे जमानिया की त और फिर दूसरी दफे चुनारगढ़ की तरफ गया।

सुरंग से बाहर निकल कर एक घने पेड़ के नीचे भूतनाथ बैठ गया उसने अपने शागिर्द से जिसका नाम भोलासिंह था कहा—

भूत०। भोलासिंह, मुझे इस बात का शक होता है कि किसी दुश्मन ने खोह का रास्ता देख लिया और मौका पाकर उसने प्रभाकरसिंह को पकड़ लिय

भोला०। मगर गुरुजी, मेरे चित्त में तो यह बात नहीं बैठती। क्या प्र करसिंह इतने कमजोर थे कि आपके पीछे आते समय एक आदमी ने उन्हें पकड़ लि और उनके मुंह से आवाज तक न निकली? इसके अतिरिक्त यह तो सम्भव ही न कि बहुत से आदमी आपके पीछे पीछे जाते और आपको आहट भी न मिलती

भूत०। तुम्हारा कहना ठीक है और इन्हीं बातों को सोच कर मैं कह हूं कि दुश्मन के आने का शक होता है, यह नहीं कहता कि निश्चय होता है जो कुछ हो, मैं प्रभाकरसिंह का पता लगाने के लिए जाता हूं और तुमको जगह छोड़ कर ताकीद कर जाता हूं कि जब तक मैं लौट कर न आऊं तब सूरत बदले हुए यहां पर रहो और चारो तरफ घूम फिर कर टोह लो कि दुश्मन ने इस सुरंग का पता तो नहीं लगा लिया है। अगर ऐसा हुआ होगा कोई न कोई यहां आता जाता तुम्हें जरूर दिखाई देगा। यदि कोई जरूरत तो तुम निःसन्देह अपने डेरे पर (सुरंग के अन्दर) चले जाना, मैं इसके लि

---

* इसका खुलासा हाल 'चन्द्रकान्ता सन्तति' में लिखा जा चुका है।

तुम्हें मना नहीं करता मगर जो कुछ मेरा मतलब है उसे तुम जरूर अच्छी तरह समझ गए होगे।

भोला०। जी हां मैं अच्छी तरह समझ गया, जहां तक हो सकेगा मैं इस काम को होशियारी के साथ करूंगा, आप जहां इच्छा हो जाइए और इस तरफ से वेफिक्र रहिए।

भूत०। अच्छा तो अब मैं जाता हूं।

इतना कह कर भूतनाथ भोलासिंह से बिदा हुआ और उसी घूमघुमौवे रास्ते से होता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर आया, और इधर भोलासिंह देहाती ब्राह्मण की सूरत बन जंगल में इधर उधर घूमने लगा।

ठीक दोपहर का समय था, धूप खूब कड़ाके की पड़ रही थी और गर्म गर्म लू के झपेटे बदन को झुलसा रहे थे। ऐसे समय में भूतनाथ का शागिर्द भोलासिंह गर्मी से परेशान होकर एक घने पेड़ के नीचे बैठा आराम कर रहा था। यह स्थान यद्यपि उस सुरंग से लगभग दो ढाई सौ कदम की दूरी पर होगा परन्तु यहां से घूमघुमौवे रास्ते और जंगली पेडों तथा लताओं को झाड़ियों के कारण बहुत ध्यान देने पर भी उस सुरंग का मुहाना दिखाई नहीं देता था। भोलासिंह बैठा कुछ सोच रहा था कि यकायक उसके कान में कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई।

हमारे पाठकों में से जो महाशय जंगल की हवा खा चुके या पहाड़ों की सैर कर चुके हैं उन्हें यह बात जरूर मालूम होगी कि जंगल में सन्नाटे के समय मुसाफिरों के बातचीत करते हुए चलने की आहट बहुत दूर दूर तक के लोगों को मिल जाती है, यहां तक कि आध कोस की दूरी पर भी यदि दो चार आदमी बातचीत करते चले जाते हों तो ऐसा मालूम होगा कि थोड़ी दूर पर कुछ आदमी बातें कर रहे हैं परन्तु शब्द साफ साफ सुनाई न देंगे, साथ ही इसके इस बात का पता लगाना भी जरा कठिन होगा कि ये बातचीत करते हुए जाने वाले आदमी किधर और कितनी दूर होंगे। अस्तु जब भोलासिंह को कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई तो ठीक ठीक पता लगाने और जांच करने की नीयत से यह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गया और चारो तरफ गौर से देखने लगा मगर कुछ पता न लगा और न कोई आदमी ही दिखाई पड़ा। लाचार वह पेड़ के नीचे उतर आया और उसी आहट की सीध पर खूब गौर करता हुआ उत्तर की तरफ चल पड़ा जिधर के जंगली पेड़ बहुत घने और गुंजान थे।

कुछ दूर तक चले जाने पर भी भोलासिंह को किसी आदमी का तो पता न

लगा मगर एक छोटे से पेड़ के नीचे बेहोश प्रभाकरसिंह पड़े जरूर दिखाई दिए यद्यपि उसने आज रात के समय प्रभाकरसिंह को देखा न था क्योंकि उस घाटी में जहाँ भूतनाथ का डेरा था पहुंचने के पहिले ही वह गायब हो चुके थे, परन्तु प्रभाकरसिंह एक अमीर बहादुर और नामी आदमी थे इस लिए भोलासिंह उन्हें पहिचानता जरूर था और कई दफे ऐयारी की धुन में शहर में घूमते हुए उसने प्रभाकरसिंह को देखा भी था। इसके अतिरिक्त आज भूतनाथ ने उसे यह भी बता दिया था कि जिस समय प्रभाकरसिंह हमारे साथ से गायब हुए हैं उस समय उनकी पोशाक फलाने ढंग की थी तथा उनके पास अमुक हर्बे थे। इन सब कारणों से भोलासिंह को उनके पहिचानने में किसी तरह की दिक्कत न हुई और वह उन्हें ऐसी अवस्था में पड़े हुए देखते ही चौंक पड़ा। वह उनके पास बैठ गया और गौर से देखने लगा कि क्या उन्हें किसी तरह की चोट आई है या कोई आदमी जान से मार कर छोड़ गया है। किसी तरह की चोट का पता तो न लगा मगर इतना मालूम हो गया कि मरे नहीं हैं बल्कि बेहोश पड़े हैं।

भोलासिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से लखलखा निकाला और सुंघाने लगा। थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह होश में आ गए और उन्होंने अपने सामने एक देहाती ब्राह्मण को बैठे देखा।

प्रभा०। आप कौन हैं? कृपा कर अपना परिचय दीजिए। मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूं क्योंकि आज निःसन्देह आपने मेरी जान बचाई।

भोला०। मैं एक गरीब देहाती ब्राह्मण हूं। इस राह से जा रहा था कि यकायक आपको इस तरह पड़े हुए देखा, फिर जो कुछ बन सका किया।

प्रभा०। (सिर हिला कर) नहीं कदापि नहीं, आप ब्राह्मण भले ही हों परन्तु देहाती और गरीब नहीं हो सकते, आप जरूर कोई ऐयार हैं।

भोला०। यह शक आपको कैसे हुआ?

प्रभा०। यद्यपि मैं ऐयारी नहीं जानता परन्तु ऐसे मौके पर आपको पहिचान लेना कोई कठिन काम न था क्योंकि आपने बहुत उम्दा लखलखा सुंघा कर मेरी बेहोशी दूर की है जिसकी खुशबू अभी तक मेरे दिमाग में गूंज रही है। क्या कोई आदमी जो ऐयारी नहीं जानता हो ऐसा लखलखा बना सकता है? आप ही बताइये!

भोला०। आपका कहना ठीक है मगर मैं...

प्रभा०। (बात काट कर) नहीं नहीं, इसमें कुछ सोचने और बात बनाने की जरूरत नहीं है, मैं आपसे मिल कर बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझे निश्चय है कि

आप जरूर मेरे दोस्त भूतनाथ के ऐयार हैं जिनसे सिवाय भलाई के बुराई की आशा हो ही नहीं सकती।

भोला०। (कुछ सोच कर) बात तो बेशक ऐसी ही है, मैं जरूर भूतनाथ का ऐयार हूं और वे आपका पता लगाने के लिए गए हैं, मगर यह तो बताइए कि आप यकायक गायब क्यों हो गए और आपकी ऐसी दशा किसने की है?

प्रभा०। मैं यह सब हाल तुमसे बयान करूंगा और यह भी बताऊंगा कि क्योंकर मेरी जान बच गई, मगर इस समय नहीं क्योंकि दुश्मनों के हाथ से तकलीफ उठाने के कारण मैं बहुत ही कमजोर हो रहा हूं और अब मुझमें ज्यादा बात करने की भी ताकत नहीं है, अस्तु जिस तरह हो सके मुझे अपने डेरे पर ले चलो, वहां सब कुछ सुन लेना और उसी समय इन्दुमति तथा गुलाबसिंह को भी मेरा हाल मालूम हो जायगा। यद्यपि मुझमें चलने की ताकत नहीं है मगर तुम्हारे मोढ़े का सहारा लेकर धीरे धीरे वहां तक पहुंच ही जाऊंगा।

भोला०। अच्छी बात है, मैं तो आपको अपनी पीठ पर लाद कर भी ले जा सकता हूं।

प्रभा०। ठीक है मगर इसकी कोई जरूरत नहीं है, अच्छा अब अपना नाम तो बता दो।

भोला०। मेरा नाम भोलासिंह है।

इतना कह कर भोलासिंह उठ खड़ा हुआ और उसने हाथ का सहारा देकर प्रभाकरसिंह को भी उठाया। वह बहुत ही सुस्त और कमजोर मालूम हो रहे थे इसलिये भोलासिंह उन्हें टेकाता और सहारा देता हुआ बड़ी कठिनता से सुरंग के मुहाने पर ले आया। वहां पर प्रभाकरसिंह ने बैठ कर कुछ देर तक सुस्ताने की इच्छा प्रकट की अस्तु उन्हें बैठा कर भोलासिंह भी उनके पास बैठ गया। इस समय दिन पहर भर के लगभग रह गया होगा। आह, यहां पर भोलासिंह ने बेढब धोखा खाया। यह जो प्रभाकरसिंह उसके साथ भूतनाथ की घाटी में जा रहे हैं वह वास्तव में प्रभाकरसिंह नहीं हैं बल्कि उनके दुश्मनों में से एक ऐयार है जिसका खुलासा हाल आगे के किसी बयान में मालूम होगा, यह उसे तथा भूतनाथ और उसके ऐयारों को धोखा दिया चाहता है और इन्दुमति पर कब्जा कर लेने की धुन में है। यद्यपि भोलासिंह भी ऐयार और बुद्धिमान है मगर साथ ही इसके उसे भांग का बहुत शौक है। सुबह दोपहर और शाम तीनों वक्त छाने बिना उसका जी नहीं मानता। इतने पर भी बस नहीं, कभी कभी वह नशे को

कभी समझ कर दो चार दम गांजे के भी लगा लिया करता है और यही सबब है कि वह कभी कभी बेढब धोखा खा जाता है। मगर यह ऐयार भी बड़ा ही मक्कार है जो उसके साथ जा रहा है, देखा चाहिए दोनों में क्योंकर निपटती है। भोलासिंह तो खुश है कि हमने प्रभाकरसिंह को खोज निकाला, और वह ऐयार सोचता है कि अब इन्दुमति पर कब्जा करना कौन बड़ी बात है।

कुछ देर के बाद दोनों आदमी उठ खड़े हुए और भोलासिंह उस नकली प्रभाकरसिंह को साथ लिए हुए सुरंग के अन्दर चला गया। ✓

तीसरा बयान

बेचारी इन्दुमति बड़े ही संकट में पड़ गई है। प्रभाकरसिंह का इस तरह यकायक गायब हो जाना उसके लिए बड़ा ही दुःखदायी हुआ। इस समय उसके आगे दुनिया अंधकार हो रही है। उसे कहीं भी किसी तरह का सहारा नहीं सूझता। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता कि अब उसका भविष्य कैसा होगा। उसे न तो तनोबदन की सुध है और न नहाने धोने की फिक्र। वह सिर झुकाए अपने प्यारे पति की चिन्ता में डूबी हुई है। गुलाबसिंह उसके पास बैठे हुए तरह तरह की बातों से उसे सन्तोष दिलाना चाहते हैं मगर किसी तरह भी उसके चित्त को शान्ति नहीं होती और वह अपने मन की दो चार बातें कह कर चुप हो जाती है। हां जब जब उसके कान में ये शब्द पड़ जाते हैं कि 'भूतनाथ का उद्योग कदापि वृथा नही हो सकता, वह जरूर प्रभाकरसिंह को खोज निकालेंगे और यहां अपने साथ ले कर हो आवेंगे' तब तब वह चौंक पड़ती है। आशा के फेर में पड़ कर उसका ध्यान सुरंग के मुहाने की तरफ जा पड़ता है और कुछ देर के लिए उधर को टकटकी बंध जाती है।

इस बीच में इन्दु ने कई दफे गुलाबसिंह से कहा, "तुम मुझे साथ लेकर इस सुरंग के बाहर निकलो, मैं खुद मर्दाना भेष बना कर उनका पता लगाऊंगी।" मगर गुलाबसिंह ने ऐसा करना स्वीकार न किया जिससे उसका चित्त और भी दुःखी हो गया और उसने रोते ही कलपते बची हुई रात और अगला दिन बिता दिया। अन्त में दिन बीत जाने पर सन्ध्या के समय जब सूर्य भगवान अस्त हो रहे थे लाचार होकर गुलाबसिंह ने इन्दु से वादा किया कि 'अच्छा अगर कल तक भूतनाथ लौट कर न आ जायेंगे तो मैं तुम्हें साथ लेकर सुरंग के बाहर निकल चलूंगा और फिर जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूंगा।'

गुलाबसिंह के इस वादे से इन्दु को कुछ थोड़ी सी ढाढ़स मिल गई और उसने साहस करके अपने को सम्हाला। इसके बाद गुलाबसिंह से बोली कि 'इस समय तो मैं स्नान इत्यादि कुछ भी नहीं करूंगी हां यदि तुम आज्ञा दो तो मैं थोड़ी देर के लिए नीचे उतर कर मैदान में टहलूं और दिल बहलाऊं।' गुलाबसिंह ने उसकी इस बात को भी गनीमत समझा और घूमने फिरने की इजाजत दे दी।

इन्दुमति का घूमने फिरने के लिए गुलाबसिंह से आज्ञा ले लेना केवल इसी अभिप्राय से न था कि वह अपना दिल बहलावे बल्कि उसका असल मतलब यह था कि वह अकेले में बैठ कर या घूम फिर कर इस विषय पर विचार करे कि अब उसे क्या करना चाहिए क्योंकि वह गुलाबसिंह की समझाने बुझाने वाली बातों से दुःखी हो गई थी। उसका हरदम पास बैठे रह कर दिलासा देना या ढाढ़स बंधाना उसे बहुत बुरा मालूम हुआ और इस बहाने से उसने अपना पीछा छुड़ाया।

उदास और पति की जुदाई से व्याकुल इन्दुमति गुलाबसिंह के पास से उठी और धीरे धीरे चल कर नीचे वाले सरसब्ज मैदान में पहुंच कर टहलने लगी। उधर गुलाबसिंह भी दिन भर का भूखा प्यासा था अतः जरूरी कामों से निपटने और कुछ खाने पीने की फिक्र में लगा।

धीरे धीरे घूमती फिरती इन्दुमति उस सुरंग के मुहाने के पास आ पहुंची जो यहां आने जाने का रास्ता था और पहाड़ी के साथ एक पत्थर की साफ चट्टान पर बैठ कर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। उसका मुंह सुरंग की तरफ था और इस आशा से बराबर उसी तरफ देख रही थी कि प्रभाकरसिंह को लिए हुए भूतनाथ अब आता ही होगा। उसी समय नकली प्रभाकरसिंह को लिए हुए भोलासिंह वहां आ पहुंचा और सुरंग के बाहर निकलते ही इन्दु की निगाह उन पर पड़ी तथा उन दोनों ने भी इन्दु को देखा।

इस समय भोलासिंह अपनी असली सूरत में था और उसे भूतनाथ के साथ जाते हुए इन्दु ने देखा भी था इसलिए वह जानती थी कि वह भूतनाथ का ऐयार है अस्तु निगाह पड़ते ही उसे विश्वास हो गया कि भूतनाथ ने मेरे पति को भोलासिंह के साथ वहां भेज दिया है और पीछे पीछे भूतनाथ खुद भी आता होगा।

नकली प्रभाकरसिंह और भोलासिंह सुरंग से निकल कर पांच कदम आगे न बढ़े होंगे कि प्रभाकरसिंह को देखते ही इन्दुमति पागलों की तरह दौड़ती हुई उसके पास पहुंची और उनके पैरों पर गिर पड़ी।

हाय, बेचारी इन्दु को क्या खबर थी कि यह वास्तव में मेरा पति नहीं

बल्कि कोई मक्कार उसकी सूरत बना मुझे धोखा देने के लिए यहां आया है तिस पर भोलासिंह के साथ रहने से उसे इस बात पर शक करने का मौका भी न मिला। वह उसे अपना पति समझ कर उसके पैरों पर गिर पड़ी और वियोग के दुख को दूर करती हुई प्रसन्नता ने उसे गदगद् कर दिया। कण्ठ रुद्ध हो जाने के कारण वह कुछ बोल न सकी, केवल गरम गरम आंसू गिराती रही। भोलासिंह भी चुपचाप खड़ा आश्चर्य के साथ उसकी इस अवस्था को देखता रहा।

नकली प्रभाकरसिंह ने इन्दुमति से कुछ न कह कर भोलासिंह से कहा, "भाई भोलासिंह, अब तो मैं बिल्कुल ही थक गया हूं। मेरी कमजोरी अब मुझे एक कदम भी आगे नहीं चलने देती। इन्दु से मिलने का उत्साह मुझे यहां तक साहस देकर ले आया यही गनीमत है नहीं दुश्मनों के दिए हुए जहर की बदौलत बिल्कुल ही कमजोर हो गया हूं। इत्तिफाक की बात है कि इन्दु मुझे इसी जगह मिल गई। अब मैं कुछ देर तक सुस्ताए बिना एक कदम भी आगे नहीं चल सकता अस्तु तुम जाओ गुलाबसिंह को भी खुशखबरी देकर इसी जगह बुला लाओ तब तक मैं भी अच्छी तरह आराम कर लूं।"

"बहुत अच्छा" कह कर भोलासिंह वहां से चला गया। यहां से गुलाबसिंह का डेरा सैकड़ों कदम की दूरी पर था, तमाम मैदान पार करने के बाद पहाड़ी पर चढ़ कर वह गुफा थी जिसमें गुलाबसिंह का डेरा था, अस्तु वहां तक जाने और आने में घड़ी भर से भी ज्यादा देर लग सकती थी तथापि भोलासिंह दौड़ा दौड़ा जाकर गुलाबसिंह से मिला और उन्हें प्रभाकरसिंह के आने की खुशखबरी सुनाई। उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकरसिंह से मिलने के लिए भोलासिंह के साथ चल पड़े।

जिस समय गुलाबसिंह को साथ लिए हुए भोलासिंह सुरंग के मुहाने पर पहुंचा तो वहां सन्नाटा छाया हुआ था। न तो प्रभाकरसिंह दिखाई पड़े और न इन्दुमति ही नजर आई। ऐसी अवस्था देख भोलासिंह सन्नाटे में आ गया और अब उसे मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया। वह घबड़ा कर चारो तरफ देखने के बाद यह कहता हुआ जमीन पर बैठ गया—"हाय मैंने बुरा धोखा खाया। प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ इन्दुमति को भी हाथ से खो बैठा!"

चौथा बयान

अब हम यहां पर कुछ हाल प्रभाकरसिंह का लिखना जरूरी समझते हैं। पहिले बयान में हम लिख आए हैं कि 'प्रभाकरसिंह इन्दुमति और गुलाबसिंह को

लेकर भूतनाथ अपनी घाटी में गया तो रास्ते में सुरंग के अन्दर से यकायक प्रभाकरसिंह गायब हो गए।' अस्तु इसी जगह से हम प्रभाकरसिंह का हाल लिखना शुरू करते हैं।

जब भूतनाथ उन लोगों को साथ लिए हुए सुरंग में गया और कुछ दूर जाने के बाद चौमुहाना पर पहुंचा तो रास्ते का हाल बता कर कुछ आगे चलने बाद भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा दी और उसे यही खयाल रहा कि हमारे तीनों मेहमान हमारे पीछे पीछे चले आ रहे हैं, मगर वास्तव में ऐसा न था। चौमुहानी से थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने बाद किसी ने प्रभाकरसिंह के दाहिने मोढ़े पर अपना हाथ रक्खा जो सबके पीछे पीछे जा रहे थे। प्रभाकरसिंह ने चौंक कर पीछे की तरफ देखा मगर अंधकार में कुछ भी दिखाई न दिया, हां एक हलकी सी आवाज यह सुनाई पड़ी कि—'ठहरो, और जरा मेरी बात सुन कर तब आगे बढ़ो' ठहरें या न ठहरें भूतनाथ को रोकें अथवा चुप रहें, इत्यादि सोचते हुए प्रभाकरसिंह कुछ ही देर रुके थे कि उनके कान में पुनः एक बारीक आवाज आई, "घबड़ाओ मत, जरा सा रुक कर सुनते जाओ कि अब तुम कैसी आफत में फंसा चाहते हो और उससे छुटकारा पाने को क्या तदबीर है!"

इन शब्दों ने प्रभाकरसिंह को और भी रोक लिया और वह कुछ ठिठके से रह कर सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। इतने ही में पिछली तरफ रोशनी मालूम हुई जो उसी चौराहे पर थी जिसे यह लोग छोड़ कर कुछ दूर आगे बढ़ आये थे। उस रोशनी में दो औरतें दिखाई पड़ीं और यह भी मालूम पड़ा कि जिसने प्रभाकरसिंह के मोढ़े पर हाथ रख कर उन्हें रोका था वह भी एक औरत ही है जो अब कुछ पीछे हट इन्हें पुनः अपनी तरफ बुला रही है।

यद्यपि इस कार्रवाई में बहुत थोड़ी देर लगी तथापि इसी बीच में उस अनूठी और पेचीली सुरंग में गुलाबसिंह और इन्दुमती को लिए हुए भूतनाथ इतना आगे बढ़ गया कि न तो वह इन दोनों की बात ही सुन सका और न चौमुहानी वाली रोशनी ही पर उसकी निगाह पड़ी। कुछ वर्तमान और कुछ भविष्य को सोचते हुए प्रभाकरसिंह अटके और उन औरतों से जो कम उम्र नाजुक और सुंदर थीं डरना व्यर्थ समझ कर चौमुहानी की तरफ मुड़ कर उस औरत की तरफ चले जिसने इन्हें रोका था।

इन तीनों औरतों का नखसिख बयान करने और इनकी खूबसूरती के बारे में लिखने की यहां कुछ जरूरत नहीं है। यहां इतना ही कहना काफी है जितना कह

आये हैं अर्थात् तीनों कम उम्र थीं, नाजुक थीं, सुन्दर थीं और भड़कीली पोशाक पहिरे हुए थीं।

जब चौमुहानी पर पहुंचे तो उन दोनों औरतों में से एक ने जो पहिले ही से वहां खड़ी थीं प्रभाकरसिंह का हाथ पकड़ लिया और कहा, "भूतनाथ ने जरूर आपको कहा होगा कि चौमुहानी से उसके घर का रास्ता छोड़ कर बाकी दोनों तरफ जाना खतरनाक है, मगर नहीं, वह बिल्कुल झूठा है, आप जरा इधर आइए और देखिए मैं आपको कैसा अनूठा तमाशा दिखाती हूं।"

इतना कह कर दोनों बल्कि तीनों औरतें प्रभाकरसिंह को सुरंग के उस रास्ते में ले चलीं जिधर जाने के लिए भूतनाथ ने मना किया था। हम नहीं कह सकते कि क्या सोच समझ कर प्रभाकरसिंह ने इन औरतों की बात मान ली और भूतनाथ की नसीहत पर कुछ भी ध्यान न दिया अथवा भूतनाथ का साथ छोड़ दिया। क्या सम्भव है कि वे इन तीनों औरतों को पहिले से पहिचानते हों?

लगभग पंद्रह या बीस कदम जाने के बाद उस तीसरी औरत ने जिसके हाथ में रोशनी थी नखरे के साथ हाथ से मोमबत्ती गिरा दी जिससे अंधकार हो गया। उसने यही जाहिर किया कि यह बात धोखे में उससे हो गई। इसके बाद उस औरत ने इनका हाथ भी छोड़ दिया। प्रभाकरसिंह अटक कर कुछ सोचने लगे और बोले—"जो हुआ सो हुआ अब रोशनी करो तो मैं तुम्हारे साथ आगे बढ़ूंगा नहीं तो पीछे की तरफ मुड़ जाऊंगा।" मगर उनकी इस बात का किसी ने भी जवाब न दिया। आश्चर्य के साथ प्रभाकरसिंह ने पुनः पुकारा मगर फिर जवाब न मिला, मानों वहां कोई था ही नहीं।

आश्चर्य और चिन्ता के शिकार प्रभाकरसिंह कुछ देर तक खड़े सोचने के बाद अफसोस करते हुए पीछे की तरफ लौटे मगर अपने ठिकाने न पहुंच सके। आठ ही दस कदम पीछे हटे थे कि दीवार से टकरा कर खड़े हो गए और सोचने लगे—"हैं, यह क्या मामला है! अभी अभी तो हम लोग इधर से आ रहे हैं, फिर यह दीवार कैसी? रास्ता क्योंकर बंद हो गया? क्या अब इस तरफ का रास्ता बन्द ही हो गया? क्या अब हम वहां न पहुंच सकेंगे जहां इन्दुमति को लिए हुए भूतनाथ गया है?" इत्यादि।

वास्तव में पीछे फिरने का रास्ता बन्द हो गया था मगर अंधेरे में इस बात का पता नहीं लग सकता था कि यह कोई दीवार बीच में आ पड़ी है या किसी तरह के तख्ते या दरवाजे ने बगल से निकल कर रास्ता बन्द कर दिया है अथवा

क्या है । जो हो प्रभाकरसिंह को निश्चय हो गया कि अब पीछे की तरफ लौटना असम्भव है अस्तु यही अच्छा होगा कि आगे की तरफ बढ़ें, शायद कहीं उजाले की सूरत दिखाई दे तब जान बचे। आह ! मैं इन औरतों को ऐसा नहीं समझता था और इस बात का स्वप्न में भी गुमान नहीं होता था कि ये मेरे साथ दगा करेंगी।

लाचार प्रभाकरसिंह अंधेरे में अपने दोनों हाथों को फैला कर टटोलते हुए आगे की तरफ बढ़े मगर बहुत धीरे धीरे जाने लगे जिसमें किसी तरह का धोखा न हो। रास्ता पेचीला और ऊंचा था तथा आगे की तरफ से तंग भी होता जाता था। अढ़ाई तीन सौ कदम जाने के बाद रास्ता इतना तंग हो गया कि एक आदमी से ज्यादा के चलने की जगह न रही। कुछ आगे बढ़ने पर रास्ता खतम हुआ और एक बन्द दर्वाजे पर हाथ पड़ा। धक्का देने से वह दर्वाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह ने चौखट के अन्दर पैर रक्खा। दो ही कदम जाने बाद यह दर्वाजा पुनः बन्द हो गया और साथ ही इसके आसमान की सुफेदी पर भी प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी जो उनके सामने की तरफ बढ़ती हुई मालूम पड़ती थी। लगभग पचीस तीस कदम जाने बाद प्रभाकरसिंह खोह के बाहर निकले और तब उन्होंने अपने को एक सरसब्ज पहाड़ की ऊंचाई पर किसी गुफा के बाहर खड़े पाया।

उस समय सवेरा हो चुका था और पूरब तरफ पहाड़ की चोटी के पीछे सूरज की लालिमा दिखाई दे रही थी। प्रभाकरसिंह ने अपने को एक ऐसे स्थान में पाया जिसे एक सुन्दर और सोहावनी घाटी कह सकते हैं। यह घाटी त्रिकोण अर्थात् तीन तरफ से पहाड़ के अन्दर दबी हुई थी और जमीन के बीचोबीच में एक सुन्दर बंगला बना हुआ था जो इस जगह से जहां प्रभाकरसिंह खड़े थे लगभग चौथाई कोस की दूरी पर पहाड़ के नीचे की तरफ था। प्रभाकरसिंह वहां पहुंचने के लिए रास्ता तलाश करने लगे मगर सुभीते से उतर जाने के लायक कोई पगडण्डी नजर न आई, तथापि प्रभाकरसिंह हतोत्साह न हुए और किसी न किसी तरह से उद्योग करके नीचे की तरफ उतरने ही लगे। वह सोच रहे थे कि देखें हमारा दिन कैसा कटता है, किस ग्रहदशा के फेर में पड़ते हैं, किसका सामना पड़ता है और खाने पीने के लिए क्या चीज मिलती है अथवा यहां से निकलने का रास्ता ही क्योंकर मिलता है। उस बंगले तक पहुंचने में प्रभाकरसिंह को दो घंटे से ज्यादा देर लगी। पहाड़ की चोटियों पर धूप अच्छी तरह फैल चुकी थी मगर बंगले के पास अभी धूप का नाम निशान नहीं था।

बंगले के दर्वाजे पर दो जवान लड़के पहरा दे रहे थे जिन्होंने प्रभाकरसिंह

को रोका और पूछा, "तुम यहां क्योंकर आए ?"

इसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने क्रोध में आकर कहा, "जिस तरह हम आए हैं वह जरूर तुम्हें मालूम होगा और जरूर वे तीनों कम्बख्त औरतें भी इसी बंगले के भीतर होंगी जिन्होंने मुझे धोखा देकर गुमराह किया है। तुम जाओ उन्हें इत्तिला दो कि प्रभाकरसिंह आ पहुंचे !"

उन दोनों पहरे वालों ने प्रभाकरसिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया। प्रभाकरसिंह गुस्से में आकर कुछ कहा ही चाहते थे कि उनकी निगाह एक मौलसिरी के पेड़ के ऊपरी हिस्से पर जा पड़ी जो इस बंगले के पूरब और दक्षिण के कोने पर बड़ी खूबसूरती के साथ खड़ा था। इस बंगले के चारो कोनों पर चार मौलसिरी के बड़े बड़े दरख्त थे जो इस समय खूब ही हरे भरे थे और उनके फूलों से वहां की जमीन ढक रही थी तथा खुशबू से प्रभाकरसिंह का दिमाग मुअत्तर हो रहा था।

जिस मौलसिरी के पेड़ के ऊपर प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी उसके ऊपरी हिस्से में रेशमी डोर के साथ एक हिंडोला लटक रहा था जो झुकी हुई डालियों की आड़ में छिपा हुआ था मगर जब हवा के झपेटों से उसकी डालियां हिलती और इधर उधर हटती थीं तो उस हिंडोले पर एक सुन्दर औरत बैठी हुई दिखाई देती थी और इसी पर प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी थी। गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को इन्दुमति का गुमान हुआ और वे दौड़ कर उस पेड़ के नीचे जा खड़े हुए।

प्रभाकरसिंह ने सर उठा कर पुनः उस औरत को देखा—इस आशा से कि यह इन्दुमति है या नहीं इस बात का निश्चय कर लें, मगर प्रभाकरसिंह का खयाल गलत निकला क्योंकि वह वास्तव में इन्दुमति न थी, हां इन्दुमति से उसकी सूरत रुपये में बारह आना जरूर मिलती जुलती थी, यहां तक कि यदि यह औरत केवल अपने दोनों होंठ और अपनी ठुड्ढी हाथ से ढांक कर प्रभाकरसिंह की तरफ देखती होती तो दोपहर की चमचमाती हुई रोशनी में और दस हाथ की दूरी से भी वे इसे न पहिचान सकते और यही कहते कि यह जरूर मेरी इन्दुमति है।

इस समय वह औरत भी प्रभाकरसिंह की तरफ देख रही थी। जब वे उस पेड़ के नीचे आए तब उसने हाथ के इशारे से उन्हें भाग जाने को कहा जिसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने कहा, "तुम इस बात का गुमान भी न करो कि तुम्हारा हाल जाने बिना मैं यहां से चला जाऊंगा।"

औरत०। (अपने माथे पर हाथ रख कर) बात तो यह है कि आप अब यहां

से जा नहीं सकते और न आपको निकल जाने का रास्ता ही मिल सकता है।

प्रभाकर०। तुम्हारे इस कहने से तो निश्चय होता है कि तुम्हारी जुबानी मुझे यहां का सच्चा सच्चा हाल मालूम हो जायगा और मैं अपने दुश्मनों से बदला ले सकूंगा।

औरत०। नहीं, क्योंकि एक तो मुझे यहां का पूरा पूरा हाल मालूम नहीं, दूसरे अगर कुछ मालूम भी हैं तो उसके कहने का मौका मिलना कठिन है, क्योंकि अगर कुछ कहने की कोशिश करूंगी तो मेरी ही तरह से आप भी कैद कर लिए जायंगे।

प्रभा०। तो तुम कैदी हो ?

औरत०। (आंचल से आंसू पोंछ कर) जी हां !!

प्रभा०। तुम्हें यहां कौन ले आया ?

औरत०। मेरी बदकिस्मती।

प्रभा०। तुम्हारा क्या नाम है ?

औरत०। तारा।

प्रभा०। (ताज्जुब से) तुम्हारे बाप का क्या नाम है ?

औरत०। (रो कर) वही जो आपकी इन्दुमति के बाप का नाम है !! अफसोस, आपने मुझे अभी तक नहीं पहिचाना !!

इतना कह के वह और भी खुल कर रोने लगी जिससे प्रभाकरसिंह का दिल बेचैन हो गया और उन्होंने पहिचान लिया कि यह बेशक उनकी साली है। वह चाहते थे कि पेड़ पर चढ़ कर उसे नीचे उतारें और अच्छी तरह बात करें मगर इसी बीच में कई आदमियों ने आकर उन्हें घेर लिया। बंगले के दर्वाजे पर पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने प्रभाकरसिंह को जब उस औरत से बातचीत करते देखा तब तेजी के साथ वहां से चले गए और थोड़ी ही देर में कई आदमियों ने आकर उनको घेर लिया।

संध्या का समय था जब नकली प्रभाकरसिंह इन्दुमति को बहका कर और धोखा देकर भूतनाथ की विचित्र घाटी से उसी सुरंग की राह ले भागा जिधर से वे लोग गए थे। उस समय इन्दुमति की वैसी ही सूरत थी जैसी कि हम पहिले बयान में लिख आए हैं, अर्थात् मर्दानी सूरत में तीर कमान और ढाल तलवार लगाए हुई थी। संभव था कि नकली प्रभाकरसिंह को उसके पहिचानने में धोखा होता परन्तु नहीं, उसका इन्दुमति से कुछ ऐसा सम्बन्ध था कि उसने उसके पहिचानने में जरा भी धोखा नहीं खाया बल्कि इन्दुमति को हर तरह से धोखे में

डाल दिया। इन्दुमति ने भी प्रभाकरसिंह को वैसे ही ढंग और पोशाक में पाय जैसा छोड़ा था परन्तु यदि वह विकल दुःखित और घबड़ाई हुई न होती तो उस लिए नकली प्रभाकरसिंह को पहिचान लेना कुछ कठिन न था।

सुरंग के बाहर होने बाद आसमान की तरफ देख कर इन्दुमति को इस बा का खयाल हुआ कि रात हुआ ही चाहती है। वह सोचने लगी कि इस भयान जंगल से क्योंकर पार होंगे और रात भर कहां पर आराम से बिता सकेंगे, सा ही उसे यकायक इस तरह पर गुलाबसिंह को छोड़ना और भूतनाथ की घाटी निकल भागना भी ताज्जुब में डाल रहा था। पूछने पर भी प्रभाकरसिंह उसको ठीक ठीक सबब नहीं बताया था, हाँ बताने का वादा किया, मगर इस उसकी बेचैनी दूर नहीं हुई थी। उसका जी तरह तरह के खुटकों में पड़ा हुव था और यह जानने के लिए वह बेचैन हो रही थी कि गुलाबसिंह ने उनका क नुकसान किया था जो उसको भी छोड़ दिया गया।

सुरंग के मुहाने से थोड़ी दूर आने जाने बाद इन्दुमति ने प्रभाकरसिंह से कह "आपकी चाल इतनी तेज है कि मैं आपका साथ नहीं दे सकती।"

नकली प्रभाकर०। (धीमी चाल करके) अच्छा तो मैं धीरे धीरे चलता मगर जहां तक जल्दी हो सके यहां से निकल ही चलना चाहिए।

इन्दुमति०। आखिर इसका सबब क्या है, कुछ बताओ भी तो सही ?

नकली प्रभाकर०। अभी नहीं थोड़ी देर के बाद इसका सबब बताऊंगा।

इन्दुमति०। यही कहते कहते तो यहां तक आ पहुंचे। अच्छा यही बता कि हम लोगों को कहां जाना होगा और कितना बड़ा सफर करना पड़ेगा ?

नकली प्रभाकर०। कुछ नहीं थोड़ी ही दूर और चलना है इसके बाद सवारी तैयार मिलेगी जिस पर चढ़ कर हम लोग निकल जाएंगे।

सवारी का नाम सुन इन्दुमति चौंकी और उसके दिल में तरह तरह की बा पैदा होने लगीं। कई सायत सोचने के बाद उसने पुनः नकली प्रभाकरसिंह पूछा, "ऐसे मुसीबत के जमाने में यकायक आपको सवारी कैसे मिल गई ?"

नकली प्रभाकर०। इसका जवाब भी आगे चल कर देंगे।

प्रभाकरसिंह की इस बात ने इन्दुमति को और भी तरद्दुद में डाल दिया वह चलते चलते रुक कर खड़ी हो गई और इस बीच में नकली प्रभाकरसिंह जो आगे जा रहा था कई कदम आगे निकल गया।

हम नहीं कह सकते कि अब यकायक इन्दुमति के जी में क्या आया कि वह

प्रभाकरसिंह के साथ जाते जाते एकदम रुक ही नहीं गई बल्कि जब प्रभाकरसिंह अपनी तेजी और जल्दबाजी में पीछे की सुध न करके इन्दुमति से कुछ आगे बढ़ गया तो दाहिनी तरफ हट कर एक गुंजान पेड़ पर चढ़ गई और छिप कर इंत-जार करने लगी कि देखें अब जमाना क्या दिखाता है।

नकली प्रभाकरसिंह लगभग दो सौ कदम से भी ज्यादे आगे बढ़ गया तब उसे मालूम हुआ कि उसके पीछे इन्दुमति नहीं है। वह घबरा कर पीछे की तरफ लौटा और "इन्दुमति, इन्दुमति" कह कर कुछ ऊंचे स्वर से पुकारने लगा।

इन्दुमति पेड़ पर चढ़ कर छिपी हुई उसकी आवाज सुन रही थी मगर उसे खूब याद था कि उसके प्यारे पति ने आवश्यकता पड़ने पर कभी उसे इन्दुमति कह कर नहीं पुकारा। यह एक ऐसी बात थी जो केवल उन दोनों पति पत्नि ही से सम्बन्ध रखती थी. कोई तीसरा आदमी इसके जानने का अधिकारी न था।

नकली प्रभाकरसिंह इन्दुमति को पुकारता हुआ उससे ज्यादे पीछे हट गया जहां इन्दु छिपी हुई थी और इस बीच में उसने तीन दफे जफील (सिटी) भी बुलाई, साथ ही इसके यह भी उसके मुंह से निकल पड़ा, "कम्बख्त ठिकाने पहुँच कर गायब हो गई!" यह बात इन्दुमति ने भी सुन ली।

जफील की आवाज से वहां कई आदमी और भी आ पहुँचे तथा नकली प्रभा-करसिंह के साथी बन गये जिन्हें देख इन्दुमति को विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने यहां आकर सोचा था वही ठीक निकला, वास्तव में उसने पूरा धोखा खाया, और अब वह बेतरह दुश्मनों के काबू में पड़ी हुई है।

इन्दुमति को खोजने वाले अब कई आदमी हो गये और वे इधर उधर फैल कर पेड़ों की आड़ तथा झुरमुट में उसे खोजने लगे।

तिथी के अनुसार रात की पहिली कालिमा (अंधेरी) बीत चुकी थी और इन्द्रदेव उदय होकर धीरे धीरे ऊंचे उठने लगे थे जिससे इन्दु घबड़ा गई और मन में सोचने लगी कि 'यह तो बड़ा अन्धेर हुआ चाहता है। एक छिपे हुए इन्दु को यह अपना सा किया चाहता है! अब मैं क्या करूं!'

प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ जमाने ने भी उसे बहुत कुछ सिखला दिया था। तलवार चलाना और तीर का निशाना लगाना वह बखूबी जानती थी, बल्कि तीरन्दाजी में उसे एक तरह का घमंड था और इस समय उसके पास यह सामान मौजूद भी था जैसा कि हम ऊपर इशारा कर चुके हैं कि 'इस समय इसकी पोशाक और सूरत वैसी ही थी जैसी कि हम पहिले बयान में दिखा चुके हैं।'

जब कई दुश्मनों ने इन्दुमति को घेर लिया और चाँदनी भी फैल कर व
की हर एक चीज को दिखाने लगी तब उसे विश्वास हो गया कि अब वह कि
तरह छिपी नहीं रह सकती, लोग जरूर उसे देख लेंगे और गिरफ्तार कर लें
अतएव उसने कमान पर तीर चढ़ाया और संभल कर बैठ गई, सोच लिया
जब तक तरकश में एक भी तीर मौजूद रहेगा किसी को अपने पास फटकने न दूंगी

इसी बीच में मौका पाकर उसने नकली प्रभाकरसिंह को अपने तीर
निशाना लगाया। इन्दु के हाथ से निकला हुआ तीर नकली प्रभाकरसिंह के पे
में लगा और वह "हाय" करके बैठ गया। उसके साथी उसके चारो तरफ जा
हो गए और बोले, "बेशक वह इसी जगह कहीं है और यह तीर उसी ने मा
है। अब उसे हम जरूर पकड़ लेंगे। तीर पूरब तरफ से आया है!"

एक और तीर आया और वह एक आदमी की पीठ को छेद कर छाती
तरफ से पार निकल गया।

अब तो उन लोगों में खलबली पड़ गई और खोजने की हिम्मत जाती र
बल्कि जान बचाने की फिक्र पड़ गई, मगर इस खयाल से कि तीर पूरब त
से आया है और मारने वाला भी उसी तरफ किसी पेड़ पर छिपा हुआ हो
दोनों व्यक्तियों को छोड़ कर बाकी के लोग इन्दु की तरफ झपटे और चांदनी
मदद पाकर बहुत जल्द उस पेड़ को घेर लिया जिस पर इन्दु छिपी हुई थी।

अब इन्दु ने अपने को जाहिर कर दिया और जरा ऊंची आवाज में उ
दुश्मनों से कहा, "हां हां बेशक मैं इसी पेड़ पर हूं, मगर याद रक्खो कि तुम लो
को अपने पास आने न दूंगी बल्कि देखते ही देखते इस दुनिया से उठा दूंगी!"

इतना कह कर उस पेड़ के नीचे के और भी एक आदमी को तीर से घा
किया। इसी समय ऊपर की तरफ से आवाज आई, "शाबाश इन्दु शाबा
इन लोगों की बातचीत से मैं पहिचान गया कि तू इन्दुमति है!"

यह बोलने वाला भी उसी पेड़ पर था जिस पर इन्दु थी मगर उससे ऊ
की एक ऊंची डाल पर बैठा हुआ था जिसकी आवाज सुन कर इन्दुमति घ
गई और सोचने लगी कि यह कोई दुश्मन तो नहीं है। उसने पूछा, "तू कौ
और यहां कब से बैठा हुआ है?"

जवाब०। मैं तुमसे थोड़ी देर पहिले यहां आया हूं बल्कि यों कहना चा
कि दूर से तुम लोगों को आते देख कर इस पेड़ पर चढ़ कर बैठा था।
तुम्हारा पक्षपाती हूं और मेरा नाम भूतनाथ है। तुम तीर कमान मुझको

मैं अभी तुम्हारे दुश्मनों को जहन्नुम में पहुंचा देता हूं।

इन्दु०। बस बस बस, मैं ऐसी बेवकूफ नहीं हूं कि इस समय तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूं और अपना तीर कमान जिससे मैं अपनी रक्षा कर सकती हूँ तुम्हारे हवाले करके अपने को तुम्हारी दया पर छोड़ दूं। यद्यपि मैं औरत हूं और मेरी कमान कड़ी नहीं है तथा मेरे फेंके तीर दूर तक नहीं जाते, तथापि मेरा निशाना नहीं चूक सकता और मैं नजदीक के दुश्मनों को बच कर नहीं जाने दे सकती। खैर तुम जो कोई भी हो समझ रक्खो कि इस समय मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास न करूंगी और तुम्हें कदापि नीचे न उतरने दूंगी, जरा भी हिलोगे तो मैं तीर मार कर तुम्हें दूसरी दुनिया में पहुँचा दूंगी।

इतने ही में नीचे कोलाहल बढ़ा और इन्दुमति ने तीर मार कर और एक आदमी को गिरा दिया। फिर ऊपर से आवाज आई—"शाबाश इन्दु शाबाश! तू मुझे नीचे उतरने दे, फिर देख मैं तेरे दुश्मनों से कैसा बदला लेता हूँ!!"

इन्दु०। कदापि नहीं, मैं अपने दुश्मनों से आप समझ लूंगी।

आवाज०। और जब तुम्हारे तीर खत्म हो जायंगे तो तुम क्या करोगी?

इन्दुमति०। मेरे तीरों की गिनती दुश्मनों की गिनती से बहुत ज्यादा है, तुम इसकी चिन्ता न करो और चुपचाप बैठे रहो।

आवाज०। नहीं इन्दु नहीं, तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे दुश्मन यहां बहुत ज्यादा हैं, थोड़ी देर में वे सब इकट्ठे हो जायंगे और तब तुम्हारे तीरों की गिनती कुछ काम न करेगी।

इन्दु०। ऐसी अवस्था में तुम्हीं क्या कर सकते हो जो एक औरत का मुकाबला करके नीचे नहीं उतर सकते! खबरदार! व्यर्थ की बकवाद करके मेरा समय नष्ट न करो!!

फिर नीचे कोलाहल बढ़ा और इन्दुमति के तीर ने पुनः एक आदमी का काम तमाम किया। इन्दु के ऊपर की तरफ बैठा हुआ आदमी नीचे उतरने लगा और बोला, "खबरदार इन्दु, मुझ पर तीर न चलाइयो और सच जानियो कि मैं भूतनाथ हूं और अब नीचे उतरे बिना नहीं रह सकता!"

इन्दु०। मैं जरूर तीर मारूंगी और भूतनाथ के नाम का मुलाहिजा न करूंगी।

इतना कह कर इन्दु ने उसकी तरफ तीर सीधा किया मगर घबड़ा कर दिल में सोचने लगी कि कहीं वह भूतनाथ ही न हो। उसी समय किसी हर्बे की चमक उसकी आंखों में पड़ी और उसकी तेज अक्ल ने तुरत समझ लिया कि यह बरछी

है जिससे कुछ आगे बढ़ कर वह जरूर मुझ पर हमला करेगा, अस्तु दिल कड़ा करके इन्दु ने उस पर तीर चला ही दिया जो कि उसके मोढ़े में लगा, मगर इस चोट को सह कर और कुछ नीचे उतर कर उसने इन्दु पर बरछी का वार किया, साथ ही इन्दु का दूसरा तीर पहुंचा जो कि न मालूम कहां लगा कि वह लुढ़क कर जमीन पर आ रहा और बेहोश हो गया। परन्तु उसकी बर्छी का वार भी खाली नहीं गया। इन्दु के जंघे में कुछ चोट आई, खून का तरारा बह चला और दर्द से वह बेचैन हो गई। कुशल हुआ कि वह बखूबी इन्दु के पास नहीं पहुंचा था अन्दाज से कुछ दूर ही था इसलिए बरछी की चोट भी पूरी न बैठी, अगर कुछ और नजदीक आ गया होता तो इन्दु भी पेड़ पर न ठहर सकती जरूर नीचे गिर पड़ती।

इन्दु जनाना थी मगर उसका दिल मर्दाना था। यद्यपि इस समय वह दुश्मनों से घिरी हुई थी और बचने की आशा बहुत कम थी तथापि उसने अपने दिल को खूब सम्हाला और दुश्मनों को अपने पास फटकने न दिया। पेड़ पर से जिस आदमी ने इंदु को जख्मी किया था इन्दु के हाथ से जख्मी होकर उसके गिरने के साथ ही नीचे वालों में खलबली मच गई। सभों ने गौर के साथ उसे देखना और पहिचानना चाहा। एक ने कहा, "यह तो भूतनाथ है!" दूसरे कहा, "फिर इन्दु ने इसे क्यों मारा!"

इत्यादि बातें होने लगीं जो इन्दु के दिल में तरह तरह का खुटका पैदा करने वाली थीं मगर उसने उसकी कुछ भी परवाह न की और दुश्मनों पर तीर का वार करने लगी। ग्यारह दुश्मनों में से सात को उसने जख्मी किया जिसमें उसके बारह तीर खर्च हुए मगर चार पांच दुश्मनों ने बड़ी चालाकी से अपने को बचाया और सर पर ढाल रख के इन्दु को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ने लगे। इन्दु ने पुनः तीर मारना आरम्भ किया मगर इसका कोई अच्छा नतीजा न निकला क्योंकि उसके चलाए हुए तीर अब ढाल पर टक्कर खा के बेकार हो जाते थे।

अब इन्दु का कलेजा धड़कने लगा। वह जख्मी हो चुकी थी और उसका तरकस भी खाली हो चला था, पेड़ पर चढ़ने वाले बड़े ही कट्टर और लड़ाके आदमी थे अतएव उन्होंने इन्दु के तीरों की कुछ भी परवाह न की और उसके पास पहुंच कर उसे गिरफ्तार करने पर ही तुल गए, ऐसी हालत देख इन्दु ने भी अपने को उनके हाथ में फंसाने की बनिस्बत जान दे देना अच्छा समझा। वह लुढ़क कर पेड़ के नीचे गिर पड़ी और सख्त चोट खाकर बेहोश हो गई।

छठवां बयान

जब इन्दु होश में आई और उसने आंखें खोलीं तो अपने को एक सुन्दर मसहरी पर पड़े पाया और मय सामान कई लौंडियों को खिदमत के लिए हाजिर देख कर ताज्जुब करने लगी।

आंख खुलने पर इन्दु ने एक ऐसी औरत को भी अपने सामने इज्जत के साथ बैठे देखा जिसे सब हकीमिनजी के नाम से सम्बोधन करती थीं और जिसके विषय में जाना गया कि वह इन्दुमति का इलाज कर रही है।

निःसन्देह इन्दुमति को गहरी चोट लगी थी और उसे करवट बदलना भी बहुत कठिन हो रहा था ; उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि वह जीती बच गई और दुश्मनों के हाथ में फंस गई, परन्तु इस समय जितनी औरतें वहां मौजूद थीं, सभी खूबसूरत कमसिन खुशदिल हंसमुख और हमदर्द मालूम होती थीं। सभों को इस बात को फिक्र थी कि इन्दुमति शीघ्र अच्छी हो जाय और उसे किसी तरह की तकलीफ न रहे। सभी प्यार के साथ उसका खिदमत करती थीं, दिल बहलाने की बातें करती थीं, और कई उसके पास बैठी सर पर हाथ फेरती हुई प्रेम से पूछती कि 'कहो बहिन मिजाज कैसा है ? अब तुम किसी बात को चिन्ता न करो, यह घर तुम्हारे दुश्मनों का नहीं है बल्कि दोस्तों का है जो कि बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जायगा और यह भी मालूम हो जायगा कि दुश्मनों के हाथों से तुम किस तरह छुड़ा ली गईं। जरा तुम्हारी तबीयत अच्छी हो जाय तो मैं सब राम-कहानी कह सुनाऊंगी, तुम किसी तरह की चिन्ता न करो !' इत्यादि।

इन बातों से मालूम होता था कि ये सब की सब लौंडो ही न थीं बल्कि अच्छे खानदान की लड़कियां थीं और दो एक तो ऐसी थीं जो बराबरी का (बल्कि उससे भी बढ़ कर होने का) दावा रखती थीं।

यह सब कुछ था परन्तु इन्दुमति को इस बात का ठीक पता नहीं लगता था कि वह वास्तव में दुश्मनों की मेहमान है या दोस्तों की। यद्यपि उसकी हर तरह से खिदमत होती थी, उसकी खातिरदारी की जाती थी, उसे भरोसा दिलाया जाता था और जिसमें वह खुश हो वह करने के लिये सब तैयार रहती थीं यह सब कुछ था मगर फिर भी उसके दिल को भरोसा नहीं होता था।

ईसी तरह समय बीतता गया और इन्दु की तबीयत सम्हलती गई। उसे होश में आये आज तीसरा दिन है, दर्द में भी बहुत कमी है और वह दस बीस

कदम टहल भी सकती है। आज ही उसने कुछ थोड़ा बहुत भोजन भी किया है और इस फिक्र में तकिए का सहारा लगाए बैठी है कि आज किसी न किसी तरह इस बात का निश्चय जरूर करूंगी कि वास्तव में मैं किसके कब्जे में हूं।

उसकी खातिर करने वालियों में दो औरतें ऐसी थीं जिन पर इन्दु को भरोसा हो गया था और जिन्हें इन्दु सब से बढ़ कर उच्च कुल की नेक और होनहार समझती थी। एक का नाम कला और दूसरी का नाम विमला था। सब से ज्यादे ये ही दोनों इन्दु के साथ रहा करती थीं।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है। चिन्तानिमग्न इन्दु अपनी चारपाई पर लेटी हुई तरह तरह की बातें सोच रही थी। उसी के पास दो चारपाइयां और बिछी हुई थीं जो कला और विमला के सोने के लिए थीं। कला अपनी चारपाई पर नहीं बल्कि इन्दु के पास उसकी चारपाई का ढासना लगाये बैठी हुई थी मगर बिमला अभी तक यहां आई न थी। कई सायत तक सन्नाटा रहने बाद इन्दु ने बात चीत शुरू की।

इन्दु०। कला, कुछ समझ में नहीं आता कि तू मुझसे यहां का भेद क्यों छिपाती है और साफ साफ क्यों नहीं कहती कि यह किसका मकान है।

कला०। बहिन, मैं जो तुमसे कह चुकी कि यह तुम्हारे दुश्मन का मकान नहीं है बल्कि तुम्हारे दोस्त का है तो फिर क्यों तरद्दुद करती हो?

इन्दु०। तो क्या मैं अपने दोस्त का नाम नहीं सुन सकती? आखिर नाम छिपाने का सबब ही क्या है?

कला०। छिपाने का सबब केवल इतना ही है कि यहां का हाल सुन कर जितना तुम्हें आनन्द होगा उतना ही बल्कि उससे ज्यादे दुःख होगा और हकीमजी का हुक्म है कि अभी तुम्हें कोई ऐसी बात न कही जाय जिससे रञ्ज हो।

इन्दु०। यह कोई बात नहीं है, अगर है तो हकीमजी का केवल नखरा है और तुम लोगों का बहाना।

कला०। अगर तुम ऐसा ही समझती हो तो लो आज मैं वह सब हाल कह दूंगी मगर शर्त यह है कि सिवाय बिमला के और किसी को भी मालूम न हो कि मैंने तुमसे कुछ कहा था।

इन्दु०। नहीं नहीं, मैं कसम खाकर कहती हूं कि अपनी जुबान से किसी से भी कुछ न कहूंगी।

कला०। अच्छा तो कुछ और रात बीत जाने दो और बिमला को भी आ जाने दो।

इतने ही में बिमला ने भी चौकठ के अन्दर पैर रक्खा।

इन्दु०। लो बिमला भी आ गई।

कला०। अच्छा हुआ मगर जरा सन्नाटा हो जाने दो!

बिमला०। (कला के पास बैठ कर) क्या बात है?

कला०। (धीरे से) ये यहां का हाल जानने के लिए बेताव हो रही हैं।

बिमला०। इनका बेताब होना उचित ही है मगर (इन्दु की तरफ देख के) आप तन्दुरुस्त हो जातीं तब इसे पूछतीं तो अच्छा था, नहीं तो......

इन्दु०। यही हठ तो और भी उत्कण्ठित करता है।

बिमला०। सुनने से आपको जितनी खुशी होगी उससे ज्यादे रंज होगा।

इन्दु०। बला से, जो होगा देखा जायगा! मगर (उदासी से) तुमसे तो मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि...

बिमला०। (इन्दु का हाथ प्रेम से दबा कर) बहिन! मैं तुमसे कोई बात नहीं छिपाऊंगी, कहूंगी और जरूर कहूँगी।

इन्दु०। तो फिर कहो।

बिम०। अच्छा सुनो मगर किसी के सामने इस बात को कभी दोहराना मत।

इन्दु०। कदापि नहीं।

बिमला०। अच्छा खैर....यह बताओ कि तुम्हें अपना मायका (बाप का घर) छोड़े कितने दिन हुए?

इन्दु०। (कुछ सोच के) लगभग एक वर्ष और सात महीने के हुए होंगे। शादी भई और मायका छूटा। तब से आज तक दुःख ही दुःख उठाती रही। मैं अपनी मां और मौसेरी बहिनों को फूट फूट कर रोती हुई छोड़ कर पति के साथ रवाना हुई थी, वह दिन कभी भूलने वाला नहीं।

इतना सुनते ही कला और बिमला की आंखों में आंसू आ गया।

बिमला०। (आंसू पोंछ कर) मुझे भी वह दिन नहीं भूलने का!

इन्दु०। (आश्चर्य से) बहिन तुम्हें वह दिन कैसे याद है, तुम वहां कहां थीं?

बिमला०। मैं थी और जरूर थी, बल्कि हम दोनों बहिनें (कला की तरफ इशारा करके) वहां थीं।

इन्दु०। सो कैसे, कुछ कहो भी तो।

बिमला०। बस इतना ही तो असल भेद है, सब बातें इसीसे सम्बन्ध रखती हैं। (धीरे से) तुम्हारी वे दोनों मौसेरी बहिन हम दोनों कला और बिमला के

नाम से आज साल भर से यहां निवास करती हैं। यद्यपि देखने में हर तरह से सुख भोग रही हैं मगर वास्तव में हमारे दुःख का कोई पारावार नहीं।

इन्दु०। (बड़े ही आश्चर्य से) यह तो तुम ऐसी बात कहती हो कि जिसका स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता? यद्यपि तुम दोनों की उम्र वही होगी, चालढाल बातचीत सब उसी ढंग की है, मगर सूरत शक्ल में जमीन अस्मान का फर्क है। ओह! नहीं, यह कैसे हो सकता है! मुझे कैसे विश्वास हो सकता है!

बिमला०। (मुस्कुरा कर) हम दोनों को सूरत शक्ल में भी किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा मैं सहज ही में विश्वास दिला दूंगी कि जो कुछ कहती हूं वह बाल बाल सच है। अच्छा ठहरो, मैं तुम्हें अभी बता देती हूँ।

इतना कह कर बिमला उठी और उसने इस कमरे के कुल दर्वाजे बन्द कर दिए।

इन्दु जब से यहां आई है तब से इसी कमरे में है, उसे इसके बाहर का हाल कुछ भी मालूम नहीं है, वह नहीं जानती कि इस कमरे के बाहर कोठरी है या दालान, बारहदरी है वा सायबान, पहाड़ है या बियाबान। होश में आने के बाद उसमें अभी बाहर निकलने की ताकत ही नहीं आई। हां इसके भीतर की तरफ दो कोठड़ी एक पायखाना और एक नहाने का घर है उन्हें इन्दु जरूर जानती है क्योंकि इन कोठड़ियों से उसे वास्ता पड़ चुका है।

बिमला इन्दु के पास से उठ कर दर्वाजा बन्द करने के बाद उसी नहाने वाली कोठड़ी में चली गई और थोड़ी ही देर में लौट आकर मुस्कुराती हुई इन्दु के पास आई और बोली, "अब तुम मुझे गौर से देखो और पहिचानो कि मैं कौन हूं।"

यद्यपि इन्दु बीमार कमजोर और हतोत्साह थी तथापि बिमला को नवीन सूरत देखते ही चौंकी और उठ कर उसके गले से लिपट गई।

बिमला०। बस समझ लो कि इसी तरह कला भी सूरत बदले हुए है। हम दोनों बहनें एक साथ एक ही अनुष्ठान साधन के लिए सूरत बदल कर ग्रहदशा के दिन काट रही हैं। जब तक कम्बख्त भूतनाथ से बदला न ले लेंगी तब तक.....

इन्दु०। (बिमला को छोड़ कर) अहा! मुझे कब आशा थी कि इस तरह अपनी बहिन जमना, सरस्वती को देखूंगी, मगर भूतनाथ........

कला०। (बिमला से) बस बहिन, अब बातें पीछे करना पहिले अपनी सूरत बदलो और उस झिल्ली* को चढ़ा कर बिमला बन जाओ, दर्वाजे खोल दो और

---

*इस झिल्ली को वैसा ही समझना चाहिए जैसा चन्द्रकान्ता चौथे भाग के आखीर में चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा ने उतार कर दिखाई थी।

आराम से बातें करो।

बिमला उठी और पुनः उसी कमरे में जाकर अपनी सूरत पहिले जैसी बना कर लौट आई। काम केवल इतना ही था कि एक अद्‌भुत झिल्ली जो अपने चेहरे से उतारी थी फिर चढ़ा कर जैसी की तैसी बन बैठी। कला ने कमरे के दर्वाजे खोल दिए और आराम के साथ बैठ कर फिर तीनों बातचीत करने लगीं।

इन्दु०। बहिन, तुमसे मिल कर मैं बहुत प्रसन्न हुई, अब तुम अपना हाल कह जाओ और यह बताओ कि यह मकान किसका है, मेरी मौसी का या मेरी मां का!

बिमला०। दोनों में किसी का भी नहीं।

इन्दु०। (ताज्जुब से) तो क्या तुम दोनों लावारिस हो गईं? कोई तुम्हारा मालिक नहीं रहा?

बिमला०। रहा और नहीं भी रहा?

इन्दु०। सो कैसी बात? यह मैं जानती हूं कि दयारामजी के मरने से तुम दोनों विधवा हो गईं क्योंकि भाग्यवश दोनों बहिनें एक ही साथ ब्याही गई थीं फिर भी हम लोगों के मां बाप ऐसे गए गुजरे नहीं कि हम लोग लावारिस समझी जांय।

बिमला०। (अपनी आंखों से आंसू पोंछ कर) नहीं लावारिस तो नहीं हैं मगर अभागी और दैव की सताई हुई जरूर हैं। हम दोनों बहिनों को मालूम हो गया कि हमारे निर्दोष पति को गदाधरसिंह ने मारा है और बस यही जान लेना हमारी इस ग्रहदशा का कारण है।

इन्दु०। (चौंक कर) हैं! कौन गदाधरसिंह?

बिमला०। वही जो हमारे ससुर का ऐयार और हमारे पति का दिली दोस्त कहलाता है।

इन्दु०। (बड़े ही आश्चर्य से) यह बात तबीयत में नहीं जमती। ऐयारी के फन से यह बिल्कुल ही विरुद्ध है। ऐयार चाहे कैसा ही बेईमान क्यों न हो मगर मालिक के साथ ऐसा फरेब कभी नहीं करेगा और गदाधरसिंह तो एक नेक ऐयार गिना जाता है, एक दफे मैंने भी उसकी सूरत देखी है।

बिमला०। बहिन, बेशक ऐसा ही है। यद्यपि अभी किसी को इस बात की खबर नहीं है, यहां तक कि मेरे मां बाप और ससुर को भी इस बात का विश्वास नहीं हो सकता मगर मुझे तो जो कुछ पता लगा है वह यही है और बहुत ठीक भी है।

कला०। और इतना भी मैं कहूंगी कि मेरे ससुर को भी इस बात का शक जरूर हो गया, खास करके तब से जब से गदाधरसिंह ने अपना काम या हमारे

यहां का रहना एक प्रकार से छोड़ दिया है, यद्यपि हमारे ससुर इस विचार को प्रकट नहीं करते ।

बिमला० । इस समय वही गदाधरसिंह तुम्हारा रक्षक बना है और भूतनाथ के नाम से तुम्हारे साथ दोस्ती दिखलाता है, मगर हम दोनों कब उस पर विश्वास करने लगीं ।

इन्दु० । (चौंक कर) हैं !! क्या वही गदाधरसिंह भूतनाथ बना है ?

बिमला० । हां वही भूतनाथ है जिसके फन्दे से बचा कर मैं तुमको यहां ले आई ।

कला० । बहिन, हम दोनो वे बातें जानती हैं जो अभी दुनिया में किसी को मालूम नहीं है या अगर मालूम है भी तो केवल दो ही चार आदमियों को ।

बिमला० । मैं भी भूतनाथ को वह मजा चखाऊंगी कि उसे नानी याद आ जायगी और वह समझ जायगा कि दुनिया में औरतें कहां तक कर सकती हैं ।

इन्दु० । तुम्हारी बातों ने तो मुझे पागल बना दिया ! मैं वे बातें सुन रही हूं। जिनके सुनने की आशा न थी । तो क्या तुम यह भी कहोगी कि गुलाबसिंह ने भी हम लोगों के साथ दगा की और जान बूझ कर हम दोनों को भूतनाथ के हवाले कर दिया ?

बिमला० । कौन गुलाबसिंह ?

इन्दु० । वही गुलाबसिंह, भानुमति वाला !

बिमला० । (कुछ सोच कर) इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती क्योंकि अभी तक मैंने तुम्हारी जुबानी तुम्हारा हाल कुछ भी नहीं सुना । मैं नहीं जानती कि तुम क्योंकर घर से निकलीं, तुम पर क्या आफतें आईं, और गुलाबसिंह ने तुम्हारे साथ क्या सलूक किया । तथापि गुलाबसिंह पर शक करने की इच्छा नहीं होती क्योंकि वह बड़ा नेक और ईमानदार आदमी है तथा हमारे घर के कई एहसान भी उसके ऊपर हैं यदि वह माने । यों तो आदमी का ईमान बिगड़ते कुछ देर नहीं लगती क्योंकि आदमी का शैतान हर दम आदमी के साथ रहता है ।

इन्दु० । ठीक है, अच्छा मैं भी अपना हाल कह सुनाऊंगी मगर पहिले यह सुन लूं कि क्योंकर यहां आई और क्योंकर तुमने मुझे दुश्मनों के हाथ से बचाया है ।

बिमला० । हां हां, मैं कहती हूं सुनो । अच्छा यह बताओ कि तुम उन दुश्मनों को जानती हो जिनके हाथ में फंसी थीं ?

इन्दु० । नहीं बिल्कुल नहीं ।

बिमला० । वे महाराज शिवदत्त के आदमी थे ।

इन्दु० । ओफ ओह, जिसके खौफ से हम लोग भागे हुए थे । मगर अभी तुम

कह चुकी हो कि मैंने तुम्हें भूतनाथ के हाथ से बचाया है।

बिमला०। हां बेशक वैसा भी कह सकते हैं क्योंकि भूतनाथ तो हम लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन ठहरा, मगर इधर तुम शिवदत्त ही के आदमियों के हाथ में फंसी थीं। इत्तिफाक से हम लोग भी उसी समय वहां जा पहुंचे और लड़ भिड़ कर उन लोगों के हाथ से तुम्हें छुड़ा लाए। बस यही तो मुख्तसर हाल है।

इन्दु०। (आश्चर्य से) तुममें इतनी ताकत कहां से आ गई कि उन लोगों से लड़ कर मुझे छुड़ा लाईं?

बिमला०। (मुस्कुराती हुई) हां इस समय मुझमें इतनी ताकत है। मेरे पास दो ऐयार हैं तथा बीस पचीस सिपाही भी रखती हूं।

इन्दु०। तो ये सब तुम्हारे बाप या ससुर के नोकर होंगे? जरूरत पड़ने पर तुम्हें उनसे इजाजत लेनी पड़ती होगी?

बिमला०। (एक लम्बी सांस लेकर) नहीं बहिन! ऐसा नहीं है। हम दोनों अपने घर और ससुराल से मंजिलों दूर पड़े हुए हैं। हम लोगों की किसी को कुछ खबर ही नहीं बल्कि यों कहना कुछ अनुचित न होगा कि अपने नातेदारों के खयाल से हम दोनों बहिनें मर चुकी हैं और किसी को खोजने या पता लगाने की भी जरूरत नहीं।

इन्दु०। (आश्चर्य से) तुम्हारी बातें तो बड़ी ही विचित्र हो रही हैं। अच्छा तो तुम यहां किसके भरोसे पर बैठी हो और तुम्हारा मददगार कौन है?

बिमला०। यह बहुत ही गुप्त बात है, तुम भी किसी से इसका जिक्र न करना। मैं यहां इन्द्रदेव के भरोसे पर हूं। वही मेरे मददगार हैं और यह उन्हीं का स्थान है। वही मेरे बाप हैं, वही मेरे ससुर हैं, और इस समय वही मेरे पूज्य इष्टदेव हैं।

इन्दु०। कौन इन्द्रदेव?

बिमला०। वही तिलिस्मी इन्द्रदेव। मेरे ससुर के सच्चे मित्र!!

इन्दु०। (सिर हिला कर) आश्चर्य! आश्चर्य!! और तुम्हारे ससुर को इस बात की खबर नहीं है।

बिमला०। हां बिल्कुल नहीं है।

इन्दु०। यह कैसी बात है?

बिमला०। ऐसी ही बात है। मैं जो कह चुकी कि उन लोगों के खयाल से हम दोनों इस दुनिया में नहीं है।

इन्दु०। आखिर उन्हें इस बात का विश्वास कैसे हुआ कि जमना और सर-

स्वती मर गईं ?

बिमला० । सो मैं नहीं जानती क्योंकि यह कार्रवाई इन्द्रदेवजी की है । मैं सयू ँ मासी (इन्द्रदेव की स्त्री) के यहां न्योते में आई थी उसी जगह उन्होंने (इन्द्रदेव ने) मुझे गुप्त भाव से बताया कि भूतनाथ ने मेरे पति के साथ कैसा सलूक किया । मालूम होते ही मेरे तनोबदन में आग सी लग गई और मैंने उसी समय उनके सामने प्रतिज्ञा की कि 'भूतनाथ से इसका बदला जरूर लूंगी।' (एक लम्बी सांस लेकर) गुस्से में प्रतिज्ञा तो कर गई मगर जब विचारा तो कहां मैं और कहां भूतनाथ । पहाड़ और राई का मुकाबला कैसा ? ऐसा खयाल आते ही मैं इन्द्रदेव के पैरों पर गिर पडी और बोली कि 'मेरी इस प्रतिज्ञा की लाज आपको है, बिना आपकी मदद के मेरी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो सकती और वैसी अवस्था में मुझे आपके सामने ही प्राण दे देना पड़ेगा' इत्यादि ।

इन्द्रदेव को भी इस अनुचित घटना का बड़ा दुःख था परन्तु मेरी उस अवस्था ने उन्हें और भी दुःखित कर दिया तथा मेरी प्रार्थना पर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया बल्कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी करना उन्होंने आवश्यक और धर्म समझ लिया । बस फिर क्या था ! मेरे मन की भई, जैसा कि मैं चाहती थी उससे बढ़ कर उन्होंने मुझे मदद दी और सच तो यह है कि उनसे बढ़ कर इस दुनिया में मुझे कोई मदद दे ही नहीं सकता । खैर मैं खुलासा हाल फिर कभी सुनाऊंगी, मुख्तसर यह है कि उन्होंने हर प्रकार की मदद करने का बन्दोबस्त करके हम दोनों को समझाया कि अब किस तरह की जिन्दगी हम दोनों को अख्तियार करनी चाहिए ।

सबसे पहिले इन्द्रदेवजी ने यही बताया कि 'प्रकट में तुम दोनों बहिनों को इस दुनिया से उठ जाना चाहिए अर्थात् तुम्हारे रिश्तेदारों के साथ ही साथ और सभों को यह मालूम हो जाना चाहिए कि जमुना और सरस्वती मर गईं ।' यह बात मुझे पसन्द आई । आखिर इन्द्रदेवजी ने हम दोनों के सूरत बदल कर रहने और अपना काम करने का बन्दोबस्त करके न मालूम हमारे रिश्तेदारों को कैसे क्या समझा दिया और क्योंकर विश्वास दिला दिया कि सब कोई हमारी तरफ से निश्चिन्त हो गए । उनकी इच्छानुसार बहुत ही गुप्त भाव से हम दोनों यहां कला और बिमला के नाम से रहती हैं । जो लोग हमारे साथ हैं वे सब इन्द्रदेवजी के आदमी हैं मगर उनको भी यह नहीं मालूम है कि हम दोनों वास्तव में जमना और सरस्वती हैं !

इन्दु० । (आश्चर्य से) क्या तुम्हारे घर में जितने आदमी हैं उनमें से किसी

को भी तुम्हारा सच्चा हाल मालूम नहीं है ?

विमला० । किसी को भी नहीं ।

इन्दु० । तो फिर मेरे बारे में तुमने लोगों को क्या समझाया है ?

विमला० । मैंने यह किसी को भी नहीं कहा कि तुम मेरी रिश्तेदार हो, केवल यही कहा है कि तुम्हें भूतनाथ तथा शिवदत्त के हाथ से बचाना हमारा धर्म है । अस्तु अब उचित यही है कि हमारी तरह तुम भी अपनी सूरत बदल कर यहां रहो और अपने दुश्मनों से बदला लो, हम लोगों का बाकी हालचाल तुम्हें आप ही धीरे धीरे मालूम हो जायगा ।

इन्दु० । ठीक है, और जैसा तुम कहती हो मैं वैसा ही करूंगी, मगर (सिर झुका कर) मेरे पति का मुझसे....

विमला० । (बात काट कर) नहीं नहीं, उनके बारे में तुम कुछ भी चिन्ता मत करो, आज मैं उनको तुम्हें जरूर दिखा दूंगी और फिर ऐसा बन्दोबस्त करूंगी कि तुम दोनों एक साथ.......

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) इससे बढ़ कर मेरे लिए और कोई दूसरी बात नहीं हो सकती, मगर यह तो बताओ कि इस समय वे कहां हैं ?

विमला० । (मुस्कुराती हुई) इस समय वे मेरे ही घर में हैं और मेरे कब्जे में हैं ।

इन्दु० । (घबड़ा कर) यह कैसी बात ? अगर यहीं हैं तो मुझे दिखाओ ।

विमला० । में दिखाऊंगी, मगर जरा रुकावट के साथ ।

इन्दु० । सो क्यों ?

विमला० । (कुछ सोच कर) अच्छा चलो पहिले मैं तुम्हें उनके दर्शन करा दूं फिर सलाह विचार कर के जैसा होगा देखा जायगा । मगर इस सूरत में मैं तुम्हें उनके सामने न ले जाऊंगी ।

इन्दु० । सो क्यों ?

विमला० । तुम अपनी सूरत बदलो और इस बात का वादा करो कि जब मैं उनके सामने तुम्हें ले जाऊं तो चुपचाप देख लेने के सिवाय उनके सामने एक शब्द भी मुंह से न निकालोगी ।

इन्दु० । आखिर इसका सबब क्या है ?

विमला० । सबब पीछे बताऊंगी ।

इन्दु० । अच्छा तो फिर जो कुछ तुम कहती हो मुझे मंजूर है ।

G'110'
1330
CS9.823

''अच्छा तो मैं भी बन्दोबस्त करती हूं।'' यह कह कर बिमला उठी और कुछ देर के लिए कमरे के बाहर चली गई। जब लौटी तो उसके हाथ में एक छोटी सी सन्दूकड़ी थी। उसी में से सामान निकाल कर उसने इन्दुमति की सूरत बदली और वैसी ही एक झिल्ली उसके चेहरे पर भी चढ़ाई जैसी आप पहिरे हुए थी। जब हर तरह से सूरत दुरुस्त हो गई तब हाथ का सहारा देकर उसने इन्दु को उठाया और कमरे के बाहर ले गई।

कमर के बाहर एक दालान था जिसके एक बगल में तो ऊपर की मंजिल में चढ़ जाने के लिए सोढ़ियां थीं तथा उसी के बगल में नीचे उतर जाने का रास्ता था और दालान के दूसरी तरफ बगल में सुरंग का मुहाना था मगर उसमें मजबूत दरवाजा लगा हुआ था। इन्दु को उसी सुरंग में बिमला के साथ जाना पड़ा।

सुरंग बहुत छोटी थी, तीस पैंतीस कदम जाने के बाद उसका दूसरा मुहाना मिल गया जहां से सुबह की सुफेदी निकल आने के कारण मैदान की सूरत दिखाई दे रही थी। जब इन्दुमति वहां हद्द पर पहुंची तब उसकी आंखों के सामने वही सुन्दर घाटी या मैदान तथा बंगला था जिसका हाल हम इस भाग के चौथे बयान में लिख आए हैं या यों कहिए कि जहां पर एक पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर प्रभाकरसिंह ने तारा को बैठा देखा था।

वही त्रिकोण घाटी और वही सुन्दर बंगला जिसके चारों कोनों पर मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ थे इन्दुमति की आंखों के सामने था जिन्हें वह बड़े गौर से देख रही थी बल्कि यों कहना चाहिए कि वहां की सुन्दरता और कुदरती गुलबूटों ने इन्दु की निगाह पड़ने के साथ ही लुभा लिया और इसके साथ ही प्रभाकरसिंह की याद ने आंसू बन कर निगाह के आगे पर्दा डाल दिया।

आँखें साफ करके वह हर एक चीज को गौर से देखने लगी। इसी बीच एक चट्टान पर बैठे हुए प्रभाकरसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जिनके चारो तरफ कुदरती सुन्दर पौधे और खुशरंग फूलों के पेड़ बहुतायत से थे जो उदास आदमी के दिल को भी अपनी तरफ खींच लेते थे और जिन पर सूर्य भगवान की ताजी ताजी किरणें पड़ रही थीं।

आह, प्रभाकरसिंह को देख कर इन्दुमति की कैसी अवस्था हो गई यह लिखना हमारी सामर्थ्य के बाहर है। वह कुछ देर तक एक टक उनकी तरफ देखती रही। न तो वहां से नीचे की तरफ उतरने का कोई रास्ता था और न वह यही जानती थी कि वहां तक क्योंकर पहुंच सकेगी, अस्तु वह बेचैन होकर घूमी और यह कहती

हुई बिमला के गले से लिपट गई कि 'बहिन, तुम बेशक तिलिस्म की रानी हो गई हो!'

बिमला० । बहिन, घबड़ाओ मत, जरा गौर से देखो तो......

इन्दु० । (बिमला को छोड़ कर) तो क्या जो कुछ मैं देख रही हूं केवल भ्रम है?

बिमला० । नहीं ऐसा नहीं है।

इन्दु० । तो फिर यह स्थान किसका है?

बिमला० । इस समय तो मेरा ही है।

इन्दु० । तो क्या ये भी तुम्हारे ही मेहमान हैं?

बिमला० । बेशक।

इन्दु० । कब से?

बिमला०। कई दिनों से, या यों कहो कि जब से तुम आई हो उससे भी पहिले...

इन्दु० । (आश्चर्य दुःख और क्लेश से) तब तुमने इनसे मुझे मिलाया क्यों नहीं बल्कि हाल तक नहीं कहा ऐसा क्यों?

बिमला० । इसके कहने का मौका ही कब मिला! आज ही तो इस योग्य हुई हो कि कुछ बातें कर सकूं। इसके अतिरिक्त तुम्हारी मुलाकात के बाधक वे स्वयं भी हो रहे हैं। जिस तरह तुम मेरा साथ दिया चाहती हो उस तरह वे मेरा साथ नहीं दिया चाहते, जिस तरह तुमसे मुझे उम्मीद है उस तरह उनसे नहीं, जिस तरह तुम मेरा पक्ष कर सकोगी सकती हो और करोगी उस तरह वे नहीं करते बल्कि आश्चर्य यह है कि वे भूतनाथ के पक्षपाती हैं और इसी बात का उन्हें हठ है, फिर तुम ही सोचो कि मैं क्योंकर........

इन्दु० । (जोर देकर) नहीं बहिन! ऐसी भला क्या बात है। उन्हें सच्चे मामले की खबर न होगी!

बिमला० । सब कुछ खबर है। इसी वास्ते मैं उन्हें यहां लाई थी और भूतनाथ के कब्जे से पहले हो दिन जब तुम लोग सुरंग में घुसे थे छुड़ाने का उद्योग किया था परन्तु खेद है कि वे (प्रभाकरसिंह) तो मेरे कब्जे में आ गए और तुम आगे निकल गईं जिससे तुम्हें इतना कष्ट भी भोगना पड़ा।

इन्दु० । (आश्चर्य से) सो कैसी बात? क्या तुम्हीं ने उन्हें मुझसे जुदा किया था?

बिमला० । हां ऐसा ही है। (हाथ का इशारा करके) बस इसी घाटी के बगल ही में उस तरफ भूतनाथ का स्थान है, रास्ता भी करीब करीब मिलता जुलता है। भूतनाथ की घाटी में आने के लिए जो रास्ता या सुरंग है उसी में से एक

रास्ता हमारे यहां भी आने के लिए है, इसके अतिरिक्त यहां आने के लिए एक रास्ता और भी है जिससे प्रायः हम लोग आया जाया करते हैं। जिस समय तुम लोग भूतनाथ के साथ सुरंग में घुसे थे उस समय मैं देख रही थी।

इन्दु०। फिर तुमने कैसे उन्हें बुला लिया ?

इसके जवाब में बिमला ने खुलासा हाल जिस तरह प्रभाकरसिंह को सुरंग के अन्दर धोखा देकर अपने कब्जे में ले आई थी बयान किया जो कि हम चौथे बयान में लिख चुके हैं।

अब हमारे पाठक समझ गए होंगे कि भूतनाथ के पीछे पीछे सुरंग के अन्दर चलने वाले प्रभाकरसिंह को जिन्होंने धोखा देकर गायब किया वे बिमला और कला यही दोनों बहिनें थीं और यह काम उन्होंने नेकनीयती के साथ किया था ऐसा ही इन्दुमति का विश्वास है।

खुलासा हाल सुन कर इन्दुमति कुछ देर तक चुप रही फिर बोली—

इन्दु०। अच्छा यह बताओ कि मेरे आने की उन्हें खबर भी है या नहीं ?

बिमला०। कुछ कुछ खबर है! तुम्हारे लिए वे बहुत ही बेचैन हैं, कलपते हैं, रोते हैं, मगर फिर भी भूतनाथ का पक्ष नहीं छोड़ते।

इन्दु०। तुमने अपने को उन पर प्रकट कर दिया ?

बिमला०। हां, भेद छिपा रखने की कसम खिला कर मैंने उन्हें बतला दिया कि हम दोनों बहिनें जमना और सरस्वती हैं जिसे जान कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए मगर इस बात पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि भूतनाथ मेरे पति का घातक है। गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और गुलाबसिंह पर उन्हें पूरा विश्वास है।

इन्दु०। अच्छा तुम मुझे उनके सामने ले चलो, देखें वे क्योंकर राजी नहीं होते और कैसे तुम्हारा साथ नहीं देते।

बिमला०। मुझे इसमें कोई उज्र नहीं है मगर तुम हर एक बात को अच्छी तरह सोच विचार लो।

इन्दु०। (जोर देकर) कोई परवाह नहीं, तुम वहां चलो, (कुछ सोच के) मगर मैं अपनी असली सूरत में उनके सामने जाऊंगी !

बिमला०। जैसी तुम्हारी मर्जी। चलो पीछे की तरफ लौटो, एक सुरंग के रास्ते पहिले (उंगली का इशारा करके) उस बीच वाले बंगले में पहुंचना होगा तब उनके पास जा सकोगी।

सातवां बयान

प्रभाकरसिंह को इस घाटी में आए यद्यपि आज लगभग एक सप्ताह के हो गया मगर दिली तकलीफ के सिवाय और किसी बात की उन्हें तकलीफ नहीं हुई। नहाने धोने खाने पीने सोने पहिरने इत्यादि सभी तरह का आराम था परन्तु इन्दु के लिए वे बहुत ही बेचैन और दुःखी हो रहे थे। जिस समय वे उस घाटी में आये थे उस समय बल्कि उसके दो तीन घंटे बाद तक ये बड़े ही फेर और तरद्दुद में पड़े रहे क्योंकि कला और बिमला ने उनके साथ बड़ी दिल्लगी की थी, मगर इसके बाद उनकी घबराहट कम हो गई जब कला और बिमला ने उन्हें बता दिया कि वे दोनों वास्तव में जमना और सरस्वती हैं।

पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर बैठने वाली औरत ने उन्हें थोड़ी देर के लिए बड़े ही धोखे में डाला। जब उन्होंने पेड़ पर चढ़ने का इरादा किया तो वहां पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने गड़बड़ मचा दिया। दौड़ते हुए और कई आदमियों को बुला लाए जिन्होंने प्रभाकरसिंह को घेर लिया मगर किसी तरह की तकलीफ नहीं दी और न कोई कड़ी बात ही कही।

दोनों नौजवान लड़कों के हल्ला मचाने पर जितने आदमी वहां इकट्ठे हो गए थे वे सब कद में छोटे बल्कि उन्हीं दोनों नौजवान सिपाहियों के बराबर थे जिन्हें देख प्रभाकरसिंह ताज्जुब करने लगे और विचारने लगे कि क्या वे लोग वास्तव में मर्द हैं?

पहिले तो क्रोध के मारे प्रभाकरसिंह की आंखें लाल हो गई मगर जब कुछ सोचने विचारने पर उन्हें मालूम हो गया कि ये सब मर्द नहीं औरतें हैं तब उनका गुस्सा कुछ शान्त हुआ और उन सभों की इच्छानुसार वे उस बंगले के अन्दर चले गए जिसमें छोटे बड़े सब मिला कर ग्यारह कमरे थे।

बीच वाले बड़े कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ था। वहां पहुंचने के साथ ही बिमला पर उनकी निगाह पड़ी और वे पहिचान गए कि मुझे भुलावा देकर यहां लाने वालियों में से यह भी एक औरत है जो बड़ी ढिठाई के साथ इस अनूठे ढंग पर इस्तकबाल कर रही है।

प्रभाकरसिंह ने बिमला से कहा, "मालूम होता है कि यह मकान आप ही का है।"

बिमला०। जी हां समझ लीजिए कि आप ही का है।

प्रभाकर०। अच्छा तो मैं पूछता हूं कि तुमने मेरे साथ ऐसा खोटा बर्ताव क्यों किया?

बिमला० । मैंने आपके साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया बल्कि सच तो यों है कि आपको एक भयानक खोटे बेईमान और झूठे ऐयार के पंजे से बचाने का उद्योग किया जो कि सिवाय बुराई के कभी कोई भलाई का काम आपके साथ नहीं कर सकता था । अफसोस, आपको तो हम उसके फन्दे से निकाल लाए मगर बेचारी इन्दु फंसी रह गई जिसे बचाने के लिये हम लोग तन मन धन सभी अर्पण कर देंगे ।

प्रभाकर० । इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन्दु के लिये मुझे बहुत बड़ी चिन्ता है और मैं यह नहीं चाहता कि वह किसी अवस्था में भी मुझसे अलग हो, मगर मैं इस बात का कभी विश्वास नहीं कर सकता कि भूतनाथ हम लोगों के साथ खोटा बर्ताव करेगा । मैं गुलाबसिंह की बात पर दृढ़ विश्वास रखता हूं जिसने उसकी बड़ी तारीफ मुझसे की थी ।

बिमला० । नहीं ऐसा नहीं है, वह...

प्रभा० । (बात काट कर) तुम्हारी बात मान लेना सहज नहीं है जिसने खुद मेरे साथ बुराई की ! (क्रोध की मुद्रा से) बेशक तुमने मेरे साथ दुश्मनी की कि इन्दु को मुझसे जुदा करके एक आफत में डाल दिया ! क्या जाने इस समय उस पर क्या बीत रही होगी !! हां कहां है वह जिसे मैं अपनी साली समझता था और जिसकी बात मान कर मैंने यह कष्ट उठाया ! क्या अब वह अपना मुंह न दिखलावेगी ?

बिमला० । आप क्रोध न करें, आपकी साली जरूर आपके सामने आवेगी और उसके साथ साथ मैं भी इस बात को साबित कर दूंगी कि हम लोग आपके साथ दुश्मनी नहीं करते । इन्दु हमारी बहुत ही प्यारी बहिन है और उसे हम लोग हद से ज्यादे प्यार करते हैं, जिस तरह......

प्रभाकर० । (सिर हिला कर) नहीं नहीं, अगर तुम इन्दु को प्यार करती होतीं तो उसे इस तरह मुझसे अलग कर के संकट में न डालतीं । कुछ देर के लिए यह भी मान लिया जाय कि भूतनाथ हमारा दुश्मन है, गुलाबसिंह ने हमसे जो कुछ कहा वह झूठ था, और तुमने वास्तव में हमें एक दुश्मन के हाथ से बचाना चाहा, मगर फिर भी यह कहना पड़ेगा कि वहां से बचा लाने के लिए वह ढंग अच्छा न था जो तुमने किया । अच्छा होता यदि तुम मुझे यहां ले आने के बदले में उस जगह केवल इतना ही कह देतीं कि 'देखो खबरदार हो जाओ, भूतनाथ का विश्वास मत करो, इन्दु को लेकर निकल भागो और फलानी राह से मेरे पास चले आओ ।' बस अगर तुम ऐसा करतीं तो मैं तुम्हारी इज्जत करता !

बिमला० । ठीक है मगर मुझे विश्वास नहीं था कि आप यकायक मेरी बात मान जाएंगे ।

"यह सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह एक उचित स्थान पर बैठ गए और बिमला भी उनके सामने बैठ गई।

प्रभाकर०। (कई सायत तक कुछ सोचने के बाद) खैर पहिले यह बताओ कि जमना कहां हैं जिसके कारण मैं यहां तक आया?

बिमला०। वे भी इसी जगह कहीं हैं, डर के मारे आपके सामने नहीं आतीं। उन्होंने मुझे यह कह कर आपके पास भेजा है कि 'जीजाजी से मेरा प्रणाम कहो और यह कहो कि मैं यहां बड़े संकट में पड़ी हुई ग्रहदशा के दिन काट रही हूं। किसी कारण वश हर वक्त अपनी सूरत बदले रहती हूं। दुश्मन पड़ोस में है जिसका हर दम डर ही लगा रहता है, अस्तु यदि आप मेरी रक्षा करने और मेरा भेद छिपाये रहने की प्रतिज्ञा करें तो मैं आपके सामने आऊं नहीं तो......

प्रभाकर०। (आश्चर्य से) वाह वाह वाह!! (कुछ देर तक सोच कर) खैर जो कुछ हो, जमना को मैं इज्जत के साथ प्यार करता हूं, वह मेरी बहुत ही नेक साली है। यद्यपि उसका यहां होना मेरे लिए एक ताज्जुब की बात है तथापि उसे देख कर मैं बहुत प्रसन्न होऊंगा। यदि यह उसी का मकान है तो मैं विशेष चिन्ता भी न करूंगा। तुम शीघ्र जाकर उसे कह दो कि मेरे सबब से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती, तुम्हारे भेद तुम्हारी इच्छानुसार मैं जरूर छिपाऊंगा।

प्रभाकरसिंह की बात समाप्त होते ही प्रसन्नता के साथ बिमला ने अपने चेहरे पर से झिल्ली उतार कर अलग रख दी और प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभाकर०। (बिमला को पैरों पर से उठा कर) जमना? अहा, क्या तुम वास्तव में जमना हो?

बिमला०। जी हां, मैं वास्तव में जमना हूं, इसमें आप कुछ भी सन्देह न करें। ज्यादे देर तक तरद्दुद में न डाल कर मैं अभी आपका भ्रम दूर कर देती हूं। अपने जमना होने के सबूत में मैं आपको उस दिन की चिकोटी याद दिलाती हूं जिस दिन मेरे यहां सत्यनारायण की कथा थी और जिसका हाल सिवाय आपके और किसी को मालूम नहीं है।

प्रभाकर०। (प्रसन्न होकर) बेशक, बेशक, अब मुझे कुछ भी सन्देह नहीं रहा, परन्तु आश्चर्य! आश्चर्य!! तुम्हारे ससुर ने हाल ही में अपने हाथ से मुझे चीठी लिखी थी कि जमना और सरस्वती दोनों मर गई हैं! मैंने यह हाल अभी तक तुम्हारी बहिन इन्दु से नहीं कहा क्योंकि इस संकट के जमाने में इस खबर को सुना कर उन्हें और भी दुख देना मैंने उचित नहीं जाना। मगर अब मुझे कहना

पड़ा कि तुम्हारे ससुर ने मुझे झूठ लिखा, न मालूम क्यों ?

बिमला० । नहीं नहीं, उन्होंने झूठ नहीं लिखा, उन्हें यही मालूम है कि जमना सरस्वती दोनों मर गईं, मगर वास्तव में हम दोनों जीती हैं।

प्रभाकर० । यह तो तुम और भी आश्चर्य की बात सुनाती हो !

बिमला० । आपके लिए बेशक आश्चर्य की बात है । इसी से तो मैंने आपसे प्रतिज्ञा करा ली कि मेरे भेद आप छिपाये रहें, जिनमें से एक यह भी बात है कि हमारा जीते रहना किसी को मालूम न होने पाये ।

इतना कह कर बिमला ने ताली बजाई । उसी समय तेजी के साथ सरस्वती (कला) एक दर्वाजा खोल कर कमरे के अन्दर आई और प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी । प्रभाकरसिंह ने प्रेम से उसे उठाया और कहा, "आह ! मैं इस समय तुम दोनों को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि सुरंग में तुम दोनों को देखना विश्वास के योग्य न था । अब यह मालूम होना चाहिये कि तुम लोग यहां क्यों, किसके भरोसे पर और किस नीयत से रहती हो, तथा बाहर मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ पर मैंने किसे देखा ? नहीं नहीं, वह इस सरस्वती के सिवाय कोई और न थी, मैं पहिचान गया, इसी की सूरत इन्दु से विशेष मिलती है !"

बिमला० । बेशक वह सरस्वती ही थी, क्षण भर के लिए इसने आपके साथ दिल्लगी की थी ।

कला०। (मुस्कुराती हुई) मगर जो कुछ मैं किया चाहती थी वह न कर सकी।

प्रभाकर० । वह क्या ?

कला० । बस अब उसका कहना ठीक नहीं ।

प्रभाकर० । अच्छा यह बताओ कि तुम लोग यहां छिप कर क्यों रहती थीं ।

बिमला० । इसलिए कि कम्बख्त भूतनाथ से बदला लेकर कलेजा कुछ ठंढा करें । आपको नहीं मालूम कि वह मेरे पति का घातक है । उसने अपने हाथ से उन्हें मार कर हम दोनों बहिनों को विधवा बना दिया !!

प्रभाकर० । (आश्चर्य से) यह तुम क्या कह रही हो ?

बिमला० । बेशक ऐसा ही है । आपने उस कमीने को पहिचाना नहीं ! वह वास्तवमें गदाधरसिंह है, सूरत बदले हुए चारो तरफ घूम रहा है । आज कल वह अपनी नौकरी पर अर्थात् मेरे ससुर के यहां नहीं रहता ।

प्रभाकर० । यह तो मुझे भी मालूम है कि आज कल गदाधरसिंह लापता हो रहा है और किसी को उसका ठीक हाल मालूम नहीं, है मगर यह बात मेरे दिल

में नहीं बैठती कि भूतनाथ वास्तव में वही गदाधरसिंह है।

बिमला०। मैं जो कहती हूं, बेशक ऐसा ही है।

प्रभाकर०।(सिर हिला कर) शायद हो।(कुछ सोच कर) खैर पहिले मैं इन्दु को उसके यहां से हटाऊंगा और तब साफ साफ उससे पूछूंगा कि बताओ तुम गदाधरसिंह हो या नहीं? मगर फिर भी इसका सबूत मिलना कठिन होगा कि दयाराम को उसी ने मारा है।

बिमला०। नहीं नहीं, आप ऐसा कदापि न करें, नहीं तो हमारा सब उद्योग मिट्टी में मिल जायगा।

प्रभाकर०। नहीं मैं जरूर पूछूंगा और यदि तुम्हारा कहना ठीक निकला तो मैं स्वयम उससे लड़ूंगा।

बिमला०। (उदासी से) ओह! तब तो आप और भी अंधेर करेंगे!!

प्रभाकर०। नहीं, इस विषय में मैं तुमसे राय न लूंगा।

बिमला०। तब आप अपनी प्रतिज्ञा भंग करेंगे।

प्रभाकर०। ऐसा भी न होने पावेगा। (कुछ सोच कर) खैर यह तो पीछे देखा जायगा, पहिले इन्दु की फिक्र करनी चाहिए। यद्यपि गुलाबसिंह उसके साथ हैं, अभी यकायक उसे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती।

बिमला०। मैं उसके लिए बन्दोबस्त कर चुकी हूं, आप बेफिक्र रहें।

प्रभाकर०। भला मैं बेफिक्र क्योंकर रह सकता हूं? मुझे यहां से जाने दो, भूतनाथ के घर जाकर सहज ही में यदि तुम चाहती हो तो उसे यहां तुम्हारे पास ले आऊंगा!

बिमला०। जी नहीं ऐसा करने से मेरा भेद खुल जायगा। वह बड़ा ही काइयां है, बात ही बात में आपसे पता लगा लेगा कि उसकी घाटी के साथ एक और स्थान है जहां कोई रहता है। अभी उसे यह मालूम नहीं।

प्रभाकर०। नहीं नहीं, मैं किसी तरह तुम्हारा भेद खुलने न दूंगा।

बिमला०। अस्तु इस समय तो आप रहने दीजिए, पहिले जरूरी कामों से निपटिए, स्नान ध्यान पूजा पाठ कीजिए, भोजन इत्यादि से छुट्टी पाइए, फिर जैसी राय होगी देखा जायगा। मैं कुछ इन्दु बहिन की दुश्मन तो हूं नहीं जो उसे तकलीफ होने दूंगी बल्कि आपसे ज्यादे मुझे खुटका लगा हुआ है। अगर वह यहां न आई तो मैंने किया ही क्या!

प्रभाकर०। खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, थोड़ी देर के लिए ज्यादे जोर देने की भी अभी जरूरत नहीं।

बिमला०। अच्छा तो अब आप कुछ देर के लिए हम दोनों को छुट्टी दीजिए, मैं आपके लिए खाने पीने का इन्तजाम करूं, तब तक आप इस (उंगली का इशारा करके) कोठरी में जाइए और फिर बंगले के बाहर जाकर मैदान और कुदरती बाग में जहां चाहिए घूमिए फिरिये, मैं बहुत जल्द हाजिर होऊंगी। मगर आप इस बात का खूब ख्याल रखियेगा कि अब हम दोनों को जमना और सरस्वती के नाम से सम्बोधन न कीजियेगा और न हम दोनों घड़ी घड़ी जमना और सरस्वती की सूरत में आपको दिखाई देंगी। हम दोनों का नाम बिमला और कला बस यही ठीक है।

इसके बाद और भी कुछ समझा बुझा कर कला को साथ लिए हुए बिमला कमरे के बाहर चली गई।

प्रभाकरसिंह भी उठ खड़े हुए और कुछ सोचते हुए उस कमरे में टहलने लगे। वे सोचने लगे—क्या जमना का कहना सच है? क्या भूतनाथ वास्तव में गदाधरसिंह ही है? फिर मैंने उसे पहिचाना क्यों नहीं? संभव है कि रात का समय होने के कारण मुझे धोखा हुआ हो या उसी ने कुछ सूरत बदली हुई हो! मेरा ध्यान भी तो इस तरफ़ नहीं था कि गौर से उसे देखता और पहिचानने की कोशिश करता, लेकिन अगर वह वास्तव में गदाधरसिंह है तो निःसन्देह खोटा है और कोई भारी घात करने के लिए उसने यह ढंग पकड़ा है। ऐयार भी तो पहले दर्जे का है, वह जो न कर सके थोड़ा है, मगर ऐसा तो नहीं हो सकता कि उसने दयाराम को मारा हो। अच्छा उसने रणधीरसिंह का घर क्यों छोड़ दिया जिनका ऐयार था और जो बड़ी खातिर से उसे रखते थे? सम्भव है कि दयाराम के मारे जाने पर उसने उदास होकर अपना काम छोड़ दिया हो, या यह भी हो सकता है कि दयाराम के दुश्मन और खूनी का पता लगाने ही के लिए उसने अपना रहन सहन का रंग ढंग बदल दिया हो। अगर ऐसा है तो रणधीरसिंहजी इस बात को जानते होंगे। गुलाबसिंह ने वह भेद मुझ पर क्यों नहीं खोला? हो सकता है कि उन्हें यह सब हाल मालूम न हो या वे धोखे में आ गए हों, परन्तु नहीं गदाधरसिंह तो ऐसा आदमी नहीं था। अस्तु जो हो, बिना विचारे और अच्छी तरह तहकीकात किए किसी पक्ष को मजबूती के साथ पकड़ लेना उचित नहीं है। इसके अलावे यह भी तो मालूम करना चाहिए कि जमना और सरस्वती इस तरह स्वतंत्र क्यों हो रही हैं और उन्होंने अपने को मुर्दा क्यों मशहूर कर दिया तथा यह अनूठा स्थान इन्हें कैसे मिल गया और यहां किसका सहारा पाकर ये दोनों रहती हैं। भूतनाथ से दुश्मनी रखना और बदला लेने का व्रत धारण करना कुछ हंसी खेल

नहीं है और इस तरह रहने से रुपये पैसे की भी कम जरूरत नहीं है। आखिर यह है क्या मामला ! यह तो हमने पूछा ही नहीं कि यह स्थान किसका है और तुम लोग आज कल किसकी होकर रहती हो। खैर अब पूछ लेंगे। कोई न कोई भारी आदमी इनका साथी जरूर है, उसे भी भूतनाथ से दुश्मनी है। क्या इन दोनों पर व्यभिचार का दोष भी लगाया जा सकता है ? कैसे कहें 'हां' या 'नहीं', ऐसे छोटे दिल की तो ये दोनों थीं नहीं। मगर ये सती और साध्वी हैं तो इनका मददगार भी कोई इन्हीं का रिश्तेदार जरूर होगा, मगर वह भी कोई साधारण व्यक्ति न होगा जिसका यह अनूठा स्थान है। हां यह भी तो है कि यदि ये दोनों व्यभिचारिणी होतीं तो मुझे यहां न लातीं और इन्दु को भी लाने की चेष्टा न करतीं...मगर अभी यह भी क्योंकर कह सकते हैं कि इन्दु को यहां लाने की चेष्टा कर रही हैं ! अच्छा जो होगा देखा जायगा, चलो पहिले मैदान में घूम आवें तब फिर उन दोनों के आने पर बातचीत से सब मामले की थाह लेंगे।"

प्रभाकरसिंह दरवाजा खोल कर उस कोठड़ी में घुस गए जिसकी तरफ बिमला ने इशारा किया था। उसके अंदर नहाने तथा संध्या पूजा करने का पूरा पूरा सामान करीने से रक्खा हुआ था, बल्कि एक छोटी सी आलमारी में कुछ जरूरी कपड़े और भोजन करने के अच्छे अच्छे पदार्थ भी मौजूद थे। प्रभाकरसिंह ने अपनी ढाल तरवार एक खूंटी से लटका दी और तीर कमान भी एक चौकी पर रख कर कपड़े का कुछ बोझ हलका किया और जल से भरा हुआ लोटा उठा कर कोठड़ी के बाहर निकले। कई कदम आगे गए होंगे कि कुछ सोच कर लौटे और उस कोठड़ी में जा कर अपनी तलवार खूंटी पर से उतार लाये और बंगले के बाहर निकले।

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था और धूप में गर्मी ज्यादे आ चुकी थी मगर उस सुन्दर घाटी में जिसमें पहाड़ी से सटा हुआ एक छोटा सा चश्मा भी बह रहा था, जंगली गुलबूटे और सुन्दर पेड़ों की बहुतायत होने के कारण हवा बुरी नहीं मालूम होती थी। प्रभाकरसिंह पूरब तरफ मैदान की हद तक चले गए और नहर लांघ कर पहाड़ी के कुछ ऊपर बढ़ गए जहां पेड़ों का एक बहुत अच्छा छोटा सा झुरमुट था। जब कुछ देर बाद वहां से लौटे तो नहाने और संध्या पूजा के लिए इन्हें वह चश्मा ही प्यारा मालूम हुआ अस्तु वे उसके किनारे एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गए।

घंटे डेढ़ घंटे के अन्दर ही प्रभाकरसिंह सब जरूरी कामों से निश्चिन्त हो गए तथा अपने कपड़े भी धोकर सुखा लिए। इसके बाद उस बंगले में पहुंचे और

इस आशा में थे कि जमना और सरस्वती यहां आ गई होंगी मगर एक लौंडी के सिवाय वहां और किसी को भी न देखा जिसकी जुबानी मालूम हुआ कि 'उनके आने में अभी घंटे भर की देर है, तब तक आप कुछ जल खा लीजिए जिसका सामान उस नहाने वाली कोठड़ी में मौजूद है।"

"अच्छा" कह कर प्रभाकरसिंह ने उस लौंडी को तो बिदा कर दिया और आप एक किनारे फर्श पर तकिए का सहारा लेकर लेट गए और कुछ चिन्ता करने लगे।

घंटा भर क्या कई घंटे बीत गये पर जमना और सरस्वती न आईं और प्रभाकरसिंह तरह तरह की चिन्ता में डूबे रहे, यहां तक कि उन्होंने कुछ जलपान भी न किया। जब थोड़ा सा दिन बाकी रह गया तब वह घबड़ा कर बंगले के बाहर निकले और मैदान में घूमने लगे। अभी उन्हें घूमते हुए कुछ ज्यादे देर नहीं हुई थी कि एक लौंडी बंगले के अन्दर से निकली और दौड़ती हुई प्रभाकरसिंह के पास आई तथा एक चीठी उनके हाथ में देकर जवाब का इन्तजार किए बिना ही वापस चली गई।

प्रभाकरसिंह ने चीठी खोल कर पढ़ी, यह लिखा हुआ था :—

"श्रीमान् जीजाजी,

मैं एक बड़े ही तरद्दुद में पड़ गई। मुझे मालूम हुआ है कि इन्दु बहिन बुरी आफत में पड़ा चाहती हैं, अस्तु मैं उन्हीं की फिक्र में जाती हूं। लौट कर आपसे सब समाचार कहूँगी। आशा है कि तब तक आप सब्र के साथ यहां रहेंगे।

बिमला।"

इस चीठी ने प्रभाकरसिंह को बड़े ही तरद्दुद में डाल दिया और तरह तरह की चिन्ता करते हुए वह उस मैदान में टहलने लगे। उन्हें कुछ भी सुध न रही कि किस तरफ जा रहे हैं और किधर जाना चाहिए। उत्तर तरफ का मैदान समाप्त करके वे पहाड़ी के नीचे पहुँचे और कई सायत तक रुके रहने के बाद एक पगडंडी देख ऊपर की तरफ चलने लगे।

लगभग तीस या चालीस कदम के ऊपर गये होंगे कि एक छोटा सा काठ का दर्वाजा नजर आया जिस पर साधारण जंजीर चढ़ी हुई थी।

वे इस दरवाजे को देख कर चौंके और चारो तरफ निगाह दौड़ा कर सोचने लगे, "हैं, यह दरवाजा कैसा? मैं तो बिना इरादा किए ही यकायक यहाँ आ पहुंचा। मालूम होता है कि यह कोई सुरंग है। मगर इसके मुंह पर किसी तरह की हिफाजत क्यों नहीं है? यह दरवाजा तो एक लात भी नहीं सह सकता। शायद

इसके अन्दर किसी तरह की रुकावट हो जैसी कि उस सुरंग के अन्दर थी जिसकी राह से मैं यहां आया था ? खैर इसके अन्दर चल के देखना तो चाहिए कि क्या है ! कदाचित् इस कैदखाने के बाहर ही निकल जाऊं । बेशक यह स्थान सुन्दर और सुहावना होने पर भी मेरे लिए कैदखाना ही है । यदि इस राह से मैं बाहर निकल गया तो बड़ा ही अच्छा होगा, मैं इन्दु को जरूर बचा लूंगा जिसे इस आफत के जमाने में भी मैंने अपने से अलग नहीं किया था । अच्छा जो हो, मैं इस सुरंग के अन्दर जरूर चलूंगा मगर इस तरह निहत्थे जाना तो उचित नहीं पहिले बंगले के अन्दर चल कर अपनी पूरी पोशाक पहिरना और अपने हरबे लगा लेना चाहिये, न मालूम इसके अन्दर चल कर कैसा मौका पड़े ! न भी मौक़ा पड़े क्या ? कदाचित् इस घाटी के बाहर ही हो जांय तो अपने हरबे क्यों छोड़ जांय ?"

इस तरह सोच विचार कर प्रभाकरसिंह वहां से लौटे और तेजी के साथ बंगले के अन्दर चले गये । बात की बात में अपनी पूरी पोशाक पहिर कर और हर्बे लगा कर वे बाहर निकले और मैदान तय करके फिर उसी सुरंग के मुहाने पर जा पहुंचे ।

दरवाजा खोलने में किसी तरह की कठिनाई न थी अतएव वे सहज ही में दरवाजा खोल उस सुरंग के अन्दर चले गये । सुरंग बहुत चौड़ी और ऊंची न थी केवल एक आदमी खुले ढंग से उसमें चल सकता था । अगर सामने से कोई दूसरा आदमी आता हुआ मिल जाय तो बड़ी मुश्किल से दोनों एक दूसरे को निकाल कर अपनी अपनी राह ले सकते थे । हां लम्बाई में यह सुरंग बहुत छोटी न थी बल्कि चार साढ़े चार सौ कदम लम्बी थी । सुरंग में पूरा अंधकार था और साथ ही इसके वह भयानक भी मालूम होती थी मगर प्रभाकरसिंह ने इसकी कोई परवाह न की और हाथ फैलाए आगे की तरफ बढ़े चले गए । जैसे जैसे आगे जाते थे सुरंग तंग होती जाती थी ।

जब प्रभाकरसिंह सुरंग खतम कर चुके तो आगे रास्ता बन्द पाया, लकड़ी या लोहे का कोई दर्वाजा नहीं लगा हुआ था जिसे बन्द कहा जाय बल्कि अनगढ़ पत्थरों ही से वह रास्ता बन्द था । प्रभाकरसिंह ने बहुत अच्छी तरह टटोलने और गौर करने पर यही निश्चय किया कि बस अब आगे जाने का रास्ता नहीं हैं, मालूम होता है कि सुरंग बनाने वालों ने इसी जगह तक बना कर ~~का~~ छोड़ दिया है और यह सुरंग अधूरी रह गई है ।

इस विचार पर भी प्रभाकरसिंह का दिल न जमा, उन्होंने सोचा कि जरूर इसमें कोई बात है और यह सुरंग व्यर्थ नहीं बनाई गई होगी । उन्होंने फिर अच्छी

तरह आगे की तरफ टटोलना शुरू किया। मालूम होता था कि आगे छोटे बड़े कई अनगढ़ पत्थरों का ढेर लगा हुआ है। इस बीच में दो तीन पत्थर कुछ हिलते हुए भी मालूम पड़े जिन्हें प्रभाकरसिंह ने बल पूर्वक उखाड़ना चाहा। एक पत्थर तो सहज ही में उखड़ आया और जब उन्होंने उसे उठा कर अलग रक्खा तो छोटे छोटे दो छेद मालूम पड़े जिनमें से उस पार की चीजें दिखाई दे रही थीं और यह भी मालूम होता था कि अभी कुछ दिन बाकी है। अब उन्हें और भी विश्वास हो गया कि अगर इसी तरह और दो तीन पत्थर अपने ठिकाने से हटा दिए जांय तो जरूर रास्ता निकल आवेगा अस्तु उन्होंने फिर जोर करना शुरू किया।

तीन पत्थर और भी अपने ठिकाने से हटाए गए और अब छोटे छोटे कई सूराख दिखाई देने लगे मगर इस बात का निश्चय नहीं हुआ कि कोई दरवाजा भी निकल आवेगा।

उन सुराखों से प्रभाकरसिंह ने गौर से दूसरी तरफ देखना शुरू किया। एक बहुत ही सुन्दर घाटी नजर पड़ी और कई आदमी भी इधर उधर चलते फिरते नजर आये।

यह वही घाटी थी जिसमें भूतनाथ रहता था, जहां जाते हुए यकायक प्रभाकरसिंह गायब हो गए थे, और जहां इस समय गुलाबसिंह और इन्दुमति मौजूद हैं। प्रभाकरसिंह ने उस घाटी को देखा नहीं था इसलिए बड़े गौर से उसकी सुन्दरता को देखने लगे। उन्हें इस बात की क्या खबर थी कि यह भूतनाथ का स्थान है और इस समय इसी में इन्दुमति विराज रही है तथा इस समय उनके देखते ही देखते वह एक भारी आफत में फंसा चाहती है।

प्रभाकरसिंह बराबर उद्योग कर रहे थे कि कदाचित पत्थरों के हिलाने हटाने से कोई दर्वाजा निकल आये और साथ ही इसके घड़ी घड़ी उन सूराखों की राह से उस पार की तरफ देख भी लेते थे। इसी बीच में उनकी निगाह यकायक इन्दुमति पर पड़ी जो पहाड़ की ऊंचाई पर से धीरे धीरे नीचे की तरफ उतर रही थी। बस फिर क्या था। उनका हाथ पत्थरों को हटाने के काम से रुक गया और वे बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगे, साथ ही इसके उन्हें इस बात का भी विश्वास हो गया कि यही भूतनाथ का वह स्थान है जहां हम इन्दुमति के साथ आने वाले थे।

थोड़ी ही देर में इन्दुमी नीचे उतर आई और धीरे धीरे उस कुदरती बागीचे में टहलती हुई उस तरफ बढ़ी जिधर प्रभाकरसिंह थे और अन्त में एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गई जो प्रभाकरसिंह से लगभग पचास साठ कदम की दूरी पर होगी।

अब प्रभाकरसिंह उससे मिलने के लिए बहुत ही बेचैन हुए मगर क्या कर सकते थे लाचार थे, तथापि उन्होंने उसे पुकारना शुरू किया। अभी दो ही आवाज दी थी कि उनकी निगाह और भी दो आदमियों पर पड़ी जो इन्दु से थोड़ी दूर पर एक मुहाने या सुरंग के अंदर से निकले थे और इन्दु की तरफ बढ़ रहे थे। उन्हें देखते ही इन्दु भी घबरा कर उनकी तरफ लपकी और पास पहुंच कर एक आदमी के पैरों पर गिर पड़ी जो शक्ल सूरत में बिल्कुल ही प्रभाकरसिंह से मिलता था या यों कहिए कि वह सचमुच का एक दूसरा प्रभाकरसिंह था*।

प्रभाकरसिंह के कलेजे में एक बिजली सी चमक गई। अपनी सो सूरत बने हुए एक ऐयार का वहां पहुंचना और इन्दु का उसके पैरों पर गिर पड़ना उनके लिए कैसा दुखदाई हुआ इसे पाठक स्वयं विचार सकते हैं। केवल इतना ही नहीं इनके देखते ही देखते नकली प्रभाकरसिंह ने अपने साथी को विदा कर दिया और इसके बाद वह इन्दुमति को कुछ समझा कर अपने साथ ले भागा।

प्रभाकरसिंह चुटीले साँप की तरह पेंच खाकर रह गए, कर ही क्या सकते थे? क्योंकि वहां तक इनका पहुंचना बिल्कुल ही असम्भव था।

उन्होंने पत्थरों को हटा कर रास्ता निकालने का फिर एक दफे उद्योग किया और जब कुछ नतीजा न निकला तो पेचोताब खाते हुए वहां से लौट पड़े। जब सुरंग के बाहर हुए तो देखा कि सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं और अंधकार चारों तरफ से घिरा आ रहा है, अस्तु तरह तरह की बातें सोचते और विचारते हुए प्रभाकरसिंह बंगले की तरफ लौटे और जब वहां पहुंचे तो देखा कि हर एक स्थान में मौके मौके से रोशनी हो रही है।

प्रभाकरसिंह उसी कमरे में पहुंचे जिसमें विमला से मुलाकात हुई थी और फर्श पर तकिए के सहारे बैठ कर चिन्ता करने लगे। वे सोचने लगे—

"वह कौन आदमी होगा जिसने आज इन्दु को इस तरह धोखे में डाला? इन्दु की बुद्धि पर भी कैसा परदा पड़ गया कि उसने उसे बिल्कुल नहीं पहिचाना! पर वह पहिचानती ही क्योंकर? एक तो वह स्वयम् घबड़ाई हुई थी दूसरे संध्या होने के कारण कुछ अंधकार सा भी हो रहा था, तीसरे वह ठीक ठीक मेरी सूरत बन कर वहाँ पहुँचा भी था, मुझमें और उसमें कुछ भी फर्क नहीं था, कम्बख्त पोशाक भी इसी ढंग की पहिने हुए था, न मालूम इसका पता

* देखिए तीसरा बयान, नकली प्रभाकरसिंह का भोलासिंह और इन्दु को धोखा देना।

उसे कैसे लगा ! नहीं, यह कोई आश्चर्य का बात नहीं है क्योंकि इस समय भी मेरी पोशाक वैसी ही है जैसी हमेशा रहती थी, इससे मालूम होता है कि वह आदमी मेरे लिए कोई नया नहीं हो सकता। अस्तु जो हो मगर इस समय इन्दु मेरे हाथ से निकल गई। न मालूम अब उस बेचारी पर क्या आफत आवेगी ! हाय, यह सब खराबी बिमला की बदौलत हुई, न वह मुझे बहका के यहां लाती और न यह नौबत पहुंचती। हां यह भी सम्भव है कि यह कार्रवाई बिमला ही ने की हो क्योंकि अभी कई घंटे बीते हैं कि उसने मुझे लिखा भी था कि इन्दु किसी आफत में फंसा चाहती है, उसकी मदद को जाती हूँ। शायद उसका मतलब इसी आफत से हो ! क्या यह भी हो सकता है कि बिमला ही ने यह ढंग रचा हो और उसी ने किसी आदमी को मेरी सूरत बना कर इन्दु को निकाल लाने के लिए भेजा हो ! नहीं अगर ऐसा होता तो वह यह न लिखती कि 'इन्दु बहिन बुरी आफत में पड़ा चाहती हैं'। हां यह हो सकता है कि इस होने वाली घटना का पहिले से उसे पता लगा हो और इसी दुष्ट के कब्जे से इन्दु को छुड़ाने के लिए वह गई हो। जो हो, कौन कह सकता है कि इन्दु किस मुसीबत में गिरफ्तार हो गई ! अफसोस इस बात का है कि मेरी आंखों के सामने यह सब कुछ हो गया और मैं कुछ न कर सका।"

इसी तरह की बातें प्रभाकरसिंह को सोचते कई घंटे बीत गए मगर इस बीच में कोई शान्ति दिलाने वाला वहां न पहुंचा। कई नौजवान लड़के जो बंगले के बाहर पहरे पर दिखाई दिए थे इस समय उनका भी पता न था। दिन भर उन्होंने कुछ भोजन नहीं किया था मगर भोजन करने को उन्हें कोई चिन्ता भी न थी, वे केवल इन्दुमति की अवस्था और अपनी बेबसी पर विचार कर रहे थे, हां कभी कभी इस बात पर भी उनका ध्यान जाता कि देखो अभी तक किसी ने भी मेरी सुध न ली और न खाने पीने के लिए ही किसी ने पूछा !

चिन्ता करते करते उनकी आंख लग गई और नींद में भी वे इन्दुमति के विषय में तरह तरह के भयानक स्वप्न देखते रहे। आधी रात जा चुकी थी जब एक लौंडी ने आकर उन्हें जगाया !

प्रभाकर०। (लौंडी से) क्या है ?

लौंडी०। मैं आपके लिए भोजन की सामग्री लाई हूं।

प्रभाकर०। कहां है ?

लौंडी०। (उंगली से इशारा करके) उस कमरे में।

प्रभाकर० । मैं भोजन न करूंगा, जो कुछ लाई हो उठा ले जाओ ।

लौंडी० । मैं ही नहीं कला जी भी आई हैं जो कि उसी कमरे में बैठी आपका इन्तजार कर रही हैं ।

कला का नाम सुनते ही प्रभाकरसिंह उठ बैठे और उस कमरे में गए जिसकी तरफ लौंडी ने इशारा किया था। यह वही कमरा था जिसको दिन के समय प्रभाकर-सिंह देख चुके थे और जिसमें नहाने धोने का सामान तथा जलपान के लिए भी कुछ रक्खा हुआ था।

कमरे के अन्दर पैर रखते ही कला पर उनकी निगाह पड़ी जो एक कम्बल पर बैठी हुई थी। प्रभाकरसिंह को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और उसने बड़े आग्रह से उन्हें उस कम्बल पर बैठाया जिसके आगे भोजन की सामग्री रक्खी हुई थी। बैठने के साथ ही प्रभाकरसिंह ने कहा—

प्रभा० । कला, आज तुम लोगों की बदौलत मुझे बड़ा ही दुःख हुआ ।

कला० । (बैठ कर) सो क्या ?

प्रभा० । (चिढ़े हुए ढंग से) मेरी आंखों के सामने से इन्दु हर ली गई और मैं कुछ न कर सका !!

कला० । ठीक है, आपने किसी सुरंग से यह हाल देखा होगा ।

प्रभा० । सो तुमने कैसे जाना ?

कला० । यहां दो सुरंगें ऐसी हैं जिनके अन्दर से भूतनाथ की घाटी बखूबी दिखाई देती है । उनमें से एक के अन्दर के सूराख पत्थर के ढोकों से मामूली ढंग से बन्द किए हुए हैं और दूसरी के सूराख खुले हुए हैं जिनकी राह से हम लोग बराबर भूतनाथ के घर का रंग ढग देखा करती हैं ।

प्रभाकर० । ठीक है, इत्तिफाक से मैं उसी सुरंग के अन्दर पहुंच गया था जिसमें देखने के सूराख पत्थर के ढोकों से बन्द किये हुए थे ।

कला० । जी हां मगर हम लोगों को आपसे पहिले इस बात की खबर लग चुकी थी ।

प्रभाकर० । तब तुम लोगों ने क्या किया ?

कला० । यही किया कि इन्दु बहिन को उस आफत से छुड़ा लिया ।

प्रभा० । (प्रसन्नता से) तो इन्दु कहां है ?

कला० । एक सुरक्षित और स्वतंत्र स्थान में हैं । अब आप भोजन करते जाइए और बातें किए जाइए, नहीं तो मैं कुछ न कहूंगी, क्योंकि आप दिन भर के

भूखे हैं बल्कि ताज्जुब नहीं कि दो दिन ही के भूखे हों। यहां जो कुछ खाने पीने का सामान पड़ा हुआ था उसके देखने से मालूम हुआ कि आपने दिन को भी कुछ नहीं खाया था।

मजबूर होकर प्रभाकरसिंह ने भोजन करना आरम्भ किया और साथ ही साथ बातचीत भी करने लगे।

प्रभाकर०। अच्छा तो मैं इन्दु को देखा चाहता हूं।

कला०। जी नहीं, अभी देखने का उद्योग न कीजिए। कल जैसा होगा देखा जायगा क्योंकि इस समय उसकी तबीयत खराब है, दुश्मनों के हाथसे चोट खा चुकी है, यद्यपि उसने बड़े साहस का काम किया और अपने तीरों से कई दुश्मनों को मार गिराया।

इस खबर ने भी प्रभाकरसिंह को तरद्दुद में डाल दिया। वे इन्दु को देखा चाहते थे और कला समझाती जाती थी कि अभी ऐसा करना अनुचित होगा और वैद्य की भी यही राय है।

बड़ी मुश्किल से कला ने प्रभाकरसिंह को भोजन कराया और कल पुनः मिलने का वादा करके वहां से चली गई।

प्रभाकरसिंह को इस बात का पता न लगा कि वह किस राह से आई थी और किस राह से चली गई।

क्या हम कह सकते हैं कि प्रभाकरसिंह इन्दु की तरफ से बेफिक्र हो गए? नहीं कदापि नहीं। उन्हें कुछ ढाढस हो जाने पर भी कला की बातों पर पूरा विश्वास न हुआ। उनका दिल इस बात को कबूल नहीं करता था कि यदि कला और बिमला दूर से या किसी छिपे ढंग से इन्दु को दिखला देतीं तो कोई हर्ज होता। बात तो यह है कि कला तथा बिमला का इस तरह गुप्त रीति से आना जाना और रास्ते का पता न देना भी उन्हें बुरा मालूम होता था और उन लोगों पर विश्वास नहीं जमने देता था, हां इस समय इतना जरूर हुआ कि उनकी विचार-प्रणाली का पक्ष कुछ बदल गया और वे पुरानी चिन्ता के साथ ही साथ किसी और चिन्ता में भी निमग्न होने लगे।

कई घंटे तक कुछ सोचने विचारने के बाद वे उठ खड़े हुए और दालानों कमरों तथा कोठड़ियों में घूमने फिरने और टोह लगाने के साथ ही साथ दीवारों आलों और आलमारियों पर भी निगाहें डालने लगे। पिछली रात का समय, इनके सिवाय कोई दूसरा आदमी बंगले के अन्दर न होने के कारण सन्नाटा छाया हुआ था, मगर

जहां तक देखने में आता था कमरों और कोठड़ियों में रोशनी जरूर हो रही थी।

कमरों और कोठड़ियों में छोटी बड़ी कई आलमारियां देखने में आईं जिनमें से कई में तो ताला लगा हुआ था कई विना ताले की थीं और कई में किवाड़ के पल्ले भी न थे।

इन्हीं कोठड़ियों में से एक कोठड़ी ऐसी भी थी जिसमें अंधकार था अर्थात् चिराग नहीं जलता था अतएव प्रभाकरसिंह ने चाहा कि इस कोठड़ी को भी अच्छी तरह देख लें। उसके पास वाली कोठड़ी में एक फर्शी शमादान जल रहा था जिसे उन्होंने उठा लिया मगर जब उस कोठड़ी के दरवाजे के पास पहुंचे तो अन्दर से कुछ खटके की आवाज आई। वे ठमक गये और उस तरफ ध्यान देकर सुनने लगे। आदमी के पैरों की चाप सी मालूम हुई जिससे गुमान हुआ कि कोई आदमी इसके अंदर जरूर है, मगर फिर कुछ मालूम न हुआ और प्रभाकरसिंह शमादान लिए हुए उस कोठड़ी के अन्दर चले गए।

और कोठड़ियों को तरह यह भी साफ और सुथरी थी तथा जमीन पर एक मामूली फर्श बिछा हुआ था। हां, छोटी छोटी आलमारियां इसमें बहुत ज्यादे थीं जिनमें से एक खुली हुई थी और उसका ताला ताली समेत उसकी कुण्डी के साथ अड़ा हुआ था। वह सिर्फ एक ही ताली न थी बल्कि तालियों का एक गुच्छा ही था।

ये शमादान लिए हुए उस आलमारी के पास चले गये और उसका पल्ला अच्छी तरह खोल दिया। उसमें तीन दर बने हुए थे जिनमें से एक में हाथ की लिखी हुई कई किताबें थीं, दुसरे में कागज पत्र के छोटे बड़े कई मुट्ठे थे, और तीसरे में लोहे की कई बड़ी बड़ी तालियां थीं और सब के साथ एक एक पुर्जा बंधा हुआ था। उन्होंने एक ताली उठाई और उसके साथ का पुर्जा खोल कर पढ़ा और फिर ज्यों का त्यों उसी तरह ठीक करके रख दिया इसके बाद दूसरी ताली का पुर्जा पढ़ा और उसी तरह रख देने के बाद फिर क्रमशः सभी तालियों के साथ वाले पुर्जे पढ़ डाले और अन्त में एक ताली पुर्जे सहित उठा कर अपने जेब में रख ली।

तालियों की जांच करने के बाद उन कागज के मुट्ठों पर हाथ डाला और घंटे भर तक अच्छी तरह देखने जांचने के बाद उसमें से भी तीन मुट्ठे लेकर अपने पास रख लिए और फिर किताबों का जांच शुरू की। इसमें उनका समय बहुत ज्यादे लगा मगर इनमें से कोई किताब उन्होंने ली नहीं।

उस आलमारी की तरफ से निश्चिन्त होने के बाद फिर उन्होंने किसी और आलमारी को जांचने या खोलने का इरादा नहीं किया। वे वहां से लौटे और

शमादान जहां से उठाया था वहा रख कर अपने उसी कमरे में चले आये जहां आराम कर चुके थे। वहां भी वे ज्यादे देर तक नहीं ठहरे सिर्फ अपने कपड़ों और हर्बों की दुरुस्ती करके बंगले के बाहर निकले। आसमान की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि रात बहुत कम बाकी है और आसमान पर पूरब तरफ सफेदी फैला ही चाहती है।

"कुछ देर तक और ठहर जाना मुनासिब है।" यह सोच कर वे इधर उधर घूमने और टहलने लगे। जब रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी तब दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ रवाना हुए। जब मैदान खतम कर चुके और पहाड़ी के नीचे पहुंचे तो उन्हें एक हलकी सी पगडण्डी दिखाई पड़ी जो कि बहुत ध्यान देने से पगडण्डी मालूम होती थी, हाँ इतना कह सकते हैं कि उस राह से पहाडों के ऊपर कुछ दूर तक चढ़ने में सुभीता हो सकता था अस्तु प्रभाकरसिंह पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। लगभग पचास कदम चढ़ जाने के बाद उन्हें एक छोटी सी गुफा दिखाई दी जिसके अन्दर वे बेधड़क चले गए और फिर कई दिनों तक वहां से लौट कर बाहर न आए।

आठवां बयान

आज प्रभाकरसिंह उस छोटी सी गुफा के बाहर आए हैं और साधारण रीति पर वे प्रसन्न मालूम होते हैं। हम यह नहीं कह सकते कि व इतने दिनों तक निराहार या भूखे रह गए होंगे क्योंकि उनके चेहरे से किसी तरह को कमजोरी नहीं मालूम होती। जिस समय वे गुफा के बाहर निकले सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उन्होंने बंगले के अन्दर जाना कदाचित उचित न जाना या इसकी कोई आवश्यकता न समझी हो अस्तु वे उस सुन्दर घाटी में प्रसन्नता के साथ चारो तरफ टहलने लगे। नहीं नहीं, हम यह भी नहीं कह सकते कि वे वास्तव में प्रसन्न थे क्योंकि बीच बीच मे उनके चेहरे पर गहरी उदासी छा जाती थी और वे एक लम्बी सांस लेकर रह जाते थे। सम्भव है कि यह उदासी इन्दुमति की जुदाई से सम्बन्ध रखती हो और वह प्रसन्नता किसी ऐसे लाभ के कारण हो जिसे उन्होंने उस गुफा के अन्दर पाया हो। तो क्या उन्हें उस गुफा के अन्दर कोई चीज मिली थी या उस गुफा की राह से वे इस घाटी के बाहर हो गए थे अथवा उन्हें किसी तिलिस्म का दर्वाजा मिल गया जिसमें उन्होंने कई दिन बिता दिए? जो हो, बात कोई अनूठी जरूर है और घटना कुछ आश्चर्यजनक अवश्य है।

बहुत देर तक इधर उधर घूमने के बाद वे एक पत्थर की सुन्दर चट्टान पर बैठ गए और साथ ही किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो गए। इसी समय इन्हें इन्दुमति ने पहाड़ी के ऊपर से देखा था मगर इस बात की प्रभाकरसिंह को कुछ खबर न थी।

बहुत देर तक चट्टान पर बैठे बैठे कुछ सोचने विचारने के बाद उन्होंने सर उठाया और इस नीयत से बंगले की तरफ देखा कि चलें उसके अन्दर चल कर किसी और विषय की टोह लगावें, परन्तु उसी समय बंगले के अन्दर आती हुई तीन औरतों पर उनकी निगाह पड़ी जिनमें से एक इन्दुमति दूसरी बिमला और तीसरी कला थी।

इन्दुमति को देखते ही वे प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए, उधर इन्दुमति भी इन्हें देखते ही दीवानी सी हो कर दौड़ी और प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभा०। (इन्दु को उठा कर) अहा इन्दे! इस समय तुझे देख मैं कितना प्रसन्न हुआ यह कहने के लिए मेरे पास केवल एक ही जुबान है अस्तु मैं कुछ कह नहीं सकता।

इन्दु०। नाथ, मुझे आपने धोखे में डाला! (मुस्कुराती हुई) मुझे तो इस बात का गुमान भी न था कि आप मेरे साथ चलते हुए रास्ते में किसी चुलबुली औरत को देखकर अपने आपे से बाहर हो जायंगे और मेरा साथ छोड़ कर उसके साथ दौड़ पड़ेंगे! क्या इस विपत्ति के समय में मुझे अपने साथ लाकर ऐसा ही बर्ताव करना आप को उचित था? क्या आपकी उन प्रतिज्ञाओं का यही नमूना था।

प्रभा०। (हंसते हुए) वाह, तुम अपनी बहिन को और अपने ही मुंह से चुलबुली बनाओ! क्या मैं किसी चुड़ैल के पीछे दौड़ा था? तुम्हारी बहिन इस बिमला ही ने तो मुझे रोका और कहा कि जरूरी बात कहनी है। मैंने समझा कि यह अपनी हैं जरूर कुछ भलाई की बातें कहेंगी, अस्तु इनके फेर में पड़ गया और तुम्हें खो बैठा। तुम्हारे साथ गुलाबसिंह मौजूद ही थे और इधर बिमला से मैं कुछ सुना चाहता था। ऐसी अवस्था में यह कब आशा हो सकती थी कि साधारण मामले पर इतना पहाड़ टूट पड़ेगा! सच तो यह है कि तुम्हारी बहिन ने मुझे धोखा दिया जिसका मुझे बहुत रंज है और मैं उसके लिए इनसे बहुत बुरा बदला लेता मगर आज इन्होंने तुमसे मुझे मिला दिया इसीलिए मैं इनका कसूर माफ करता हूं मगर इस बात की शिकायत जरूर करूंगा कि मुझे यहां फंसा इन्होंने भूखों मार डाला, खाने तक को न पूछा। आओ आओ बैठ जाओ, सब कोई बैठ कर बातें करें।

बिमला०। वाह! बहुत अच्छी कही, आपने तो मानों अनशन व्रत ग्रहण किया था! साफ साफ क्यों नहीं कहते कि किसी की फिक्र और तरद्दुद के कारण खाना

पीना कुछ अच्छा ही नहीं लगता था।

कला०। (मुस्कुराती हुई) रात रात भर जाग के कोने कोने की तलाशी लिया करते थे कि शायद कहीं छेद सूराख और आले आलमारी में से इन्दुमति निकल आवे।

प्रभा०। (चौंक कर, कला से) सो क्या ?

बिमला०। बस इतना ही तो! खैर इन बातों को जाने दीजिए यह बताइए कि आप मुझसे सन्तुष्ट हुए कि नहीं ? अथवा आपको इस बात का निश्चय हुआ या नहीं कि हम लोगों ने जो कुछ किया वह नेकनीयती के साथ था ?

प्रभा०। चाहे यह बात ठीक हो, चाहे तुम हर तरह से निर्दोष हो, चाहे तुम दोनों बहिनों पर किसी तरह के ऐब का धब्बा लगाना कठिन अथवा असम्भव ही क्यों न हो, परन्तु मैं इतना तो जरूर कहूंगा कि तुम्हारी यह कार्रवाई बदनीयती के साथ नहीं तो बेवकूफी के साथ जरूर हुई। सम्भव था कि जिस दुश्मन पर फतह पा के तुम इन्दुमति को छुड़ा लाईं वह और जबर्दस्त होता या तुम पर फतह पा जाता तो फिर इन्दुमति पर कैसी मुसीबत गुजरती! मेरी समझ में नहीं आता कि इस अनुचित और टेढ़ी बात से तुम्हें या हमें क्या फायदा पहुंचा, हां इन्दुमति जख्मी हुई यह मुनाफा जरूर हुआ। जिस तरह तुमने मुझे बहकाया था उस तरह वहां यही समझा दिया होता कि इन्दुमति को साथ लेकर वहां से हट जाना मुनासिब है, तो......

बिमला०। (बात काट कर) नहीं नहीं, यदि मैं ऐसा करती तो आप मुझ पर कदापि विश्वास न करते और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का साथ न छोड़ते, साथ ही इसके यह भी असम्भव था कि वहां पर मैं सविस्तार अपना हाल कह कर आपको समझाती, भूतनाथ के ऐबोंको दिखाती अथवा उचित अनुचित बहस करती, बल्कि...

इन्दु०। (बात काट कर, प्रभाकरसिंह से) खैर इन सब बातों से क्या फायदा जो कुछ हुआ सो हुआ अब आगे के लिए सोचना चाहिए कि हम लोगों का कर्तव्य क्या है और क्या करना उचित होगा। मैं इतना जरूर कहूंगी कि हमारी ये दोनों जमाने के हाथों से सताई हुई बहिनें इस योग्य नहीं हैं कि इन पर बदनीयती का धब्बा लगाया जाय। हां यदि कुछ भूल समझी जाय तो वह बड़े बड़े बुद्धिमान लोगों से भी हो जाया करती है। साथ ही इसके यह भी मानना पड़ेगा कि ग्रहदशा के फेर में पड़े हुए कई आदमी एक साथ मिल कर मुसीबत के दिन काटना चाहें तो सहज में काट सकते हैं बनिस्बत इसके कि वे सब अलग अलग होकर कोई कार्रवाई करें। आप यह सुन ही चुके हैं कि ये दोनों (कला और बिमला) किस तरह जमाने अथवा

भूतनाथ के हाथों से सताई जा चुकी हैं अस्तु हम लोगों का एक साथ रहना लाभदायक होगा।

प्रभा०। (इन्दु से) तुम्हारा कहना कुछ कुछ जरूर ठीक है। मैं इस बात को पसन्द कर सकता हूं कि तुम यहां रहो जब तक कि मैं अपने दुश्मनों पर फतह पाकर स्वतन्त्र और निश्चिन्त न हो जाऊं। मुझे इस बात की जरूर खुशी है कि तुम्हारे लिए एक अच्छा ठिकाना निकल आया है मगर मैं हाथ पैर तुड़ा कर यहां नहीं रह सकता।

इन्दु०। मगर आपको इन दोनों की मदद जरूर करनी चाहिए।

प्रभा०। इसके लिए मैं दिलोजान से तैयार हूं, मगर अभी मैं भूतनाथ के साथ दुश्मनी न करूंगा जब तक कि अच्छी तरह जांच न लूं और अपने दोस्त गुलाबसिंह से राय न मिला लूं।

बिमला०। (कुछ घबराहट के साथ) तो क्या आप हम लोगों के बारे में गुलाबसिंह से कुछ जिक्र करेंगे।

प्रभा०। बेशक!

बिमला०। तब तो आप चौपट ही करेंगे क्योंकि गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और उससे हमारी हाल जरूर कह देगा। ऐसी अवस्था में मेरे मनसूबों पर बिलकुल ही पाला पड़ जायगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि सहज ही में इस दुनिया से... (लम्बी सांस लेकर) ओफ! यदि मैं आपसे भलाई की आशा न करूं तो दुनिया में किससे कर सकती हूं? वह कौन सा दरख्त है जिसके साये तले मैं बैठ सकती हूं और वह कौन सा मकान है जिसमें स्वतन्त्र रूप से रह कर जिन्दगी बिता सकती हूं। एक इन्द्रदेव जिन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रक्खा है, और दूसरे आप जिनसे मैं भलाई की उम्मीद कर सकती हूं। यदि आप ही मेरी प्रतिज्ञा भंग करने के कारण हो जाएंगे तो हमारी रक्षा करने वाला और हमारे सतीत्व का बचाने वाला, हमारे धर्मका प्रतिपालन करने वाला और कुम्हलाई हुई शुभ मनोरथलता में जीवन संचार करने वाला और कौन होगा? मैं कसम खाकर कह सकती हूं कि भूतनाथ कदापि आपके साथ भलाई न करेगा चाहे गुलाबसिंह आपका दिली दोस्त हो और चाहे भूतनाथ गुलाबसिंह को इष्टदेव के तुल्य मानता हो, साथ ही इसके मैं डंके की चोट पर कह सकती हूं कि यदि आप मुझे धर्मपथ से विचलित हुई पावें, यदि आपको मेरे निर्मल आंचल में किसी तरह का धब्बा दिखाई दे, और यदि जांच करने पर मैं झूठी साबित होऊं तो आपको अख्तियार है और होगा कि मेरे साथ ऐसा बुरा

सलूक करें जो किसी अनपढ़ उजड्ड और अधर्मी दुश्मन के किए भी न हो सके। बेशक आप मुझे...

इतना कहते कहते बिमला का गला भर आया और उसकी आंखों से आंसू की धार बह चली।

प्रभा०। (बात काट कर दिलासे के ढंग से) बस बस बिमला बस, मुझे विश्वास हो गया कि तू सच्ची है और दिल का गुबार निकालने के लिए तेरी प्रतिज्ञा सराहने के योग्य है। मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि तेरे भेदों को तुझसे ज्यादा छिपाऊंगा और तेरी इच्छा के विरुद्ध कभी किसी पर प्रकट न करूंगा चाहे वह मेरा कैसा ही प्यारा क्यों न हो, साथ ही इसके मैं विश्वास दिलाता हूं कि तू मुझसे स्वप्न में भी बुराई की आशा न रखियो। मगर हां मैं भूतनाथ की जांच जरूर करूंगा कि वह कितने पानी में है।

बिमला०। (खुशी से प्रभाकरसिंह को प्रणाम करके) बस मैं इतना सुना चाहती थी, आपकी इतनी प्रतिज्ञा मेरे लिए बहुत है। आप शौक से भूतनाथ की बल्कि साथ ही इसके मेरी भी जांच कीजिए मैं इसके लिए कदापि न रोकूंगी, मगर मैं खूब जानती हूं कि भूतनाथ परले सिरे का बेईमान दगाबाज और खुदगर्ज ऐयार है और ऐयारों के नाम में धब्बा लगाने वाला है। मैं आपको एक चीज दूंगी जो समय पड़ने पर आपको बचावेगी, वह चीज मुझे इन्द्रदेव ने दी है और वह आप ऐसे बहादुर के पास रहने योग्य है। यदि आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो तो मैं इन्द्रदेव से भी आपकी मुलाकात कराऊंगी।

प्रभाकर०। मैं बड़ी खुशी से इन्द्रदेव से मिलने के लिए तैयार हूं, उनसे मिल कर मुझे कितनी खुशी होगी मैं बयान नहीं कर सकता। वे निःसन्देह महात्मा और मुझे उनसे मिलने की सख्त जरूरत है। मैं यह भी जानता हूं कि वह मुझ पर कृपादृष्टि रखते हैं और ऐसे समय में मेरी भी पूरी सहायता कर सकते हैं।

बिमला०। निःसंदेह ऐसा ही है। आप इस घाटी में तीन दिन के लिए मेरी मेहमानी कबूल करें, इन तीन दिनों में कई अद्भुत चीजें आपको दिखाऊंगी और इन्द्रदेवजी से भी मुलाकात कराऊंगी क्योंकि कल वे यहां जरूर आवेंगे।

कला०। (मुस्कुराती हुई दिल्लगी के साथ) मगर ऐसा न कीजिएगा कि उस रात की तरह ये तीन दिन भी आप इस स्थान की तलाशी में ही बिता दें और हर रोज सुबह को एक नई घाटी से बाहर निकला करें।

प्रभा०। मैं पहिले ही आवाज देने पर समझ गया था कि तुमने उस

की कार्रवाई देख ली है, इसे दोहराने की कोई जरूरत न थी! अगर खुशी से तुम अपना घर न दिखाओगी तो मैं बेशक इसी तरह जबर्दस्ती देखनेका उद्योग करूंगा।

कला०। जबर्दस्ती से कि चोरी से।

इतना कह कर कला खिलखिला कर हंस पड़ी और तब कुछ देर तक इन सभों में इधर उधर की बातें होती रहीं, इसके बाद धूप ज्यादा निकल आने के कारण सब कोई उठ कर बंगले के अन्दर चले गए और वहां भी कई घंटे तक हंसी दिल्लगी तथा ताने और उलाहने की बातें होती रहीं। इस बीच में इन्दु ने अपनी दर्दनाक कहानी कह सुनाई और प्रभाकरसिंह ने भी अपनी बेबसी में जो कुछ देखा सुना था उससे बयान किया।

दो पहर से ज्यादे दिन चढ़ चुका था जब बिमला सभों को लिए हुए अपने महल में आई। इतनी देर तक खुशी में किसी को भी नहाने धोने अथवा खाने पीने की सुध न रही।

नौवां बयान

तीन दिन नहीं बल्कि पांच दिन तक मेहमानी का आनन्द लूट कर आज प्रभाकरसिंह उस अद्भुत खोह के बाहर निकले हैं। इन पांच दिनों के अन्दर उन्होंने क्या क्या देखा सुना, किस किस स्थान की सैर की, किस किस से मिले जुले, सो हम यहां पर कुछ भी न कहेंगे, सिवाय इसके कि वे इन्दुमति को बिमला और कला के पास छोड़ गए हैं और इस काम से बहुत प्रसन्न भी हैं। साथ ही इसके यह भी कह देना उचित जान पड़ता है कि अब उनके विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया।

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी है। प्रभाकरसिंह सिर झुकाए कुछ सोचते हुए पहाड़ के किनारे भूतनाथ की घाटी की तरफ धीरे धीरे चले जा रहे हैं। वे जानते हैं कि भूतनाथ की घाटी का दर्वाजा अब दूर नहीं है तथा उन्हें यह भी गुमान है कि भूतनाथ या गुलाबसिंह ताज्जुब नहीं कि मिल जांय। इसलिए वे धीरे धीरे कदम उठाते हैं, इधर उधर चौकन्ने होकर देखते हैं और कभी कभी पत्थर की किसी सुन्दर चट्टान पर बैठ जाते हैं।

प्रभाकरसिंह का सोचना बहुत ठीक निकला। वे एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर कुछ सोच रहे थे कि भूतनाथ ने उन्हें देख लिया और तेजी के साथ लपक कर इनके पास आया, मगर इन्हें सुस्त और उदास देख कर उसे ताज्जुब और

दुख हुआ क्योंकि जिस तपाक के साथ वह प्रभाकरसिंह से मिला चाहता था उस तपाक के साथ प्रभाकरसिंह उससे नहीं मिले, न तो उसका इस्तकबाल किया और न उसे आवभगत के साथ लिया। हां इतना जरूर किया कि भूतनाथ को देख उठ खड़े हुए और एक लम्बी सांस लेकर बोले, "बस भूतनाथ! तुमसे मुलाकात हो गई, अब केवल गुलाबसिंह से मिलने की अभिलाषा है! इसके बाद फिर कोई भी मुझे प्रभाकरसिंह की सूरत में नहीं देख सकेगा!!"

भूत० (आश्चर्य से) क्यों क्यों, सो क्यों?

प्रभा०। तुम जानते हो कि इस दुनियामें मेरा कोई भी नहीं है! एक इन्दुमति थी सो वह भी ऐसे ठिकाने पहुंच गई जहां कोई भी जाकर उससे मिल भी नहीं सकता।

भूत०। नहीं नहीं प्रभाकरसिंह! ये शब्द बहादुरों के मुंह से निकलने योग्य नहीं हैं। क्या इन्दुमति का कुछ हाल आपको मालूम हुआ?

प्रभा०। कुछ क्या बल्कि बहुत।

भूत०। किस रीति से।

प्रभा०। आश्चर्यजनक रीति से।

भूत०। किसकी जुबानी?

प्रभा०। एक निर्जीव मूरत की जुबानी।

भूत०। अब इस पहेली से तो काम नहीं चलता, खुलासा कहिए नहीं तो....

प्रभा०। अच्छा बैठो और सुनो।

दोनों बैठ गए और तब भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह से पूछा—

भूत०। अच्छा अब कहिए कि क्या हुआ और किसकी जुबानी आपको इन्दुमति का हाल मालूम हुआ?

प्रभा०। मैं कह चुका हूं कि एक निर्जीव मूरत की जुबानी मुझे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ जिसे सुन कर तुम ताज्जुब करोगे। सुनो और आश्चर्य करो कि तुम्हारे पड़ोस में कैसा एक विचित्र स्थान है। (रुककर) नहीं नहीं, यह मेरी भूल है कि मैं ऐसा कहता हूं, निःसन्देह उस विचित्र स्थान का हाल सबसे ज्यादे तुम्हीं को मालूम होगा, मैं तो नया मुसाफिर हूं।

भूत०। आखिर किस स्थान के विषय में आप कह रहे हैं? कुछ समझाइए भी तो।

प्रभा०। (हाथ का इशारा करके) बस इसी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक शिवाला है जिसके अन्दर शिवजी की नहीं बल्कि किसी तपस्वी ऋषि की मूर्ति है

जो कि पूरे आदमी के कद की....

भूत० । हां हां ठीक है, इस तरफ के जंगली लोग उसे अगस्त मुनि की मूर्ति कहते हैं, खूब लम्बी लम्बी जटा है और मूर्ति के आगे एक छोटा सा कुण्ड है जिसमें हरदम जल भरा रहता है,न मालूम वह जल कहांसे आता है कि चाहे जितना भी खर्च करो कम होता ही नहीं । वह स्थान'अगस्ताश्रम'केनामसे पुकारा जाता है ।

प्रभा० । बस बस, वही स्थान है ।

भूत० । फिर उससे क्या मतलब ?

प्रभा० । उसी मूर्ति की जुबानी मुझे कई बातें मालूम हुई हैं, तुम्हें तो मालूम ही होगा कि उसमें बात करने की शक्ति है ।

भूत० । (दिल्लगी के तौर पर हंस कर) बहुत खासे ! यह आपसे किसने कह दिया कि भूतनाथ ऐसा पागल हो गया है कि जो कुछ उसे कहोगे वह विश्वास कर लेगा ।

प्रभा० । तो क्या मैं गप्प उड़ा रहा हूं ?

भूत० । अगर गप्प नहीं तो दिल्लगी ही सही !

प्रभा० । नहीं कदापि नहीं, मुझे आश्चर्य होता है कि तुम यहां के रहने वाले होकर उस मूर्तिका हाल कुछ नहीं जानते और यदिमैं कुछ कहता भी हूं तो दिल्लगी उड़ाते हो ! अस्तु जाने दो अब मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कहूंगा हां तुम चाहोगे तो साबित कर दूंगा कि वह मूर्ति बोलती है और त्रिकालदर्शी है । अच्छा जाओ गुलाबसिंह को जल्द भेजो कि मैं उससे मिल कर बिदा होऊं ।

भूत० । तो आप मेरे स्थान पर ही क्यों नहीं चलते ? उस जगह आपको बहुत आराम मिलेगा, गुलाबसिंह से मुलाकात भी होगी और साथ ही इसके मेरा भ्रम भी दूर हो जायगा ।

प्रभा०। नहीं, अब मैं वहां न जाऊंगा । मैं उसी शिवालय में चल कर बैठता हूं तुम गुलाबसिंह को उसी जगह भेज दो मैं मिल लूंगा, बस अब इस विषय में जिद न करो ।

भूत०। प्रभाकरसिंहजी, मैं खूब जानता हूं कि आप क्षत्री हैं और सच्चे बहादुर हैं, आपकी वीरता मौरूसी है, खानदानी है, निःसन्देह आपके बड़े लोग जैसे वीर पुरुष होते आए हैं वैसे ही आप भी हैं, मगर आश्चर्य है कि आप मुझे कुछ ऐयारी ढंग की बातें करके धोखे में डाला चाहते हैं... अच्छा अच्छा, मेरी बातों से यदि आपकी भृकुटी चढ़ती है तो जाने दीजिए मैं कुछ न कहूंगा जाता हूं और

गुलाबसिंह को बुलाए लाता हूं।

इतना कह कर भूतनाथ ने जफील बजाई जिसकी आवाज सुन कर उसके तीन शागिर्द बात की बात में वहां आ पहुंचे। भूतनाथ उन्हें इशारे में कुछ समझा कर बिदा हुआ और अपनी घाटी की तरफ चला गया। प्रभाकरसिंह को मालूम हो गया कि भूतनाथ इन तीनों ऐयारों को मेरी निगरानी के लिए छोड़ गया है।

कुछ सोच विचार कर प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए और धीरे धीरे ईशानकोण की तरफ जाने लगे। एक घड़ी तक बराबर चले जाने के बाद वह उस शिवालय के पास पहुंचे जिसका जिक्र अभी थोड़ी देर हुई भूतनाथ से कर चुके थे और जिसका नाम भूतनाथ ने अगस्तमुनि का आश्रम बतलाया था।

यह स्थान बहुत ही सुन्दर और सुहावना था और पहाड़ की तराई में कुछ ऊंचे की तरफ बढ़ कर बना हुआ था। इस जगह दूर दूर तक बेल के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और बेलपत्र की छाया से यह जगह बहुत ठण्ढी जान पड़ती थी। मन्दिर यद्यपि बहुत बड़ा न था मगर एक खूबसूरत छोटी सी चारदीवारी से घिरा हुआ था। आगे की तरफ एक मामूली सभामण्डप और बीच में मूर्ति के आगे एक छोटा सा कुण्ड बना हुआ था जिसमें पानी हर दम भरा रहता था वह कुण्ड यद्यपि बहुत छोटा अर्थात् डेढ़ हाथ चौड़ा तथा लम्बा और उसी अन्दाज का गहरा था मगर उसके साफ और निर्मल जल से सैकड़ों आदमियों का काम चल सकता था। किसी पहाड़ी सोते का मुंह उसके अन्दर जरूर था जिसमें से जल बराबर आता और बह कर ऊपर की तरफ से निकलता जाता था। इस कुण्ड के विषय में लोग तरह तरह की गप्पें उड़ाया करते थे जिसके लिखने की यहां कोई अवश्यकता नहीं।

प्रभाकरसिंह आकर इस मन्दिर के सभामण्डप में गए और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का इन्तजार करने लगे। उन्होंने देखा कि भूतनाथ के शागिर्द ऐयारों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा है बल्कि इधर उधर चलते फिरते दिखाई दे रहे हैं।

संध्या हुआ ही चाहती थी जब गुलाबसिंह को लिए भूतनाथ वहां आ पहुंचा जहां प्रभाकरसिंह बैठे उन दोनों का इन्तजार कर रहे थे। प्रभाकरसिंह को देख कर गुलाबसिंह ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की और दो चार मामूली बातचीत के बाद कहा—

"भूतनाथ की जुबानी आपका हाल सुन कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। आपने भूतनाथ को यह समझाने को कोशिश की थी कि यह अगस्त मुनि की मूर्ति बोलती है और इसकी जुबानी आपको इन्दुमति का बहुत कुछ हाल मालूम हुआ।"

प्रमा० । निःसन्देह ! मेरा कहना केवल आश्चर्य बढ़ाने के लिए नहीं है बल्कि इस विषय पर विश्वास दिलाने के लिए है, अब तुम आ ही गए हो तो अपने कानों से सुन लेना कि मूर्ति क्या कहती है । मुझे यह बात अकस्मात मालूम हुई । मैं नहीं जानता था कि इस मूर्ति में ऐसे गुण भरे हुए हैं, मगर अफसोस इस बात का है कि यह मूर्ति रोज नहीं बोलती और न हर वक्त किसी के सवाल का जवाब देती है । इसके बोलने का खास खास दिन मुकर्रर है जिसका ठीकठीक हाल मुझे मालूम नहीं है मगर इतना मैं जान गया हूँ कि बातचीत करते समय यह मूर्ति अन्त में खुद बता देती है कि अब आगे किस दिन और किस समय बोलेगी । इसकी जुबानी सुन कर मैं कहता हूं कि आज ग्यारह घड़ी रात जाने के बाद यह मूर्ति पुनः बोलेगी और इसके बाद पुनः रविवार के दिन बातचीत करेगी । आह, ईश्वर की लीला का किसी को भी अन्त नहीं मिलता, मेरी अक्ल हैरान है और कुछ भी समझ में नहीं आता कि क्या मामला है ?

गुलाब० । निःसन्देह यह आश्चर्य की बात है ! खैर अब जो कुछ होगा हम लोग देख ही सुन लेंगे परन्तु यह तो बताइए कि आप इस मूर्ति को जुबानी क्या क्या सुन चुके हैं ?

प्रमा० । सो मैं अभी कुछ नहीं कहूंगा, थोड़ी ही देर की तो बात है सब्र करो, समय आया ही चाहता है, जो कुछ पूछना हो खुद इस मूर्ति से पूछ लेना । तब तक मैं जरूरी कामों से निपट कर संध्योपासन में लगता हूं, अगर उचित समझिये तो आप लोग भी निपट लीजिए ।

भूत० । मैं आपके लिए खाने पीने की सामग्री लेता आया हूं ।

दसवां बयान

रात लगभग ग्यारह घड़ी के जा चुकी है । भूतनाथ गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह उत्कंठा के साथ उस (अगस्तमुनि की) मूर्ति की तरफ देख रहे हैं । एक आले पर मोमबत्ती जल रही है जिसकी रोशनी से उस मन्दिर के अंदर की सभी चीजें दिखाई दे रही हैं । भूतनाथ और गुलाबसिंह का कलेजा उछल रहा है कि देखें अब यह मूर्ति क्या बोलती है ।

यकायक कुछ गाने की आवाज आई, ऐसा मालूम हुआ मानों मूर्ति गा रही है । सब कोई बड़े गौर से सुनने लगे :—

* बिरहा *

सबहि दिन नाहि बराबर जात।
कबहूं कला बला पुनि कबहूं कबहूं करि पछितात।
कबहूं राजा रंक पुनि कबहूं ससि उडगन दिखलात॥
पै करनी अपनी सब चाखें, फल बोये को खात।
अनरथ करम छिपै नहिं कबहूं, अंत सबै खुल जात॥
सबहि दिन नाहि बराबर जात।

इसके बाद मूर्ति इस तरह बोलने लगी :—

आहा! आज मैं अपने सामने किस किस को बैठा देख रहा हूं? महात्मा प्रभाकरसिंह! धर्मात्मा गुलाबसिंह! मैं अभी धर्मात्मा कैसे कहूं, क्या सम्भव है कि भविष्य में भी यह धर्मात्मा बना रहेगा?

"खैर जो कुछ होगा देखा जायगा। हां, यह तीसरा आदमी मेरे सामने कौन है! वही गदाधरसिंह जिसने एक दम से अपनी काया-पलट कर दी और एक सुन्दर नाम को छोड़ के भूतनाथ नाम से प्रसिद्ध होना पसन्द किया! आह, दुनिया में किसी पर विश्वास और भरोसा न करना चाहिए और न किसी की मित्रता पर किसी को घमण्ड करना चाहिए। क्या दयाराम को स्वप्न में भी इस बात का गुमान रहा होगा कि मैं अपने दोस्त गदाधरसिंह के हाथ से मारा जाऊंगा, दोस्त ही नहीं बल्कि गुलाम और ऐयार गदाधरसिंह!!"

मूर्ति की यह बात सुन कर भूतनाथ का कलेजा दहल उठा और गुलाबसिंह तथा प्रभाकरसिंह आश्चर्य के साथ भूतनाथ का मुंह देखने लगे। मूर्ति ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

"अफसोस! अपनी चूक का प्रायश्चित करना उचित था न कि ढंग बदल कर पुनः पाप में लिप्त होना। भूतनाथ, क्या तुम समझते हो कि इस दुष्कर्म का अच्छा फल पाओगे? क्या तुम समझते हो कि गुप्त रह कर पृथ्वी का आनन्द लूटोगे? क्या तुम समझते हो कि बेईमान दारोगा से मिल कर स्वर्ग की सम्पत्ति लूटोगे और मायारानी की बदौलत कोई अनमोल पदार्थ बन जाओगे? नहीं नहीं कदापि नहीं! गदाधरसिंह, तुम्हारी किस्मत में दुःख भोगना बदा है अस्तु भोगो, जो जी में आवे करो मगर ऐ गुलाबसिंह, तुम ऐसे दुष्ट का साथ क्यों दिया चाहते हो जो बिना कमन्द लगाए आसमान पर चढ़ जाने का होसला करता है, खुद गिरेगा और तुम्हें भी गिरावेगा, और ऐ प्रभाकरसिंह, तुम अब अपनी आंखों के आंसू

पोंछ डालो, इन्दुमति को बिल्कुल भूल जाओ, अपने कातर हृदय को ढाढ़स देकर वीरता का स्मरण करो और दुनिया में कुछ नाम पैदा करो। यदि तुम धर्म-पथ पर दृढ़ता के साथ चलोगे तो मैं बराबर तुम्हारी सहायता करता रहूंगा। मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि तुम अवश्य उस पथ का अवलम्बन करो जो मैं तुमसे उस दिन कह चुका हूँ। खबरदार, अपने भेद के मालिक आप बने रहो और किसी दूसरे को उसमें हिस्सेदार मत बनाओ। क्या तुम्हें मुझसे और कुछ पूछना है?"

इतना कह कर मूर्ति चुप हो गई और प्रभाकरसिंह ने उससे यह सवाल किया :—

प्रभा०। मुझे यह पूछना है कि मैं किसी को अपना साथी बनाऊं या न बनाऊं?

मूर्ति०। बनाओ और अवश्य बनाओ। पहिली बरसात के दिन एक आदमी से तुम्हारी मुलाकात होगी, उसे तुम अपना साथी बनाओगे तो शुभ होगा। अच्छा और कुछ पूछोगे?

भूत०। अब मैं कुछ पूछूंगा।

मूर्ति०। पूछो क्या पूछते हो?

भूत०। पहिले यह बताओ कि अब तुम किस दिन और किस समय बोलोगे?

मूर्ति०। यदि तुम्हारा नीयत खराब न हुई और तुमने कोई उत्पात न मचाया तो इसी अमावस वाले दिन सोलह घड़ी रात बीत जाने के बाद हम पुनः बोलेंगे।

गुलाब०। हमें भी कुछ पूछना है।

मूर्ति०। तुम्हारी बातों का जवाब आज नहीं मिल सकता, हां यदि तुम चाहो तो आज के अट्ठारहवें दिन इसी समय यहां आ सकते हो परन्तु अकेले।

गुलाब०। अच्छा तो अब यह बताइए कि हम भूतनाथ के मेहमान बने रहें या........

मूर्ति०। नहीं, अगर अपनी भलाई चाहते हो तो दो पहर के अन्दर भूतनाथ का साथ छोड़ दो और प्रभाकरसिंह की आज्ञानुसार काम करो। बस अब कुछ मत पूछो।

इसके बाद मूर्ति ने बोलना बन्द कर दिया। भूतनाथ गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह ने कई तरह के सवाल किए मगर मूर्ति ने कुछ जवाब न दिया अस्तु तीनों आदमी मन्दिर के बाहर निकले और सभा-मंडप में बैठ कर यों बातचीत करने लगे :—

गुलाब०। क्यों भूतनाथ! यह तो हमें एक नई बात मालूम हुई। मैं स्वप्न में भी नहीं जान सकता था कि दयारामजी को तुमने मारा होगा! अफसोस!!

भूत०। गुलाबसिंह, आश्चर्य की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार होकर भी इस पत्थर की मूर्ति की बातों में फंस गए और जो कुछ उसने कहा उसे सच समझने

लगे! इतना तक नहीं विचारा कि यह असम्भव बात वास्तव में क्या है? निःसन्देह यह धोखे की टट्टी है और इसमें कोई अनूठा रहस्य है बल्कि यों कहना चाहिए कि यह कोई तिलिस्म है और इसका परिचालक (इस समय जो कोई भी हो) जरूर हमारा दुश्मन है।

गुलाब०। नहीं नहीं भूतनाथ, अब तुम हमें धोखे में डालने की कोशिश मत करो और न अब हम लोग तुम्हारी बातों पर विश्वास ही कर सकते हैं। ऐसी आश्चर्यमय और अनूठी घटना का प्रभाव जैसा हम लोगों के ऊपर पड़ा उसे हमीं लोग जान सकते हैं।

भूत०। खैर, तुम जानो, जो जी में आये करो और जहां चाहो चले जाओ, मैं तुम्हें अपने पास रहने लिए जोर नहीं देता, मगर तुम दोस्त हो अस्तु निश्चिन्त रहो, मैं तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूंगा।

इसके बाद इन तीनों में किसी तरह की बातचीत न हुई, गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह पूरब की तरफ रवाना हुए और भूतनाथ ने पश्चिम की तरफ का रास्ता लिया।

ग्यारहवां बयान

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन उसी अगस्ताश्रम के पास आधी रात के समय हम एक आदमी को टहलते हुए देखते हैं। हम नहीं कह सकते कि यह कौन तथा किस रंग ढंग का आदमी है, हां इसके कद की ऊंचाई से साफ मालूम होता है कि यह औरत नहीं है बल्कि मर्द है मगर यह नहीं मालूम पड़ता कि अपनी पोशाक के अन्दर यह किस ठाठ से है अर्थात यह आदमी जिसने स्याह लबादे से अपने को अच्छी तरह छिपा रक्खा है सिपाहियों और बहादुरों की तरह के हर्बे हथियारों से सजा हुआ है या चोरों की तरह सन्धियों और हतियों वगैरह से। जो हो, हमें इसके ब्योरे से इस समय कोई मतलब नहीं हमें सिर्फ इतना ही कहना है कि यह यद्यपि टहल टहल कर अपना समय बिता रहा है मगर इसमें कोई शक नहीं कि अपने को हर तरह से छिपाये रखने की भी कोशिश कर रहा है। दिन का मुकाबला करने वाली चांदनी यद्यपि अच्छी तरह छिटकी हुई है मगर उस अंधकार को दूर करने की शक्ति उसमें नहीं है जो इस समय पेड़ों के झुरमुट के अन्दर पैदा हो रही है और जिससे उस टहलने वाले व्यक्ति को अच्छी सहायता मिल रही है। अगस्ताश्रम की तरफ घड़ी घड़ी अटक कर देखने और आहट लेने से यह भी मालूम होता है कि वह किसी आने वाले की राह देख रहा है।

इसे टहलते हुए घंटा भर से ज्यादे हो गया और तब इसने दो आदमियों को आते और अगस्ताश्रम की तरफ जाते देखा। ये दोनों कद के छोटे तथा ढाल तलवार तथा तीर कमान से सुसज्जित थे मगर इन की पोशाक के बारे में हम इस समय किसी तरह की निन्दा या प्रशंसा नहीं कर सकते।

मालूम होता है कि वह टहलने वाला स्याहपोश इन्हीं दोनों आदमियों का इन्तजार कर रहा था क्योंकि जैसे ही वे दोनों अगस्ताश्रम की चार-दीवारी के अन्दर घुसे वैसे ही इसने उनका पीछा किया। उनके कुछ ही देर बाद यह स्याहपोश भी चारदीवारी के अन्दर जा पहुंचा मगर वहां उन दोनों पर निगाह न पड़ी। पहिले इसने मन्दिर के चारो तरफ की परिक्रमा की और उन दोनों को ढूंढा, और जब पता न लगा तब मन्दिर के अन्दर पैर रक्खा मगर वहां भी कोई न था।

हम पहिले कह आए हैं कि यह मन्दिर बहुत छोटा और साधारण था अतएव इसके अन्दर किसी को खोजने में विलम्ब करना बेशक पागलपन समझा जा सकता है मगर उस स्याहपोश ने इसका कुछ भी विचार न किया और खूब अच्छी तरह खोज डाला यहां तक कि उस छोटे से कुंड में भी तलवार डाल कर जांच लिया जिसमें हरदम पानी भरा रहता था।

उस स्याहपोश को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह आश्चर्य के साथ सोचने लगा—"वे दोनों आदमी कहां गायब हो गये! इस छोटे से मन्दिर में किसी तरह छिप नहीं सकते, इसके अतिरिक्त वहां विशेष अंधकार भी नहीं है क्योंकि सभामण्डप में चन्द्रमा की चाँदनी जो आड़ी होकर पहुंच रही है उसकी चमक से मन्दिर के अन्दर का अंधकार भी इस योग्य नहीं रह गया है कि अपनी स्याह चादर के अन्दर किसी को छिपा सके, अस्तु यही कहना पड़ता है कि यहां की जमीन उन दोनों को खा गई। जो हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह मन्दिर मेरे दुश्मन का मुंह है। खैर कोई चिन्ता नहीं, अब मैं बाहर चलता हूं क्योंकि गरमी से जी व्याकुल हो रहा है तिस पर इस भारी पोशाक ने और भी तंग कर रक्खा है।"

इस तरह की बातें सोचता और कुछ बुदबुदाता हुआ वह आदमी मन्दिर के बाहर निकला और फिर उसी जगह पेड़ों की झुरमुट और आड़ में जा पहुंचा जहां हम इसे पहिले टहलते हुए देख चुके हैं। इस समय यहां एक आदमी और खड़ा है जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और जिसे देखते ही उस स्याहपोश ने पूछा, "केम ?" इसके जवाब में उसने कहा, "चहा।"

जवाब सुनते ही स्याहपोश ने अपने ऊपर से स्याह लबादा उतार कर उसके

हवाले किया और कहा, "अब मैं इसे नहीं ओढ़ सकता क्योंकि इससे गरमी में तकलीफ होने के सिवाय अब इसकी जरूरत भी न रही, मैं भूतनाथ की सूरत में अच्छा हूं मुझे कोई पहिचानने वाला नहीं। केवल गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह के खयाल से इसे ओढ़ लिया था सो उनके मिलने की अब कोई उम्मीद नहीं रही?"

दूसरे नकाबपोश ने वह लबादा ले लिया और जवाब में कहा, "मेरे लिए अब क्या आज्ञा होती है?"

पाठक अब समझ गए होंगे कि यह स्याहपोश वास्तव में भूतनाथ है अस्तु उसने अपने साथी नकाबपोश से कहा, "तुम्हारी यहां कोई जरूरत नहीं रही, तुम जाओ जो कुछ मैं पहिले हुक्म दे चुका हूं उसी के अनुसार काम करो, मैं अब यहां से जल्दी नहीं टल सकता क्योंकि इस मन्दिर ने मुझे अपने जाल में फंसा लिया है।"

नकाबपोश चला गया और भूतनाथ फिर उसी अंधकार में टहलने लगा। कुछ देर बाद उस मन्दिर के अन्दर से दो आदमी बाहर निकले और दक्खिन की तरफ चल पड़े। हम नहीं कह सकते कि ये वे ही थे जो पहिले मन्दिर में जाकर गायब हो गए थे अथवा कोई दूसरे।

भूतनाथ ने उन दोनों का पीछा किया मगर बड़ी कठिनता से अपने को छिपाता और उन्हें देखता हुआ जाने लगा क्योंकि चांदनी उसके काम में बाधा डाल रही थी। लगभग आधा कोस के जाने बाद वे दोनों एक ऐसी जगह पहुंचे जहां की जमीन पत्थर के बड़े बड़े ढोकों से कुछ भयानक सी हो रही थी और उसी जगह खोह का एक मुहाना भी था जिसे भूतनाथ ने सहज ही में समझ लिया और यह इरादा कर लिया कि इन दोनों को यहीं पर खोह के अन्दर घुसने के पहिले ही रोक लेना चाहिए, ताज्जुब नहीं कि खोह के अन्दर जाने पर ये फिर मेरे हाथ न लगें।

वे दोनों आदमी खोह के मुहाने पर पहुंच कर रुके और आपुस में कुछ बातें करने लगे। उसी समय भूतनाथ उनके पास जाकर खड़ा हो गया और यह देख कर कि उनके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है बोला, "तुम दोनों कौन हो?"।

एक०। तुम्हें इससे मतलब ?

भूत०। मतलब यही है कि यह स्थान हमारी हुकूमत के अन्दर है और हम जानना चाहते हैं कि तुम दोनों कौन हो और तुम्हारे उस अगस्त्याश्रम के मन्दिर में जाने आने का क्या कारण है?

एक०। न तो इस सरजमीन के तुम मालिक ही हो और न तुम्हें कुछ पूछने का कोई अधिकार ही है। जिस तरह एक बेईमान और नमकहराम ऐयार बेइ-

ज्जती के साथ अपनी जिन्दगी बिता सकता है उसी तरह तुम भी अपनी जिन्दगी के दिन बिताने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते । हम खूब जानते हैं कि तुम्हारा नाम गदाधरसिंह है और अब अपनी असलियत को छिपाते हुए तुम भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ चाहते हो !

भूत० । (गुस्से से पेच खाकर) मालूम होता है कि तुम दोनों की शामत आई है जिससे मेरी बातों का साफ साफ जवाब न देकर जली कटी बातें करते और मुझे गदाधरसिंह के नाम से सम्बोधन करते हो । मैं नहीं जानता कि गदाधर-सिंह किस चिड़िया का नाम है पर सम्भव है कि यह कोई भेद की बात हो, इस-लिए मैं गदाधरसिंह के बारे में कुछ नही पूछता और एक दफे तुम्हारी इस ढिठाई को माफ करके फिर कहता हूँ कि तुम दोनों आदमी अपना परिचय दो नहीं तो....

एक० । नहीं तो क्या ? तुम हमारा कर ही क्या सकते हो ? पहिले तुम अपनी जान बचाने का तो बन्दोबस्त कर लो ! हमलोग तुम्हारी झूठी बातों से धोखा नहीं खा सकते, बस चले जाओ और अपना काम करो, हम हम लोगों का पीछा करके तुम कोई अच्छा नतीजा नहीं निकाल सकते ।

भूतनाथ खिलखिला कर हंस पड़ा और उसने फिर पूछा—

भूत० । मैं समझता हूं तुम दोनों मर्द नहीं बल्कि औरत हो । खैर इससे भी कोई मतलब नहीं । मैं वह आदमी नहीं हूं जो किसी तरह पर मुलाहिजा कर जाऊं, इस तलवार को देख लो और जल्द बताओ कि तुम कौन हो !

इतना कह कर भूतनाथ ने म्यान से तलवार निकाल ली मगर उन दोनों का दिल फिर भी न हिला और एक ने पुनः कड़क कर भूतनाथ से कहा—"चल दूर हो मेरे सामने से । तेरी इस निर्लज्ज तलवार से हम लोग डर नहीं सकते ! समझ कि तू इस ढिठाई की सजा पावेगा और पछतावेगा !"

इसके जवाब में भूतनाथ ने हाथ बढ़ा कर एक की कलाई पकड़ ली, मगर साथ ही इसके दूसरे नकाबपोश ने भूतनाथ पर छुरी का वार किया जिसके लिए शायद वह पहिले ही से तैयार था । वह छुरी यद्यपि बहुत बड़ी न थी मगर भूतनाथ उसकी चोट खाकर सम्हल न सका । छुरी भूतनाथ के बगल में चार अंगुल धंस गई और साथ ही भूतनाथ यह कहता हुआ जमीन पर गिर पड़ा—"ओफ । यह जहरीली छुरी......!"

बारहवां बयान

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था जब भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई और वह चैतन्य होकर ताज्जुब के साथ चारो तरफ निगाहें दौड़ाने लगा। उसने अपने को एक ऐसे कैदखाने में पाया जिसमें से उसकी हिम्मत और जमांमर्दी उसे बाहर नहीं कर सकती थी। यद्यपि यह कैदखाना बहुत छोटा और अंधकार से खाली था मगर तीन तरफ से उसकी दीवारें बहुत मजबूत और संगीन थीं तथा चौथी तरफ लोहे का मजबूत जंगला लगा हुआ था जिसमें आने के लिए छोटा दरवाजा भी था जो इस समय बहुत बड़े ताले से बन्द था। इस कैदखाने के अन्दर बैठा बैठा भूतनाथ अपने सामने के दृश्य बहुत अच्छी तरह देख सकता था। थोड़ी देर इधर उधर निगाह दौड़ाने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और जंगले के पास आकर बड़े गौर से देखने लगा। उसके सामने वही सुन्दर जमीन और खुशनुमा घाटी थी जिसका हाल हम ऊपर बयान कर आये हैं, जो कला और बिमला के कब्जे में है, अथवा जहां की सैर अभी अभी प्रभाकरसिंह कर आये हैं। बीच वाले सुन्दर कमरे को भूतनाथ बड़े गौर के साथ देख रहा था क्योंकि वह कैदखाना जिसमें भूतनाथ कैद था पहाड़ की ऊंचाई पर बना हुआ था जहां से इस घाटी का हर एक हिस्सा साफ साफ दिखाई दे रहा था। उसकी चालाक और चंचल निगाहें इस बात की जांच कर रही थीं कि वह किस जगह पर कैद है और उसको कैद करने वाला कौन है।

इस घाटी में न कभी वह आया था न इसे कभी देखा था और न इसका हाल ही कुछ जानता था, अतएव उसे किसी तरह का गुमान भी न हुआ कि यह उसके पड़ोस की घाटी है अथवा इसके पास ही उसका निजी मकान है जहां वह रहता है।

थोड़ी देर तक बड़े गौर से इधर उधर देखने के बाद भूतनाथ हताश होकर बैठ गया और तरह तरह की बातें सोचने लगा। उसे इस बात का बहुत ही दुःख था कि उसके हरबे छीन लिए थे और उसका ऐयारी का बटुआ भी उसके पास न था मगर उसके उस जख्म में कोई विशेष तकलीफ न थी जिसकी बदौलत वह बेहोश होकर कैदखाने की हवा खा रहा था।

दोपहर की टनटनाती धूप भूतनाथ की आंखों के सामने चमक रही थी। भूख तो कोई बात नहीं मगर प्यास के मारे उसका गला चटका जाता था। वह सोच रहा था कि उसे दाना पानी देने के लिए भी कोई आवेगा या वह भूखा

ही पिंजरे में बन्द रहेगा क्योंकि अभी तक किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी थी।

थोड़ी देर और बीत जाने के बाद एक औरत वहां आई जिसके पास भूत-नाथ के लिए खाने पीने का सामान था। उसने वह सामान बड़ी होशियारी से जंगले के अन्दर एक खास रास्ते से जो इसी काम के वास्ते बना हुआ था रख दिया और कहा, "लो गदाधरसिंह, तुम्हारे लिए खाने पीने का सामान आ गया है। इसे खाओ और मौत का इन्तजार करो।"

भूत०। (पानी का लोटा उठा कर) हां ठीक है, बस मेरे लिए यह काफी है, मैं सिर्फ पानी ही पीकर मौत का इन्तजार करूंगा क्योंकि जब तक मैं जंगल मैदान और स्नान इत्यादि कर्म न कर लूं भोजन नहीं कर सकता।

औरत०। खैर तुम्हारी खुशी, मेरा जो कुछ काम था उसे मैं पूरा कर चुकी। मगर मैं अपनी तरफ से यह पूछती हूं कि तुम कै दिन तक इस तरह से गुजारा कर सकोगे? (कुछ सोच कर) नहीं, मेरा यह सवाल करना ही वृथा है क्योंकि मैं खूब जानती हूं कि दो तीन दिन के अन्दर ही तुम्हारा फ़ैसला हो जायगा और तुम इस दुनिया से उठा दिये जाओगे।

भूत०। अगर ऐसा ही है तो यह दो तीन दिन का विलम्ब भी क्यों?

औरत०। इसलिए कि तुम्हारी सजा का ढंग निश्चय कर लिया जाय।

भूत०। ढंग कैसा? मैं नहीं समझा!

औरत०। मतलब यह है कि तुम एक दम से नहीं मार डाले जाओगे बल्कि तरह तरह की तकलीफ देकर तुम्हारी जान ली जायगी, अस्तु यह निश्चय किया जा रहा है कि किस तरह की तकलीफ तुम्हारे लिये उचित है।

भूत०। ये बातें कौन तजवीज कर रहा है?

औरत०। हमारे मालिक लोग।

भूत०। मालूम होता कि तुम्हारे मालिक लोग मर्द नहीं हैं हींजड़े हैं या औरत। ऐसे विचार मर्दों के नहीं होते!

औरत०। बेशक ऐसा ही है, हमारे मालिक औरत हैं।

भूत०। (आश्चर्य से) औरत हैं!!

औरत०। हां औरत।

भूत०। मगर मैंने किसी औरत के साथ कभी दुश्मनी नहीं की बल्कि कोई मर्द भी ऐसा न मिलेगा जो मुझे अपना दुश्मन बतावे और कहे कि गदाधरसिंह

ने मुझे बर्बाद कर दिया।

औरत०। जो हो, इस विषय में मैं नहीं कह सकती, आखिर कोई बात होगी ही तो !!

भूत०। क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है अथवा वह कौन है ? तुम यकीन रक्खो कि इसके बदले में मैं तुम्हें इतनी दौलत दूंगा कि कभी तुमने आंखों से न देखी होगी।

औरत०। मैं ऐसा नहीं कर सकती कि तुम्हें इस कैद से छुड़ा दूं और तब तुम मुझे बेअन्दाज दौलत देकर मालामाल दर दो, इसके अतिरिक्त इस कैदखाने की ताली खुद मालकिन के कब्जे में है।

भूत०। नहीं नहीं, मैं नहीं कहता तुम मुझे इस कैदखाने से बाहर कर दो।

औरत०। अगर ऐसा नहीं है तो तुम मुझे किस काम के लिए और कहां से दौलत दे सकते हो।

भूत०। मेरे मकान में जो कुछ दौलत है उसका तो कोई ठिकाना ही नहीं, मगर मेरे पास भी हरदम बटुए में दो चार लाख रुपये की जमा मौजूद रहती है। तुम कह सकती हो कि इस समय तो तुम्हारे पास तुम्हारा बटुआ भी नहीं है....

औरत०। हां हां मैं यही कहने वाली थी, बल्कि यह भी समझ रखना चाहिए कि इस समय वह बटुआ जिसके कब्जे में होगा उसने वह रकम भी जरूर निकाल ली होगी।

भूत०। (बनावटी हंसी के साथ) नहीं नहीं, इसका तो तुम गुमान भी न करो कि वह रकम निकाली गई होगी, क्योंकि उसमें कोई जवाहिरात की डिबिया नहीं है या कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई देखते ही दौलत समझ ले, बल्कि उस बटुए में कोई ऐसी चीज है जिसे मेरे सिवाय कोई बता नहीं सकता कि यह दौलत है और जो किसी अनजान की निगाह में बिल्कुल रद्दी चीज है, बल्कि यों समझो कि जहां वह दौलत रक्खी हुई है वहां की ताली उस बटुए में है जिसकी कलई मेरे सिवाय कोई खोल नहीं सकता और और न मेरे बताये बिना कोई पा ही सकता है। वह दौलत जो लगभग चार पांच लाख रुपये के होगी मैं सिर्फ इतने ही काम के बदले में दे दिया चाहता हूं कि बटुआ मुझे ला दिया जाय और बता दिया जाय कि यह स्थान किसका है और मैं किसका कैदी हूं। मैं समझता हूं कि मैं जरूर मार ही डाला जाऊंगा, अस्तु ऐसी अवस्था में अगर वह दौलत किसी नेक रहमदिल और गरीब के काम आ जाय तो इससे बढ़ कर खुशी की बात और

क्या हो सकती है।

अहा, दुनिया में रुपया भी एक अजीब चीज है। इसकी आंच को सह जाना हंसी खेल नहीं है। इसे देख कर जिसके मुंह में पानी न भर आवे समझ लो कि वह पूरा महात्मा है, पूरा तपस्या है और सचमुच का देवता है। इस कम्बख्त की बदौलत बड़े बड़े घर सत्यानाश हो जाते है, भाई भाई में बिगाड़ हो जाता है, दोस्तों की दोस्ती में बट्टा लग जाता है, जोरू और खसम का रिश्ता कच्चे धागे से भी ज्यादे कमजोर होकर टूट जाता है, और ईमानदारी की साफ और सुफेद चादर में ऐसा धब्बा लग जाता है जो किसी तरह छुड़ाए नहीं छूटता। इसे देख कर जो धोखे में न पड़ा, इसे देख कर जिसका ईमान न टला, और इसे जिसने हाथ पैर का मैल समझा, वेशक कहना पड़ेगा कि उस पर ईश्वर की कृपा है और वही मुक्ति का वास्तविक पात्र है।

इसको आंच के सामने एक लौंडी का दिल भला कब तक कड़ा रह सकता था? यद्यपि उस औरत ने अपने चेहरे के उतार चढ़ाव को बहुत सम्हाला फिर भी भूतनाथ जान ही गया कि यह लालच के फन्दे में फंस गई।

भूत०। सच तो यों है कि उस दौलत को मैं बहुत सस्ते दाम में वलिक मुफ्त मोल बेच रहा हूं, अब भी अगर तुम न खरीदो तो मैं जोर देकर कहूंगा कि तुमसे बढ़ कर बदनसीब इस दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। क्या वह दौलत कम है? क्या उसे पाकर फिर भी किसी की नौकरी की जरूरत रह सकती है? क्या उसकी बदौलत सुख का सामान इकट्ठा होने में किसी तरह की त्रुटि हो सकती है? बिल्कुल नहीं! फिर सोच विचार करना क्यों और विलम्ब कैसा? केवल हमारा ऐयारी का बटुआ ला देना और बता देना कि मैं किसका कैदी हूं और इस स्थान का मालिक कौन है, सिर्फ इतने ही के बदले में अभी अभी यह रकम तुम्हें मिल सकती है सो भी ऐसी कि उसे कोई छीन भी न सकेगा।

औरत०। तुम यकीन जानो कि मैं एक अमीर की लौंडी हूं, मेरी मालकिन बेअन्दाज दौलत लुटाने वाली है, और उसकी बदौलत मुझे किसी बात की परवाह नहीं है........

भूत०। (बात काट कर) मगर लौंडीपन का तौक गले में जरूर पड़ा हुआ है, स्वतंत्र नहीं लापरवाह और बेफिक्र नहीं।

औरत०। हां, यह सच है मगर उनकी नौकरी मुझे गढ़ाती नहीं और वे मुझसे बहिनापे का सा वर्ताव करती हैं, मगर फिर भी तुम खुशी से दोगे तो मैं

उस दौलत को जरूर ले लूंगी लेकिन सिर्फ ऐसी अवस्था में जब कि मुझ पर नमकहरामी का धब्बा न लग सके।

ग्रंथकर्ता०। सत्यवचन! नमकहराम!! भला ऐसी भी कोई बात है!!

भूत०। नहीं नहीं, तुम पर नमकहरामी का धब्बा नहीं लग सकेगा और तुम्हारी मालकिन का भी कुछ नुकसान नहीं होगा क्योंकि मैं इस कैदखाने से छूट कर भाग नहीं जाना चाहता, केवल इतना ही जानना चाहता हूं कि मैं किसकी कैद में हूं और अपना बटुआ केवल इतने ही के लिए मांगता हूं कि उस खजाने की ताली निकाल कर तुम्हें दे दूं और बता दूं कि वह खजाना कहां है।

औरत०। अच्छा पहिले मैं बटुआ लाकर तुम्हें दे दूं तब पीछे बता दूंगी कि तुम किसके कैदी हो, सब्र करो और दिन बीत जाने दो, देखो वह दूसरी लौंडी आती है, अब मैं बिदा होती हूं।

इतना कह कर वह लौंडी भूतनाथ के दिल में खुशी और उम्मीद का पौधा जमा कर चली गई।

भूतनाथ बड़ा ही कट्टर और दुखःसुख बर्दाश्त करने वाला ऐयार था। कठिन से कठिन समय आ पड़ने पर भी उसकी हिम्मत टूटती न थी और वह अपनी कार्रवाई से बाज नहीं आता था।

खाने पीने का सामान जो कुछ उसके सामने आ गया था उसमें से पानी के सिवाय बाकी सब कुछ ज्यों का त्यों पड़ा रह गया। भूतनाथ को सिर्फ इस बात का इन्तजार था कि दिन बीते, अंधेरा हो और वह लौंडी आवे। इस बीच में बारी बारी से आठ दस लौंडियां उसके पास आईं, उन्होंने तरह तरह की बातें कीं और खाने के लिए समझाया बल्कि यहां तक कहा कि तुम्हारे मैदान जाने और नहाने का भी सामान किया जा सकता है मगर भूतनाथ ने कुछ भी न माना बल्कि उनकी बातों का जवाब तक न दिया और वे सब निराश होकर लौटती गईं।

दिन बीत गया, संध्या हुई और अंधकार ने अपना दखल जमाना शुरू किया। दो घंटे रात जाते जाते तक निशादेवी का शून्यमय राज्य हो गया। उस कैदखाने के पास जिसमें भूतनाथ बन्द था पेड़ों की बहुतायत होने के कारण इतना अंधकार था कि किसी का आना जाना दूर से मालूम नहीं हो सकता था।

भूतनाथ जंगले का सीखचा पकड़े हुए खड़ा कुछ सोच रहा था कि वही लौंडी जिसके ऊपर भूतनाथ का मोहिनी मंत्र चल चुका था और जो लालच के सुनहरे जाल में फंस चुकी थी हाथ में भूतनाथ का ऐयारी का बटुआ लिए आ पहुंची और

जंगले के सूराख* से हाथ बढ़ा कर धीरे से बोली, "लो गदाधरसिंह, यह तुम्हारा बटुआ हाजिर है। इसके लिए मुझे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी।"

भूत०। बेशक, अब हमारा और तुम्हारा दोनों का काम चल गया। (संभल कर, क्योंकि उसके मुंह से हमारा नाम निकल गया, यह शब्द भी खुशी के मारे निकल आये थे जो कि वह निकालना नहीं चाहता था) मेरा काम तो सिर्फ इतना ही कि मुझे अपने कैद करने वाले का पता लग जायगा मगर तुम अब हर तरह से प्रसन्न और स्वतंत्र हो जाओगी।

इतना कह कर भूतनाथ ने बटुआ उसके हाथ से ले लिया और कहा, "क्या इसमें मेरा सब सामान ज्यों का त्यों पड़ा हुआ है?"

लौंडी०। बेशक।

भूत०। तब मैं रोशनी करके देखूं और वह ताली निकालूं?

लौंडी०। नहीं नहीं, रोशनी करने का मौका नहीं है, जो कुछ तुम्हें करना है अंधेरे ही में करो और जो कुछ निकालना है उसे टटोल कर निकालो, मैं तुम्हें फिर भी विश्वास दिलाती हूं कि तुम्हारी सब चीजें इसमें ज्यों की त्यों रक्खी हैं।

भूत०। खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं सब काम अंधेरे ही में कर सकूंगा, अगर मेरी चीजें ज्यों की त्यों रक्खी हैं और इधर उधर नहीं की गईं तो मुझे रोशनी की कुछ भी जरूरत नहीं है। अच्छा अब वह असल काम हो जाना चाहिए अर्थात् मुझे मालूम हो जाना चाहिए कि मैं किसका कैदी हूं।

लौंडी०। हां मैं बताती हूं (कुछ सोच कर) मगर मैं फिर सोचती हूं कि यह काम मेरे लिए बिलकुल ही अनुचित होगा, मालिक का नाम तुम्हें बता देना निःसन्देह मालिक के साथ दुश्मनी करना हैं।

भूत०। यह सोचना तुम्हारी बुद्धिमानी नहीं है बल्कि बेवकूफी है, हां यदि मैं स्वतंत्र होता और मैदान में तुमसे मुलाकात हुई होती तो तुम्हारा यह सोचना कुछ उचित भी हो सकता था। तुम देख रही हो कि मैं किस अवस्था में हूं और मेरी तकदीर में क्या लिखा हुआ है। फिर, मैं इस समय कर ही क्या सकता हूं? सोचो तो....

लौंडी०। हाँ एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक है, अच्छा मैं बताए देती हूं कि तुम्हारा दुश्मन कौन है और तुम्हें किसने कैद किया।

भूत०। बस मैं इतना ही सुना चाहता हूं।

---

* जिसे खोल कर खाने पीने की चीजें अन्दर रखी जाती थीं।

लौंडी० । तुम्हें उसी ने कैद किया है जिसके पति को तुमने बेईमानी और नमकहरामी करके बड़ी निर्दयता के साथ बेकसूर मारा है । दयाराम को मार कर तुम इस दुनिया में सुखी नहीं हो सके और न भविष्य में तुम्हारे सुखी होने की आशा है ।

भूत० । (चौंक कर ताज्जुब के साथ) हैं, क्या दयाराम की दोनों स्त्रियां जीती हैं ? और उनको इस बात का विश्वास है कि दयाराम को मैंने ही मार डाला है ?

लौंडी० । हां वे दोनों जीती हैं, और उन्हें इस बात का विश्वास है ।

भूत० । मगर वह बात सच नहीं है, अपने प्यारे मित्र दयाराम को मैंने नहीं मारा बल्कि किसी दूसरे ही ने मारा है ।

लौंडी० । खैर इन बातों से तो मुझे कोई सम्बन्ध नहीं । मैं तो लौंडी ठहरी, जो कुछ सुनती हूं वही जानती हूं !!

भूत० । अच्छा अच्छा, मुझे इन बातों से कुछ फायदा भी नहीं है, बस विश्वास इसी बात का हो जाना चाहिए कि तुम सच कहती हो और वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियां जीती हैं । मुझे खूब याद है कि उनके मर जाने की खबर बड़ी सचाई के साथ उड़ी थी और उनके क्रिया कर्म में बहुत ज्यादा रुपया खर्च किया गया था जिसे मैं निजी तौर पर बहुत अच्छी तरह जानता हूं । इस बारे में तुम मुझे क्योंकर धोखा दे सकती हो !!

लौंडी० । तुम जो चाहो समझो और कहो, मैं तुमसे बहस करने के लिए नहीं आई हूं और न इन सब रहस्यों को जानती हूं, बात जो सच है वही कह दी है ।

भूत० । मगर मुझे विश्वास नहीं आता ।

लौंडी० । विश्वास नहीं आता तो जाने दो ।

भूत० । ऐसी अवस्था में मैं इनाम भी नहीं दे सकता ।

लौंडी० । मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है ।

भूत० । अच्छा तो जाओ अपना काम देखो ।

लौंडी० । बटुआ मुझे वापस कर दो, जहां से मैं लाई हूं वहां रख आऊं और बदनामी से बचूं ।

भूतनाथ उस लौंडी से बातें भी करता जाता था और अपने बटुए में से जिसे लौंडी ने ला दिया था अंधेरे में टटोल टटोल कर कुछ निकालता भी जाता था जिसकी खबर उस लौंडी को कुछ भी न थी और न अंधकार के कारण वह कुछ देख ही सकती थी । अस्तु लौंडी की बात का भूतनाथ ने पुनः यों उत्तर दिया ।—

भूत० । बदनामी से तो तुम किसी तरह बच नहीं सकती हो । अगर मैं यह बटुआ तुम्हें वापस न दूं तो तुम क्या करोगी ?

लौंडी० । मैं खूब चिल्लाऊंगी कि किसी लौंडी ने यह बटुआ ला कर भूतनाथ को दे दिया है ।

भूत० । लेकिन लोगों के इकट्ठा हो जाने पर मैं यही कह दूंगा कि इसी लौंडी ने ला दिया है ।

लौंडी० । मगर इस बात का किसी को विश्वास न होगा ।

भूत० । (हंस कर) मालूम होता है कि तुम विश्वासपात्र समझी जाती हो! खैर तुम नहीं तो कोई दूसरी तुम्हारी साथिन पकड़ी जायगी ।

लौंडी० । जो होगा देखा जायगा!

भूत० । मगर नहीं मैं ऐसा बेईमान नहीं हूं, लो यह बटुआ देता हूं, जहां से तुम लाई हो रख आओ । क्या कहूं, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास ही नहीं होता नहीं तो मैं वह खजाना जरूर तुम्हें दे देता ।

इतना कह कर भूतनाथ ने वह बटुआ लौंडी की तरफ बढ़ाया । उसने जिस तरह दिया था उसी तरह ले लिया और यह कहती वहां से चली गई, "बुरे लोगों से बात-चीत करना भी बुरा ही है, इस काम के लिए मुझे जिन्दगी भर पछताना पड़ेगा!"

जब लौंडी कुछ दूर चली गई तो भूतनाथ ने धीरे से यह जवाब दिया जिसे वह खुद ही सुन सकता था—"तुम्हारे लिए चाहे जो हो मगर मेरा काम निकल ही गया । अब मैं इस पेचीले मामले की गुत्थी अच्छी तरह सुलझा लूंगा ।"

भूतनाथ ने बात करते करते उस बटुए में से जो कई चीजें निकाल ली थीं उनमें कुछ शीशियां भी थीं जिनमें किसी तरह का अर्क था । एक शीशी का अर्क किसी ढंग से भूतनाथ ने कैदखाने के कई सींखचों की जड़ में लगाया और उसके कुछ देर बाद दूसरी शीशी का अर्क भी उसी जगह पर लगाया जिससे उतनी जगह का लोहा गल कर मोमबत्ती की तरह हो गया और भूतनाथ ने उसे बड़ी आसानी से हटा कर अपने निकलने लायक रास्ता बना लिया । बात की बात में भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया और मैदान की हवा खाने लगा ।

भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया सही मगर उसके लिए इस घाटी से बाहर हो जाना बड़ा ही कठिन था । एक तो अंधेरी रात दूसरे पहाड़ की ढालवीं और ऊनगढ़ ढोकों वाली पथरीली जमीन, तिस पर पगडण्डी और रास्ते का कुछ पता नहीं मगर खैर जो होगा देखा जायगा, भूतनाथ को इन बातों की कुछ परवाह न थी ।

अब हम थोड़ा सा हाल उस लौंडी का बयान करेंगे जो भूतनाथ के हाथ से बटुआ वापस लेकर चली गई थी।

उसे अपने किये पर बड़ा ही पछतावा था, उसे इस बात का बड़ा ही दुख था कि उसने भूतनाथ से अपने मालिकों का नाम बता दिया जो अपने को बहुत ही छिपा कर इस घाटी में रहती थीं। अब वह इस बात को खूब समझने लगी कि अगर भूतनाथ किसी तरह छूट कर निकल गया तो मेरे इस कर्म का बहुत ही बुरा नतीजा निकलेगा और भेद खुल जाने के कारण मेरे मालिकों को सख्त तकलीफ उठानी पड़ेगी। वह यही सोचती हुई जा रही थी कि मैंने बहुत ही बुरा किया जो लालच में पड़ कर अपने बेकसूर मालिकों के साथ ऐसा बेईमानी का बर्ताव किया। अब क्या किया जाय और मैं इस पाप का क्या प्रायश्चित करूं?

साथ ही इसके उसने यह भी सोचा कि भूतनाथ का यह बटुआ कुछ हलका मालूम पड़ता है। इसमें अब वह वजन नहीं है जो पहिले था जब मैं लाई थी। मालूम होता है भूतनाथ ने अंधेरे में टटोल कर अपने मतलब की चीज निकाल ली। अपने हाथ की रक्खी हुई चीज निकालने के लिये बुद्धिमान आदमी को रोशनी की जरूरत नहीं पड़ती। भूतनाथ ने बड़ी चालाकी की, अपना काम कर लिया और मुझे बेवकूफ बना कर बिदा किया! मैं ही ऐसी कम्बख्त थी जो उसके फन्दे में आ गई, अब मुझे जरूर अपने इस पाप का प्रायश्चित करना पड़ेगा॥

इसी तरह की बातें सोचती वह लौंडी वहां से चली गई।

तेरहवां बयान

रात आधी से ज्यादे बीत जाने पर भी कला बिमला और इन्दुमति को आंखों में नींद नहीं है। न मालूम किस गम्भीर विषय पर ये तीनों विचार कर रही हैं। सम्भव है कि भूतनाथ के विषय ही में कुछ विचार कर रही हों। अस्तु जो कुछ हो इनकी बातचीत सुनने से मालूम हो जायगा।

इन्दु०। (बिमला की तरफ देख कर) बहिन, जब इस बात का निश्चय हो गया कि तुम्हारे पति को गदाधरसिंह (भूतनाथ) ने मार डाला है तब उसके लिये बहुत बड़े जाल फैलाने और सोच विचार करने की जरूरत ही क्या है? जब वह कम्बख्त तुम्हारे कब्जे में आ गया है तो उसे मार कर सहज ही में बखेड़ा तै करो।

बिमला०। (ऊंची सांस लेकर) हाय बहिन तुम क्या कहती हो? इस कमीने को यों ही सहज में मार डालने से क्या मेरे दिल की आग बुझ जायगी? क्या कहा जायगा

कि मैंने इसे मार कर अपना बदला ले लिया ? किसी को मार डालना और बात है और बदला लेना और बात है । इसने मेरे दिल को जो कुछ सदमा पहुँचाया है उससे सौ गुना ज्यादे दुःख इसे हो तब मैं समझूं कि मैंने कुछ बदला लिया ।

इन्दु० । बहिन ! तुम खुद कह चुकी हो कि यह बहुत बुरी बला है अस्तु यदि यह तुम्हारे कब्जे से निकल गया या तुम्हारे असल भेद को इसे खबर हो गई तो बहुत बुरा हो जायगा ।

बिमला० । बल्कि अनर्थ हो जायगा । तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, मगर उसे हमारा भेद कुछ भी नहीं मालूम हो सकता और न यहां से निकल कर भाग ही जा सकता है ।

इन्दु० । ईश्वर करे ऐसा ही हो, मगर.....

कला० । कल इन्द्रदेवजी यहां आयेंगे, उनसे राय करके कोई न कोई कार्रवाई बहुत जल्दी की जायगी ।

बिमला० । मैं सोच रही हूं कि तब तक उसकी (पड़ोस वाली) घाटी पर कब्जा कर लिया जाय, उसका सदर दर्वाजा जिधर से वे लोग आते जाते हैं बन्द कर दिया जाय, उसके आदमी सब मार डाले जांय और उसका माल असबाब सब लूट लिया जाय और इन बातों की खबर भूतनाथ को भी दे दी जाय ।

इन्दु० । बहुत अच्छी बात है ।

बिमला० । और इतना काम मैं सहज ही में कर सकूंगी ।

इन्दु० । सो कैसे ?

बिमला० । तुम देखती रहो, सब काम तुम्हारे सामने ही तो होगा ।

कला० । हां कल ही इस काम को करके छुट्टी पा लेना चाहिए जिसमें इन्द्रदेवजी आवें तो उनके दिल को भी ढाढ़स पहुंचे ।

बिमला० । कल नहीं आज बल्कि इसी समय उस घाटी का रास्ता बन्द कर दिया जाय जिसमें लोग भाग कर बाहर न चले जांय ।

इन्दु० । ऐसा हो जाय तो बहुत ही अच्छा बात है, मगर दूसरे के घर में तुम इस तरह की कारंवाई....

बिमला० । (मुस्कुरा कर) नहीं बहिन, तुम व्यर्थ इतना सोच कर रही हो । बात यह है कि जिस तरह यह स्थान और घाटी जिसमें हम लोग रहती हैं इन्द्रदेवजी के अधिकार में है, उसी तरह वह घाटी भी जिसमें भूतनाथ रहता है इस घाटी का एक हिस्सा होने के कारण इन्द्रदेवजी के अधिकार में है । यह दोनों घाटी एक ही

है, या यों कहो कि एक ही मकान का यह जनाना हिस्सा और वह मर्दाना हिस्सा है और इसलिए इन दोनों जगहों का पूरा पूरा भेद इन्द्रदेवजी को मालूम है और उन्होंने जो कुछ मुझे बताया है मैं जानती हूं। इस बात की खबर भूतनाथ को कुछ भी नहीं है। यह घाटी जिसमें मैं रहती हूँ हमेशा बन्द रहती थी मगर उस घाटी का दर्वाजा बराबर न जाने क्यों खुला ही रहता था, शायद इसका सबब यह हो कि उस घाटी में कोई जोखिम की चीज नहीं है और न कोई अच्छी इमारत ही है, अस्तु भूतनाथ यह भी नहीं जानता कि उस घाटी का दर्वाजा कहां है तथा क्यों कर खुलता और बन्द होता है या इस स्थान का कोई मालिक भी है या नहीं। भूतनाथ को घूमते फिरते इत्तिफाक से या और किसी वजह से वह घाटी मिल गई और उसने उसे अपना बना लिया और जब यह खबर इन्द्रदेवजी को और मुझको मालूम हुई तब उन्होंने मेरी इच्छानुसार यह स्थान मुझे देकर यहां के बहुत से भेद बता दिए। बस अब मैं समझती हूं कि तुम्हें मेरी बातों का तत्व मालूम हो गया होगा।

इन्दु०। हां अब मैं समझ गई, ऐसी अवस्था में तुम जो चाहो सो कर सकती हो

बिमला०। अच्छा तो मैं जाती हूं और जो कुछ सोचा है उस काम को ठीक करती हूँ।

इतना कह कर बिमला उठ खड़ी हुई और इन्दुमति तथा कला को उसी जगह बैठे रहने की ताकीद कर घर के बाहर निकलने लगी, मगर इन्दु ने साथ जाने के लिए जिद्द की और बहुत कुछ समझाने पर भी न मानी, लाचार बिमला इन्दु को साथ ले गई और कला को उसी जगह छोड़ गई।

भूतनाथ का साथ छोड़ कर प्रभाकरसिंह के इस घाटी में आने का हाल हमारे पाठक भूले न होंगे। उन्हें याद होगा कि भूतनाथ की घाटी के अन्दर जाने वाली सुरंग के बीच में एक चौमुहानी थी जहां पहुंच कर प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ और इन्दुमति का साथ छोड़ा था और कला तथा बिमला के साथ दूसरी राह पर चल पड़े थे। आज इन्दुमति को साथ लिए हुए बिमला पुनः उसी जगह जाती है।

उस सुरंग के अन्दर वाली चौमुहानी से एक रास्ता तो भूतनाथ की घाटी के लिये था, दूसरा रास्ता सुरंग के बाहर निकल जाने के लिये था, और तीसरा तथा चौथा रास्ता (या सुरंग) कला और बिमला के घाटी में आने के लिये था। एक रास्ता तो ठीक उस घाटी में आता था जिधर से प्रभाकरसिंह आए थे और दूसरा रास्ता बिमला के महल में जाता था।

विमला के घर आने वाले दोनों रास्ते एक रंग ढंग के बने हुए थे और इनके अन्दर के तिलिस्मी दर्वाजे भी एक ही तरह के तथा गिनती में एक बराबर थे, अस्तु एक सुरंग का हाल पढ़ कर पाठक समझ जायेंगे कि दूसरी तरफ वाली सुरंग की अवस्था भी वैसी ही है जो विमला के घर को जाती है।

उस सुरग की चौमुहानी पर पहुंच कर जब बिमला की घाटी से आने वाली सुरंग की तरफ बढ़िये तो कई कदम जाने बाद एक (कम ऊंची) दहलीज मिलेगी जिसके अन्दर पैर रख कर ज्यों ज्यों आगे बढ़िये त्यों त्यों वह दहलीज ऊंची होती जायगी, यहां तक कि बीस पचीस कदम आगे जाते जाते वह दहलीज ऊँची होकर सुरंग को छत के साथ मिल जायगी और फिर पीछे को लौटने के लिए रास्ता न रहेगा। उसके पास ही दाहिनी तरफ दीवार के अन्दर एक पेंच है जिसे कायदे के साथ घुमाने पर वह दरवाजा खुल सकता है। अगर वह पेंच न घुमाया जाय और दहलीज के अन्दर कोई न हो, और जाने वाला आगे निकल गया हो, तो खुदबखुद भी वह रास्ता बारह घण्टे के बाद खुल जायगा और वह दहलीज धीरे धीरे नीची होकर करीब करीब जमीन के बराबर अर्थात् ज्यों को त्यों हो जायगी।

रास्ता कैसा पेचीदा और तंग है इसका हाल हम चौथे बयान में लिख आए हैं पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। लगभग तीन सौ कदम जाने के बाद एक और बन्द दर्वाजा मिलेगा जो किसी पेंच के सहारे पर खुलता और बन्द होता है। पेंच घुमाकर खोल देने पर भी उसके दोनों पल्ले अलग नहीं होते, भिड़के रहते हैं। हाथ का धक्का दीजिये तो खुल जांयगे और कुछ देर बाद आप से आप बन्द भी हो जांयगे मगर पुनः दूसरी बार केवल धक्का देने से वह दर्वाजा न खुलेगा असल पेंच घुमाने की जरूरत पड़ेगी। दोनों दरवाजों के दोनों तरफ एक ही ढंग के तिलिस्मी पेंच दर्वाजा खोलने और बन्द करने के लिए बने हुए थे और इसका हाल भूतनाथ को कुछ भी मालूम न था। इसके अतिरिक्त उस सुरंग का सदर दर्वाजा भी (जिसके अन्दर घुसने के बाद चौमुहानी मिलती थी) बन्द हो सकता था और यह बात बिमला के आधीन थी। केवल इतना ही नहीं, उस चौमुहानी से भूतनाथ की घाटी की तरफ जाने वाली सुरंग में भी एक दर्वाजा (इन दोनों सुरंगों की तरफ) था और उसका हाल भी यद्यपि भूतनाथ को तो मालूम न था मगर बिमला उसे भी बन्द कर सकती थी।

इन्दु को साथ लिए हुए बिमला उसी सुरंग में घुसी और उस सुरंग के भेद इन्दु को समझाती तथा दर्वाजा खोलती और बन्द करती हुई उसी चौमुहानी पर

पहुंची जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है और जहां प्रभाकरसिंह ने इन्दु का साथ छोड़ा था। वहां पहुंच कर कुछ देर के लिए बिमला अटकी और आहट लेने लगी कि भूतनाथ की घाटी में आने वाला कोई आदमी तो इस समय इस सुरंग में मौजूद नहीं है। जब सन्नाटा मालूम हुआ और किसी आदमी के वहां होने का गुमान न रहा तब वह भूतनाथ वाली घाटी की तरफ जो रास्ता गया था उस सुरंग में घुसी और दस बारह कदम जाने के बाद दीवार के अन्दर बने हुए किसी कल पुरजे को घुमा कर उस सुरंग का रास्ता उसने बन्द कर दिया। लोहे का एक मोटा तख्ता दीवार के अन्दर से निकला और रास्ता बन्द करता हुआ दूसरी दीवार के अन्दर कुछ घुस कर अटक गया।

इसके बाद बिमला सुरंग के सदर दर्वाजे पर दर्वाजा बन्द करने के लिए पहुँची ही थी कि सुरंग के अन्दर घुसते हुए भूतनाथके शागिर्द भोलासिंह पर निगाह पड़ी और उसने भी इन दोनों औरतों को देख लिया। वह इन्दु को अच्छी तरह देख चुका था अस्तु निगाह पड़ते ही पहिचान गया और आश्चर्य के साथ देखता हुआ बोला—"आह! मेरी रानी तुम यहां कहां? तुम्हारे लिये तो हमारे गुरूजी बहुत परेशान हैं!!"

इस जगह बखूबी उजाला था इसलिए इन्दु ने भोलासिंह को और भोलासिंह ने इन्दु को बखूबी पहिचान लिया। इन्दु पर क्या क्या मुसीबतें गुजरीं और प्रभाकरसिंह कहां गए इन बातों की खबर भोलासिंह को कुछ भी न थी, इसलिए वह इस समय इन्दु को देख कर खुश हुआ और ताज्जुब करने लगा। इन्दु ने धीरे से बिमला को समझाया कि यह भूतनाथ का शागिर्द है।

इन्दु उसे पहिचानती थी सही मगर नाम कदाचित् नहीं जानती थी। वह उसकी बात का जबाब दिया ही चाहती थी कि बिमला ने उंगली दबा कर उसे चुप रहने का इशारा किया और कुछ आगे बढ़ कर कहा, "तुम्हारे गुरूजी ने इन्हें मौत के पंजे से छुड़ाया और इनकी बदौलत उसी आफत से मेरी भी जान बची है।"

भोला०। गुरूजी कहाँ हैं!

बिमला०। हमारे साथ आओ और उनसे मुलाकात करके सुनो कि उन्होंने इस बीच में कैसे कैसे अनूठे काम किए हैं!

भोला०। चलो चलो, मैं बहुत जल्द उनसे मिला चाहता हूं।

बिमला ने इन्दु को अपने आगे किया और भोलासिंह को पीछे आने का इशारा करके अपनी घाटी की तरफ रवाना हुई।

बिमला इस सुरंग का सदर दर्वाजा बन्द न कर सकी, खैर इसकी उसे ज्यादे परवाह भी न थी। चौमुहानी से जो भूतनाथ की घाटी की तरफ रास्ता गया था उसी को बन्द कर उसने सन्तोष लाभ कर लिया। बिमला के पीछे पीछे चल कर भोलासिंह उस चौमुहाने तक पहुंचा मगर जब बिमला अपनी घाटी की तरफ अर्थात् सामने वाली सुरंग में रवाना हुई तब भोलासिंह रुका और बोला, "इस तरफ तो हमारे गुरुजी कभी जाते न थे और उन्होंने दूसरों को भी इधर जाने को मना कर दिया था। आज वे इधर कैसे गए !"

बिमला०। हां पहिले उनका शायद यही खयाल था मगर आज तो इसी मकान में बैठे हुए हैं।

भोला०। क्या इसके अन्दर कोई मकान है ?

बिमला०। हां बहुत सुन्दर मकान है।

भोला०। कितनी दूर पर ?

बिमला०। बहुत थोड़ी दूर पर, तुम आओ तो सही।

"ये दोनों औरतें बेचारी भला मेरे साथ क्या दगा करेंगी !" यह सोच भोलासिंह आगे बढ़ा और इनके साथ सुरंग के अन्दर घुस गया।

जो हाल प्रभाकरसिंह का इस सुरंग में हुआ था वही हाल इस समय भोलासिंह का हुआ अर्थात् पीछे की तरफ लौटने का रास्ता बन्द हो गया और बिमला तथा इन्दु के आगे बढ़ जाने तथा चुप हो जाने के कारण वह जोर जोर से पुकारने और टटोल टटोल कर आगे की तरफ बढ़ने लगा।

प्रभाकरसिंह को इसके आगे का दर्वाजा खुला हुआ मिला था मगर भोलासिंह को आगे का दर्वाजा खुला हुआ न मिला, उसे दोनों दर्वाजों के अन्दर बन्द करके बिमला और इन्दु अपने डेरे की तरफ निकल गईं।

॥ पहिला भाग समाप्त ॥

२८ वां संस्करण] १९७५ ई० [१६०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

ज
प्य
दम
जा
उस

इस
में
बलि
है

को
जह
हाल
होने

कौन

॥ श्रीः ॥

भूतनाथ

दूसरा भाग

पहिला बयान

रात बहुत कम बाकी थी जब बिमला और इंदुमति लौट कर घर में आईं जहां कला को अकेली छोड़ गई थीं। यहां आते ही बिमला ने देखा कि उसकी प्यारी लौंडी चन्दो जमीन पर पड़ी हुई मौत का इन्तजार कर रही है, उसका दम टूटा ही चाहता है, आंखें बन्द हैं, और अधखुले मुंह से रुक कर सांस आती जाती है, बीच बीच में हिचकी भी आ जाती है। कला झारी में गंगाजल लिये उसके मुंह में शायद टपकाया चाहती है।

यह अवस्था देख कर बिमला घबड़ा गई और ताज्जुब करने लगी कि उसकी इस थोड़ी ही गैरहाजिरी में यह क्या हो गया और चन्दो यकायक किस बीमारी में फंस गई जो इस समय उसकी जिन्दगी का चिराग इस तरह टिमटिमा रहा है बल्कि बुझा चाहता है। बिमला ने घबरा कर कला से पूछा, "यह क्या मामला है और कम्बख्त को हो क्या गया है!"

कला०। मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि चन्दो अब इस असार ससार को छोड़ा ही चाहती है, अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए इस कम्बख्त ने जहर खा लिया है और जब रग रग में जहर भीन गया है तब यहां आकर सब हाल कहा है। मैंने जहर उतर जाने के लिये दवा इसे खिलाई है मगर कुछ फायदा होने का रंग नहीं है क्योंकि देर बहुत हो गई, कुछ और दवा पहुंचती तो अच्छा था।

बिमला०। राम राम, मगर यह इस कम्बख्त को सूझी क्या? और इसने कौन सा पाप किया है जिसके लिये ऐसा प्रायश्चित करना पड़ा!

कला० । बहिन पाप तो इसने निःसन्देह बहुत भारी किया है जिसका प्राय-श्चित्त इसके सिवा और कुछ यह कर ही नहीं सकती थी, परन्तु मुझे इसके मरने का दुःख अवश्य है । जो काम इसने किया है उसके करने की आशा इससे कदापि नहीं हो सकती थी और जब इससे ऐसा काम हो गया तो किसी और लौंडी पर अब हम लोग इतना विश्वास भी नहीं कर सकतीं । हा, लालच में पड़ कर इस चुड़ैल ने हम दोनों बहिनों का असल हाल गदाधरसिंह को बतला दिया और कह दिया कि तुमसे बदला लेने के लिये यह सब खेल रचे गए है, और साथ ही भूत-नाथ का बटुआ भी यहां से ले जाकर उसे दे दिया । परन्तु इतना करने पर भी जब भूतनाथ ने इसे सूखा ही टरका दिया तब इसे ज्ञान उत्पन्न हुआ और ग्लानि में आकर जहर खा लिया। जब जहर अच्छी तरह तमाम बदन में भीन गया तब यह हम दोनों से मिलने और अपना पाप कहने के लिये यहां आयी थी, इसे यहां आये बहुत देर नहीं हुई ।

बिमला० । (हाथ से अपना माथा ठोक कर) हाय हाय हाय, इस कम्बख्त ने तो बहुत ही बुरा किया! क्या जाने यह इससे और भी कुछ ज्यादे कर गुजरी हो। जिस भेद को छिपाने के लिये तरह तरह की तरकीबें की गई थीं उस भेद का आज इसने सहज ही में सत्यानाश कर दिया हाय, अब भूतनाथ भी जरूर हमारे कैद से निकल गया होगा । जब उसे ऐयारी का बटुआ मिल गया तब वह उस कैद-खाने के भी बाहर हो गया हो तो आश्चर्य नहीं । वह बड़ा ही धूर्त और मक्कार है जिसके फेर में पड़ कर चन्दो ने हम लोगों को बर्बाद कर दिया और खुद भी दीन दुनिया दोनों में से कहीं के लायक न रही !!

कला ।बेशक ऐसा ही है, यद्यपि इस बात की आशा नहीं हो सकती कि भूतनाथ इस घाटी के बाहर हो जायगा तथापि उसका कैदखाने से बाहर निकल जाना ही कम कबाहट की बात नहीं है, और इससे भी ज्यादे बुरी बात यह हुई कि हमारे भेद उसे मालूम हो गया । हाय ऐसी रात में किसकी हिम्मत पड़ सकती है कि अकेले वहां जाकर भूतनाथ का हाल मालूम करे? अगर वह छूट गया होगा तो जरूर उसी जगह कहीं छिपा होगा, ताज्जुब नहीं कि सूरज निकलते तक वह कोई आफत..

बिमला० । मेरा भी यही खयाल है । (चन्दो के पास जाकर) हाय शैतान की बच्ची, तूने यह क्या किया ! हाय, अगर तू जीती रहती तो तुझसे पूछती कि 'दुष्ट, तूने इतना ही किया कि कुछ और ?'

चन्दो यद्यपि मौत के पंजे में फंसी हुई थी और उसकी जान बहुत जल्द निकल

वाली थी मगर वह कला और बिमला की बातें सुन रही थी, यद्यपि उसमें जवाब देने की ताकत न थी। उसने बिमला की आखिरी बात सुन कर आंखें खोल दीं, बिमला की तरफ देखा और इस प्रकार मुंह खोला मानो कुछ कहने के लिये बेचैन हो रही है, बहुत उद्योग कर रही है, मगर उसमें इतनी शक्ति न रही, उसकी आंखें पुनः बन्द हो गईं और अब वह पूरी तरह से बेहोश हो गयी। देखते देखते दस पांच हिचकियां लेकर उसने बिमला और कला के सामने दम तोड़ दिया।

अब कला और बिमला को यह फिक्र पैदा हुई कि पहिले इसे ठिकाने पहुंचाया जाय या चल कर भूतनाथ की खबर ली जाय, मगर इन्दुमति की राय हुई कि इन दोनों कामों के पहिले बंगले की हिफाजत की जाय (जो इस घाटी के बीच में था और जहां प्रभाकरसिंह पहिले पहिल पहुंचे थे) क्योंकि उसमें बहुत सी जरूरी चीजें रक्खी हुई हैं और साथ ही उसकी जांच करने से बहुत से भेद भी मालूम हो सकते हैं।

इन्दु की इस राय को बिमला और कला ने बहुत पसन्द किया और तीनों औरतें हर्बों और जरूरी चीजों से अपने को सजा कर गुप्त राह से बंगले की तरफ रवाना हुईं।

इस बंगले का हाल हम पहिले खुलासा तौर पर लिख चुके हैं, इसके दर्वाजे ऐसे न थे कि बन्द कर देने पर कोई जबर्दस्ती या सहज ही में खोल सके तथा और बातों में भी वह एक छोटा मोटा तिलिस्म या कारीगरी का खजाना ही समझा जाता था। यद्यपि वह बंगला ऐसी हिफाजत की जगह में था जहां बदमाशों का गुजर नहीं हो सकता था तथापि उसकी हिफाजत के लिए कई लौंडियां मुकर्रर थीं जो मर्दानी सूरत में पहरेदारी के कायदे से उसके चारो तरफ बराबर घूमा करती थीं।

कला बिमला और इन्दु ने वहां पहुंच कर उस बंगले के दर्वाजे बन्द करने शुरू कर दिये। पहिले बाहर से भीतर आने का रास्ता रोका, इसके बाद कई जरूरी चीजें उनमें से निकालने के बाद आलमारियों में ताले लगाये और तब भीतर के कमरे सब बन्द कर दिये गये। इतना कर वे एक छोटे गुप्त रास्ते को बन्द करती हुई बाहर निकली ही थीं कि एक पहरेदार लौंडी के जोर से चिल्लाने की आवाज आई।

तीनों औरतें कदम बढ़ाती हुई बंगले के सदर दर्वाजे पर पहुंचीं जहां नाम मात्र के लिए पहरा रहा करता था या जिधर से पहरेदार लौंडी के चिल्लाने की आवाज आई थी। वह लौंडी मर्दाने भेष में थी और घबराई हुई मालूम पड़ती थी। बिमला ने पूछा—"क्या मामला है, तू क्यों चिल्लाई?"

लौंडी०। मेरी रानी, देखो उस पहाड़ी की तरफ जिधर कैदखाना है और

जहां भूतनाथ कैद है कई जगह आग की धूनी जल रही है। मालूम होता है मानो बहुत से आदमियों ने आकर उस पहाड़ी पर दखल जमा लिया है। अगर ये आग की धूनियां आपकी तरफ से नहीं सुलगाई गई हैं तो जरूर किसी आने वाली आफत की निशानी हैं, और मुझे विश्वास है कि आपने इसके लिये कोई हुक्म नहीं दिया होगा।

बिमला०। (ताज्जुब के साथ उस पहाड़ी की तरफ देख कर) बेशक यह नई बात है, मैंने ऐसा करने के लिये किसी को हुक्म नहीं दिया, मगर घबड़ाने की कोई बात नहीं है, जहां तक मैं समझती हूं यह भूतनाथ की कार्रवाई है क्योंकि चन्दो की मदद से भूतनाथ कैद से छूट गया, और हम लोग उसी के लिये बन्दोबस्त कर रही हैं।

लौंडी०। (ताज्जुब के साथ) हैं, भूतनाथ कैदखाने से छूट गया, और चन्दो बीबी की मदद से।

बिमला०। हां ऐसी ही बात है, किसी दूसरे वक्त इसका खुलासा हाल तुम्हें मालूम होगा, इस समय मैं उसी पहाड़ी पर जाती हूं और भूतनाथ को गिरफ्तार करती हूं।

कला०। मगर बहिन, मैं इस राय के विरुद्ध हूं।

बिमला०। क्यों ?

कला०। देखो, सोचो तो सही कि इस तरह कई जगहों पर आग सुलगाने या बालने से भूतनाथ का क्या मतलब है।

बिमला०। (कुछ सोच कर) जहां तक मैं समझती हूँ इस कार्रवाई से भूतनाथ का यही मतलब होगा कि हमलोगों को धोखा देकर उस तरफ बुलावे और किसी जगह पर आड़ में छिपे रह कर हमारे ऊपर वार करे।

कला०। बेशक, क्योंकि आग के पास पहुच कर हमलोग उसे ढूंढ़ न सकेंगे। दस्तूर की बात है कि जो कोई सुलगती हुई आग के पास रहता है वह सामने की किसी चीज को नहीं देख सकता। वहां तो कई जगह पर आग सुलग रही है, उनके बीच में जाकर हमलोग किसी तरफ भी निगाह करके दुश्मन को नहीं देख सकेंगे।

बिमला०। ठीक है मगर हमलोगों पर इस समय उसका कोई हरबा काम नहीं कर सकता।

कला०। तथापि हर तरह से बच के काम करना चाहिए, विशेष कर इसलिये कि इन्दु बहिन हमारे साथ हैं, यद्यपि ये यहां के सब भेदों को जानती हैं और हम लोगों का साथ हर तरह से दे सकती हैं।

इन्दु०। मेरे लिए कोई तरद्दुद न करो, मैं तुम लोगों के साथ बखूबी चल सकती हूं मगर मैं यह पूछती हू कि ऐसा करने की जरूरत क्या है और

काम में जल्दी किये बिना हर्ज ही क्या होता है? सम्भव है कि भूतनाथ ने वहां ऐयारी का कोई जाल फैलाया हो और इस रात के समय कुछ वह कर भी सके। थोडी सी तो रात रह गई है, अच्छा होता अगर यह बिता दी जाती। प्रातःकाल हमलोग देखेंगे कि भूतनाथ कहां जाता और क्या करता है। यद्यपि वह स्वतन्त्र हो गया है मगर इस घाटी के बाहर नहीं जा सकता और हमारे मकान तथा बंगले में भी उसकी गुजर नहीं हो सकती।

कला०। मैं भी इस राय को पसन्द करती हूं, चलो बंगले के ऊपर छत पर चल कर बैठें।

बिमला०। अच्छा चलो।

इन्दु०। (चलते हुए) मगर ताज्जुब है कि इतनी जल्दी भूतनाथ को आग सुलगाने के लिए इतना सामान कैसे मिल गया!

कला०। बहिन यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है! हमलोगों की जरूरत के लिए जंगल की लकड़ियां बहुत बटोरी गई थीं जिनके बहुत बड़े बड़े दो तीन ढेर वहां कैदखाने के पास ही में लगे हुए थे। मालूम होता है कि उन्हीं लकड़ियों से भूतनाथ ने काम लिया है।

इन्दु०। हां तब तो उसे बहुत सुबीता मिल गया होगा, मगर क्या तुम खयाल कर सकती हो कि भूतनाथ की यह कार्रवाई किसी और मतलब से भी हुई है?

बिमला०। मैं नहीं कह सकती, सम्भव है कि उसका और ही कोई मतलब हो, खैर देखा जायगा।

इसी तरह की बातें करती तथा दर्वाजों को खोलती और बन्द करती हुई तीनों बहिनें बंगले की छत पर चढ़ गईं और एक अच्छे ठिकाने बैठ कर उस तरफ देखने और सुबह का इन्तजार करने लगीं।

उस समय कला और बिमला से बहुत बड़ी भूल हो गई, क्योंकि वे तीनों इस अद्भुत बंगले की हिफाजत के लिए जब आईं तो उन्होंने रोशनी का कोई खास बन्दोबस्त नहीं किया, बंगलेका इन्तजाम करने के बाद वे तीनों बहिनें जब पहरे वाली लौंडी के चिल्लाने की आवाज सुन कर सदर दर्वाजे पर गईं तब उनके पास किसी तरह की रोशनी मौजूद न थी और न इस कामके लिए रोशनी की जरूरत ही थी, परन्तु जब तक वे पहरा देने वाली लौंडी से बातचीत करती और पहाड़ी के ऊपर वाली रोशनी की तरफ देखती रहीं तब तक एक आदमी जो अपने को स्याह कपड़े से छिपाये हुए था आड़ देता हुआ सदर दर्वाजे के पास पहुँचा और न मालूम किस

ढंग से उस बंगले के अन्दर दाखिल हो गया क्योंकि वे तीनों बहिनें और पहरा देने वाली लौंडी पहाड़ी की रोशनी को ताज्जुब के साथ देखती हुई सदर दर्वाजे से कुछ आगे की तरफ बढ़ गई थीं और उन्हें इस बात का कुछ खयाल न था कि दुश्मन बगल में आ पहुंचा और अपना काम किया चाहता। खैर वे तीनों बंगले के अन्दर घुसीं तो दर्वाजा बंद करती हुई छत पर चढ़ गईं जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है।

वे तीनों बहिनें उन कई जगह बलती हुई आग की रोशनियों को गौर से देख रही थीं जो अब धीरे धीरे ठंडी हो रही थीं।

कला०। अब आग थोड़ी देर में बिल्कुल ठण्डी हो जायगी।

बिमला०। हां और इससे मालूम होता है कि भूतनाथ कहीं आगे की तरफ बढ़ गया।

"आगे की तरफ नहीं बढ़ गया बल्कि इस तरफ चला आया और विश्वास दिलाया चाहता है कि वह आपका दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त है।"

यह आवाज छत के ऊपर आने वाले दर्वाजे की तरफ से आई थी जो उन तीनों बहिनों के पास ही था।

इस आवाज ने उन तीनों को चौंका दिया, वे उठ खड़ी हुईं और उस दर्वाजे की तरफ देखने लगीं। अब यहां पर वैसा अंधकार न था जैसा नीचे खासकर के पेड़ों की छांह के सबब से था। चन्द्रदेव उदय हो चुके थे और उनकी चांदनी पल पल में बराबर बढ़ती चली जा रही थी, अस्तु उन तीनों बहिनोंने साफ देख लिया कि दर्वाजे के अन्दर एक पैर बाहर और दूसरा भीतर किये कोई आदमी स्याह लबादा ओढ़े खड़ा है।

बिमला०। (उस आदमी से) तुम कौन हो?

आदमी०। गदाधरसिंह।

बिमला०। (निडर रह कर) तुमने बड़ी चालाकी से अपने को कैद से छुड़ा लिया।

गदाधर०। बात तो ऐसी ही है।

बिमला०। मगर तुम भाग कर इस घाटी के बाहर नहीं जा सकते!

गदा०। शायद ऐसा ही हो, मगर मुझे भागने की जरूरत ही क्या है?

बिमला०। क्यों, अपनी जान बचाने के लिये तुम जरूर भागना चाहते होगे!

गदाधर०। नहीं, मुझे अपनी जान का यहां कोई खौफ नहीं है क्योंकि तुम्हारी एक नमकहराम लौंडी ने मुझे बता दिया है कि तुम मेरे प्यारे दोस्त दयाराम की स्त्री हो......

बिमला०। (बात काट कर) जिस प्यारे दोस्त को तुमने अपने हाथ से हलाल किया !!

गदा०। नहीं नहीं, कदापि नहीं। जिसने यह बात तुमसे कही है वह बिल्कुल झूठा है और उसने तुम लोगों को धोखे में डाल दिया है, यही समझाने और विश्वास दिलाने के लिए मैं यहां अटक गया हूं और भागना पसन्द नहीं करता। मुझे विश्वास था कि तुम दोनों बहिनों का देहान्त हो चुका है जैसा कि दुनिया में प्रसिद्ध किया गया है, मगर अब तुम दोनों का हाल जान कर भी क्या मैं भागने का इच्छा करूंगा ? नहीं क्योंकि तुम दोनों को अब भी मैं उसी निगाह से देखता हूं जैसे अपने प्यारे दोस्त की जिन्दगी में देखता था और यही सबब है कि मुझे तुम दोनों से किसी तरह का डर नहीं लगता।

बिमला०। मगर नहीं, तुम्हें हम लोगों से डरना चाहिये, हम लोग तुम्हारे हितेच्छु कभी नहीं हो सकते क्योंकि हम लोगों ने जो कुछ सुना वह कदापि झूठ नहीं हो सकता।

गदाधर०। (दर्वाजे से बाहर निकल कर और बिमला के पास आ कर) मैं विश्वास दिला दूंगा कि मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया गया है।

बिमला०। (कई कदम पीछे हट कर और नफरत के साथ) बस दूर रह मुझसे दुष्ट ! मैं तेरी सूरत नहीं देखा चाहती !!

गदाधर०। (अपने ऊपर से स्याह कपड़ा हटा कर) नहीं तुम मेरी सूरत देखो पहिचानो और सुनो कि मैं क्या कहता हूं।

बिमला०। सिवाय बात बनाने के तू और क्या कहेगा ? तू अपने माथे से कलंक का टीका किसी तरह नहीं धो सकता और न वह बात झूठी हो सकती है जो मैं सुन चुकी हूं। दलीपशाह और शम्भू अभी तक दुनिया में मौजूद हैं और मैं भी खास तौर पर इस बात को जानती हूं।

गदाधर०। मगर सच बात यह है कि लोगों ने तुम्हें धोखा दिया और असल भेद को छिपा रक्खा। खैर तुम अगर मुझ पर विश्वास नहीं करतीं तो मुझे ज्यादे खुशामद करने की जरूरत नहीं, अब मैं सिर्फ दो चार बातें पूछ कर चला जाऊंगा। एक तो यह कि तुम मुझे गिरफ्तार करके यहां लाई थीं मगर मैं अपनी चालाकी से छूट गया, अब बताओ मेरे साथ क्या सलूक करोगी ?

बिमला०। अपने दिल का बुखार निकालने के लिये जो कुछ मझसे बन पड़ेगा करूंगी, इसे तुम खुद सोच सकते हो।

गदाधर० । पर मैं तो अब स्वतन्त्र हूं, अगर चाहूं तो तुम तीनों को इसी जगह खत्म करके रख दूं । मगर नहीं मैं नमक का खयाल करता हूं, ऐसा कदापि न करूंगा, हां तुमसे बचने के लिये उद्योग जरूर करूंगा ।

बिमला० । कदाचित ऐसा ही हो ।

इतना कह बिमला ने कला की तरफ देखा ।

गदाधरसिंह बिमला से बातें कर रहा था मगर उसे इस बात की खबर न थी कि कला क्या कर रही है अथवा क्या किया चाहती है ।

कला ने अपने बगल से एक छोटा सा बांस का बना हुआ तमंचा निकाला और गदाधरसिंह (भूतनाथ) की तरफ उसका मुंह करके चलाया ।

इस अद्‌भुत तमंचे में बेहोशी की बारूद भरी जाती थी और इसका तेज तथा जल्द बेहोश कर देने वाला धूआं छूटने के साथ ही तेजी से कई बिगहे तक फैल कर लोगों को बेहोश कर देता था । यहां पर फैलने के लिए विशेष जगह तो थी नहीं इसलिये उस धूएं के गुब्बार ने गदाधरसिंह को चारो तरफ से घेर कर एक तरह का अन्धकार कर दिया ।

"गदाधरसिंह धूए के असर से बेहोश हो जायगा" यह सोच कर बिमला कला और इन्दुमति तीनों बहिनें भाग कर नीचे उतर जाने के लिये उठीं और नाक दबाये हुए सीढ़ी की तरफ बढ़ गईं ।

गदाधरसिंह बेशक इस धूएं के असर से बेहोश हो जाता मगर उसने पहिले ही से अपने बचाव का बन्दोबस्त कर लिया था अर्थात् ऐसी दवा खा ली थी कि कई घण्टे तक उस पर बेहोशी का असर नहीं हो सकता था तथापि उस धूएं ने एक दफे उसका सर घुमा दिया ।

वे तीनों बहिनें वहां से भागीं तो सही मगर अफसोस, बिमला और इन्दु तो नीचे उतर गईं परन्तु कला को फुर्ती से गदाधरसिंह ने पकड़ कर कब्जेमें कर लिया और यह हाल बिमलाको नीचे उतर कर और कई कमरों में घूम फिर कर छिप जाने के बाद मालूम हुआ जब चित्त स्थिर हो जाने पर उसने कला को अपने साथ न देखा ।

दूसरा बयान

दिन पहर भर से कुछ ज्यादे चढ़ चुका है। यद्यपि अभी दोपहर होने में बहुत देर है तो भी धूप की गर्मी इस तरह बढ़ रही है कि अभी से पहाड़ के पत्थर गर्म हो रहे हैं और उन पर पैर रखने की इच्छा नहीं होती, दो पहर दिन चढ़ जाने के बाद यदि ये

पत्थर आग के अंगारों का मुकाबला करने लग जायं तो क्या आश्चर्य है !

पहाड़ के ऊपरी हिस्से पर एक छोटा सा मैदान है जिसका फैलाव लगभग डेढ़ या दो बिगहे का होगा। इसके ऊपर की तरफ सिर उठा कर देखने से मालूम होता है कि कुछ और चढ़ जाने से पहाड़ खतम हो जायगा और फिर सरपट मैदान दिखाई देगा पर वास्तव में ऐसा नहीं है।

इस छोटे मैदान में पत्थर के कई छोटे बड़े ढोंके मौजूद हैं जो मैदान की मामूली सफाई में बाधा डालते हैं और पत्थर के बड़े चट्टान भी बहुतायत से दिखाई दे रहे हैं जिनकी वजह से वह जमीन कुछ सुन्दर मालूम होती है मगर इस वक्त धूप की गर्मी के समय सभी बातें बुरी और भयानक जान पड़ रही हैं।

इस मैदान में केवल ढाल (पलास) के कई पेड़ दिखाई दे रहे हैं सो भी एक साथ नहीं जिनसे किसी तरह का आराम मिलने की आशा हो सके। इन्हीं पेड़ों में से एक के साथ हम बेचारी कला को कमन्द के सहारे बँधे हुए और उसके सामने गदाधरसिंह अर्थात् भूतनाथ को खड़े देख रहे हैं, अब सुनिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

गदाधर०। रात के समय जब मैंने तुझे गिरफ्तार किया तब यही समझे हुए था कि कला और बिमला में से किसी एक को पकड़ पाया हूं मगर अब मैं देखता हूं कि तू कोई और ही औरत है।*

कला०। तो क्या उस समय तुमने वहां पर कला और बिमला को अच्छी तरह देखा या पहिचाना था ?

गदा०। नहीं पहिचाना तो नहीं था मगर बातें जरूर की थीं और वे बातें भी ऐसे ढंग की थीं जिनसे उनका कला और बिमला ही होना साबित होता था।

कला०। वह तुम्हारा भ्रम था, इस घाटी में कला और बिमला नहीं रहतीं।

गदा०। (हंस कर) बहुत खासे ! अब थोड़ी देर में कह दोगी कि 'मैं कला और बिमला को जानती ही नहीं' !

कला०। नहीं ऐसा तो मैं नहीं कह सकती कि उन दोनों को पहिचानती तक नहीं, मगर यह जरूर कहूंगी कि वे दोनों यहां नहीं रहतीं और हम लोगों को उनसे कोई वास्ता नहीं।

गदा०। तो फिर तुम्हारी तरफ से इस ढंग की बातें क्यों की गईं कि मानो

* पाठकों को याद होगा कि कला और बिमला हर वक्त अपनी असली सूरत को एक झिल्ली से छिपाए रहती थीं। इस समय भी कला के चेहरे पर वही झिल्ली है।

तुम ही कला या बिमला हो ?

कला० । यह तो उनसे पूछो तो मालूम हो जिन्होंने तुमसे बातें की थीं, मैंने तो तुमसे एक बात भी नहीं की थी ।

गदा० । वे कौन थीं जो मुझसे बातें कर रही थीं ?

कला० । मेरी मालकिन ।

गदा० । आखिर उनका कुछ नाम पता भी है या नहीं ।

कला० । यह बताने की तो कोई जरूरत नहीं है ।

गदा० । तुझे झख मार कर बताना ही पड़ेगा और यह भी बताना पड़ेगा कि कला और बिमला कहां हैं ? तेरा यह कहना मैं नहीं मान सकता कि कला बिमला इस घाटी में नहीं रहतीं और तुम लोगों का उनसे कोई सम्बन्ध नहीं। आखिर तुमने मुझसे दुश्मनी क्यों की और मैं क्यों इस घाटी में कैद करके लाया गया ? तुम लोगों का मैंने क्या बिगाड़ा था ।

कला० । हम लोगों को तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है मगर तुम्हारी गिरफ्तारी में हम लोग शरीक जरूर हैं और वह गिरफ्तारी कला और बिमला के हुक्म ही से हुई थी । मैं खूब जानती हूँ कि यहां की एक लौंडी ने तुम्हें कला और बिमला की खबर दी थी और कहा था कि कला और बिमला ने तुम्हें गिरफ्तार किया है । बेशक उसका यह कहना सच था, मगर अफसोस तुमने उसके साथ दगा किया । यह मैं इसलिये कहती हूं कि वह मेरी बहिन थी । अगर तुम उसके साथ दगा न करते तो वह जरूर तुम्हें पूरा पूरा भेद बता देती । एक तौर पर उसने भण्डा फोड़ ही दिया मगर तुम्हारी सचाई जानने के लिये बहुत कुछ बचा भी रक्खा, अगर तुम अपना वादा पूरा करते तो वह जरूर बचा हुआ भेद भी बता देती और यह भी कह देती कि कला और बिमला कहां रहती हैं । मेरे कहने का मतलब यही है कि तुम उसकी सब बातों को सच न समझना ।

गदा० । नहीं बल्कि तुम्हारा मतलब यह है कि मुझे कुछ दो तो यहां का भेद बताऊं ।

कला० । नहीं ऐसा है तो नहीं मगर तुम जैसा चाहे ख्याल कर सकते हो ।

गदा० । (मुस्कुरा कर) ठीक है, अच्छा पहिले तुम मेरी उस बात का जवाब तो दो जो मैं पूछ चुका हूं, पीछे और बातें की जांयगी ।

कला० । कौन सी बात का जवाब ?

गदा० । यही कि उस रात को मुझसे इस ढंग की बातें क्यों की गईं जो

कला और बिमला ही कर सकती हैं ।

कला० । मैं समझती हूँ कि तुम्हें ठीक तरह से पहिचान लेने ही के लिये उन्होंने इस ढंग की बातें की थीं क्योंकि हमलोगों को इस बात का निश्चय नहीं था कि वास्तव में तुम गदाधरसिंह ही हो और तुम्हारी गिरफ्तारी मे धोखा नहीं हुआ ।

गदा० । (मुस्कुराते हुए) बात बनाने में तुम भी बड़ी तेज हो, यद्यपि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं कर सकता मगर कह सकता हूं कि शायद तुम्हारा कहना ठीक हो । अच्छा अब यह कहो कि तुम यहां के भेद और कला तथा बिमला का हाल मुझे बता सकती हो या नहीं ?

कला० । नहीं ।

गदा० । इस लिये कि मेंने तुम्हारी बहिन के साथ दगा किया, यदि वास्तव में वह तुम्हारी बहिन थी !

कला० । सिर्फ इसीलिये नहीं बल्कि इसलिये भी कि यह काम बड़ा ही नाजुक है और ऐसा करने के बाद मैं किसी तरह जीती नहीं रह सकती ।

गदा०। क्यों तुम्हें मारने वाला कौन है ? यहां जितने हैं वे सभी तुम्हारे अपने हैं, इसके अतिरिक्त किसी को मालूम ही क्योंकर हो सकता है कि तुमने मुझे बताया है।

कला० । यह बात छिपी नहीं रह सकती, यह घाटी तिलिस्मी है और यहां के हर पेड़ पत्तों और पत्थरों के ढोकों को भी कान है, मेरी बहिन ने इस बात का कुछ खयाल नहीं किया और इसी लिये आखिरकार जान से मारी गई ।

गदा० । (आश्चर्य से) क्या तुम्हारी बहिन मारी गई ?

कला० । हां क्योंकि मालकिन को तुम्हारी और उसकी बातों का किसी तरह पता लग गया ।

गदा० । रात का समय था, सम्भव है किसी ने छिप कर सुन लिया हो, इसके अतिरिक्त और किसी तिलिस्मी बात का मैं कायल नहीं । इस समय दिन है, चारो तरफ आंखें फैला के देखो, किसी की सूरत दिखाई नहीं देती, अस्तु मेरी तुम्हारी बातें कोई सुन नहीं सकता, तुम बेखौफ होकर यहां का हाल इस समय मुझे बता सकती हो।

कला० । नहीं, कदापि नहीं ।

गदा० । (कमर से खञ्जर निकाल कर और दिखा कर) नहीं तो फिर इसी से तुम्हारी खबर ली जायगी !

कला० । जो हो, बताने के बाद भी तो मैं किसी तरह बच नहीं सकती, फिर ऐसी अवस्था में क्यों अपने मालिक को नुकसान पहुँचाऊं ? चाहे तिलिस्मी बातों

का तुम्हें विश्वास न हो पर मैं समझती हूँ कि मेरे और तुम्हारे बीच जो जो बातें हो रही हैं वह सब मेरी मालकिन सुन रही होंगी....

गदा० । (खिलखिला कर हंस कर) ठीक है, तुम्हारी बातें.........

कला० । बेशक ऐसा ही है, अगर मैं इस घाटी के बाहर होती तो इस बात का खयाल न होता और यहां के भेद शायद बता देती ।

गदा० । (मुस्कुराते हुए) यही सही, तुम मुझे इस घाटी के बाहर ले चलो और यहां के भेद बता दो तो मैं तुम्हें....

कला० । नहीं नहीं—किसी तरह का वादा करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि उस पर मुझे विश्वास न होगा, हां यदि मुझे दलीपशाह के पास पहुँचा दो तो मैं यहां का पूरा पूरा भेद तुम्हें बता सकती हूं बल्कि हर तरह से तुम्हारी मदद भी कर सकती हूं ।

गदा० । (चौंक कर) दलीपशाह ! दलीपशाह से और तुमसे क्या वास्ता ?

कला० । वे मेरे रिश्तेदार हैं और यहां से भाग कर मैं उनके यहां अपनी जान बचा सकती हूं ।

गदा० । अगर ऐसा ही है तो तुम स्वयं उसके पास क्यों नहीं चली जातीं ?

कला० । पहिले तो मुझे यहां से भागने की कोई जरूरत ही नहीं, भागने का ख्याल तो सिर्फ इसी सबब से होगा कि तुम्हें यहां के भेद बताऊंगी, दूसरे यह कि आज कल न जाने किस कारण से उन्होंने अपना मकान छोड़ दिया है और किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं ।

गदा० । अगर किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं तो भला मुझे क्योंकर उनका पता लगेगा ?

कला० । तुम्हें उनका पता जरूर मालूम होगा क्योंकि तुम उनके साढ़ू और दोस्त भी हो ।

गदा० । यह बात तुम्हें क्योंकर मालूम हुई ।

कला० । भला मैं दलीपशाह के नाते की होकर यह नहीं जानूंगी कि तुम उनके कौन हो ?

गदा० । (आश्चर्य के साथ कुछ सोच कर) अगर तुम्हारी बात सच है तो तुम मेरी भी कुछ नातेदार होवोगी ।

कला० । जरूर ऐसा ही है, मगर यहां मैं इस बारे में भी कुछ न कहूंगी, दलीपशाह के मकान पर चलने ही से तुम्हें सब हाल मालूम हो जायगा तथा और

भी कई बातें ऐसी मालूम होंगी जिन्हें जान कर तुम खुश हो जाओगे। इन्हीं बातों का खयाल करके और तुम्हें अपना नजदीकी नातेदार समझ के मैं चाहती हूं कि तुम्हें इस घाटी के बाहर कर दूं और खुद भी भाग जाऊं नहीं तो यहां रह कर तुम्हारी जान किसी तरह नहीं बच सकती और बिना मेरी मदद के तुम घाटी के बाहर भी नहीं जा सकते।

गदा०। (सोच कर) अगर ऐसा ही है तो तुम मेरी नातेदार होकर यहां क्यों रहती हो।

कला०। यहां पर मैं इन सब बातों का कुछ भी जवाब न दूंगी।

कला की बातें सुन कर गदाधरसिंह सोच और तरद्दुद में पड़ गया। वह यहां का भेद जानने के लिए अवश्य ही कला को तकलीफ देता या गुस्से में आकर शायद मार ही डालता मगर कला की बातों ने उसे उलझन में डाल दिया और वह सोच में पड़ गया कि अब क्या करना चाहिए। वह जानता था बल्कि उसे विश्वास था कि बिना किसी की मदद के वह इस घाटी के बाहर नहीं निकल सकता और यहां फंसे रहना भी उसके लिये अच्छा नहीं चाहे वह किसी तरह की ऐयारी करके कितना ही उपद्रव मचा ले, अतएव वह बाहर निकल जाना बहुत पसन्द करता था और समझता था कि इत्तिफाक ही ने इस समय उसे एक मदद दिला दी है और अब इससे काम न लेना निरी बेवकूफी है मगर कला की बातों ने उसे चक्कर में डाल दिया था। यद्यपि वह दलीपशाह* का पता जानता था मगर कई कारणों से उसके पास या सामने जाना अथवा कला को ले जाना पसन्द नहीं करता था, उधर कला से उसकी इच्छानुसार बात करने की भी उसे सख्त जरूरत थी क्योंकि उसे इस बात का शक हो रहा था कि अगर कला से दलीपशाह के पास ले जाने का वादा न करूंगा तो शायद यह मुझे इस खोह के बाहर भी न ले जायगी। वह कला को धोखा देने और कोरा वादा करने के लिए तैयार था मगर वह चाहता था कि कला मुझसे वादा पूरा करने के लिये कसम न खिलावे, क्योंकि असली सूरत में कसम खाकर मुंह फेर लेने की आदत अभी तक उसमें नहीं पड़ी थी और वह अपने को बहादुर समझता था।

गदाधरसिंह के दिल में ये बातें भी पैदा हो रही थीं कि इस घाटी के मालिक का पता लगाना चाहिये और यहां के भेदों को जानना चाहिये परन्तु उसने सोचा कि यहां अकेला और बिना किसी मददगार के रह कर मैं कुछ भी न कर सकूंगा।

---

* यह नाम चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है।

यहां के रहने वाले बिल्कुल ही सीधे सादे नहीं मालूम होते और यद्यपि अभी तक यहां किसी मर्द की सूरत दिखाई न दी परन्तु औरतें भी यहां की ऐयारा ही जान पड़ती हैं। क्या यह औरत भी मुझसे ऐयारी के ढंग पर बातें कर रही है? सम्भव है कि ऐसा ही हो और मुझे इस घाटी के बाहर ले जाने के बहाने से यह किसी खोह या कन्दरा में फसा कर पुनः कैद करा दे। अभी तक तो मैंने इस बात की भी जांच नहीं की कि इसकी सूरत असली है या बनावटी। खैर मैं अभी अभी इस बात की भी जांच कर लूंगा और इसके बाद जब इस घाटी के बाहर निकल जाने के लिये इसके साथ किसी खोह या सुरंग के अन्दर घुसूंगा तो पूरा होशियार रहूंगा कि यह मुझसे दगा न करे, न इसे अपने आगे चलने दूंगा और न पीछे रहने दूंगा बल्कि इसका हाथ पकड़े रहूंगा या कमर में कमन्द बांध कर थामे रहूंगा। इस खोह के बाहर निकल जाने पर मैं सब कुछ कर सकूंगा क्योंकि तब यहां का रास्ता भी देखने में आ जायगा, तब अपने दो एक शागिर्दों की मदद के लिये साथ लेकर पुनः यहां आऊंगा और यहां रहने वालों से समझूंगा जिन्होंने मुझे गिरफ्तार किया था।

इत्यादि तरह तरह की बातें गदाधरसिंह बहुत देर तक सोचता रहा और इसके बाद कला से बोला, "अच्छा मैं तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूंगा मगर अगर तुम पानी से अपना मुंह धोकर मुझे विश्वास दिला दो कि तुम्हारी सूरत बदली हुई नहीं है या तुम ऐयार नहीं हो और मुझे कोई धोखा नहीं दिया चाहतीं।"

कला०। हां हां, मैं अपना चेहरा धोने के लिये तैयार हूं, पानी दो।

गदा०। (अपने बटुए में से पानी की एक छोटी सी बोतल निकाल कर और कला की ओर बढ़ा कर) लो यह पानी तैयार है।

कला ने गदाधरसिंह के हाथ से पानी लेकर अपना चेहरा धो डाला। उसके चेहरे पर किसी तरह का रंग तो चढ़ा हुआ था ही नहीं जो धोने से दूर हो जाता बल्कि एक प्रकार की झिल्ली चढ़ी हुई थी जिस पर पानी का कुछ भी असर नहीं हो सकता था, अस्तु गदाधरसिंह को विश्वास हो गया कि इसकी सूरत बदली हुई नहीं है। भूतनाथ ने इसके हाथ पैर खोल दिये और घाटी के बाहर चलने के लिये कहा।

गदा०। क्या तुम इस दिन के समय मुझे यहां से बाहर ले जा सकती हो?

कला०। हां ले जा सकती हूं।

गदा०। मगर तुम्हारे संगी साथी किसी जगह से छिपे हुए देख सकते हैं।

कला०। औवल तो शायद ऐसा न होगा, दूसरे अगर कोई दूर से देखता भी

होगा तो जब तक वह मेरे पास पहुंचेगा तब तक मैं तुम्हें लिए इस घाटी के बाहर हो जाऊंगी, फिर मुझे बचा लेना तुम्हारा काम है।

गदा०। (जोश के साथ) ओह, घाटी के बाहर हो जाने पर फिर तुम्हारा कोई क्या बिगाड़ सकता है।

कला०। तो बस फिर जल्दी करो, मगर हां एक बात तो रह ही गई।

गदा०। वह क्या ?

कला०। तुमने मुझसे इस बात की प्रतिज्ञा नहीं की कि दलीपशाह से मुलाकात करा दोगे।

गदा०। मैं तो पहिले ही वादा कर चुका हूं कि तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूंगा।

कला०। वादा और बात है प्रतिज्ञा और बात है, मैं इस बारे में तुमसे कसम खिला के प्रतिज्ञा करा लेना चाहता हूं। तुम क्षत्री हो अस्तु खंजर जिसे दुर्गा समझते हो हाथ में लेकर प्रतिज्ञा करो कि वादा पूरा करोगे।

गदा०। (कुछ देर तक सोचने के बाद खंजर हाथ में लेकर) अच्छा लो मैं कसम खाकर प्रतिज्ञा करता हूं कि तुम्हें दलीपशाह के घर पहुंचा दूंगा।

कला०। हां, बस मेरी दिलजमयी हो गई।

इतना कह कर कला उठ खड़ी हुई और गदाधरसिंह को साथ लिये हुए पहाड़ी के नीचे उतरने लगी।

पाठकों को समझ रखना चाहिये कि इस सुन्दर घाटी से बाहर निकल जाने के लिये केवल एक ही रास्ता नहीं है बल्कि कई रास्ते हैं जिन्हें मौके मौके से समयानुसार ये लोग अर्थात् कला और बिमला काम में लाया करती हैं और इनका हाल किसी मौके पर आगे चलकर मालूम होगा। इस समय हम केवल उसी रास्ते का हाल दिखाते हैं जिससे गदाधरसिंह को साथ लिये हुए कला बाहर जाने वाली है।

कला पहाड़ी के कोने की तरफ दबती हुई नीचे उतरने लगी। धूप बहुत तेज हो चुकी थी और गरमी से उसे सख्त तकलीफ हो रही थी तथापि वह गौर से कुछ सोचती हुई पहाड़ी के नीचे उतरने लगी। जब करीब जमीन के पास पहुंच गई तो एक ऐसा स्थान मिला जहां जंगली झाड़ियां बहुतायत से थीं और वहां पत्थर का एक छोटा बूर्ज भी था जिस पर चढ़ने के लिए उसके अन्दर की तरफ छोटी छोटी तीस या पैंतीस सीढ़ियां बनी हुई थीं। उस बुर्ज के ऊपर लोहे की चौरुखी झण्डी लगी हुई थी अर्थात् लोहे के बनावटी बांस पर लोहे के ही

पत्तरों की बनी चौरुखी झण्डी इस ढंग की बनी हुई थी कि यह घुमाने से घूम सकती थी। एक झण्डी का रंग सुफेद, दूसरी का स्याह, तीसरी का लाल और चौथी झण्डी का पीला था। इस समय पीले रंग वाली झण्डी का रुख बंगले की तरफ घूमा हुआ था। वहां पर खड़ी होकर कला ने गदाधरसिंह से कहा, "बस इसी जगह बाहर निकल जाने के लिये एक सुरंग है और यह बुर्ज उसकी ताली है अर्थात् दर्वाजा खोलने के लिये पहिले मुझे इस बुर्ज के ऊपर जाना होगा अस्तु तुम इसी जगह खड़े रहो, मैं क्षण भर के लिए ऊपर जाती हूं।"

गदा०। (कुछ सोच कर) तो मुझे भी अपने साथ लेती चलो, मैं देखूंगा कि वहां तुम क्या करती हो।

कला०। (मुस्कुरा कर) तो तुम इस रास्ते का भेद जानना चाहते हो!

गदा०। हां बेशक, और इसीलिये तो मैंने तुमसे दलीपशाह के पास पहुंचा देने का वादा किया है।

कला०। अच्छा चलो।

गदाधरसिंह कला के साथ उस बुर्ज के अन्दर घुस गया। उसने देखा कि कला ने ऊपर चढ़ कर उस झण्डी के बांस को जो बुर्ज के बीचोबीच से छत फोड़ कर अन्दर निकला हुआ था घुमा दिया, बस इसके अतिरिक्त उसने और कुछ भी नहीं किया और बुर्ज के नीचे उतर आई। बाहर निकलने पर गदाधरसिंह ने देखा कि जिस रुख पर पीले रंग की झण्डी थी अब उस रुख पर लाल रंग की झंडी है, मगर इस काम से और इस सुरंग के दर्वाजे से क्या सम्बन्ध हो सकता है सो उसकी समझ में न आया। कुछ गौर करने पर यकायक ख्याल आया कि ये झण्डियां यहां रहने वालों के लिए इशारे का काम करती हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है। वह सोचने लगा कि निःसन्देह यह औरत बड़ी चालाक और धूर्त है, पहिले भी इसी ने मुझ पर वार किया था, बेहोशी की दवा से भरा हुआ तमंचा इसी ने तो मुझ पर चलाया था और इस समय भी इसी से मुझे पाला पड़ा है, देखना चाहिये यह क्या रंग लाती है। इस समय भी अगर यह मेरे साथ दगा करेगी तो मैं इसे दुरुस्त ही करके छोड़ूंगा, इत्यादि।

गदाधरसिंह को सोच और विचार में पड़े हुए देख कर कला भी समझ गई कि यह मेरे ही विषय में चिन्ता कर रहा है और इसे इस झण्डी के घुमाने पर शक हो गया है अस्तु उसने शीघ्रता की मुद्रा दिखाते हुए गदाधरसिंह से कहा, "बस आओ और जल्दी से खोह के अन्दर घुसो क्योंकि पहिला दर्वाजा खुल गया है।"

बुर्ज के नीचे उतर आने के बाद गदाधरसिंह को साथ लिये हुए कला यहां से पश्चिम तरफ ढालवीं जमीन पर चलने लगी और लगभग तीस या चालीस कदम चलने के बाद एक ऐसी जगह पहुंची जहां चार पांच पेड़ पारिजात के लगे हुए थे और उनके बीच में जंगली लताओं से छिपा हुआ एक छोटा दर्वाजा था। कला ने गदाधरसिंह की तरफ देख के कहा, "यही उस खोह का दर्वाजा है जिस राह से हमलोगों का आना जाना होता है, अब मैं इसके अन्दर घुसती हूं, तुम मेरे पीछे चले आओ।"

गदा०। जहां तक मेरा ख्याल है मैं कह सकता हूं कि इस खोह के अन्दर जरूर अंधकार होगा। कहीं ऐसा न हो कि तुम आगे चल कर गायब हो जाओ और मैं अंधेरे में तुम्हें टटोलता पुकारता और पत्थरों से ठोकरें खाता हुआ परेशानी में फंस जाऊं, क्योंकि नित्य आने जाने के कारण यह रास्ता तुम्हारे लिये खेल हो रहा है। इसके अतिरिक्त यह रास्ता एकदम सीधा कभी न होगा, जरूर रास्ते में गिरह पड़ी होगी, या यों कहा जाय कि इसके बीच में दो एक तिलिस्मी दर्वाजे जरूर लगे होंगे।

कला०। नहीं नहीं, तुम बखौफ मेरे पीछे चले आओ, यह रास्ता बहुत साफ है।

गदा०। नहीं मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूं, बेहतर होगा कि तुम अपनी कमर में मुझे कमन्द बांधने दो मैं उसे पकड़े हुए तुम्हारे पीछे पीछे चला चलूंगा।

कला०। अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो मुझे मंजूर है।

आखिर ऐसा ही हुआ, गदाधरसिंह ने कला की कमर में कमन्द बांधी और उसे आगे चलने के लिये कहा और उस कमन्द का दूसरा सिरा पकड़े हुए पीछे पीछे आप रवाना हुआ। गदाधरसिंह को इस बात का बहुत ख्याल था कि सुरंग की राह से आने जाने का रास्ता किसी तरह मालूम कर ले, मगर कला किसी दूसरी ही फिक्र में थी, वह यह नहीं चाहती थी कि इसी सुरंग के अन्दर भूतनाथ अर्थात् गदाधरसिंह को फंसा कर मार डाले, इस समय उसे इस सुरग से निकाल देना ही वह पसन्द करती थी, अस्तु वह धीरे धीरे सुरंग के अन्दर रवाना हुई।

पन्द्रह या बीस कदम आगे जाने के बाद सुरंग में एकदम अंधकार मिला इसलिये गदाधरसिंह को टटोल टटोलकर चलने की जरूरत पड़ी मगर कला तेजी के साथ कदम बढ़ाये चली जा रही थी और एक तौर पर गदाधरसिंह को खैंचे लिये जाती थी।

कला०। अब तुम जल्दी चलते क्यों नहीं? रास्ता बहुत चलना है और तुम्हारी सताई हुई प्यास के मारे मैं बेचैन हो रही हूं, इस खोह के बाहर निकल कर तब पानी पीऊंगी, और तुम्हारा यह हाल है कि चींटी की तरह कदम बढ़ाते

हो, मेरे पीछे पीछे आने में भी तुम्हारी यह दशा है, तुम कैसे ऐयार हो ?

गदा०। मालूम होता है कि मुझे आज तुमसे भी कुछ सीखना पड़ेगा, मेरी ऐयारी में जो कुछ कसर थी उसे अब कदाचित् तुम लोग ही पुरा करोगी।

कला०। वास्तव में ऐसी ही बात है, देखो यहां एक दर्वाजा आया है, जरा संभल कर चौखट लांघना नहीं ठोकर खाओगे।

उसी समय किसी तरह के खटके की आवाज आई और मालूम हुआ कि दर्वाजा खुल गया। गदाधरसिंह बहुत होशियारी से इस नीयत से हाथ बढ़ा कर टटोलता हुआ आगे बढ़ा कि दर्वाजे का पता लगावे और मालूम करे कि वह कैसा है या किस तरह से खुलता है मगर चौखट लांघ जाने पर भी जब इस बात का कुछ पता न लगा तब उसने चिढ़ कर कला से कहा, "क्या खाली चौखट ही थी या यहां तुमने दर्वाजा खोला है ?"

कला०। इस बात के जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं, मैंने तुमसे यह वादा नहीं किया है कि यहां के सब भेद बता दूंगी।

गदा०। मैं यहां के भेद जानना नहीं चाहता मगर इस सुरंग का हाल तो तुम्हें बताना ही पड़ेगा !

कला०। इस भरोसे मत रहना, मैं वादे के मुताबिक तुम्हें इस जगह के बाहर कर दूंगी और तुम प्रतिज्ञानुसार मुझे दलीपशाह के पास पहुंचा देना।

गदा०। क्या तुम नहीं जानतीं कि अभी तक तुम मेरे कब्जे में हो और मैं जितना चाहे तुम्हें सता सकता हूं ?

कला०। तुम्हारे ऐसे बेवकूफ ऐयार के मुंह से ऐसी बात निकले तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है ! अजी तुम यही गनीमत समझो कि इस घाटी के अन्दर हम लोगों ने तुम्हें किसी तरह का दुःख नहीं दिया क्योंकि हम लोग तुम्हारे साथ कोई और ही सलूक किया चाहती हैं और किसी दूसरे ढंग पर बदला लेने का इरादा है। यह तुम्हारी भूल है कि तुम मुझे अपने कब्जे में समझते हो, अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप चले आओ।

कला की ऐसी बातें सुन कर गदाधरसिंह झल्ला उठा और उसने क्रोध के साथ कमन्द खेंची। उसे आशा थी कि कला इसके साथ खिंचती हुई चली आवेगी मगर ऐसा न हुआ और खाली कमन्द खिंच कर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई, क्योंकि रास्ता चलते चलते कला ने वह कमन्द खोल डाली थी, इसलिए कि उसके हाथ खुले थे। गदाधरसिंह ने इस ख्याल से उसके हाथ नहीं बांधे थे और कला

ने भी ऐसा ही बहाना किया था कि सुरंग के अन्दर कई कठिन दर्वाजे खोलने पड़ेंगे।

जिस समय खाली कमन्द खिंच कर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई उसका कलेजा दहल उठा और वह वास्तव में बेवकूफ सा बन कर चुपचाप खड़ा रह गया मगर साथ ही कला की आवाज आई—"कोई चिन्ता मत करो, चुपचाप कदम बढ़ाते चले आओ और समझ लो कि यहां भी तुम्हें बहुत कुछ सीखना पड़ेगा।"

एक खटके की आवाज और आहट से उसी समय यह भी मालूम हो गया कि जिस चौखट को लांघ कर वह आया था उसमें किसी तरह का दर्वाजा था जो इसके इधर आ जाने के बाद आप से आप बन्द हो गया। पीछे की तरफ हट कर और हाथ बढ़ा कर देखा तो अपना खयाल सच पाया और विश्वास हो गया कि अब उसका पीछे की तरफ लौट जाना असम्भव हो गया।

वहां की अवस्था और कला की बातों से गदाधरसिंह का गुस्सा बराबर बढ़ता ही गया और इस बात की उसे बहुत ही शर्म आई कि एक साधारण औरत ने उसे उल्लू बना दिया। मगर वह कर ही क्या सकता था, उस अनजान सुरंग और अंधकार में उसका क्या बस चल सकता था? परन्तु इतने पर भी उसने मजबूत होकर कला के पीछे पीछे टटोलते हुए जाना पसन्द नहीं किया।

कई सायत तक चुपचाप खड़े रह कर कुछ सोचने के बाद उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और तब आंखें फाड़ कर चारो तरफ देखने लगा। उसने देखा कि यह सुरंग बहुत चौड़ी और कुदरती ढंग पर बनी हुई है तथा ऊंचाई भी किसी तरह कम नहीं है, तीन आदमी एक साथ खड़े होकर उसमें बखूबी चल सकते हैं, मगर यहां पर इस बात का पता नहीं लगता कि यह सुरंग कितनी लम्बी है क्योंकि आगे की तरफ बिलकुल अंधकार मालूम होता था। पीछे की तरफ देखा तो दर्वाजा बंद पाया जिसमें किसी तरह की कुण्डी खटके या ताले का निशान नहीं मालूम होता था।

गदाधरसिंह हाथ में बत्ती लिये हुए आगे की तरफ कदम बढ़ाये रवाना हुआ। लगभग डेढ़ सौ कदम जाने के बाद उसे पुनः दूसरी चौखट लांघने की जरूरत पड़ी। उसके पार हो जाने के बाद यह दर्वाजा भी आप से आप बन्द हो गया। उसने अपनी आंखों से देखा कि लोहे का बहुत बड़ा तख्ता एक तरफ से निकल कर रास्ता बन्द करता हुआ दूसरी तरफ जाकर हाथ भर तक दीवार के अन्दर घुस गया, क्योंकि वह पीछे फिर कर देखता हुआ आगे बढ़ा था। वह पुनः आगे की तरफ बढ़ा मगर अब क्रमशः सुरंग तंग और नीची मिलने लगी। उसे कला का

कहीं पता न लगा जिसे गिरफ्तार करने के लिए वह दांत पीस रहा था।

कई सौ कदम चले जाने के बाद पिछले दो दर्वाजों की तरह उसे और भी तीन दर्वाजे लांघने पड़े और तब वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहां दो तरफ को रास्ता फूट गया था। वहां पर अटक गया और सोचने लगा कि किस तरफ जाय। कुछ ही सायत बाद एक तरफ से आवाज आई, "अगर सुरंग के बाहर निकल जाने की इच्छा हो तो दाहिनी तरफ चला जा और अगर यहां के रहने वालों को ऐयारी का इम्तिहान लेना हो और किसी को गिरफ्तार करने की प्रबल अभिलाषा हो तो बाईं तरफ का रास्ता पकड़!"

गदाधरसिंह चौकन्ना हो कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी मगर किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी। आवाज पर गौर करने से विश्वास हो गया कि यह उसी औरत (कला) की आवाज है जिसकी बदौलत वह यहां तक आया था। आवाज किस तरफ से आयी या आवाज देने वाला कहां है और वहां तक पहुँचने की क्या तरकीब हो सकती है इत्यादि बातों पर गौर करने के लिए भी गदाधरसिंह वहां न अटका और गुस्से के मारे पेचोताब खाता हुआ दहिनी तरफ वाली सुरंग में रवाना हुआ। थोड़ी देर तक तेजी के साथ चल कर वह सुरंग के बाहर निकल आया और ऐसे स्थान पर पहुंचा जहां बहुत सुन्दर और सुहावने बेल तथा परिजात के पेड़ लगे हुए थे और हरी हरी लताओं से सुरंग का मुंह ढका हुआ था।

जहां पर गदाधरसिंह खड़ा था उसके दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर सुन्दर झरना था जो पहाड़ की ऊंचाई से गिरता हुआ तेजी के साथ बह रहा था। यद्यपि इस समय उसके जल की चौड़ाई चार या पांच हाथ से ज्यादे न थी मगर दोनों तरफ के कगारों पर ध्यान देने से विश्वास होता था कि मौसिम पर जरूर चश्मा छोटी मोटी नदी का रूप धारण कर लेता होगा।

गदाधरसिंह ने देखा कि उस चश्मे का जल मोती की तरह साफ और निथरा हुआ बह रहा है और उसके उस पार वही औरत (कला) जिसने उसे धोखा दिया था हाथ में तीर कमान लिये खड़ी उसकी तरफ देख रही है। वह अकेली नहीं है बल्कि और भी चार औरतें उसी की तरह हाथ में तीर कमान लिये उसके पीछे हिफाजत के खयाल से खड़ी हैं।

गदाधरसिंह क्रोध में भरा हुआ लाल आंखों से उस औरत (कला) की तरफ देखने लगा और कुछ बोला ही चाहता था कि सामने से और भी दो आदमी आते

हुए दिखाई दिये जिन्हें नजदीक आने पर भी उसने नहीं पहिचाना मगर उसे खयाल हुआ कि इन दोनों ने ऐयारी के ढंग पर अपनी सूरत बदली हुई है।

ये दोनों आदमी गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह थे जिनकी सूरत इस समय वास्तव में बदली हुई थी। प्रभाकरसिंह ने निगाह पड़ते ही कला को पहिचान लिया क्योंकि ये उसी बदली हुई सूरत में कला और बिमला को देख चुके थे, हां कला ने प्रभाकरसिंह को नहीं पहिचाना जो इस समय भी सुन्दर सिपाहियाना ठाठ में सजे हुए थे।

कला को इस जगह ऐसी अवस्था में देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ और वे उससे कुछ पूछा ही चाहते थे कि उनकी निगाह गदाधरसिंह पर जा पड़ी जो चश्मे के उस पार पत्थर की चट्टान पर खड़ा इन लोगों की तरफ देख रहा था।

प्रभाकरसिंह ने इस ढंग पर अपनी सूरत बदली हुई थी कि उन्हें यकायक पहिचानना बड़ा कठिन था मगर एक बंधे हुए इशारे से उन्होंने कला पर अपने को प्रकट कर दिया और यह बतला दिया कि जो आदमी मेरे साथ है वह मेरा सच्चा खैरखाह गुलाबसिंह है।

गुलाबसिंह का हाल कला को मालूम था क्योंकि वह उसकी तारीफ इन्दुमति से सुन चुकी था और जानती थी कि ये प्रभाकरसिंह के विश्वासपात्र हैं इसलिए इनसे कोई बात छिपाने की जरूरत नहीं है अस्तु पूछने पर उसने अपने साथ वाली औरतों को अलग करके सब हाल अपना और भूतनाथ का साफ साफ बयान कर दिया जिसे सुनते ही प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह हंस पड़े।

प्रभाकर०। वास्तव में तुम बेतरह इसके हाथ फंस गई थीं मगर खूब ही चालाकी से अपने को बचाया!

गुलाब०। (प्रभाकरसिंह की तरफ देख के) यद्यपि गदाधरसिंह इनका कसूरवार है और आजकल उसने अजीब तरह का ढंग पकड़ रक्खा है तथापि मैं कह सकता हूं कि गदाधरसिंह ने इन्हें पहिचाना नहीं, अगर पहिचान लेता तो कदापि इनके साथ बेअदबी का बर्ताव न करता।

कला०। (गुलाबसिंह से) आप जो चाहें कहें क्योंकि वह आपका दोस्त है मगर हम लोगों को उस पर कुछ भी विश्वास नहीं है। (प्रभाकरसिंह से) मालूम होता है कि हमलोगों का हाल आपने इनसे कह दिया है?

प्रभाकर०। हां बेशक ऐसा ही है मगर तुम लोगों को इन पर विश्वास करना चाहिए क्योंकि ये मेरे सच्चे सहायक हितैषी और दोस्त हैं। तुम लोगों को भी

इनसे बड़ी मदद मिलेगी।

कला०। ठीक है और मैं जरूर इन पर विश्वास करूंगी क्योंकि इनका पूरा पूरा हाल बहिन इन्दुमति से सुन चुकी हूं, यद्यपि ये गदाधरसिंह के दोस्त हैं और हम लोग उसके साथ दुश्मनी का बर्ताव कर रहे हैं।

गुलाब०। (कला से) यद्यपि गदाधरसिंह मेरा दोस्त है मगर (प्रभाकरसिंह की तरफ बता कर) इनके मुकाबले में मैं उस दोस्ती की कुछ भी कदर नहीं करता। इनके लिए मैं उसी को नहीं बल्कि दुनिया के हर एक पदार्थ को जिसे मैं प्यार करता हूं छोड़ देने के लिये तैयार हूं। अच्छा जाने दो इस समय पर इन बातों की जरूरत नहीं, पहिले उस (गदाधरसिंह) से बातें कर के उस बिदा कर लो फिर हम लोगों से बातें होती रहेंगी। हां यह तो बताओ कि जब तुमने इसे गिरफ्तार ही कर लिया था तो फिर मार क्यों नहीं डाला ?

कला०। हम लोग इसे मार डालना पसन्द नहीं करतीं बल्कि यह चाहती हैं कि जहां तक हो सके इसकी मिट्टी पलीद करें और इसे किसी लायक न छोड़ें। यह किसी के सामने मुंह दिखाने के लायक न रहे बल्कि आदमी की सूरत देख कर भागता फिरे, और इसके माथे पर कलंक का ऐसा टीका लगे कि किसी के छुड़ाये न छूट सके और यह घबड़ा कर पछताता हुआ जंगल जंगल छिपता फिरे।

गुलाब०। बेशक यह बहुत बड़ी सजा है, अच्छा तुम उससे बातें करो।

गदाधरसिंह दूर खड़ा हुआ इन लोगों को तरफ बराबर देख रहा था मगर इन लोगों की बातें उस कुछ भी सुनाई नहीं देती थी और न वह हावभाव ही से कुछ समझ सकता था, हां इतना जानता था कि अब वह कला का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

कला०। (कुछ आगे बढ़ कर ऊंची आवाज में गदाधरसिंह से) अब तो तुम इस घाटी के बाहर निकल आए, मैंने जो कुछ वादा किया था सो पूरा हो गया, अब तुम मुझे दलीपशाह के पास ले चल कर अपना वादा पूरा करो।

गदा०। (कला की तरफ बढ़ कर) बेशक तुम्हारी ऐयारी मुझ पर चल गई और मैं बेवकूफ बन गया। मैं यह भी खूब समझता हूं कि दलीपशाह से मुलाकात करने की तुम्हें कोई जरूरत न थी, वह केवल बहाना था, और न अब तुम मेरे साथ दलीपशाह के पास जा ही सकती हो। अस्तु कोई चिन्ता नहीं, तुम मेरे हाथ से निकल गईं और मैं तुम्हारे पंजे से छूट गया। अच्छा अब मैं जाता हूं मगर कहे जाता हूं कि तुम लोग व्यर्थ ही मुझसे दुश्मनी करती हो। दयारामजी के विषय

में जो कुछ तुम लोगों ने सुना है या जो कुछ तुम लोगों का खयाल है वह बिल्कुल झूठ है, वह मेरे सच्चे प्रेमी थे और मैं अभी तक उनके लिए रो रहा हूं। यदि जमना और सरस्वती वास्तव में जीती हैं और तुम लोग उनके साथ रहती हो तो जाकर कह देना कि गदाधरसिंह तुम लोगों के साथ दुश्मनी कदापि न करेगा, यद्यपि तुम्हारा हाल जानने के लिए वह तुम्हारे आदमियों को दुख दे और सतावे तो हो सकता है मगर वह तुम दोनों को कदापि दुख न देगा। तुम यदि इच्छा हो तो गदाधरसिंह को सता लो, उसे तुम्हारे लिए जान दे देने में भी कुछ उज्र न होगा।

इतना कह कर भूतनाथ वहां से पलट पड़ा और देखते देखते नजरों से गायब हो गया।

गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़ कर प्रभाकरसिंह कला के साथ घाटी के अन्दर चले गये और गुलाबसिंह से कह गये कि तुम इसी जगह ठहर कर मेरा इन्तजार करो, इन्दुमति तथा बिमला से मिल आता हूं तो चुनार की तरफ चलूंगा क्योंकि जब तक शिवदत्त से बदला न ले लूंगा तब तक मेरा मन स्थिर न होगा।

संध्या हो चुकी थी जब प्रभाकरसिंह लौट कर गुलाबसिंह के पास आए और दोनों आदमी धीरे धीरे बातचीत करते हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए।

इन दोनों को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि भूतनाथ इनका पीछा किये चला आ रहा है और चाहता है कि इन दोनों को किसी तरह पहिचान ले। इन दोनों के खयाल से भूतनाथ उसी समय कला के सामने ही चला गया था मगर वास्तव में वह थोड़ी दूर जाकर छिप रहा था और अब मौका पाकर इन दोनों के पीछे पीछे छिपता हुआ रवाना हुआ।

तीसरा बयान

क्या भूतनाथ को कोई अपना दोस्त कह सकता था? क्या भूतनाथ का दिल में किसी की मुहब्बत कायम रह सकती थी? क्या भूतनाथ किसी के एहसान का पाबन्द रह सकता था? क्या भूतनाथ पर किसी का दबाव पड़ सकता था? क्या भूतनाथ पर कोई भरोसा रख सकता था? इसका जवाब देना बहुत कठिन है। जो गुलाबसिंह भूतनाथ को अपना दोस्त कहता था आज वही गुलाबसिंह भूतनाथ पर भरोसा नहीं करता और इसी तरह भूतनाथ भी उसे अपना दोस्त नहीं समझता। जिस प्रभाकरसिंह की मदद के लिए भूतनाथ कमर बांध कर तैयार हुआ था आज उसी प्रभाकरसिंह पर ऐयारी का वार करके इन्दुमति को सताने के लिए वह तैयार हो रहा है।

सूरत बदले हुए प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह को यद्यपि भूतनाथ ने पहिचाना न था मगर उसे किसी तरह का शक जरूर हो गया था और यही जाँच करने के लिए उसने इन दोनों का पीछा किया था।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी। गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह आपस में बातें करते हुए चुनारगढ़ की तरफ जा रहे थे। वे दोनों इस विचार में थे कि कोई गाँव या बस्ती आ जाय तो वहां थोड़ी देर के लिए आराम करें। कुछ दूर और जाने के बाद वे दोनों ऐसी जगह पहुँचे जहां जंगली पेड़ बहुत ही कम होने के कारण वह जमीन मैदान का नमूना बन रही थी और पगडण्डी रास्ते से कुछ हट कर दाहिनी तरफ एक सुन्दर कूआं भी था जिसे देख इन दोनों की इच्छा हुई कि इसी कूएं पर बैठ कर कुछ देर आराम कर लें तब आगे बढ़ें।

कूएं के पास जाकर देखा कि एक आदमी गमछा बिछाये उसकी जगत पर आराम कर रहा है और डोरी तथा लोटा उसके सिरहाने की तरफ पड़ा हुआ है।

गुलाबसिंह ने प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर कहा, "कुछ देर के लिए यहां आराम कीजिये, पानी पीजिये, और हाथ मुंह धो ठंडे होकर सफर की हरारत मिटाइये।" इसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने कहा, "पानी पीने के लिए हम लोगों के पास लोटा डोरी तो है नहीं, हां आगे किसी ठिकाने पर चलें तो सभी कुछ हो सकता है, बल्कि वहां खाने पीने का भी सुबीता होगा!"

इन दोनों की बातें सुन कर वह मुसाफिर जो कूएं की जगत पर लेटा हुआ था उठ बैठा और बोला, "हां हां, आप क्षत्री जान पड़ते हैं और मैं भी गौड़ ब्राह्मण हूं, अभी अभी यह लोटा मांज कर मैंने रखा है आप पानी खींच लीजिये।"

"अति उत्तम" कह कर गुलाबसिंह ने लोटा डोरी उठा ली और प्रभाकरसिंह उसी जगत पर बैठ गये।

गुलाबसिंह ने कूएं से जल निकाला और दोनों दोस्तों ने हाथ मुंह धोया। इसके बाद पुनः जल निकाल कर दोनों ने थोड़ा थोड़ा पीया फिर लोटा मांज मुसाफिर के सिरहाने उसी जगह रख दिया।

गुलाबसिंह यद्यपि होशियार आदमी थे मगर इस जगह एक मामूली बात में भुल कर गये। उन्हें उचित था कि अपने हाथ से लोटा मांज कर तब जलपान करते या मुंह हाथ धोते, मगर ऐसा न करने से दोनों ही को तकलीफ उठानी पड़ी।

वह आदमी जो कूएं पर पहिले ही से आराम कर रहा था वास्तव में भूतनाथ था। वह इन दोनों की आहट लेता हुआ इनसे कुछ ही दूर आगे आगे सफर कर

रहा था बल्कि यों कहना चाहिये कि कभी आगे कभी पीछे कभी पास कभी दूर जब जैसा मौका पाता उसी तरह उन दोनों के साथ सफर कर रहा था और इस समय पहिले ही से यहां आकर इन लोगों को धोखा देने के लिये अटका हुआ था।

प्रभाकर०। (गुलाबसिंह से) यह कूआं है तो अच्छे मौके पर मगर इसका पानी अच्छा नहीं है।

गुलाब०। हां पानी में कुछ बदबू मालूम पडती है, मगर यह बात पहिले न थी, मैं कई दफे इस कूएं का पानी पी चुका हूं, यहां चार पांच कोस के घेरे में यही एक कूआ है।

इसके बाद दोनों आदमी कुछ देर तक मामूली बातचीत करते रहे क्योंकि अनजान मुसाफिर पास होने के खयाल से मतलब की या भेद को कोई बात नहीं कर सकते थे। इसके बाद वे दोनों चादर बिछा कर लेट गये और बात की बात में बेखबर होकर खर्राटे लेने लगे। उस समय भूतनाथ अपनी जगह से उठा और दोनों के पास आकर गौर से देखने लगा कि अभी ये लोग बेहोश हुए हैं या नहीं।

भूतनाथ ने अपने लोटे के अन्दर बेहोशी की दवा लगा दी थी जिसका कुछ हिस्सा पानी मे मिलजुल कर इनके पेट में उतर गया था और इसी दवा की महक इन दोनों की नाक में गई थी जिसका असल मतलब न समझ कर इन्होंने पानी की शिकायत की थी।

जब भूतनाथ ने देखा कि वे दोनों अच्छी तरह बेहोश हो गये तब अपने बटुए में से सामान निकाल कर उसने रोशनी की, इसके बाद कूएं में से पानी निकाला और रूमाल तर करके इन दोनों का चेहरा साफ किया उस समय अच्छी तरह देखने से भूतनाथ का शक जाता रहा और उसने पहिचान लिया कि ये दोनों गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह हैं।

गुलाबसिंह ऐयार नहीं था मगर अकल का तेज और होशियार आदमी था तथा ऐयारों के साथ दोस्ती रहने के कारण कुछ कुछ ऐयारी का काम भी कर सकता था और इसी सबब से उसने अपनी और प्रभाकरसिंह की सूरत मामूली ढंग पर बदल ली थी।

भूतनाथ ने इन दोनों को अच्छी तरह पहिचान लेने के बाद गुलाबसिंह की सूरत पुनः उसी तरह की बना दी और प्रभाकरसिंह को पीठ पर लाद कर अपने घर का रास्ता लिया।

तेजी के साथ चल कर दो ही घंटे में वह अपनी घाटी के मुहाने पर जा

पहुँचा जहां रहता था तथा जो कला और बिमला की घाटी के साथ सटी हुई थी। वहां उसके शागिर्द लोग उसका इन्तजार कर रहे होंगे यह सोच भूतनाथ तेजी से कदम बढ़ाता हुआ उस सुरंग के अन्दर घुसा।

सुरग के अन्दर घुसने के बाद वह उसी चौमुहानी पर पहुंचा जिसका जिक्र ऊपर कई दफे आ चुका है। इसके बाद यह अपनी घाटी की तरफ घूमा और उस सुरंग में घुसा मगर दो ही चार कदम आगे जाने के बाद दरवाजा बन्द देख उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ, उसका दिमाग हिल गया और हिम्मती होने पर भी वह एक दफे कांप उठा।

प्रभाकरसिंह की गठरी उसने जमीन पर रख दी और बटुए में से सामान निकाल रोशनी करने के बाद अच्छी तरह गौर करके देखने लगा कि रास्ता क्योंकर बन्द हो गया, मगर उसकी समझ में कुछ भी न आया। उसने सिर्फ इतना देखा कि लोहे का एक बहुत बड़ा तख्ता सामने अड़ा हुआ है जिसके कारण यह बिलकुल नहीं जान पड़ता कि उसका घर किस तरफ है। उसने दर्वाजा खोलने की बहुत कोशिश की और बड़ी देर तक हैरान रहा मगर सब बेकार हुआ। यह सोच कर उसकी आंखों में आंसू भर आये कि हाय उसके कई शागिर्द जो इस घाटी के अन्दर हैं सब बेचारे भूख के मारे तड़प कर मर जायंगे, क्योंकि इस रास्ते के सिवाय बाहर निकलने के लिये उन्हें कोई दूसरा रास्ता न मिलेगा।

प्रभाकरसिंह की गठरी लिए भूतनाथ घबड़ाया हुआ सुरंग के बाहर निकल आया और एक घने पेड़ के नीचे बैठ कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये ? इस समय यहां मेरा कोई शागिर्द या नौकर भी नहीं मिल सकता जिससे किसी तरह का काम निकाला जाय। जिस खयाल से प्रभाकरसिंह को ले आया था वह काम भी न हुआ। हाय, मेरे आदमी एकाएक जहन्नुम में मिल गये और मैं उनकी कुछ भी मदद न कर सका ! मालूम होता है कि यहां का कोई सच्चा जानकार आ पहुंचा जिसने इस घाटी पर कब्जा कर लिया। क्या दयाराम की दोनों स्त्रियां तो यहां नहीं आ पहुंचीं जो पड़ोस में रहती हैं ? अगर ऐसा हो भी तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि बगल वाली घाटी जिसमें वे दोनों रहती हैं कोई तिलिस्म मालूम पड़ती है और यह घाटी उससे कुछ सम्बन्ध रखती हो तो आश्चर्य ही क्या है। मैं नहीं चाहता था कि उन दोनों को सताऊं या किसी तरह की तकलीफ दूं, मगर दोस्तों और शागिर्दों को छुड़ाने के लिए अब मुझे सभी कुछ करना पड़ेगा।

चौथा बयान

गुलाबसिंह की जब आंख खुली तो रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी में पूरब तरफ लालिमा दिखाई देने लग गई थी। वह घबड़ा कर उठ बैठा और इधर उधर देखने लगा। जब प्रभाकरसिंह को वहां न पाया तब बोल उठा, "बेशक मैं धोखा खा गया। वह मुसाफिर न था बल्कि कोई ऐयार था जिसने लोटे में किसी तरह की दवा लगा दी होगी। क्या मैं कह सकता हूं कि प्रभाकरसिंह को वही उठा ले गया होगा ?"

इतना कह वह जगत के नीचे उतरा और घूम घूम कर प्रभाकरसिंह को तलाश करने लगा। जब वे न मिले तो तरह तरह की बातें मन में सोचता हुआ आगे की तरफ बढ़ा—

"बेशक वह कोई ऐयार था जो प्रभाकरसिंह को उठा कर ले गया। ताज्जुब नहीं कि वह भूतनाथ हो। यद्यपि मुझे उससे ऐसी आशा न थी परन्तु आज कल वह जमना और सरस्वती के ख्याल से प्रभाकरसिंह को भी अपना दुश्मन समझने लग गया है। यह भी किसी को क्या उम्मीद थी कि जमना और सरस्वती जीती होंगी। खैर मुझे इस समय प्रभाकरसिंह के लिए कुछ बन्दोबस्त करना चाहिए, बेहतर होगा यदि मैं स्वयम् भूतनाथ के पास चला जाऊं और उससे प्रभाकरसिंह को मांग लूं, मगर नहीं यद्यपि वह मेरा दोस्त है परन्तु इस समय वह इस दोस्ती पर कुछ भी ध्यान न देगा। अगर उसे ऐसा ही खयाल होता तो प्रभाकरसिंह को ले जाता ही क्यों ? मुझे भी इस समय उससे किसी तरह की उम्मीद न रखनी चाहिये, क्योंकि अब हम लोग दयाराम के खयाल से जमना और सरस्वती के पक्षपाती हो गये हैं, अस्तु अब उसके लिये कोई दूसरा ही बन्दोबस्त करना चाहिए। अगर उस खोह का रास्ता मुझे मालूम होता तो मैं जमना और सरस्वती को भी इस बात की खबर दे देता। खैर, अब मुझे दलीपशाह का पास चलना चाहिए और उससे मदद मांगनी चाहिये, क्योंकि मैं अकेले भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकता। दलीपशाह जरूर मेरी मदद करेगा, उस पर मेरा जोर भी है और उसने मेरे साथ अपनी मुहब्बत भी दिखाई है, मगर पहिले अपने आदमियों को समझा देना चाहिये जो अभी तक हम लोगों का इन्तजार कर रहे होंगे।।"

इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ गुलाबसिंह आगे की तरफ बढ़ा चला जाता था। लगभग एक या डेढ़ कोस गया होगा कि सामने से दो सिपाही

ढाल तलवार लगाए दो घोडों की बागडोर थामे आते हुए दिखाई पड़े। जब वे गुलाबसिंह के पास पहुंचे तो सलाम करके खड़े हो गये और गुलाबसिंह भी रुक गया।

गुलाब०। तुम लोग कहां जा रहे हो ?

एक०। आप ही को खोज में जा रहे हैं, क्योंकि रात भर इन्तजार करके हम लोग......

गुलाब०। (बात काट कर) बेशक तुम लोग तरद्दुद में पड़ गए होंगे, मगर क्या करें लाचारी है, अच्छा यह कहो कि बाकी आदमी कहां हैं ?

एक०। अभी तक सब उसी जगह अटके हुए हैं।

गुलाब०। अच्छा एक काम करो, तुम घोड़ा यहीं छोड़ दो और लौट जाओ, हमारे आदमियों का इत्तिला दो कि हमारे घर पर चले जायं, पुराने घर पर नहीं, आजकल जहां हम रहते हैं उस घर पर चले जायं, और जब तक हम या प्रभाकरसिंह वहां न आवें तब तक कहीं न जायं। मैं इस घोड़े पर सवार होकर किसी काम के लिए जाता हूं। (दूसरे सिपाही की तरफ देख कर) तुम इस दूसरे घोड़े पर सवार हो लो और मेरे साथ साथ चलो।

इतना कह कर गुलाबसिंह घोड़े पर सवार हो गया। "जो हुक्म" कह कर एक सिपाही तो पीछे की तरफ लौट गया और दूसरा घोड़े पर सवार होकर गुलाबसिंह के साथ रवाना हुआ।

पांचवां बयान

ऊपर लिखी वारदात को गुजरे आज कई दिन हो चुके हैं। इस बीच में कहां और क्या क्या नई बातें पैदा हुईं उनका हाल तो पीछे मालूम होगा, इस समय हम पाठकों को कला और बिमला की उसी सुन्दर घाटी मे ले चलते हैं जिसकी सैर वे पहिले भी कई दफे कर चुके हैं।

उस घाटी के बीचोबीच में जो सुन्दर बंगला है उसी में चलिए और देखिए कि क्या हो रहा है।

रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है, बंगले के अन्दर एक कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ है और उस पर कुछ आदमी बैठे आपुस में बातें कर रहे हैं। एक तो इन्द्रदेव हैं, दूसरी कला, तीसरी बिमला और चौथी इन्दुमति है, जिसका नाम आज कल 'चन्दा' रक्खा गया है। खैर सुनिये कि इनमें क्या क्या बातें हो रही हैं।

बिमला० । (इन्द्रदेव से) आपका कहना बहुत ठीक है, मैं भी भूतनाथ से इसी तरह पर बदला लेना पसन्द करती हूं, तभी तो उसे यहाँ से निकल जाने का मौका दिया नहीं तो यहां पर उसको मार डालना कोई कठिन काम न था।

इन्द्र० । ठीक है, किसी दुश्मन को मार डालने से मेरी तबीयत तो प्रसन्न नहीं होती। मैं समझता हूं कि मरने वाले को कई सायत तक की मामूली तकलीफ तो होती है मगर मरने के बाद उसे कुछ भी ज्ञान नहीं रहता कि उसने किसके साथ कैसा सलूक किया था और उसने किस तरह पर उससे बदला लिया। प्राण का सम्बन्ध शरीर से नहीं छूटता, उसे कोई न कोई शरीर अवश्य ही धारण करना पड़ता है। एक शरीर को छोड़ा तो दूसरा धारण करना पड़ा। यह उसकी इच्छानुसार नहीं होता बल्कि सर्वशक्तिमान जगदीश्वर के रचे हुए मायामय जगत का यह एक अकाट्य नियम ही है और इसी नियम के अनुसार ईश्वर भले बुरे कर्मों का बदला मनुष्य को देता है। एक देह को छोड़ कर जब जीव दूसरी देह में प्रवेश करता है तब अपने भले बुरे कर्मों का फल दूसरे देह में भोगता है, मगर इसका उसे कुछ भी परिज्ञान नहीं होता और उस सुख दुःख का कारण न समझ कर वह सहज ही में उस कर्म-फल को अथवा सुख दुःख को भोग लेता है या भोगा करता है। वह इस बात को नहीं समझ सकता कि पूर्व जन्म में मैंने यह पाप किया था जिसका बदला इस तरह पर मिल रहा है, बल्कि उसे वह एक मामूली बात समझता है और दुःख को दूर करने का उद्योग किया करता है, यही कारण है कि वह पुनः पाप-कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। अगर मनुष्य जानता कि यह दुःख उसके किस पाप-कर्म का फल है तो कदाचित् वह पुनः उस पाप-कर्म में प्रवृत्त होने का साहस न करता परन्तु उस महामाया की माया कुछ कही नहीं जाती और समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है। कदाचित् उस दयामय के दयाभाव ही का यह कारण हो। इसी से मैं कहता हूँ कि दुश्मन को मार डालने से कोई फल नहीं होता। उसके पाप-कर्म का बदला ईश्वर तो उसे देवेहीगा परन्तु 'मैं भी तो कुछ बदला दे दूं' यही मेरी इच्छा रहती है। चाहे किसी मत के पक्षपाती लोग इसे भी ईश्वर की इच्छा ही कहें परन्तु मेरे चित्त को जो सन्तोष होता है वह विशेषता इसमें अधिक अवश्य है।

बिमला० । निःसन्देह ऐसा ही है।

इन्द्रदेव० । दुश्मन बहुत दीनों तक जीता रह कर पाप का प्रायश्चित भोगता रहे सो अच्छा, जितने ही ज्यादे दिनों तक वह पश्चात्ताप करे उतना ही अच्छा, उसके शरीर को जितना ही कष्ट भोगना पड़े उतना ही उत्तम, वह अपने सचाई

के साथ बदला देने वाले को प्रसन्न और हंसता हुआ देख कर जितना ही कुढ़े जितना ही शर्मिंदा हो और जितना ही दुख पा सके उतना ही शुभ समझना चाहिये। इसी विचार से मैं कहता हूं कि भूतनाथ को मारो मत, बल्कि उसे जहां तक बने सताओ और दुख दो, भला वह समझे तो सही कि मेरे किस कर्म का यह क्या फल मिल रहा है?

मगर एक बात और विचारने के योग्य है, वह यह कि इस तरह पर दुश्मन से बदला लेना कुछ सहज काम नहीं है। इसके लिए बड़े ही उद्योग बड़े ही साहस और बड़े ही धैर्य की जरूरत है और इसके लिए अपने चित्त के भाव को बहुत ही छिपाना पड़ता है, सो ये बातें मनुष्य से जल्दी निबहतीं नहीं, इसी से कई विद्वानों का मत है कि 'दुश्मन को जहां तक हो सके जल्द मिटा देना चाहिये, नहीं तो किसी विचार से तरह दे देने पर कहीं ऐसा न हो कि मौका पा कर वह बलवान हो जाय और तुम्हीं को अपने कब्जे में कर ले।' यह सच है परन्तु यदि ईश्वर सहायक हो और मनुष्य धैर्य के साथ निर्वाह कर सके तो इस बदले से वह पहिला ही बदला अच्छा है जिसे मैं ऊपर बयान चुका हूं।

भूतनाथ के साथ इस तरह का बर्ताव करने से एक फायदा यह भी हो सकता है कि सच्चे और झूठे मामले की जांच भी हो जायगी। कदाचित् उसने तुम्हारे पति को धोखे में ही मारा हो जान बूझ कर न मारा हो जैसा कि उसका कथन है। भूतनाथ ऐसा बुद्धिमान और धुरन्धर ऐयार यदि अपने कर्मों का प्रायश्चित्त पाकर सुधर जाय और अच्छी राह लगे तो अच्छी ही बात है क्योंकि ऐसे बहादुर लोग दुनिया में कम पैदा होते हैं।

इन्द्रदेव की आखिरी बात कला और बिमला को पसन्द न आई मगर उन्होंने उनकी खातिर से यह जरूर कह दिया कि–'आपका कहना ठीक है।'

कला०। खैर अब तो भूतनाथ को मालूम ही हो गया है कि जमना और सरस्वती जीती हैं, देखें हम लोगों के लिए क्या उद्योग करता है।

इन्द्रदेव०। कोई चिन्ता नहीं, मालूम हो गया तो होने दो, तुम होशियारी के साथ इस घाटी अन्दर पड़ी रहो, किसी को यहां का रास्ता मत बताओ और जब कभी इस घाटी के बाहर जाओ तो उन अद्भुत हर्बों को जरूर अपने साथ रक्खो जो मैंने तुम लोगों को दिये हैं।

बिमला०। जो आज्ञा।

कला०। यहां का रास्ता अभी तक तो सिवाय प्रभाकरसिंह के और किसी नए आदमी को मालूम नहीं हुआ, मगर इधर प्रभाकरसिंहजी की जुबानी यह जाना गया

है कि हम लोगों का कुछ हाल उन्होंने अपने दोस्त गुलाबसिंह को जरूर कह दिया है, मगर यहां का रास्ता घाटी या इसका असल भेद उनको भी नहीं बताया है !

इन्द्र० । (कुछ सोच कर) प्रभाकरसिंह बुद्धिमान आदमी हैं, उन्होंने जो कुछ किया होगा उचित किया होगा, उनके विषय में तुम लोग चिन्ता मत करो । इसके अतिरिक्त गुलाबसिंह पर मैं भी विश्वास करता हूं । वह निःसन्देह उनका सच्चा हितैषी है और साथ ही इसके साहसी और बहादुर भी है । यदि गुलाबसिंह को वे इस घाटी के अन्दर ले भी आवें तो कोई चिन्ता कि बात नहीं है । (मुस्कुरा कर) और बेटी तुमने तो प्रभाकरसिंह को यहाँ का राज्य ही दे दिया, यहाँ के तिलिस्म की ताली ही दे दी है ।

बिमला० । सो आपकी आज्ञा से मैंने अपनी तरफ से कुछ भी नहीं किया परन्तु फिर भी आपकी मदद पाये बिना वे कुछ कर न सकेंगे । हां एक बात कहना तो मैं भूल ही गई ।

इन्द्रदेव० । वह क्या ?

बिमला० । भूतनाथ की घाटी का रास्ता मैंने बन्द कर दिया है, अब भूतनाथ अपने स्थान पर नहीं पहुंच सकता और उसके साथी और दोस्त लोग उसी के अन्दर पड़े पड़े सड़ा करेंगे ।

यह कह कर बिमला ने अपनी बेईमान लौंडी चन्दो की मौत और भूतनाथ की घाटी का दर्वाजा बन्द कर देने तक का हाल पूरा पूरा इन्द्रदेव से बयान किया ।

इन्द्र० । (कुछ सोच कर) मगर यह काम तो तुमने अच्छा नहीं किया ! तुम लोगों को मैंने इस घाटी में इसलिए स्थान दिया था कि अपने दुश्मन भूतनाथ का हाल चाल बराबर जाना करोगी, वह इस घाटी के पड़ोस में रहता है और यहां से उस घाटी का हाल बखूबी जाना जा सकता है, उसी सुबीते को देख कर मैंने तुम लोगों को यहां छोड़ा था, सो सुबीता तुमने अपने से बिगाड़ दिया । यद्यपि भूतनाथ के कई संगी साथी इससे परेशान हो मर जायंगे मगर इससे भूतनाथ का कुछ नहीं बिगड़ेगा । वह इस स्थान को छोड़ कर दूसरी जगह चला जायगा फिर तुम्हें उसके काम काज की कुछ भी खबर नहीं मिला करेगी । तुम ही सोचो कि यदि वह तुम्हारे किसी दोस्त या साथी को गिरफ्तार करता तो जरूर इसी घाटी में ले आता और तुम्हें उसकी खबर लग जाती, तब तुम उसको छुड़ाने का उद्योग करतीं, मगर अब क्या होगा ? अब तो अगर वह तुम्हारे किसी साथी को पकड़ेगा तो दूसरी जगह ले जायगा और ऐसी अवस्था में तुम्हें कुछ भी पता न लगेगा ।

बिमला० । (सिर झुका कर) बेशक यह बात तो है ।

कला० । निःसन्देह भूल हो गई !

इन्दु० । गहरी भूल हो गई ! आखिर हम लोग औरत की जात इतनी समझ कहां ? अब इस भूल का सुधार क्योंकर हो ?

इन्द्र० । अब इसका सुधार होना जरा कठिन है, भूतनाथ जरूर चौकन्ना हो गया होगा और अब वह अपने लिए कोई दूसरा स्थान मुकर्रर करेगा । (कुछ विचार कर) मगर खैर एक दफे मैं इसके लिए उद्योग जरूर करूंगा, कदाचित् काम निकल जाय।

कला० । क्या उद्योग कीजिएगा ?

इन्द्र० । सो अभी से कैसे कहूं ? वहां जाने पर और मौका देखने पर जो कुछ बन जाय । यदि भूतनाथ इस घाटी में बना रहेगा तो बहुत काम निकलेगा ।

बिमला० । तो क्या आप अकेले भूतनाथ की तरफ या उस घाटी में जायंगे ?

इन्द्रदेव० । हां जा सकता हूं क्योंकि वे लोग मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और न मुझे भूतनाथ की कुछ परवाह ही है, मगर मेरा इरादा है कि इस काम के लिए दलीपशाह को भी अपने साथ लेता जाऊं ।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और उस कमरे में चले गये जो यहां नहाने धोने के लिए मुकर्रर था ।

छठवां बयान

दिन तीन पहर से ज्यादे चढ़ चुका है । इस समय हम भूतनाथ को एक घने जंगल में अपने तीन साथियों के साथ पेड़ के नीचे बैठे हुए देखते हैं । यह जंगल उस घाटी से बहुत दूर न था जिसमें भूतनाथ रहता था और जिसका रास्ता बिमला ने बन्द कर दिया था।

भूत०। (अपने साथियों से) मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मेरे साथी लोग इस घाटी में कैदियों की तरह बन्द होकर दुःख भोग रहे हैं । यद्यपि वहां पानी की कमी नहीं है और खाने के लिए भी इतना सामान है कि वे लोग महीनों तक निर्वाह कर सकें, मगर फिर भी कब तक ! आखिर जब यह सामान चुक जायगा तो फिर वे लोग क्या करेंगे ?

एक० । ठीक है मगर साथ ही इसके यह खयाल भी तो होता है कि शायद हमारे दोस्तों को भी तकलीफ दी गई हो !

भूत० । हो सकता है लेकिन इस विचार पर भी विशेष भरोसा नहीं करता,

क्योंकि दर्वाजा बन्द कर देना सिर्फ एक जानकार आदमी का काम है मगर हमारे साथियों से लड़ कर बीस या पचीस आदमी भी पार नहीं पा सकते।

दूसरा०। है तो ऐसी ही बात, इसी से आशा होती है कि अभी तक वे सब जीते होंगे, अस्तु जिस तरह हो सके उन्हें बचाना चाहिए!

भूत०। मैं इसी फिक्र में पड़ा हूं और सोच रहा हूं कि उनको बचाने के लिए क्या इन्तजाम किया जाय।

एक०। पहिले तो उसका पता लगाना चाहिये जिसने दर्वाजा बन्द कर दिया है।

भूत०। हां और इस विषय में मुझे उन्हीं औरतों पर शक होता है जो इस पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं, जहां मैं कैद होकर गया था, और जहां सुनने में आया कि जमना और सरस्वती अभी तक जीती जागती हैं और मुझसे दयाराम का बदला लेने के लिए उद्योग कर रही हैं। वास्तव में वह घाटी भी बड़ी विचित्र है। निःसन्देह वह तिलिस्म है और अगर मेरा खयाल ठीक है तो वहां की रहने वालियां अड़ोस पड़ोस की भी घाटियों का हाल जानती होंगी, बल्कि मेरी इस घाटी से भी सम्बन्ध रखती हों तो ताज्जुब नहीं।

तीसरा०। आपका यह विचार बहुत ठीक है। अगर वास्तव में जमना और सरस्वती जीती हैं और उसी घाटी में रहती है तो निःसन्देह यह काम उन्हीं का है और उन्हीं लोगों में से किसी को गिरफ्तार करने से हमारा काम निकल सकता है।

भूत०। बेशक, और मैं उन लोगों में से किसी को जरूर गिरफ्तार करूंगा।

एक०। आप जब गिरफ्तार होकर वहां गये तो वहां की अवस्था देख कर और उन लोगों की बातें सुन कर जमना और सरस्वती के विषय में आपने क्या विश्वास किया?

भूत०। मुझे विश्वास होता है कि जरूर वे दोनों जीती हैं।

दूसरा०। तो यह घाटी उन लोगों को किसने रहने के लिये दी और उन लोगों का मददगार कौन है?

भूत०। यही तो एक विचारने की बात है। मेरे खयाल से अगर इन्द्रदेव उन दोनों के पक्षपाती बने हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं क्योंकि दयारामजी मेरे हाथ से मारे गये इस बात को दुनिया में मेरे सिवाय सिर्फ दो ही आदमी और जानते हैं, एक तो दलीपशाह दूसरा शम्भू। शम्भू तो इन्द्रदेव का शागिर्द ही ठहरा और दलीपशाह इन्द्रदेव का दिली दोस्त। यद्यपि दलीपशाह मेरा नातेदार है और उसने इस बात को छिपा रखने के लिये मुझसे कसम भी खाई है मगर अब मालूम होता है कि उसने अपनी कसम तोड़ दी और इस भेद को खोल दिया। इस बात

का सब से बड़ा सबूत एक यह है कि जब मैं कैदहोकर उन घाटो में गया था तो एक औरत ने जोर देकर मुझसे बयान किया था कि तुमने दयाराम को मारा है और इसके सबूत में पेश करने के लिये दलीपशाह और शम्भू अभी तक जीते हैं। अस्तु मेरा यह विचार पक्का है कि निःसन्देह शम्भू और दलीपशाह ने भेद खोल दिया और सब के पहिले उन्होंने जरूर अपने दोस्त इन्द्रदेव से वह हाल बयान किया होगा। ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ही इन दोनों के पक्षपाती बने हों।

एक०। तो इन्द्रदेव को क्या आपसे कुछ दुश्मनी है ?

भूत०। नहीं, इस बात का तो मुझे गुमान भी नहीं होता।

एक०। और यदि इन्द्रदेव चाहें तो क्या आपको कुछ सता नहीं सकते ? या आपको गिरफ्तार करके सजा नहीं दे सकते ?

भूत०। बेशक इन्द्रदेव जो कुछ चाहे कर सकते हैं, उनकी ताकत का कोई अन्दाजा नहीं कर सकता, वे एक बहुत बड़े तिलिस्म के राजा समझे जाते हैं, मुझसे वे बहुत ज्यादे जबर्दस्त हैं और ऐयारी में भी मैं उन्हें अपने से बढ़ कर मानता हूं। यद्यपि एक विषय में मैं अपने को उनका कसूरवार मानता हूं मगर फिर भी कह सकता हूं कि वे मेरे दोस्त हैं।

दूसरा०। तो आप ऐसे दोस्त पर इस तरह का शक क्यों करते हैं ?

भूत०। दिल ही तो है, खयाल ही तो है। जब आदमी किसी मुसीबत में गिरफ्तार होता है तो उसके सोच विचार और शक का कोई हिसाब नहीं रहता। मैं इस समय मुसीबत की जिन्दगी बिता रहा हूं। मुझसे दो तीन काम बहुत बुरे हो गये हैं जिनमें से एक दयाराम वाली वारदात है। इसमें मुझे बहुत ही बड़ा धोखा हुआ। मैंने कुछ जान बूझ कर अपने दोस्त को नहीं मारा, मगर खैर वह जो कुछ होना था हो गया, अब क्या मैं अपने को दुश्मन के हाथ सहज ही में सौंप दूंगा ? यद्यपि इन्द्रदेव को मैं अद्भुत व्यक्ति मानता हूं मगर मैं अपने को भी कुछ समझता हूं, मुझे अपनी ऐयारी पर घमण्ड है, इसलिये मैं इन्द्रदेव से नहीं डरता और तुम लोगों से कहे देता हूं कि दलीपशाह इन्द्रदेव का दोस्त है तो क्या हुआ मगर मैं उसे मारे बिना कभी न छोड़ूंगा, उस कम्बख्त से अपना बदला जरूर लूंगा। केवल उसी को नहीं मारूंगा बल्कि उसके खानदान में किसी को जीता न रहने दूंगा। मैं इस बात को जरा भी न सोचूंगा कि वह मेरा नातेदार है, क्योंकि खुद उसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और मेरी बर्बादी के पीछे लग गया। मुझे यह भी खबर लगी है कि दलीपशाह ने जमानिया के दारोगा से भी दोस्ती

पैदा कर ली है और उसकी तरफ से भी मुझे सताने के लिये तैयार है।

एक०। ऐसी अवस्था में जरूर दलीपशाह का नाम निशान मिटा देना चाहिये क्योंकि जब तक वह जीता रहेगा आप बेफिक्र नहीं हो सकते, साथ ही इसके शम्भू को भी मार डालना चाहिए। उन दोनों के मारे जाने पर आप इन्द्रदेव को अच्छी तरह समझा लेंगे और विश्वास दिला देंगे कि आपके हाथों से दयाराम नहीं मारे गये और अगर दलीपशाह और शम्भू ने उनसे ऐसा कहा है तो वह बात बिल्कुल ही झूठ है।

भूतनाथ०। ठीक है, मैं जरूर ही ऐसा करूंगा, लेकिन इतने पर भी काम न चलेगा और यह बात मशहूर ही होती दिखाई देगी तो लाचार होकर मुझे और भी अनर्थ करना पड़ेगा, नाता और रिश्ता भूल जाना पड़ेगा, दोस्ती और मुरौवत को तिलांजुली दे देना पड़ेगा, और जिन जिन को यह बात मालूम हो गई है उन सभी को इस दुनिया से उठा देना पड़ेगा।

एक०। जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को भी ?

भूत०। बेशक, बल्कि गुलाबसिंह को भी!

दूसरा०। यह बड़े कलेजे का काम होगा!

भूत०। मुझसे बढ़ कर कठिन और बड़ा कलेजा किसका होगा जिसने लड़के लड़की और स्त्री को भी त्याग दिया है ? मगर अफसोस, इस समय मैं पाप पर पाप करने के लिए मजबूर हो रहा हूं!

एक०। खैर यह बताइये कि सबसे पहले कौन काम किया जायगा और इस समय आप हम लोगों को क्या हुक्म देते हैं!

भूत०। सबसे पहिले मैं अपने दोस्तों को छुड़ाऊंगा और इसके लिए उस पड़ोस की घाटी में रहने वाली औरतों में से किसी को गिरफ्तार करना चाहिये। खैर अब बताता हूं कि तुम लोगों को क्या करना चाहिए। (चौंक कर) देखो तो वह साधू कौन है! ऐसा गुमान होता है कि इसे मैंने कभी देखा है। यह तो हमारे उसी खोह की तरफ जा रहा है। पहिले इसी की सुध लेनी चाहिये फिर बताएंगे कि तुम लोगों को क्या करना चाहिये।

यह साधू जिस पर भूतनाथ की निगाह पड़ी बहुत ही बुड्ढा और तपस्वी जान पड़ता था। इसके सर और दाढ़ी के बाल बहुत ही घने और लंबे थे। लम्बा कद, वृद्ध होने पर भी गठीला बदन और चेहरा रोआबदार मालूम होता था। कमर में क्या पहिरे हुए था इसका पता नहीं लगता था क्योंकि इसके बदन में बहुत लम्बा

गेरुए रंग का ढीला कुरता था जो घुटने से एक बित्ता नीचे तक पहुंच रहा था, मगर साथ ही इसके यह जान पड़ता था कि उसने अपने तमाम बदन में हलकी विभूती लगाई हुई है। इसके अतिरिक्त उसके पास और किसी तरह का सामान दिखाई न देता था अर्थात् कोई माला या सुमिरनी तक इसके पास न थी।

भूतनाथ अपने साथियों को इसी जगह रहने का हुक्म देकर धीरे धीरे उस साधू के पीछे रवाना हुआ मगर इस लापरवाह साधू को इस बात का कुछ भी खयाल न था कि उसके पीछे कोई आ रहा है।

थोड़ी ही देर में वह साधू उस खोह के मुहाने पर जा पहुँचा जिसमें भूतनाथ रहता था। जब वह खोह के अन्दर घुसने लगा तब भूतनाथ भी लपक कर उसके पास पहुंचा।

साधू०। (भूतनाथ को देख कर) तुम कौन हो ?

भूत०। जी मेरा नाम गदाधरसिंह ऐयार है।

साधू०। ठीक है, मैं तुम्हारा नाम सुन चुका हूं, बहुत अच्छा हुआ कि तुमसे मुलाकात हो गई, मालूम होता है कि तुम्हीं ने इस घाटी में दखल जमा रक्खा है और जो लोग इसके अन्दर हैं वे सब तुम्हारे ही संगी साथी हैं ?

भूत०। जी हां, बात तो ऐसी ही है।

साधू०। मैं इसी फिक्र में पड़ा हुआ था और सोच रहा था कि इस घाटी में किसने अपना दखल जमा लिया है। शायद तुम्हें यह बात मालूम नहीं है, खैर अब समझ लो कि मैं इस घाटी में पचास वर्ष से रहता हूं और यहां का हाल जितना मैं जानता हूं किसी दूसरे को मालूम नहीं है। इधर कई वर्ष हुए हैं कि मैं इस घाटी को छोड़ कर तीर्थयात्रा के लिए चला गया था। मेरा विचार था कि फिर लौट कर यहां न आऊं और इसी लिए इसका दर्वाजा खुला छोड़ गया था पर ईश्वर की प्रेरणा से मैं घूमता फिरता फिर यहां चला आया और जब इस घाटी के अन्दर गया तो देखा कि इसमें किसी दूसरे की अमलदारी हो रही है अस्तु मैं इसका दर्वाजा बन्द करता हुआ बाहर निकल आया और फिक्र में पड़ा कि इसके मालिक का पता लगाना चाहिये, क्योंकि इसके अन्दर जितने आदमी दिखाई पड़े उनमें से कोई भी ऐसा नजर न आया जिसे मैं यहां का मालिक समझूं, इसीलिए मैं इसके अन्दर किसी से मिला नहीं और न किसी ने मुझे देखा। खैर यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई कि तुम यहां रहते हो। मैं बहुत ही प्रसन्न होता यदि तुम्हारी गृहस्थी या तुम्हारे बालबच्चे भी यहां दिखाई देते। मगर खैर जो कुछ है वही गनीमत है। मैं तुम्हें

मुहब्बत की निगाह से देखता हूं क्योंकि तुमसे मुझे एक गहरा सम्बन्ध है।

भूत०। (आश्चर्य से) वह कौन सा सम्बन्ध है ?

साधू०। सो कहने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि भूलता हूं जो तुमसे सम्बन्ध रखने की बात कहता हूं। जो साधू है और जिसने दुनिया ही से सम्बन्ध छोड़ दिया उसे फिर किसी से सम्बन्ध रखने की जरूरत ही क्या है, मगर खैर फिर कभी जब तुमसे मिलूंगा तब बताऊंगा कि मैं कौन हूं, उस समय तुम मुझे मुहब्बत की निगाह से देखोगे और समझ जाओगे कि मैं तुम पर क्यों कृपा करता हूं...अस्तु जाने दो...अच्छा तुम खुशी से इस घाटी में रहो, मैं इसका दर्वाजा खोल देता हूं बल्कि यह भी बताए देता हूं किस तरह यह दर्वाजा खुलता और बन्द होता है।

भूत०। (प्रसन्नता से) ईश्वर ही ने मुझे आपसे मिलाया ! मैं बड़े ही तरद्दुद में पड़ा हुआ था। अपने दोस्तों की तरफ से मुझे बड़ी ही फिक्र थी जो इस घाटी के अन्दर इस समय कैद हो रहे हैं। मैं समझ रहा था कि मेरा कोई दुश्मन यहां आ पहुंचा जो इस घाटी का हाल अच्छी तरह जानता है और उसी ने मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया है, मगर अब मेरा तरद्दुद जाता रहा और यह जान कर प्रसन्नता हुई कि इसके मालिक आप हैं, आप मगर मुझे बेतरह खुटके में डाल रहे हैं जो अपना पूरा परिचय नहीं देते, मैं क्योंकर समझूं कि आप मेरे बड़े और सरपरस्त हैं ?

साधू०। (मुस्कुरा कर) खैर तुम मुझे अपना सरपरस्त या मददगार न भी समझोगे तो इसमें मेरी या तुम्हारी किसी की भी हानि नहीं है, परन्तु फिर भी मैं वादा करता हूं कि बहुत जल्द एक दफे पुनः तुमसे मिलूंगा और तब अपना ठीक ठीक परिचय तुमको दूंगा, इस समय तुम मेरी फिक्र न करो और अपने दुश्मनों से बेफिक्र होकर इस घाटी में रहो। यहां थोड़ी सी दौलत भी है जिसका पता तुम्हें मालूम न होगा, चलो वह भी मैं तुम्हें दे देता हूं, जो कि तुम्हारे काम आवेगी क्योंकि अब मुझे दौलत की कुछ जरूरत नहीं रही और यदि आवश्यकता पड़े भी तो मुझे किसी तरह की कमी नहीं है।

भूत०। (प्रसन्न होकर) केवल धन्यवाद देकर मैं आपसे उऋण नहीं हो सकता आप मुझ पर बड़ी ही कृपा कर रहे हैं।

साधू०। इसे कृपा नहीं कहते, यह केवल प्रेम के कारण है, अस्तु अब तुम विलम्ब न करो और शीघ्रता से चलो, जो कुछ मुझे करना है उसे जल्द निपटा करके बदरिकाश्रम की यात्रा करूंगा।

भूतनाथ के दिल में इस समय तरह तरह के विचार उठ रहे थे। वह न

मालूम किन किन बातों को सोच रहा था मगर प्रकट में यही जान पड़ता था कि वह बड़ी होशियारी के साथ सचेत बना हुआ खुशी खुशी साधू के साथ सुरंग के अन्दर जा रहा है। जब उस चौमुहानी पर पहुंचा जिसका जिक्र कई दफे हो चुका है तो भूतनाथ ने साधू से पूछा—

भूत०। ये बाकी के दोनों रास्ते किधर को गये हैं और उधर क्या है ?

साधू०। इस घाटी के साथ ही और भी दो घाटियां हैं और उन्हीं में जाने के लिए ये दोनों रास्ते हैं मगर उन्हें मैंने बहुत अच्छी तरह से बन्द कर दिया है क्योंकि उन घाटियों में रहने वालों के आने जाने के लिए और भी कई रास्ते मौजूद हैं। अब इन रास्तों से कोई आ जा नहीं सकता, तुम इस तरफ से बिल्कुल बेफिक्र रहो, मगर इस राह से उस तरफ जाने का उद्योग कभी न करना।

भूत०। जी नहीं मैं तो उस तरफ जाने का ख्याल कभी करता ही नहीं परंतु आज कल उस तरफ वाली घाटी में बहुत से आदमी आकर बस गये हैं और वे सब मेरे साथ दुश्मनी करते हैं बस इसी लिए जरा खयाल होता है।

साधू०। (लापरवाही के साथ) खैर अगर उस घाटी में कोई रहता भी होगा तो यहां अर्थात् इस घाटी में आकर तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं कर सकता। यों तो दुनिया में सभी जगह दोस्त और दुश्मन रहा करते हैं, उनका बन्दोबस्त दूसरे ढंग पर कर सकते हो।

भूत०। जैसी मर्जी आपकी।

साधू०। हां, बेहतर यही है कि तुम बेफिक्री के साथ यहां रह कर अपने दुश्मनों का प्रबन्ध करो और मेरा इतंजार करो, मैं बहुत जल्द इसी घाटी में आकर तुमसे मिलूंगा। उसी समय मैं तुमको कुछ और भी लाभदायक वस्तुएं दूंगा और कुछ उपदेश भी करूगा।

इतना कह कर साधू आगे की तरफ बढ़े और बहुत जल्द उस दर्वाजे के पास जा पहुंचे जिसे बिमला ने बंद कर दिया था। जिस तरह से बिमला ने उस दर्वाजे को बन्द किया था उसी तरह साधू ने उसे खोला और खोलने तथा बन्द करने का ढंग भी भूतनाथ को बता दिया।

अब भूतनाथ सहज ही में साधू के साथ घाटी के अन्दर जा पहुँचा और अपने साथियों से मिल कर बहुत प्रसन्न हुआ। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि उसके साथी लोगों ने कई दफे इस घाटी के बाहर निकलने का उद्योग किया था मगर रास्ता बन्द होने के कारण बाहर न जा सके और इस वजह से वे लोग बहुत घबड़ा रहे थे।

भूतनाथ ने अपने सब साथियों से बाबाजी की मेहरबानी का हाल बयान किया और उन सभों को महात्मा के पैरों पर गिराया।

भूतनाथ यद्यपि जानता था कि साधू महाशय मुझ पर बड़ी कृपा कर रहे हैं और उन्हें मुझसे किसी तरह का फायदा भी नजर नहीं आता, तथापि वह अभी तक उन पर अच्छी तरह भरोसा करने का साहस नहीं रखता था। यह बात चाहे ऐयारी नियम के अनुसार कहिये चाहे भूतनाथ की प्रकृति के कारण समझिये हां इतना जरूर था कि बाबाजी की मेहरबानियों से भूतनाथ दबा जाता था और सोचता था कि यदि इन्होंने कोई खजाना मुझे दे दिया जैसा कि कह चुके हैं, तो मुझे मजबूर होकर इन पर भरोसा करना पड़ेगा और समझना पड़ेगा कि ये वास्तव में मुझसे स्नेह रखते हैं और मेरे कोई अपने ही हैं।

साधू महाशय की आज्ञानुसार भूतनाथ ने उन्हें वे सब गुफायें दिखाई जिनमें वह अपने साथियों के साथ रहता था और बताया कि इस ढंग पर इस स्थान को हम लोग बरतते हैं, इसके बाद साधू महाशय उसे अपने साथ लिये पूरब तरफ की चट्टान पर चले गये जिधर छोटी बड़ी कई गुफाएं थीं।

साधू०। देखो भूतनाथ, मैं जब यहां रहता था तो इसी तरफ की गुफाओं में गुजारा करता था और इस पड़ोस वाली घाटी में जिसे तुम अपने दुश्मनों का स्थान बता रहे हो, इन्द्रदेव रहता था जिसे तुम पहिचानते होगे।

भूत०। जी हां, मैं खूब जानता हूं।

साधू०। उन दिनों इन्द्रदेव का दिमाग बहुत ही बढ़ा चढ़ा था और वह मुझसे दुश्मनी रखता था, क्योंकि जिस तरह वह एक तिलिस्म का दारोगा है उसी तरह मैं भी एक तिलिस्म का दारोगा हूं, अस्तु वह चाहता था कि मेरे कब्जे में जो तिलिस्म है उसका भेद जान ले और उस पर कब्जा कर ले, मगर वह कुछ भी न कर सका और कई साल तक यहां रहने पर भी वह न जान सका कि फलाना ब्रह्मचारी इस पड़ोस वाली घाटी में रहता है। इस समय मैं तुमसे ज्यादे न कहूंगा और न ज्यादे देर तक रहने की मुझे फुरसत ही है, तुम्हें बड़ा ही ताज्जुब होगा जब मैं अपना परिचय तुम्हें दूंगा और उस समय तुम भी मुझसे उतनी ही मुहब्बत करोगे जितना इस समय मैं तुमसे करता हूं।

भूत०। ठीक है, मैं परिचय देने के लिये इस समय जिद्द भी नहीं कर सकता, क्योंकि आप बड़े हैं आपको आज्ञानुसार मुझे चलना ही चाहिये, अच्छा यह तो बताइए कि यह तिलिस्म जिसके आप दारोगा हैं अभी तक आपके कब्जे में है या नहीं?

साधू० । हां अभी तक वह तिलिस्म मेरे ही कब्जे में है ।

भूत० । वह किस स्थान में है ?

साधू० । इसी घाटी में वह तिलिस्म है, मैं अबकी दफे जब यहां आकर तुमसे मिलूंगा तो उसका कुछ हाल कहूंगा और अगर तुम इस घाटी में कब्जा बनाए रहोगे और तुम्हारी चाल चलन अच्छी देखूंगा तो एक दिन तुमको उस तिलिस्म का दारोगा भी बना दूंगा क्योंकि अब मैं बहुत बुड्ढा हो गया हूं और तिलिस्म के नियमानुसार अपने बाद के लिये किसी न किसी को दारोगा बना देना बहुत जरूरी है।

साधू महाशय की इस आखिरी बात को सुन कर भूतनाथ बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि तिलिस्म का दारोगा बनना कोई मामूली बात नहीं है, उसके कब्जे में बेअन्दाज दौलत रहती है और उसकी ताकत तिलिस्मी सामान की बदौलत मनुष्य की ताकत से कहीं बढ़ चढ़ कर रहती है । उसी समय भूतनाथ का खयाल एक दफे इन्द्रदेव की तरफ गया और उसने मन में कहा कि देखो तिलिस्मी दारोगा होने के कारण ही इन्द्रदेव कैसे चैन और आराम के साथ रहता है, दुश्मनों का उसे जरा भी डर नहीं है और वास्तव में उसके दुश्मन उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते । मगर अफसोस भूतनाथ ने इस बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया कि इन्द्रदेव कैसा नेक ईमानदार और साधू आदमी है तथा उसमें सहनशीलता और क्षमा शक्ति कितनी भरी हुई है, तिस पर भी वह दुश्मनों के हाथ कैसा सताया गया ।

भूत० । (बहुत नरमी के साथ) तो आप पुनः कब तक लौट कर यहां आवेंगे ?

साधू० । इस विषय में जो कुछ मेरे विचार हैं उसे प्रकट करना अभी मैं उचित नहीं समझता ।

भूत० । जैसी मर्जी आपकी । आजकल मेरी आर्थिक दशा बहुत ही खराब हो रही है, रुपये पैसे की तरफ से मैं बहुत ही तंग हो रहा हूं ।

साधू० । तो इस समय जो खजाना मैं तुम्हें दे रहा हूं वह तुम्हारे लिए कम नहीं है, यदि तुम उसे उचित ढंग पर खर्च करोगे तो वर्षों तक अमीर बने रहोगे और राज्यसुख भोगोगे, आओ मेरे पीछे पीछे चले आओ ।

इतना कह कर साधू एक गुफा की तरफ बढ़ा और भूतनाथ खुशी खुशी उसके पीछे रवाना हुआ ।

खोह के अन्दर बहुत अंधकार था मगर भूतनाथ बेधड़क साधू के पीछे पीछे दूर तक चला गया । जब लगभग दो तीन सौ कदम चला गया तो साधू ने कहा, "लड़के देख मैं इस खोह के अन्दर अन्दाज से चला आकर सब काम कर सकता

हूं मगर तुझे इस काम में तकलीफ होगी क्योंकि तेरे लिये यह पहिला मौका है, इसलिये मैं उचित समझता हूं कि तू अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी कर ले और अच्छी तरह से सब कुछ देख ले, फिर दूसरी दफे तेरे ऐसे होशियार आदमी को रोशनी की जरूरत न पड़ेगी।"

भूतनाथ ने ऐसा ही किया, अर्थात् रोशनी करके अच्छी तरह से देखता हुआ साधू के पीछे पीछे जाने लगा और ऐसा कहने और करने से साधू पर उसका विश्वास भी ज्यादे हो गया।

करीब करीब पांच सौ कदम के चले जाने बाद रास्ता बन्द हो गया और साधू महाशय ने खड़े होकर भूतनाथ से कहा, "बस आगे जाने के लिये रास्ता नहीं है, देख वह बगल वाले आले में कैसा अच्छा नाग बना हुआ है जिसे देख कर डर मालूम होता है। यह वास्तव में लोहे का है। इसको पकड़ कर जब तू अपनी तरफ खेंचेगा तो यहां का दर्वाजा खुला जायगा, मगर इस बात से होशियार रहियो कि इसके सिर अथवा फन के ऊपर कभी हाथ न लगने पावे नहीं तो धोखा खायगा।"

भूत०। जो आज्ञा, पहिले आप ही इसे खैंचें जिसमें मैं अच्छी तरह समझ लूं।

साधू०। (जोर से हंस कर) अभी तक तुमको मुझ पर भरोसा नहीं होता। मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, ऐयारों के लिये यह ऐसा अनुचित नहीं है।

इतना कह कर साधू ने सांप की दुम पकड़ ली और अपनी पूरी ताकत के साथ खैंचा। दो हाथ के लगभग वह दुम खिच कर आले के बाहर निकल आई और इसके साथ ही बगल में एक छोटा सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई दिया।

भूतनाथ को लिये हुए साधू उसके अन्दर घुस गया और उसी समय वह दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया। उस समय साधू ने भूतनाथ से कहा, 'देख गदाधरसिंह, इधर भी उसी तरह का नाग बना हुआ है, बाहर निकलती समय इधर से भी उसी तरह दर्वाजा खोलना पड़ेगा।"

भूतनाथ ने उसे अच्छी तरह देखा और फिर उस कोठड़ी की तरफ निगाह दौड़ाई जिसमें इस समय वह मौजूद था। उसने देखा कि वहां चांदी के कितने हीं बड़े बड़े देग या हण्डे रक्खे हुए हैं जिनका मुंह सोने के ढक्कनों से ढका हुआ है। भूतनाथ ने साधू की आज्ञा पाकर हण्डों का मुंह खोला और देखा कि उनमें अशर्फियां भरी हुई हैं।

इस समय भूतनाथ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और उसने सोचा कि निःसन्देह ऐसे कई खजाने इस घाटी में होंगे मगर उनका पता जानने के लिए साधू

से इस समय जिद करना ठीक न होगा, अवश्य यह पुनः यहां आवेंगे और मुझ पर कृपा करेंगे। लौटते समय आज्ञा पाकर भूतनाथ ने अपने हाथ से वह दर्वाजा बन्द किया और साधू के पीछे पीछे चल कर खोह के बाहर निकल आया। उस समय साधू ने कहा, "गदाधरसिंह अब मैं जाता हूं, जब लौट कर पुनः यहां आऊंगा तो ऐसे ऐसे कई खजाने तुझे दूंगा और तिलिस्म का दारोगा भी बनाऊंगा मगर मैं तुझे समझाये जाता हूं कि इन्द्रदेव के साथ दुश्मनी का ध्यान भी कभी अपने दिल में न लाइयो नहीं तो बर्बाद हो जायगा और दुःख भोगेगा, वह तुझसे बहुत ज्यादा जबर्दस्त है। अच्छा अब मैं जाता हूं, मेरे साथ आने की कोई जरूरत नहीं है।"

इतना कह कर साधू महाशय रवाना हो गए और आश्चर्य में भरे हुए भूतनाथ को उसी जगह छोड़ गए।

भूतनाथ बड़ी देर तक खड़ा खड़ा इस बात को सोचता रहा कि यह साधू महाशय कौन हैं और मुझ पर इतनी कृपा करने का सबब क्या है? सोचते सोचते उसका खयाल देवदत्त ब्रह्मचारी की तरफ चला गया जिन्होंने उसे पाला था और ऐयारी सिखा कर इस लायक बना दिया था कि किसी राजा या रईस के यहां रह कर इज्जत और हुर्मत पैदा करे।*

भूतनाथ सोचने लगा कि ताज्जुब नहीं यदि यह मेरे गुरु महाराज देवदत्त ब्रह्मचारी हों जो बहुत दिनों से लापता हो रहे हैं। मुझे रणधीरसिंहजी के यहां नौकर रखा देने के बाद वह यह कह कर चले गये थे कि अब मैं योगाभ्यास करने के लिए उत्तराखण्ड चला जाऊंगा, तुम मुझसे मिलने के लिए उद्योग मत करना। या सम्भव है कि उनके भाई ज्ञानदत्त ब्रह्मचारी हों जिनकी प्रायः गुरूजी तारीफ किया करते थे और कहते थे कि वे एक अद्भुत तिलिस्म के दारोगा भी हैं। जहां तक मेरा खयाल है उन्हीं दोनों में से कोई न कोई जरूर हैं। ताज्जुब नहीं कि मैं कुछ दिनों में तिलिस्म का दारोगा बन जाऊं। अब मैं इस घाटी को कदापि न छोड़ूंगा और देखूंगा कि किस्मत क्या दिखाती है! अब प्रभाकरसिंह को भी लाकर इसी घाटी में रखना चाहिए। मगर वास्तव में आजकल मैं बड़े संकट में पड़ गया हूं। मैं अपने मित्र इन्द्रदेव पर किस तरह अविश्वास करूं और किस तरह भरोसा ही करूं, किस तरह समझूं कि जमना और सरस्वती बिना किसी की मदद के मुझसे दुश्मनी करने लिए तैयार हो रही हैं! खैर जो कुछ होगा देखा जायगा, अब प्रभाकरसिंह को शीघ्र इस घाटी में ले आना चाहिए और उसके बाद इन्द्रदेव

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति बाईसवां भाग, भूतनाथ की जीवनी

से मिलना चाहिए । उनसे मुलाकात होने पर बहुत सी बातों का पता लग जायगा। मैं इन्द्रदेव के सिवाय और किसी से डरने वाला भी नहीं हूं । इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने दोस्तों और साथियों के पास चला गया और उनसे अपने कर्तव्य के विषय में बातचीत करने लगा, मगर साधू महाशय की कृपा से खजाना मिलने का हाल उसने उन लोगों से नहीं कहा ।

सातवां बयान

जमानिया वाला दलीपशाह का मकान बहुत ही सुन्दर और अमीराना ढंग पर गुजारा करने लायक बना हुआ है । उसमें जनाना और मर्दाना किता इस ढंग से बना है कि भीतर से दर्वाजा खोल कर जब चाहे एक कर लें और अगर भीतरी रास्ता बन्द कर दिया जाय तो एक का दूसरे से कुछ भी सम्बन्ध न मालूम पड़े, यहां तक कि अगर मर्दाने मकान में कोई मेहमान आकर टिके तो उसे यकायक इस बात का पता भी न लगे कि जनाने लोग कहां रहते हैं और उस तरफ आने जाने के लिए इस तरफ से कोई रास्ता भी है या नहीं ।

इस मकान के सामने एक छोटा सा सुन्दर नजरबाग बना हुआ था और उसके सामने अर्थात् पूरब तरफ ऊंची दीवार और फाटक था । मकान के बाईं तरफ लम्बा खपड़ैल था जिसका एक सिरा तो मकान के साथ सटा हुआ था और दूसरा सिरा सामने अर्थात् फाटक वाली दीवार के साथ । इसके बीच में छोटे कई दालान और कोठड़ियां बनी हुई थीं जिनमें दलीपशाह के खिदमतगार और सिपाही लोग रहा करते थे । इसी तरह मकान के दाहिनी तरफ इस सिरे से लेकर उस सिरे तक कुछ ऐसी इमारतें बनी हुई थीं जिनमें कई गृहस्थियों का गुजारा हो सकता था और उनमें दलीपशाह के शागिर्द ऐयार लोग रहा करते थे । इस ढंग पर वह नजरबाग बीच में अर्थात् चारो तरफ से घिरा हुआ था । सरसरी तौर पर खयाल करने से भी साफ मालूम होता था कि दलीपशाह बहुत ही अमीराना ढंग पर रह कर जिन्दगी के दिन बिता रहा है ।

इस इमारत के बगल ही में दलीपशाह का एक बहुत बड़ा खुला हुआ बाग था जिसमें बड़े बड़े आम नीबू और अमरूद तथा इसी तरह के और भी बहुत किस्म के दरख्त लगे हुए थे ।

दलीपशाह अपने मर्दाने मकान में एक सुन्दर सजे हुए कमरे के बाहर दालान में चौकी के ऊपर फर्श पर बैठे हुए अपने दोस्त इन्द्रदेव से बातचीत कर रहे हैं ।

इस जगह से सामने का नजरबाग और उसके बाद फाटक अच्छी तरह दिखाई दे रहा है। आज इन्द्रदेव इनसे मिलने के लिये आये हुए हैं और इस समय इनके पास बैठे हुए कई जरूरी मामलों पर सलाह और बातचीत कर रहे हैं।

दलीप०। भाई साहब गदाधरसिंह आपका दोस्त है इसलिये मैं लाचार होकर उसे अपना दोस्त मानता हूं, मगर सच तो यों है कि उसके साथ रिश्तेदारी होने पर भी मैं उसे दिल से पसन्द नहीं करता।

इन्द्र०। हां उसकी चालचलन तो कुछ खराब जरूर है मगर आदमी बड़े ही जीवट का है और ऐयारी का ढंग भी बहुत अच्छा जानता है।

दलीप०। इस बात को मैं जरूर मानता हूं बल्कि जोर देकर कह सकता हूं कि अगर वह ईमानदारी के साथ काम करता हुआ रणधीरसिंहजी के यहां कायदे से बना रहता तो एक दिन ऐयारों का सिरताज गिना जाता।

इन्द्र०। ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह का साथ छोड़ तो नहीं दिया!

दलीप०। अब इसे छोड़ना नहीं तो क्या कहते हैं? दो दो महीने तक गायब रहना और मालिक को मुंह तक नहीं दिखाना, क्या इसी को नौकरी कहते हैं? आप ही कहिए कि अबकी कै महीने के बाद आया था? सिर्फ दो दिन रह कर चला गया। उससे तो उसकी स्त्री अच्छी है जो अपने मालिक अर्थात् रणधीरसिंह की स्त्री का साथ नहीं छोड़ती।

इन्द्र०। ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह के यहां अपने बदले में अपना शागिर्द रख दिया है, इसके अतिरिक्त जब रणधीरसिंहजी को उसकी जरूरत पड़ती है तो उसी शागिर्द की मार्फत उसे बुलवा भेजते हैं। अभी हाल ही में देखिये उसने कैसी बहादुरी के काम किये।

दलीप०। अजी यह तो मैं खुद कह रहा हूं कि वह ऐयार परले सिरे का है, मगर इस जगह बहस तो ईमानदारी की हो रही है।

इन्द्र०। (दबी जुबान से) हां वह लालची तो जरूर है मगर अभी नई जवानी है सम्भव है आगे चल कर सुधर जाय!

दलीप०। (हंस कर) जी हां! बात तो यह है कि वह कम्बख्त आपके सामने ढोंग रचता है और दयारामजी के मामले पर उदासी दिखला कर कहता है कि अब मैं दुनिया ही छोड़ दूंगा, मगर मैं इस बात को कभी नहीं मान सकता, हां उसका यह कहना शायद सच हो कि दयारामजी के मामले में उसने धोखा खाया।

इन्द्र०। भाई उसकी यह बात तो जरूर सच है, वह जानबूझ कर दयाराम

को कदापि नहीं मार सकता।

दलीप०। जी हां मैं भी यही सोचता हूं, मगर आप देख लीजियेगा कि कुछ दिन के बाद वह हमारे और आपके ऊपर भी सफाई का हाथ जरूर फेरेगा। आपके ऊपर चाहे मेहरबानी भी कर जाय क्योंकि आपसे डरता है और उसे विश्वास है कि आप ऐयारी में किसी तरह उससे कम नहीं हैं, मगर मुझे तो कभी न छोड़ेगा।

इन्द्र०। अजी भविष्य में जैसा करेगा वैसा पावेगा इस समय तो वह हमारा आपका किसी का भी कसूरवार नहीं है!

दलीप०। (खिलखिला कर हंसने के बाद धीरे से) तब क्यों आपने बेचारे के पीछे जमना और सरस्वती को लगा दिया है?

इन्द्र०। केवल उन दोनों का प्रण पूरा करने के लिए मैंने यह कार्रवाई कर दी है नहीं तो तुम ही सोचो कि बेचारी लड़कियां उसका क्या बिगाड़ सकती हैं।

दलीप०। तो आप उन लड़कियों के साथ धोखेबाजी का काम करते हैं, सच्चे दिल से उनकी मदद नहीं करते।

इन्द्र०। (दांत से जुबान दबाने के बाद) नहीं नहीं, मैं जरूर उनकी मदद करता हूं मगर मेरी इच्छा यही है कि गदाधरसिंह मारा न जाय और दोनों लड़कियों की अभिलाषा भी पूरी हो जाय।

दलीप०। यह एक अनूठी बात है, खरबूजा खा भी लें और वह काटा भी न जाय। मैं तो समझता हूं वह एक दिन जरूर जमना और सरस्वती को मार डालेगा।

इन्द्र०। नहीं ऐसा तो न करेगा।

दलीप०। अजी आप तो निरे ही साधू हैं, इतने बड़े ऐयार होकर भी धोखा खाते हैं। मगर इसमें आपका कोई कसूर नहीं है, ईश्वर ने आपका दिल ही ऐसा नर्म बनाया है कि किसी की बुराई पर ध्यान नहीं देते, मगर भाईजान मैं तो उससे बराबर खटका रहता हूं। इससे आप यह न समझिये कि मैं उसका दुश्मन हूं, आपकी तरह मैं भी यही चाहता हूं कि वह किसी तरह अच्छे ढर्रे पर आ जाय मगर यह उम्मीद नहीं। अच्छा यह बताइये कि उन लोगों के विषय में आजकल क्या कार्रवाई हो रही है अर्थात् जमना और सरस्वती क्या कर रही हैं?

इन्द्र०। बस गदाधरसिंह के पीछे पड़ी हुई हैं, आज कई दिन हुए कि उसे गिरफ्तार भी कर लिया था मगर सिर्फ डरा धमका के छोड़ दिया, क्योंकि मैंने अच्छी तरह समझा दिया है कि दुश्मन को सता के और दुःख दे के बदला लेना चाहिये न कि जान से मार के। वे बेचारियां तो मेरी बात मान जायंगी मगर गदाधर-

सिंह की तरफ से मैं डरता हूं, ऐसा न हो कि वह उन दोनों का सफाया कर दे।

दलीप०। (मुस्कुरा कर) मगर आप तो उसे नेक बना रहे हैं, उस पर भरोसा कर रहे हैं! अभी अभी कह चुके हैं कि वह उन दोनों के साथ बुराई कभी न करेगा।

इन्द्र०। आशा तो ऐसी ही है जो मैं कह चुका हूं, फिर भी डरता हूं क्योंकि आजकल उसका रंग ढंग और रहन सहन ठीक नहीं है।

दलीप०। आप तो अच्छा दोतर्फी बात करते हैं।

इन्द्र०। ऐसा नहीं है मेरे दोस्त, मैं खूब समझता हूँ कि वह आज कल बिगड़ा हुआ है मगर मैं उसे सुधारना चाहता हूं, मेरा खयाल है कि वह दुःख भोग कर सुधर सकता है, अगर उसकी यातना की जाय तो ताज्जुब नहीं कि वह राह पर आ जाय।

दलीप०। तो क्या बेचारी जमना और सरस्वती ही के हाथ से उसकी यातना कराइयेगा?

इन्द्र०। नहीं, वे बेचारियां भला क्या कर सकेंगी! मैं अब आपके पास इसी लिये आया हूं कि इस काम में आपसे मदद लूं।

दलीप०। वह क्या? मैं आपके लिए हर तरह से तैयार हूं।

इन्द्र०। आप जानते ही हैं कि मैं अपना स्यान किसी तरह छोड़ नहीं सकता।

दलीप०। बेशक ऐसा ही है।

इन्द्र०। इसलिए मैं चाहता था कि आप कुछ दिनों तक उन लड़कियों के साथ रह कर उनकी मदद करें मगर देखता हूं कि आप बेतरह गदाधरसिंह पर टूटे हुए हैं। मैं यह नहीं चाहता कि वह जान से मारा जाय।

दलीप०। तो क्या आप समझते हैं कि मैं आपकी इच्छा के विपरीत चलूंगा?

इन्द्र०। नहीं नहीं, ऐसा तो मुझे स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता, हां यह सोचता हूं कि मेरा कहना आपकी इच्छा के विरुद्ध कहीं न हो।

दलीप०। चाहे जो हो मगर मैं आपकी बात कभी न टालूंगा, इसके अतिरिक्त आप जानते ही हैं कि वह मेरा रिश्तेदार है, उसकी स्त्री शान्ता है तो मेरी साली मगर मैं उसे बहिन की तरह मानता और प्यार करता हूं, ऐसी अवस्था में मैं कब चाहूंगा कि गदाधरसिंह मारा जाय और उसकी स्त्री विधवा होकर मेरी आंखों के सामने आवे! मगर बात जो असल है वह जरूर कहने में आती है।

इन्द्र०। ठीक है मगर गदाधरसिंह खुद अपने पैर में कुल्हाड़ी मार रहा है। खैर जैसा करेगा वैसा पावेगा। हम लोग जहां तक हो सकेगा उसके सुधारने की कोशिश करेंगे, आगे जो ईश्वर की मर्जी।

दलीप० । खैर मुझे आप क्या काम सुपुर्द करते हैं सो कहिये ?

इन्द्र० । मैं चाहता हूं कि आप कुछ दिनों तक जमना और सरस्वती के साथ रह कर उनकी मदद कीजिये, मगर इस तरह पर नहीं कि जो कुछ वे कहती जांय आप करते जांय ।

दलीप० । तब किस तरह से ?

इन्द्र० । इस तरह से कि दोनों जिस तरह चाहें स्वयम् काम करके अपना हौसला पूरा करें और यहीं उनकी इच्छा भी है, मगर जब कभी वह धोखा खा जायं या किसी मुसीबत में फंस जायं तब आप उनकी रक्षा करें ।

दलीप० । यह तो बड़ा कठिन काम है !

इन्द्र० । बेशक कठिन है और इसे सिवाय आपके दूसरा पूरा नहीं कर सकता ।

दलीप० । (कुछ सोच कर) बहुत अच्छा, मैं तैयार हूं ।

इन्द्र० । तो बस आज ही आप मेरे साथ चलिये, मैं उन दोनों को आपके सुपुर्द कर दूं और उस घाटी के भेद भी आपको बता दूं तथा जो कुछ मैं कर आया हूं उसे भी समझा दूं ।

दलीप० । जब आपकी इच्छा हो चलिए । (फाटक की तरफ खयाल करके) देखिए गुलाबसिंह चले आ रहे हैं, इन्हें चुनार से क्योंकर छुट्टी मिली !

इन्द्र० । इनका हाल आपको मालूम नहीं है पर मैं सुन चुका हूं और इस समय आपसे कहने ही वाला था कि इन्दुमति भी आज कल जमना और सरस्वती के पास पहुंची हुई है, मगर अब कहने की कोई जरूरत नहीं, खुद गुलाबसिंह की जुबानी आप सब कुछ सुन लेंगे और शायद इसी लिए वह यहां आए भी हैं ।

दलीप० । शिवदत्त भी नया राज्य पाकर आजकल अंधा हो रहा है ।

इन्द्र० । बेशक ऐसा ही है ।

इतने ही में दरबान ने ऊपर आकर गुलाबसिंह के आने की इत्तिला की और इन्हें ले आने का हुक्म पाकर चला गया । थोड़ी ही देर में गुलाबसिंह वहां आ पहुंचे और उन्होंने बड़े अदब के साथ इन्द्रदेवको सलाम किया और दलीपशाहसे मिले ।

इशारा पाकर गुलाबसिंह एक कुर्सी पर बैठ गए और इस तरह बातचीत होने लगी :—

दलीप० । कहो भाई गुलाबसिंहजी, आज तो बहुत दिनों के बाद आपसे मुलाकात हुई है, सब कुशल तो है ?

गुलाब० । जी कुशल तो नहीं है, और इसीलिए मुझे चुनारगढ़ से भागना पड़ा ।

दलीप० । क्या महाराज शिवदत्त की नौकरी आपने छोड़ दी !

गुलाब० । हां मजबूर होकर मुझे ऐसा करना पड़ा, क्योंकि मैं प्रभाकरसिंह के साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव नहीं कर सकता था ।

दलीप० । प्रभाकरसिंह भी तो उन्हीं के यहां सेनापति का काम करते हैं ?

गुलाब० हां, मगर महाराज ने उनके साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया, उनकी इन्दुमति पर हजरत आशिक हो गये और बड़ी बड़ी चालबाजियों से अपने महल में बुलवा लिया, मगर जब वह किसी तरह राजी न हुई और जान देने पर तैयार हो गई तब लाचार उसे महल के अन्दर कैद कर रक्खा और प्रभाकरसिंह को मार डालने का बन्दोबस्त करने लगे जिसमें निश्चिन्त होकर इन्दुमति को काम में लावें, परन्तु प्रभाकरसिंह को इस बात का पता लग गया और वे महल में घुस कर बड़ी बहादुरी से इन्दुमति को छुड़ा लाये, तो भी शिवदत्त का मुकाबला नहीं कर सकते थे इसलिये अपनी स्त्री को साथ लेकर वहां से भाग खड़े हुए । इसके बाद शिवदत्त ने उनकी गिरफ्तारी के लिए मुझे मुकर्रर किया, मैंने इसी बात को गनीमत समझा और कई आदमियों को साथ लेकर उनकी खोज में निकला । आखिर उनसे मुलाकात हो गई और तब से मैं उनकी ताबेदारी में रहने लगा क्योंकि उनके बुजुर्गों ने जो कुछ भलाई मेरे साथ की है उसे मैं भूल नहीं सकता । नौगढ़ की सरहद के पास ही उनसे मुलाकात हुई थी और अकस्मात् उसी जगह भूतनाथ भी मुझसे मिल गया । मैंने भूतनाथ से मदद मांगी और वह मदद देने के लिए तैयार होकर हम लोगों को अपने डेरे पर ले गया, मगर कई मामले ऐसे हो गए कि भूतनाथ दोस्ती को इस्तीफा देकर दुश्मन बन बैठा और उसके सबब से भी हमें तकलीफ ही उठानी पड़ी ।

इतना कह कर गुलाबसिंह ने इन्द्रदेव की तरफ देखा ।

इन्द्र० । हां हां गुलाबसिंह तुम कहते जाओ रुको मत, दलीपशाह से कोई बात छिपी हुई नहीं है ।

गुलाब० । (हाथ जोड़ कर) जी नहीं, अब जो कुछ कहना बाकी है आप ही इन्हें समझा दें, मैं डरता हूं कि कदाचित् मेरी जुबान से ऐसी कोई बात निकल पड़े जिसे आप नापसन्द करते हों तो....

इन्द्र०। (मुस्कुरा कर) अजी नहीं गुलाबसिंह मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं, तुम बड़े ही नेक और सज्जन आदमी हो, जमना और सरस्वती ने जो कुछ भेद की बातें प्रभाकरसिंह से कही हैं सो मुझे मालूम है और प्रभाकरसिंह ने जो कुछ तुम्हें बताया है उसे भी मैं कदाचित् जानता हूं, अस्तु तुम जो कहना चाहते हो बेधड़क कह जाओ ।

गुलाब०। जो आज्ञा, अच्छा तो मैं संक्षेप ही में कह डालता हूं, (दलीपशाह से) भूतनाथ जिस घाटी में रहता है उसके पास ही जमुना और सरस्वती भी रहती हैं। वह किसी तरह प्रभाकरसिंह को अपने यहां ले गईं मगर इसके बाद ही इन्दुमति पुनः दुश्मनों के हाथ में फंस गई, उसे भी दोनों बहिनें छुड़ा कर अपने यहां ले गईं। तब से इन्दुमति उन्हीं के यहां रहती है। प्रभाकरसिंह उस खोह से बाहर आए और कई दिनों के बाद हम दोनों आदमी चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए इसलिए कि कुछ सिपाहियों का बन्दोबस्त करके दुश्मन से बदला लें मगर भूतनाथ जिसे जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार करके नीचा दिखाया था हम लोगों का दुश्मन बन बैठा और धोखा देकर प्रभाकरसिंह को कैद कर अपने घर ले गया, कहां रक्खा मुझे मालूम नहीं।

इसके बाद गुलाबसिंह ने वह किस्सा खुलासे तौर पर दलीपशाह और इन्द्रदेव से बयान किया। इन्द्रदेव को प्रभाकरसिंह को गिरफ्तारी का हाल अभी तक मालूम नहीं हुआ था अस्तु उन्हें यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने दलीपशाह से कहा, "मेरे दोस्त, मुझे प्रभाकरसिंह के हाल पर अफसोस होता है। भूतनाथ ने भी यह काम अच्छा नहीं किया। खैर कोई चिन्ता नहीं, प्रभाकरसिंह को उसके कब्जे से निकाल लेना कोई बड़ी बात नहीं है। अब तुम सफर की तैयारी करो और जमना तथा सरस्वती के साथ ही साथ प्रभाकरसिंह की मदद करो, मैं खुद तुम्हारे साथ चल कर प्रभाकरसिंह को कैद से छुट्टी दिलाऊंगा।"

इतना कह कर इन्द्रदेव दलीपशाह को कमरे के अन्दर ले गये और आधे घण्टे तक एकान्त में न मालूम क्या समझाते रहे, इसके बाद बाहर आए और बहुत देर तक गुलाबसिंह से बातचीत करते रहे।

आठवां बयान

भूतनाथ को जब अपनी घाटी में घुसने का रास्ता नहीं मिला था तो वह प्रभाकरसिंह को एक दूसरे ही स्थान में ले जाकर रख आया था और अपने दो आदमी उनकी हिफाजत के लिए छोड़ दिये थे। अब जब भूतनाथ महात्मा की कृपा से अपनी सुहावनी घाटी में पहुंच गया, सुरंग का रास्ता उसके लिये साफ हो गया, दर्वाजा खोलने और बन्द करने की तर्कीब मिल गई बल्कि उसके साथ ही साथ बेअन्दाज दौलत का भी मालिक बन बैठा, तो उसका हौसला बनिस्बत पहिले के सौगुना बढ़ गया और उसने चाहा कि प्रभाकरसिंह को भी लाकर उसी घाटी में

रख छोड़े अस्तु महात्माजी को बिदा करने के बाद दूसरे दिन वहाँ से रवाना हुआ और संध्या होते होते तक प्रभाकरसिंह को इस घाटी में ले आया। प्रभाकरसिंह बेहोशी के नशे में बेहोश थे और उनके हाथ में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थी।

भूतनाथ ने उन्हें एक बहुत बड़ी साफ और सुन्दर चट्टान पर रख दिया, पैर की बेड़ी खोल दी, और लखलखा सुंघा कर उनकी बेहोशी दूर की। जब प्रभाकरसिंह उठ कर बैठ गये तो इस तरह बातचीत होने लगी :—

प्रभा०। (चारो तरफ देख कर) क्या अभी तक मेरी गिनती कैदियों ही में है ? मैं पुनः बेहोश करके इस घाटी में क्यों लाया गया और तुम क्यों नहीं बताते कि इस तरह दुःख देने से तुम्हारा मतलब क्या है ?

भूत०। प्रभाकरसिंह, तुम खूब जानते हो कि ऐयारों को जरा जरा से काम के लिये बड़े बड़े नाजुक और अमीर आदमियों को तकलीफ देनी पड़ती है। मैं सच कहता हूं कि तुमसे मुझे किसी तरह की दुश्मनी नहीं थी, बल्कि मैं हर तरह से तुम्हारी मदद के लिये तैयार हो गया था, अगर तुम धोखा देकर अपना ढंग न बदलते तो देखते कि मैं किस खूबी और खूबसूरती के साथ तुम्हारे दुश्मनों से तुम्हारा बदला लेता और तुम्हें हर तरह से बेफिक्र कर देता, मगर अफसोस तुमने मेरे दुश्मनों से मिल कर मुझे धोखा दिया और गुलाबसिंह को भी जो मेरा दोस्त था बहका दिया।

प्रभा०। मैंने तुम्हारे किस दुश्मन से मिल कर तुम्हारा क्या नुकसान किया सो साफ साफ क्यों नहीं कहते ?

भूत०। क्या तुम नहीं जानते जो साफ साफ कहने की जरूरत है ? जमना और सरस्वती ने मुझे तकलीफ देने के लिए ही अवतार लिया है और तुम उनके पक्षपाती बन गये हो। वे तो भला औरत की जात हैं नासमझ कहलाती हैं, पर तुम्हीं ने उनका भ्रम क्यों नहीं दूर कर दिया कि भूतनाथ ने दयाराम को कदापि न मारा होगा क्योंकि वह उनके साथ मुहब्बत रखता था और उनका दोस्त था।

प्रभा०। (हंस कर) तुमको भी तो वे गिरफ्तार करके उस घाटी में ले गई थीं, फिर तुम्हीं ने क्यों नहीं उसका भ्रम दूर कर दिया ? तुम ऐयार कहलाते हो, हर तरह से बात बनाना जानते हो।

भूत०। मुझे तो कसूरवार ही समझती हैं, फिर भला मेरी बात क्यों मानने लगीं ?

प्रभा०। इसी तरह मैं भी तो उनका रिश्तेदार ठहरा, मैं उनकी इच्छा के विरुद्ध क्यों करने लगा ? तुम जानो और वे जानें मुझे इन झगड़ों से मतलब ही क्या ? बेचारी औरत की जात अबला कहलाती हैं और तुम इतने बड़े नामी ऐयार

हो, फिर भी जरा से मामले के लिये मुझसे मदद मांगते हो और चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये अपने एक ऐसे रिश्तेदार के साथ बेमुरौवती करूं जो दया करने के योग्य है ! तुम्हें शर्म नहीं आती ! हां अगर मैं खुद तुम्हारे साथ किसी तरह की बुराई करूं तो जरूर मुझसे बदला लेना उचित था ।

भूत० । (मुस्कुरा कर) सत्य वचन ! मालूम हुआ कि आप बड़े सच बोलने वाले हैं और सिवाय सच के कभी झूठ नहीं बोलते । अच्छा खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, मैं तुमसे बहस करना पसन्द नहीं करता । मैं जो कुछ पूछता हूं उसका साफ साफ जवाब दो नहीं तो तुम्हारे लिये अच्छा न होगा ।

प्रभा० । अब इस धमकी में तुम्हारी बातों का जवाब नहीं दे सकता, मुलायमियत से अगर पूछते तो शायद कुछ जवाब दे भी देता क्योंकि न तो तुम्हारे किसी अहसान का बोझ मेरी गर्दन पर है और न मैं तुमसे डरता ही हूं ।

भूत० । ऐसी अवस्था में भी तुम मुझसे नहीं डरते ? देख रहे हो कि तुम्हारे हर्बे छीन लिये गये, हथकड़ी तुम्हारे हाथों में पड़ी हुई है, और इस समय तुम हर तरह से मजबूर और कमजोर हो !

"यह हथकड़ी तो कोई चीज नहीं है, मेरे ऐसे क्षत्री के लिये तुमने इसे पसन्द किया यह तुम्हारी भूल है !" इतना कह कर बहादुर प्रभाकरसिंह ने एक झटका ऐसा दिया कि हथकड़ी टूट कर उनके हाथों से अलग हो गई और साथ ही इसके वे अपनी कमर से तलवार खींच कर भूतनाथ के सामने खड़े हो गये और बोले, "बताओ क्या अब भी मैं तुम्हारा कैदी हूं ?"

प्रभाकरसिंह की कमर में एक ऐसी तलवार थी जो बदन के साथ पेटी की तरह लपेट कर बांधी जा सकती थी, चमड़े की मुलायम म्यान उसके ऊपर चढ़ी हुई थी और उसे प्रभाकरसिंह कपड़े के अन्दर कमर में लपेट कर धोती और कमरबन्द से छिपाये हुए थे, अभी तक उस पर भूतनाथ की निगाह नहीं गई थी, बल्कि उसे इस बात का कुछ गुमान भी न था । यह तिलिस्मी तलवार बिमला ने प्रभाकरसिंह को दी थी और बिमला ने इन्द्रदेव से पाई थी । इन्द्रदेव का बयान है कि उन्हें इसी तरह के कई हर्बे कुंअर गोपालसिंह ने अपने जमानिया के तिलिस्म में से निकाल कर दिये थे ।

इस तलवार में भी करीब करीब वही गुण था जो उस तिलिस्मी खंजर और नेजे में था, जिसका हाल हम चन्द्रकान्ता सन्तति में लिख आये हैं, फर्क बस इतना था कि जिस तरह उन खंजरों में कब्जा दबाने से चमक पैदा होती थी। उस

तरह इसमें चमक नहीं पैदा होती थी और न इसके छूने से आदमी बेहोश हो होता था, मगर इसका जख्म लगने से बिजली के असर से आदमी बेहोश हो जाता था। उसकी तरह इसके जोड़ की भी एक खूबसूरत अंगूठी जरूरी थी जो इस समय प्रभाकरसिंह की तर्जनी उंगली में पड़ी हुई थी। इस अंगूठी में यह भी गुण था कि अगर धोखे में उन्हीं को इसका जख्म लग जाय तो उन्हें कुछ असर न हो।

प्रभाकरसिंह की हिम्मत मरदानगी और ताकत देख कर भूतनाथ हैरान हो गया बल्कि यों कह सकते हैं कि घबड़ा गया। यद्यपि भूतनाथ भी मर्द मैदान और लड़ाका था तथा यहां पास ही में उसके कई मददगार भी थे जो उसके आवाज देने के साथ ही पहुंच सकते थे मगर फिर भी थोड़ी देर के लिये उसके ऊपर प्रभाकरसिंह का रोब छा गया और वह खड़ा होकर उनका मुंह देखने लगा।

प्रभा०। हां बताओ तो क्या मैं अब भी कैदी हूं।

भूत०। (बनावटी मुस्कुराहट के साथ) हां बेशक तुम ताकतवर और बहादुर हो, मगर समझ रक्खो कि ऐयारों का मुकाबला करना तुम्हारा काम नहीं है।

प्रभा०। हां बेशक इस बात का मैं मानता हूं, मगर खैर जैसा मौका होगा देखा जायगा। इस समय तुम्हारा क्या इरादा है सो साफ साफ कह डालो, अगर लड़ना चाहते हो तो मैं लड़ने के लिये तैयार हूं।

भूत०। मुझे न तो तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी ही है और न मैं व्यर्थ लड़ना ही चाहता हूं, हां इतना जरूर चाहता हूं कि जमना और सरस्वती का सच्चा सच्चा हाल मुझे मालूम हो जाय। न मालूम किस नालायक ने उन्हें समझा दिया है कि मैं अपने दोस्त दयारामजी का घातक हूं तथा इस बात पर उन्होंने विश्वास करके मेरे साथ दुश्मनी करने पर कमर बांध ली है, और...

प्रभा०। (बात काट कर) ओफ, इन पचड़ों को मैं सुनना पसन्द नहीं करता, इस बारे में मैं पहिले ही कह चुका हूं कि तुम जानो और वे जानें, मैं तुम्हारा तावेदार नहीं हूं कि तुम्हारे लिये उनको समझाने जाऊं।

भूत०। (क्रोध के साथ) तुम अजब ढंग पर बातें कर रहे हो! तुम्हारा मिजाज तो आसमान पर चढ़ा हुआ है!!

प्रभा०। बेशक ऐसा ही है, तुम धोखा देकर मुझे गिरफ्तार कर लाए हो इसलिये मैं तुमसे बात करना भी पसन्द नहीं करता।

भूत०। फिर ऐसा करने से तो नहीं चलता, तुम्हें झक मार कर मेरी बातों का जवाब देना पड़ेगा।

यह कह कर भूतनाथ ने भी म्यान से तलवार निकाली और पैतरा बदल कर सामने खड़ा हो गया।

प्रभा०। तुम्हारी तलवार बिल्कुल बेकार है, कुछ भी काम नहीं देगी, चलाओ और देखो क्या होता है।

भूत०। हां हां देखो यह तलवार कैसा मजा करती है, मैं तुम्हें जान से न मारूंगा बल्कि बेजार करके छोड़ दूंगा।

इतना कह के भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह पर वार किया जिसे उन्होंने बड़ी चालाकी के साथ अपना तलवार पर रोका।

प्रभाकरसिंह की तलवार पर पड़ने के साथ ही भूतनाथ की तलवार कट कर दो टुकड़े हो गई क्योंकि वह हर एक हर्बे को काट सकती थी। भूतनाथ ने टूटी हुई तलवार फेंक दी और कमर से खञ्जर निकाल कर वार किया चाहता था कि प्रभाकरसिंह ने अपनी तलवार से उसे भी काट कर दो टुकड़े कर दिया। भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि यह अनूठी तलवार किस लोहे की बनी हुई है जो दूसरे हर्बों को इतने सहज ही में काट डाला करती है।

थोड़ी ही दूर पर भूतनाथ के कई आदमी खड़े यह तमाशा देख रहे थे मगर मालिक का इशारा पाये बिना पास नहीं आ सकते थे। इस समय भूतनाथ ने इशारा किया और वे लोग जो गिनती में आठ थे वहां आ मौजूद हुए। यह कैफियत देख कर प्रभाकरसिंह ने कहा, "भूतनाथ मैं केवल तुम्हीं से नहीं बल्कि एक साथ इन सभों से लड़ने के लिए तैयार हूं।"

यह बात भूतनाथ को बहुत बुरी मालूम हुई और अपने एक साथी के हाथ से तलवार लेकर उसने पुनः प्रभाकरसिंह पर वार किया और साथ साथ अपने साथियों को भी मदद करने के लिए इशारा किया।

प्रभाकरसिंह बड़ा ही बहादुर आदमी था और लड़ाई के फन में तो वह लासानी था। अगर वह चाहता तो सहज ही में अपनी तिलिस्मी तलवार से जख्मी करके सभों को बेहोश कर देता, मगर नहीं, उसने कुछ देर तक लड़ कर सभों को दिखला दिया कि हमारे सामने तुम लोग कुछ भी नहीं हो! यद्यपि उसके बदन पर भी कई जख्म लगे, मगर उसने सभों के हर्बे बेकार कर दिये और अन्त में भूतनाथ तथा उसके सभी साथी जख्मी होकर तलवार वाली बिजली के असर से बेहोश हो जमीन पर गिर पड़े। प्रभाकरसिंह धीरे धीरे मस्तानी चाल से चलते हुए वहां से रवाना हुए, मगर जब सुरंग में आये और दर्वाजा बन्द पाया तब मजबूर होकर उन्हें रुक जाना पड़ा।

प्रभाकरसिंह पुनः लौट कर वहां आये जहां भूतनाथ और उसके साथी लोग बेहोश पड़े हुए थे। तिलिस्मी तलवार के जोड़ की अंगूठी उन्होंने भूतनाथ के बदन से लगाई, उसी समय भूतनाथ की बेहोशी जाती रही, वह उठ कर खड़ा हो गया और ताज्जुब के साथ प्रभाकरसिंह का मुंह देखने लगा।

भूत०। मैं समझ गया कि तुम बहादुर आदमी हो और तुम्हारे हाथ की यह तलवार बड़ी ही अनूठी है जिसके सबब से तुम और भी जबर्दस्त हो रहे हो। (मुस्कुरा कर) सच कहना यह तलवार तुमने कहां से पाई! पहिले तो यह तुम्हारे पास न थी, अगर होती तो उस बेइज्जती के साथ तुम चुनारगढ़ से न भागते?

प्रभा०। ठीक है मगर इससे तुम्हें क्या मतलब, चाहे कहीं से यह तलवार मुझे मिली हो।

भूत०। (मुलायमियत के साथ) नहीं नहीं प्रभाकरसिंह बुरा मत मानो, मेरी बातों का जवाब देने से तुम कुछ छोटे नहीं हो जाओगे। बताओ तो सही क्या यह तलवार जहर में बुझाई हुई है? क्योंकि इसका जख्म लगने के साथ ही नशा चढ़ आता है।

प्रभा०। कदाचित ऐसा ही हो, मैं ठीक नहीं कह सकता।

भूत०। देखो मेरे साथी लोग अभी तक बेहोश पड़े हुए हैं।

प्रभा०। अभी बड़ी देर तक ये बेहोश पड़े रहेंगे मगर मरेंगे नहीं। तुम्हारी बेहोशी तो मैंने खुद दूर कर दी है, खैर यह बताओ कि अब तुम मेरे साथ क्या किया चाहते हो?

भूत०। कुछ भी नहीं, मैं जो कुछ कर चुका हूं उसके लिए आपसे माफी मांगता हूं और चाहता हूं कि आइन्दे के लिए हमारे और आपके बीच सुलह हो जाय।

प्रभा०। जैसा तुम बर्ताव करोगे मैं वैसा ही जवाब दूंगा, मुझे खास तौर पर तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है।

भूत०। अच्छा तो चलिये मैं आपको इस घाटी के बाहर कर आऊं क्योंकि बिना मेरी मदद के आप यहां से बाहर नहीं जा सकते।

प्रभा०। चलो।

भूत०। मगर मैं देखता हूं कि आप बहुत जख्मी हो रहे हैं और खून से आपका कपड़ा तरबतर हो रहा है, मुझे आज्ञा दीजिए तो मैं आपके जख्मों को धो कर उन पर गीले कपड़े की पट्टी बांध दूं।

प्रभा०। नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं है, घाटी के बाहर निकल कर मैं

इसका उपाय कर लूंगा।

भूत०। आखिर क्यों ऐसा किया जाय, जितनी देर होगी उतना ज्यादे खून निकल जायगा, आप इसके लिए जिद्द न करें। आप मुझ पर भरोसा करें और आज्ञा दें कि इन जख्मों पर पट्टी बांध दूं।

प्रभा०। खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, मैं तैयार हूं।

भूतनाथ तेजी के साथ उस गुफा में चला गया जिसमें उसका डेरा था और पीतल की गगरी पानी से भरी हुई और एक लोटा तथा कुछ कपड़ा पट्टी बांधने के लिए लेकर प्रभाकरसिंह के पास लौट आया।

प्रभाकरसिंह ने कपड़े उतारे और भूतनाथ ने जख्मों को धो कर उन पर पट्टियां बांधीं। इसके वाद प्रभाकरसिंह कपड़ा पहिन कर चलने के लिए तैयार हो गए। भूतनाथ ने अपने आदमियों के विषय में प्रभाकरसिंह से पूछा कि इन सभों की बेहोशी खुदबखुद जाती रहेगी या इसके लिए कोई इलाज करना होगा ?

पहिले तो प्रभाकरसिंह के जी में आया कि अपने हाथ को अंगूठी छुला कर उन सभों की बेहोशी दूर कर दें मगर फिर कुछ सोच कर रुक गए और बोले, "नहीं इनकी बेहोशी आप से आप थोड़ी देर में जाती रहेगी, कुछ उद्योग करने की जरूरत नहीं।"

आगे आगे भूतनाथ और पीछे पीछे प्रभाकरसिंह वहां से रवाना हुए। सुरंग में घुस कर भूतनाथ ने वह दर्वाजा खोला जो बन्द था मगर प्रभाकरसिंह को यह नहीं मालूम हुआ कि वह दर्वाजा किस ढंग से खोला गया।

घाटी के बाहर निकल जाने पर भी भूतनाथ बहुत दूर तक पहुंचाने के लिए प्रभाकरसिंह के साथ मीठी मीठी बातें करता हुआ चला गया। लगभग आध कोस के दोनों आदमी चले गये होंगे जब प्रभाकरसिंह का सर घूमने लगा और धीरे धीरे बेहोश होकर वे जमीन पर गिर पड़े।

भूतनाथ बड़ा ही चालाक और काइयां था और उसने प्रभाकरसिंह को बुरा धोखा दिया। हमदर्दी दिखा कर जख्म धोने के बहाने से वह बेहोशी की दवा का बर्ताव कर गया। जो पानी वह अपनी गुफा में से लेकर आया था उसमें जहरीली दवा मिली हुई थी मगर वह दवा ऐसी न थी जिससे जान जाती रहे वल्कि ऐसी थी कि खून के साथ मिल कर बेहोशी का असर पैदा करे।

जब प्रभाकरसिंह बेहोश हो गये तब भूतनाथ ने पहिले तो अंगूठी और तलवार पर कब्जा किया और बहुत ही खुश हुआ, इसके बाद प्रभाकरसिंह को गठरी में बांध

पीठ पर लाद अपनी घाटी की तरफ रवाना हुआ। बेचारे प्रभाकरसिंह पुनः भूतनाथ के फन्दे में फंस गए, देखा चाहिए अब भूतनाथ उनके साथ क्या सलूक करता है।

नौवां बयान

अबकी दफे भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह को बड़ी सख्ती के साथ कैद किया, पैरों में बेड़ी और हाथों में दोहरी हथकड़ी डाल दी और उसी गुफा के अन्दर रख दिया जिसमे स्वयम् रहता था और उसके (गुफा) के बाहर आप चारपाई डाल कर रात को पहरा देने लगा।

भूतनाथ ने बहुत कुछ दम दिलासा देकर प्रभाकरसिंह से जमना और सरस्वती का हाल पूछा मगर उन्होंने उनका कुछ भी भेद न बताया, इस पर भी भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह को किसी तरह का दुःख नहीं दिया, हां इस बात का जरूर खयाल रक्खा कि वे किसी तरह भाग न जायं।

इसी तरह प्रभाकरसिंह की हिफाजत करते करते बहुत दिन गुजर गये मगर भूतनाथ की इच्छानुसार कोई कारंवाई नहीं हुई। भूतनाथ ने जमना और सरस्वती के विषय में भी पता लगाने के लिये बहुत उद्योग किया मगर कुछ नतीजा न निकला।

भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों को तरह तरह का काम सुपुर्द करके चारो तरफ दौड़ाया और कइयों को उस सुरंग के इर्द गिर्द घूम कर टोह लगाने के लिये मुकर्रर किया जिसकी राह से कला ने उसे खोह के बाहर किया था।

भूतनाथ को अपने शागिर्द भोलासिंह की बड़ी फिक्र थी क्योंकि वह मुद्दत से गायब था और हजार कोशिश करने पर भी उसका कुछ पता नहीं लगता था। वह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासी शागिर्द था और भूतनाथ उसे दिल से मानता था।

एक दिन दोपहर के समय भूतनाथ अपनी घाटी से बाहर निकला और सुरंग के मुहाने पर बाहर की तरफ पेड़ों की ठण्डी छाया में टहलने लगा। सम्भव है कि वह अपने किसी शागिर्द का इन्तजार कर रहा हो। उसी समय दूर से आते हुए भोलासिंह पर उसकी निगाह पड़ी। वह बड़ी खुशी के साथ भोलासिंह की तरफ बढ़ा और भोलासिंह भी भूतनाथ को देख कर दौड़ता हुआ आया और उसके पैरों पर गिर पड़ा। भूतनाथ ने भोलासिंह को गले से लगा लिया और पूछा, "इतने दिन तक तुम कहां थे? मुझे तुम्हारे लिए बड़ी ही फिक्र थी और दिन रात खटके में जी लगा रहता था!"

भोला०। गुरुजी, मैं तो बड़ी आफत में फंस गया था, ईश्वर ही ने मुझे

बचाया नहीं तो मैं बिल्कुल ही निराश हो चुका था।

भूत०। क्या तुम्हें किसी दुश्मन ने गिरफ्तार कर लिया था ?

भोला०। जी हां।

भूत०। किसने ?

भोला०। दो औरतों ने, जिन्हें मैं बिल्कुल ही नहीं पहिचानता।

भूत०। मालूम होता है कि तुम्हें भी जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार कर लिया था ?

भोला०। जमना और सरस्वती कौन ?

भूत०। हमारे प्यारे दोस्त और मालिक दयाराम की स्त्रियां जिनका जिक्र मैं कई दफे तुमसे कर चुका हूं।

भोला०। हां हां, अब मुझे याद आया, मगर आपने तो कहा था कि वे मर गईं ?

भूत०। हां मुझ ऐसा ही विश्वास था, मुझे क्या तमाम दुनिया यही जानती है कि दोनों मर गईं मगर अब मुझे मालूम हुआ कि वे दोनों जीती हैं और (हाथ का इशारा करके) इसी पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं तथा उन्होंने अपने को कला और बिमला के नाम से मशहूर किया है, इसलिए कि मुझे सता कर अपना कलेजा ठंढा करें क्योंकि किसी ने दोनों को विश्वास दिलाया है कि दयाराम को भूतनाथ ही ने मार डाला है।

भोला०। शिव शिव शिव, भला यह भी कोई बात है! अच्छा तो ये सब बातें आपको किस तरह मालूम हुईं ?

भूत०। मैं एक दफे उनके फन्दे में पड़ गया था, वे मुझे गिरफ्तार करके अपनी घाटी में ले गईं और कैद कर दिया।

भोला०। फिर आप छूटे किस तरह से ?

भूत०। वहां मैंने एक लौंडी को धोखा देकर अपना बटुआ जो छिन गया था मंगवा लिया। फिर कैदखाने से बाहर निकल जाना मेरे लिये कोई कठिन काम न था। इसके बाद मैंने उसी अंधेरी रात में पुनः एक लौंडी को गिरफ्तार किया और लालच दे कुछ पता लगाना चाहा मगर वह लालच में न पड़ी। तब मैंने अपने चाबुक से काम लिया, मुख्तसर यह कि वह मार खाते खाते मर गई पर इससे ज्यादे और कुछ भी न बताया कि हां जमना और सरस्वती यहां रहती हैं और उन्होंने अपना नाम कला और बिमला रक्खा है। इसके बाद एक ऐसा मौका हाथ

आया कि मैंने कला को पकड़ लिया। उस समय मुझे विश्वास हो गया कि जमना या सरस्वती में से किसी एक को पकड़ लिया, मगर दिन के समय जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मालूम हुआ कि जमना सरस्वती दोनों मे से कोई नहीं है क्योंकि नाम बदल दिया तो क्या हुआ मैं उन दोनों को अच्छी तरह पहिचानता हूं। पहिले तो शक हुआ कि शायद ऐयारी ढंग पर इसने सूरत बदल ली है, मगर नहीं पानी से मुंह धुलवाने पर वह शक भी जाता रहा।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपना खुलासा हाल उस घाटी में गिरफ्तार हो कर जाने और फिर बाहर निकलने का तथा प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार करने का बयान किया और कहा, "मालूम होता है कि उन्हीं में से किसी ने तुम्हें गिरफ्तार कर लिया था, खैर खुलासा हाल कहो तो कुछ मालूम हो।"

भोला०। जी हां बेशक उन्हीं दोनों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था, जब तक मैं उनके यहां कैद रहा तब तक रोज उन दोनों से मुलाकात होती रही, क्योंकि वह रोज ही मुझे समझाने बुझाने के लिए आया करती थीं। मैंने वहां एक नया ही ढंग रचा, जिस पर कई दिनों तक तो उन्हें विश्वास ही न हुआ मगर अन्त में उन्होंने मान लिया कि जो कुछ मैं कहता हूं वह सब सच है। मैंने उन्हें यह समझाया कि मैं भूतनाथ का नौकर या शागिर्द नहीं हूँ बल्कि राजा सुरेन्द्रसिंह का ऐयार हूं, जिनसे चुनार के राजा शिवदत्त से आज कल लड़ाई हुआ ही चाहती है। महाराज सुरेन्द्रसिंह ने सुना है कि गदाधरसिंह राजा शिवदत्त की मदद पर है इसलिए उन्होंने मुझे तथा अपने कई ऐयारों को गदाधरसिंह को गिरफ्तार के लिये भेजा है!

भूत०। (मुस्कुरा कर) खूब समझाया, अच्छी सूझी।

भोला०। जी हां, आखिर उन्हें मेरी बातों पर विश्वास हो गया और कई तरह के वादे करा के उन्होंने मुझे छोड़ दिया।

भूत०। किस राह से तुम्हें बाहर निकाला ?

भोला०। सो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि उस समय मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी गई थी, जब पट्टी खोली गई तो मैंने देखा कि वहां बहुत से सुन्दर और सुहाने बेल तथा पारिजात के पेड़ लगे हुए हैं और दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर साफ पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बह रहा है.....

भूत०। (बात काट के) ठीक है, ठीक है, मैं समझ गया, मैं भी उसी सुरंग से बाहर निकाला गया था। परन्तु मैं समझता हूं कि उसके अतिरिक्त और भी कोई रास्ता उस घाटी में जाने के लिए जरूर है, क्योंकि जब मैं गिरफ्तार हुआ

था तो किसी दूसरे ही मुहाने पर था। उस समय मुझे छुरी का एक जख्म लगा था जो अभी तक तकलीफ दे रहा है।

भोला०। सम्भव है, हो सकता है, इसमें आश्चर्य ही क्या है!

इसके बाद दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर देर तक बातें करते रहे। भूतनाथ पर जो कुछ बीती थी उसने ब्योरेवार बयान किया और भोलासिंह ने जो कुछ कहा उसे बड़े गौर से सुना।

भोलासिंह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था इसलिये साधू महाशय की कृपा का हाल भूतनाथ ने यद्यपि अपने किसी शागिर्द या आदमी से बयान नहीं किया था मगर भोलासिंह से साफ और पूरा पूरा बयान कर दिया, चाहे अभी यह नहीं बताया कि उस खजाने का दर्वाजा किस तरह खुलता और बन्द होता है। हां अन्त में इतना जरूर कह दिया कि मैं तुम्हें उस खजाने वाले घर में ले चलूंगा और दिखाऊंगा कि वहां कितनी बेशुमार दौलत है।

संध्या होते ही भोलासिंह को लेकर भूतनाथ अपनी अनूठी घाटी में चला गया। रास्ते में उस दर्वाजे का हाल और भेद भी भोलासिंह को बताता गया जिसे बिमला ने बन्द कर दिया था और जिसे साधू महाशय की कृपा से भूतनाथ ने खोला था।

भोलासिंह जब उस घाटी के अन्दर पहुंच गया तो भूतनाथ ने सबसे पहिले प्रभाकरसिंह से उसकी मुलाकात कराई। भोलासिंह को देख कर और यह सुन कर कि इसका नाम भोलासिंह है प्रभाकरसिंह चौंके और गौर से उसकी तरफ देख कर चुप हो रहे।

इसके बाद भोलासिंह को साथ लेकर भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ जिसमें खजाना था, वह खजाना जो साधू महाशय की कृपा से मिला था। रोशनी न करके अंधेरे ही में भोलासिंह को सुरंग के अन्दर अपने पीछे पीछे आने के लिए भूतनाथ ने कहा और भोलासिंह भी बेखौफ कदम बढ़ाये चला गया, मगर अन्त में जब भूतनाथ खजाने के दर्वाजे पर पहुंचा और वह दर्वाजा खोल चुका तब उसने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और भोलासिंह को कोठरी के अन्दर आने के लिए कहा।

भूत०। देखो भोलासिंह, इस तरफ निगाह दौड़ाओ। ये सब चांदी के देग अशर्फियों से नकानक भरे हैं, इनमें से सिर्फ एक देग मैंने खाली किया है।

भोला०। (देगों या हण्डों की तरफ देख के) बेशक यह बहुत दिनों तक काम देगी।

भूत०। बेशक, साथ ही इसके यह भी सुन रक्खो कि वह साधू महाराज पुनः

यहां आवेंगे तो ऐसे और भी कई खजाने मुझे देंगे।

भोला०। ईश्वर की कृपा है आपके ऊपर! हां यदि आप आज्ञा दीजिये तो मैं भी जरा इन अशर्फियों के दर्शन कर लूं।

भूत०। हां हां, अपने हाथों ही से ढकना खोलते जाओ और देखते जाओ, बल्कि मैं यह भी हुक्म देता हूं कि इस समय जितनी अशर्फियां तुमसे उठाते बने उठा लो और अपने घर ले जाकर बाल बच्चों को दे आओ। तुम खूब जानते हो कि मैं तुम्हें अपने लड़के की तरह मानता हूं।

भोला०। निःसन्देह ऐसा ही है मगर मैं इस समय अशर्फियां लेकर क्या करूंगा, आपकी बदौलत मुझे किसी बात की कमी तो है नहीं।

भूत०। नहीं नहीं नहीं, तुम्हें जरूर लेना पड़ेगा।

भोला०। (कई देगों के ढकने उठा कर देखने के बाद) मगर इनमें से तो कई हण्डे खाली हैं, आप कहते हैं कि सिर्फ एक ही हण्डे की अशर्फियां निकाली गई हैं।

भूत०। (ताज्जुब से) क्या कई हण्डे खाली पड़े हैं!

इतना कह कर भूतनाथ ने एक एक करके उन हण्डों को देखना शुरू किया मगर यह मालूम करके उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उसका आधा खजाना एक दम से खाली हो गया है अर्थात आधे हण्डों में अशर्फियों की जगह एक कौड़ी भी नहीं है।

भूत०। हैं, यह क्या हुआ! मैं खूब जानता हूं कि इन सब हण्डों में अशर्फियां भरी हुई थीं, मैंने अपने हाथ से इन सभों का ढकना उठाया था और अपनी आंखों से देखा था........

भोला०। (बात काट कर) बेशक बेशक आपने देखा होगा मगर बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी हिफाजत के साथ रहने पर भी अशर्फियां गायब हो गईं! मैं कह तो नहीं सकता मगर हमारे साथियों में से किसी न किसी की नीयत.....

भूत०। जरूर खराब हो गई, मैंने अपनी जुबान से इस खजाने का हाल अपने किसी साथी से भी नहीं कहा तिस पर यह हाल!

भोला०। सम्भव है कि आपके पीछे पीछे आकर किसी ने देख लिया हो और यह भेद मालूम कर लिया हो।

भूत०। अगर ऐसा नहीं हुआ तो हुआ क्या? इसका पता लगाना चाहिये और जानना चाहिये कि हमारे साथियों में किस किस का दिल बेईमान हो गया है, क्योंकि इसमें तो कोई शक नहीं कि हमारे साथियों ही में से किसी ने यह चोरी की है

भोला०। मेरा खयाल तो यह है कि कई आदमियों ने मिल कर चोरी की है।

भूत०। हो सकता है, भला तुम ही कहो कि अब मैं कब अपने साथियों का विश्वास कर सकता हूं।

भोला०। कभी नहीं, मेरा विश्वास अब इन सभों के ऊपर से उठ गया। हाय हाय, इतना बड़ा खजाना और ऐसी नमकहरामी !

भूत०। देखो तो सही मैं कैसा इन लोगों को छकाता हूं।

भोला०। आप जल्दी न कीजिये, एक दो रोज और देख लीजिए।

भूत०। कहीं ऐसा न हो कि एक दो दिन ठहरने से यह भी जो बचा है जाता रहे।

इतना कह कर भूतनाथ कोठड़ी के बाहर निकल आया और दर्वाजा बन्द कर पेचोताब खाता हुआ सुरंग के बाहर हो उस तरफ रवाना हुआ जिधर उसका डेरा था।

भूतनाथ को इन अशर्फियों के गायब होने का बड़ा ही दुःख हुआ। रात के समय उसने किसी को कुछ कहना मुनासिब न समझा और चुप हो रहा, मगर रात भर उसे अच्छी तरह नींद न आई और क्रोध के मारे उसने कुछ भोजन भी नहीं किया। भोलासिंह कुछ देर के बाद उसके पास से हट गया और किसी दूसरी ही गुफा के बाहर बैठ कर उसने रात बिताई। जब घण्टे भर रात बाकी रही तब वह घबड़ाया हुआ भूतनाथ के पास आया और देखा कि वह गहरी नींद में सो रहा है। भोलासिंह ने हाथ से हिला कर भूतनाथ को सचेत किया, वह घबड़ा कर उठ बैठा और बोला, "क्यों क्या है !"

भोला०। मालूम होता है कि आज फिर आपकी चोरी हुई !

भूत०। सो कैसे ?

भोला०। मैंने कई आदमियों को उस खजाने वाले सुरंग के अन्दर जाते और वहां से लदे हुए बाहर निकलते देखा है।

भूत०। फिर वे लोग कहाँ गये ?

भोला०। मालूम होता है कि सब घाटी के बाहर निकल गये, मैं उन लोगों को नीचे उतर कर उस सुरंग में जो बाहर निकलने का रास्ता है जाते देख लपका हुआ आपके पास चला आया हूं, अब आप शीघ्र उठिए और उन लोगोंका पीछा कीजिये।

भूतनाथ घबड़ा कर उठा बैठा और बोला, "जरा देख तो लो कि यहाँ से कौन गायब है ?"

भोला०। इस देखा देखीमें तो बहुत देर हो जायगी और वे लोग दूर निकल जांयगे।

भूत०। अच्छा चलो पहिले बाहर ही चलें।

दोनों आदमी तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे उतर आये और सुरंग में घुस कर उस घाटी के बाहर निकले। यहां बिल्कुल ही सन्नाटा था। थोड़ी देर तक ये दोनों आदमी इधर उधर घूमते रहे मगर जब कुछ पता न लगा तो लौट कर सुरंग के मुहाने पर चले आए और यों बातचीत करने लगे :—

भोला०। मालूम होता है कि वे लोग दूर निकल गये, किस तरफ गये हैं इसका पता लगाना जल्दी में नहीं हो सकता।

भूत०। अच्छा तो तुम घाटी के अन्दर जाओ और जहां जो लोग हैं उनका ख्याल रक्खो, मैं पुनः घूम कर टोह लगाता हूं कि वे लोग कहां गये।

भोला०। नहीं बल्कि आप ही घाटी के अन्दर जाइए और मुझे उन लोगों का पता लगाने की आज्ञा दीजिये, क्योंकि जो लोग यहां से गये हैं वे अगर अपने ही आदमी हैं तो आखिर लौट कर यहां आवेंगे जरूर, ऐसी अवस्था में ज्यादे देर तक पीछा करने की कोई जरूरत नहीं, इसके अतिरिक्त आप घाटी में जा कर इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि वहां से कौन कौन आदमी गायब है क्योंकि यह बात मुझे बिल्कुल ही नहीं मालूम है कि आज कल किस किस को आपने किस किस काम पर मुस्तैद किया है तथा घाटी के अन्दर कौन कौन रहता है।

भूत०। ठीक है अच्छा मैं ही घाटी के अन्दर जाकर पता लगाता हूं कि कौन कौन गायब है। अफसोस सुरंग के अन्दर का दर्वाजा खोलना बन्द करना मैंने अपने सब आदमियों को बता दिया है, अगर बताता नहीं तो काम भी नहीं चल सकता था क्योंकि नित्य ही लोग आते जाते रहते हैं, मेरी गैरहाजिरी में भी उन लोगों को जाना पडता है।

भोला०। ठीक है, बिना बताये काम नहीं चल सकता था।

भूत०। इसके अतिरिक्त मैंने उन सभों को यह भी हुक्म दे रक्खा है कि नित्य ही प्रातःकाल सूर्योदय के पहिले बारी बारी से दो चार आदमी घाटी के बाहर निकल कर इधर उधर घूमा फिरा करें, अगर वे लोग जिन्हें तुमने जाते देखा है लौट कर आवेंगे भी तो यही कहेंगे कि हम बालादवी* के लिए बाहर गये थे, फिर उन्हें कायल करने और चोर सिद्ध करने के लिए क्या तर्कीब हो सकती है?

भोला०। ठीक ही तो है, फिर आप जानिये जो मुनासिब समझियेगा कीजियेगा, मगर पहिले जाकर देखिए तो सही कि कौन गायब है और उस खजाने को भी एक नजर देख लीजिएगा कि बनिस्बत कल के कुछ और भी कम हुआ है या

---

* घूम फिर कर पहरा देने और टोह लगाने को बालादवी कहते हैं

नहीं। जरूर कम हुआ होगा क्योंकि मैंने अपनी आंखों से उन लोगों की कार-वाई देखी है।

"खैर मैं जाता हूं" इतना कह कर भूतनाथ घाटी के अन्दर चला गया। सबके पहिले उसने खजाने का देखना मुनासिब समझा और पहिले उसी तरफ गया जिधर खजाने वाली गुफा थी।

गुफा के अन्दर घुस कर और खजाने वाली कोठरी का दर्वाजा खोल जब भूतनाथ अन्दर गया और रौशनी करके गौर से उन हण्डों को देखा तो मालूम हुआ कि और भी कई हण्डे खाली हो गये हैं। भोलासिंह को लेकर जिस समय वह इस कोठरी में आया था उस समय जिन हण्डों या देगों में भोलासिंह ने अशर्फियां देखी थीं और भूतनाथ ने भी देखी थीं उनमें से चार हण्डे इस समय बिल्कुल खाली दिखाई दे रहे थे। भूतनाथ ने मन में सोचा कि 'भोलासिंह का कहना बहुत ठीक है, जरूर हमारे आदमियों ने रात को चोरी की है, खैर अब मैं इन हरामखोरों से जरूर समझूंगा। मगर मामला बड़ा कठिन आ पड़ा है, अगर इन शैतानों को यहां से निकाल दूं तब भी काम नहीं चल सकता है क्योंकि यहां का रास्ता इन लोगों का देखा हुआ है। अब तो कुछ डरते भी हैं, फिर दुश्मनी को नियत से यहां छिप कर आया करेंगे, और यदि मैं खुद इस घाटी को छोड़ दूं और बचा हुआ खजाना लेकर दूसरी जगह जा रहूं तो बाबाजी से मुलाकात क्योंकर होगी जिन्होंने यह खजाना दिया है और पुनः आकर बेहिसाब दौलत देने तथा तिलिस्म का दारोगा बनाने की प्रतिज्ञा कर गये हैं? बड़ी मुश्किल है। फिर इन समों को निकाल देने से भी मैं निश्चिन्त नहीं हो सकता क्योंकि ये सब दुश्मन हो जायंगे और दुश्मनों से जा मिलेंगे, इससे यही बेहतर है कि इन समों को जान से मार कर बखेड़ा तै किया जाय।"

इसी तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने डेरे की तरफ गया जहां प्रभाकरसिंह को कैद कर रक्खा था। वहां पहुंच कर देखा तो प्रभाकरसिंह भी गायब हैं। क्रोध के मारे भूतनाथ की आँखें लाल हो गईं, उसे विश्वास हो गया कि यह काम भी उसके आदमियों का ही है।

भूतनाथ ने अपनी गुफा के बाहर निकल कर इशारे की जफील बुलाई जिसके सुनते ही वे सब शागिर्द और ऐयार उसके पास आकर इकट्ठे हो गए जो इस समय वहां मौजूद थे। ये लोग गिनती में बारह थे जिनमें चार आदमी कुछ रात रहते ही बालादवी के लिए चले गए थे और बाकी आठ आदमी मौजूद थे जो इस समय भूतनाथ के सामने आये। कौन कौन आदमी बाहर गया हुआ है यह पूछने के बाद भूतनाथ ने कहा—

भूत० । (सभों की तरफ देख कर) बड़े ताज्जुब की बात है कि प्रभाकरसिंह इस गुफा के अन्दर से गायब हो गये !

एक० । यह तो आप ही जानिए, क्योंकि रात को आप ही उनके पहरे पर थे, हम लोगों में से तो कोई यहां था नहीं ।

भूत० । सो तो ठीक है मगर तुम्हीं सोचो कि यकायक यहां से उनका गायब हो जाना कैसी बात है ।

दूसरा० । बेशक ताज्जुब की बात है ।

भूत० । इसके अतिरिक्त और भी एक बात सुनने लायक है । (उंगली से बता के) इस गुफा के अन्दर हमारा खजाना रहता है, उसमें से भी आज लाखों रुपये की जमा चोरी हो गई है, इसके भी पहिले एक दफे चोरी हो चुकी है ।

एक० । यह तो आप और ताज्जुब की बात सुनाते हैं ? भला यहां चोर क्योंकर आ सकता है ? इसके सिवाय उस गुफा में पचासों दफे हम लोग गये हैं मगर वहां खजाना वगैरह तो कभी नहीं देखा, न आप ही ने हम लोगों से कहा कि वहां खजाना रख आये हैं ।

भूत० । उस गुफा के भीतर एक दर्वाजा है और उसके अन्दर जो कोठरी है उसी में खजाना था । उस दिन जो साधू महाशय आये थे उन्हीं का वह खजाना था और वे ही मुझे दे गये थे तथा वे उस कोठरी को खोलने बन्द करने की तर्कीब भी बता गये थे, मगर अब जो हम देखते हैं तो वह खजाना आधा भी नहीं रह गया।

तीसरा० । अब ये सब बातें तो आप जानिए, हमें तो कभी आपने इसकी इत्तिला नहीं दी थी इसलिए हमलोगों का उस तरफ कुछ ख्याल भी नहीं था और खयाल हो अथवा न हो, यहां से चोरी जाने की बात कौन मान सकता है ।

भूत० । तो क्या हम झूठ कहते हैं ?

चौथा० । यह तो हमलोग नहीं कह सकते मगर इसके जिम्मेदार भी हमलोग नहीं हैं ।

भूत० । फिर कौन इसका जिम्मेदार है ?

चौथा० । आप जिम्मेदार हैं या फिर जो चुरा ले गया है वह जिम्मेदार है। आप तो हम लोगों से इस तरह पूछते हैं जैसे कोई लौंडी या गुलाम से आंख दिखा कर पूछता है । हम लोग आपके पास शागिर्दी का काम करते हैं, ऐयारी सीखते हैं, आपके लिए दिन रात दौड़ते परेशान होते हैं, और हरदम हथेली पर जान लिए रहते हैं, मरने की भी परवाह नहीं करते, तिस पर आप हमलोगों को चोर समझते

हैं और ऐसा बर्ताव करते हैं। यह हम लोगों के लिए एक नई बात है, आज के पहिले कभी आप ऐसे बेरुख नहीं हुए थे।

भूत०। हां, बेशक आज के पहिले हम तुम लोगों को इमानदार समझते थे, यह तो आज मालूम हुआ कि तुम लोग ऐयार नहीं बल्कि चोर और बेईमान हो।

पांचवां०। देखिये जुबान सम्हालिए, हम लोगों को ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं है!

भूत०। अगर आदत नहीं होती तो ऐसा काम नहीं करते।

छठां०। (क्रोध में भर कर) सीधी तरह से यह क्यों नहीं कह देते कि यहां से चले जाओ। इस तरह इज्जत लेने और देने की जरूरत ही क्या है?

भूत०। वाह वाह, क्या अच्छी बात कही है। तमाम खजाना उठा कर हजम कर जाओ और इसके बदले में हम बस इतना ही कह कर रह जाऊं कि चले जाओ!

इस तरह की बातें हो रही थीं कि वे बाकी के चार आदमी भी आ गये जो बालादवी के लिए कुछ रात रहते घाटी के बाहर निकल गये थे। भूतनाथ ने उन सभों से भी इसी तरह की बातें कीं और अच्छी तरह डांट बताई। उन लोगों ने भी इसकी जानकारी से इनकार किया और कहा कि हम लोगों को कुछ भी नहीं मालूम कि कहां आपका खजाना रहता है, कब कौन उठा कर ले गया तथा प्रभाकरसिंह को किसने यहां से भगा दिया।

भूतनाथ बड़ा ही लालची आदमी था, रुपये पैसे के लिए वह बहुत जल्द बेमुरौवत बन जाता था और खोटे से खोटा काम करने के लिए तैयार हो जाता था। बात तो यह है कि रुपये पैसे के विषय में वह किसी का एतबार ही नहीं करता था। आज उसकी बहुत बड़ी रकम गायब हो गई थी और मारे क्रोध के वह जल भुन कर खाक हो गया था। अपने आदमियों पर उसने इतनी ज्यादे सख्ती की और ऐसे बुरे शब्दों का प्रयोग किया कि वे सब एकदम बिगड़ खड़े हुए क्योंकि ऐयार लोग इस तरह की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकते।

इन आदमियों या शागिर्दों के अतिरिक्त भूतनाथ के पास और भी कई आदमी थे जो दूसरी जगह रहते थे तथा और कामों पर मुकर्रर कर दिए गये थे मगर इस घाटी के अन्दर आजकल ये ही बारह आदमी रहते थे जो आज भूतनाथ की बातों से नाराज होकर बेदिल हो गये थे मगर भूतनाथ ने उन्हें सीधी तरह जाने भी नहीं दिया बल्कि तलवार खेंच कर सभों को सजा देने के लिए तैयार हो गया।

भूतनाथ की कमर में वही अनूठी तलवार थी जो उसने प्रभाकरसिंह से पाई

थी, इस तलवार को वह बहुत प्यार करता था और उसे अपनी फतहमन्दी का सितारा समझता था। उसके आदमियों को इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस तलवार में कौन सा गुण है अस्तु लाचार हो वे लोग भी खंजर और तलवारें खींच मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये।

भूतनाथ अकेला ही सभों से लड़ने के लिए तैयार हो गया बल्कि बहुत देर तक लड़ा। भूतनाथ के बदन पर छोटे छोटे कई जख्म लगे मगर भूतनाथ के हाथ की तलवार का जिसको जरा सा भी चरका लगा वह बेकार हो गया और तुरन्त बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। यह देख उन लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा था। थोड़ी ही देर में कुल आदमी जख्मी होने के कारण बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े और भूतनाथ ने सभों की मुश्कें बांध कर एक गुफा में कैद कर दिया।

इसके बाद भूतनाथ घाटी के बाहर निकला और भोलासिंह की खोज में चारों तरफ घूमने लगा मगर तमाम दिन बीत जाने पर भी भोलासिंह का कहीं पता न लगा।

संध्या होने पर भूतनाथ पुनः लौट कर अपनी घाटी में आया और यह देखने के लिए उस गुफा के अन्दर गया जिसमें अपने शागिर्दों को कैद किया था कि उन सभों की बेहोशी अभी दूर हुई या नहीं, मगर अफसोस भूतनाथ ने वह तमाशा देखा जो कभी उसके खयाल में भी नहीं आ सकता था, अर्थात् उसके कैदी शागिर्दों में से वहां एक भी मौजूद न था, हां उनके बदले वह सब सामान यहां जमीन पर जमा दिखाई दे रहा था जिससे उनके हाथ पैर बेकार कर दिये गए थे या उनकी मुश्कें बांधी गई थीं।

अपने शागिर्दों को कैदखाने में न देख कर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि वे सब कैदखाने में से निकल कर किस तरह भाग गये। मैं इनके हाथ पैर बड़ी मजबूती के साथ बांध गया था जो बिना किसी की मदद के किसी तरह भी खुल नहीं सकते थे फिर ये लोग क्योंकर निकल गये? मालूम होता है कि उनका कोई न कोई मददगार यहां जरूर आया चाहे वह मेरे शागिर्दों का दोस्त हो या मेरा दुश्मन। इधर कई दिनों से ऐसी बातें हो रही हैं कि मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता है। क्या सम्भव है कि इन लोगों ने होश में आने के बाद आपस में मिल जुल कर किसी तरह अपने हाथ पैर खोल लिए होंगे? हां हो भी सकता है। अस्तु अब मुझे मानना पड़ेगा कि मेरे दुश्मनों की गिनती बढ़ गई क्योंकि वे लोग भी अब मेरे साथ जरूर दुश्मनी करेंगे और ऐसी अवस्था में मैं किस किस का वार सम्हाला करूंगा? मैं तो यही सोचे हुए था कि इन लोगों को एक दम

मार कर बखेड़ा तै करूंगा क्योंकि दुश्मनों की गिनती बढ़ाना अच्छा नहीं मगर अफसोस तो यह है कि अब मैं अकेला क्या करूंगा ? दो चार साथी अगर और हैं भी तो अब उनका क्या भरोसा ? वे लोग अब जरूर उनको भी भड़कावेंगे और उन लोगों को जब यह मालूम हो जायगा कि मैं अपने शागिर्दों को इस तरह पर सजा दिया करता हूं तो वे लोग भी मेरा साथ छोड़ देंगे, बल्कि ताज्जुब नहीं कि भविष्य में कोई भी मेरा साथी बनना पसन्द न करे। आह, मैं मुफ्त परेशानी उठा रहा हूं, व्यर्थ का दुःख भोग रहा हूं अगर अपने मालिक के पास चुपचाप बैठा रहता तो काहे को इस तरद्दुद में पड़ता, मगर अब तो मैं वहां भी जाना पसन्द नहीं करता क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियां वहां मुझे और भी विशेष कष्ट देंगी अफसोस यह बात रणजीतसिंह ने मुझसे व्यर्थ ही छिपाई और कह दिया कि दयाराम की दोनों स्त्रियों का देहान्त हो गया। मगर जहां तक मैं खयाल करता हूं इसमें उनका कसूर कुछ भी नहीं जान पड़ता, सम्भव है कि मेरी तरह वे भी धोखे में डाल दिये गये हों और अभी तक उन्हें इस बात की खबर भी न हो कि जमना और सरस्वती जीती हैं। मगर अब मुझे क्या करना चाहिये यह सोचने की बात है। मैं तो ऐसा गायब हो सकता हूं कि हवा को भी मेरी खबर न लगे मगर इस घाटी को छोड़ना जरा कठिन हो रहा है क्योंकि अगर मैं यहां से चला जाऊंगा तो फिर साधू महाशय से मुलाकात न होगी और मैं उस दौलत को न पा सकूंगा जो उनकी बदौलत मिलने वाली है, मगर यहां का रहना भी अब कठिन हो रहा है। अच्छा कुछ दिन के लिये इस स्थान को अब छोड़ ही देना चाहिये और जो कुछ बचा हुआ खजाना है उसे निकाल ले जाना चाहिये।

इस तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ जिसमें उसका खजाना था। जब गुफा के अन्दर जाने के बाद रोशनी लिये हुए खजाने वाली कठड़ी में पहुंचा तो देखा कि अब उन हण्डों में एक भी अशर्फी बाकी नहीं है, सब की सब गायब हो गईं, बल्कि वे हण्डे तक भी अब नहीं दिखाई देते जिनमें अशर्फियां रक्खी गई थीं। भूतनाथ का दिमाग हिल गया और वह अपना सिर पीट कर उसी जगह बैठ गया।

थोड़ी देर बाद भूतनाथ उठा और मोमबत्ती की रोशनी में उसने उस कोठड़ी को अच्छी तरह देखा, इसके बाद दर्वाजा बन्द करके निकल आया और गुफा की जमीन को बड़े गौर से देखता तथा यह सोचता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर गया कि 'अब यहां रहना उचित नहीं है'।

दसवां बयान

दोपहर का समय है मगर सूर्यदेव नहीं दिखाई पड़ते। आसमान, गहरे बादलों से भरा हुआ है। ठण्ढी ठण्ठी हवा चल रही है और जान पड़ता है कि मूसलाधार पानी बरसा ही चाहता है।

भूतनाथ अपनी घाटी के बाहर निकल कर अकेला ही मैदान और जंगल की सैर कर रहा है। उसके दिल में हर तरह की बातें उठ रही हैं, तरह तरह के विचार पैदा हो और मिट रहे हैं? कभी वह अटक कर इस तरह चारो तरफ देखने लग जाता है जैसे किसी के आने की आहट लेता हो और कभी जफील बजा कर उसके जवाब का इन्तजार करता है।

इसी तरह वह बहुत देर तक घूमता रहा, आखिर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर बाद उसने पुनः जफील बुलाई और उसी समय उसका जवाब भी पाया। भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ रवाना हुआ जिधर से जफील की आवाज आई थी। थोड़ी दूर जाने पर उसने अपने एक शागिर्द को देखा जिसका नाम रामदास था, इसे भूतनाथ बहुत ही प्यार करता और अपने लड़के के समान मानता था और वास्तव में रामदास बहुत चालाक और धूर्त था भी। यद्यपि उसकी उमर बीस साल के ऊपर होगी मगर देखने में वह बारह या तेरह वर्ष से ज्यादे का नहीं मालूम होता था। उसकी रेख बिल्कुल ही नहीं आई थी और उसकी सूरत में कुदरती तौर पर जनानापन मालूम होता था, यही सबब था कि वह औरतों की सूरत में बहुत अच्छा काम कर गुजरता था और हाव भाव में भी उससे किसी तरह की त्रुटि नहीं होती थी। इस समय उसकी पीठ पर एक गठड़ी लदी हुई थी जिसे देख भूतनाथ को आश्चर्य हुआ और उसने आगे बढ़ कर पूछा, "कहो रामदास, खैरियत तो है? यह तुम किसे लाद लाये हो? मालूम होता है कोई अच्छा शिकार किया है?"

रामदास०। (कानी आंख से प्रणाम करके) हां चाचा मैं बहुत अच्छा शिकार कर लाया हूं!

भूतनाथ०। (प्रसन्न होकर) अच्छा अच्छा आओ, इस पत्थर की चट्टान पर बैठ जाओ, देखें तुम्हारा शिकार कैसा है?

भूतनाथ ने गठड़ी उतारने में उसे मदद दी और दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये। भूतनाथ ने गठड़ी खोल कर देखा तो एक बेहोश औरत पर निगाह पड़ी। उसने पूछा, "यह कौन है?"

रामदास०। यह जमना और सरस्वती की लौंडी है।

भूत०। अच्छा, तुमने इसे कहां पाया ?

रामदास०। उसी घाटी के बाहर जिसमें वे दोनों रहती हैं। यह किसी काम के लिए बाहर आई थी और मैं आपकी आज्ञानुसार उसी जगह छिप कर पहरा दे रहा था, मौका मिलने पर मैंने इसे गिरफ्तार कर लिया और जबर्दस्ती बेहोश करके एक गुफा के अन्दर छिपा आया जहां किसी को यकायक पता नहीं लग सकता था। इसके बाद मैं इसी की सूरत बन कर उस सुरंग के पास चला आया जो उस घाटी के अन्दर जाने का रास्ता है और जहां मैंने इसे गिरफ्तार किया था। मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि उस घाटी के अन्दर जाऊं मगर इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह औरत जिसे मैंने गिरफ्तार किया है किस दर्जे की है या किस काम पर मुकर्रर है और इसका नाम क्या है, अस्तु इसके जानने के लिए मुझे कुछ पाखण्ड रचना पड़ा जिसमें एक दिन की देर तो हुई मगर ईश्वर की कृपा से मेरा काम बखूबी चल गया। मैंने सूरत बदलने के बाद इस लौंडी के कपड़े तो पहिर ही लिए थे तिस पर भी मैं चुटीला बन कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और इन्तजार करने लगा कि घाटी के अन्दर से कोई आवे तो मैं उसके साथ भीतर पहुंच जाऊं। थोड़ी देर बाद जमना और सरस्वती स्वयं घाटी के बाहर आईं, उस समय मुझे यह नहीं मालूम हुआ कि यह जमना और सरस्वती हैं मगर जब घाटी के अन्दर चला गया और तरह तरह की बातें सुनने में आईं तब मालूम हुआ कि यही जमना और सरस्वती हैं। यद्यपि ये दोनों कला और बिमला नाम से पुकारी जाती थीं मगर यह तो मैं आपसे सुन ही चुका था कि उन्होंने अपना नाम कला और बिमला रखा हुआ है इसलिये मुझे असल बात जानने में कोई कठिनता न हुई। खैर जब सुरंग के बाहर मुझे कला और बिमला ने देखा तो पूछा, "अरी हरदेई, अभी तक इसी जगह बैठी हुई है?" मैंने धीरे से इसका जवाब दिया, "मैं पहाड़ी के ऊपर से गिर कर बहुत चुटीली हो रही हूं, मुझमें दस कदम चलने की भी ताकत नहीं है बल्कि बात करने में भी तकलीफ मालूम होती है।" इसके बाद मैंने कई जगह छिले और कटे हुए जख्म दिखाए जो कि अपने हाथों से बनाये थे। मेरी अवस्था पर उन दोनों को बहुत अफसोस हुआ और वे दोनों मदद देकर मुझे अपनी घाटी के अन्दर ले गईं और दवा इलाज करने लगीं। दो दिन तक मैं चारपाई पर पड़ा रहा और इस बीच मुझे बहुत सी बात मालूम हो गईं जिन्हें मैं बहुत ही संक्षेप के साथ इस समय बयान करूंगा। दो दिन के बाद मैं चंगा हो

गया और उन सभों के साथ मिल जुल कर काम करने लगा क्योंकि इस बीच में मतलब की सभी बातें मुझे मालूम हो चुकी थीं।

भूत०। निःसन्देह तुमने बड़ी हिम्मत का काम किया, अच्छा तो कौन कौन बातें वहां तुम्हें मालूम हुई ?

रामदास०। पहिली बात तो यह मालूम हुई कि बेचारा भोलासिंह उन दोनों के हाथ से मारा गया। खुद कला और बिमला ने उसे मारा था, यद्यपि यह नहीं मालूम हुआ कि कब किस ठिकाने और किस तरह से उसे मारा यह मगर इसे कई सप्ताह हो गये।

भूत०। (आश्चर्य से) क्या वह मारा गया ?

रामदास०। निःसन्देह मारा गया।

भूत०। अभी तो कल परसों वह मेरे साथ था !

रामदास०।वह कोई दूसरा होगा जिसने भोलासिंह बन कर आपको धोखा दिया।

भूत०। (कुछ सोच कर) बेशक वह कोई दूसरा ही था, अब जो सोचता हूं तो तुम्हारा कहना ठीक मालूम होता है। हाय मुझसे बडी भूल हो गई और मैंने अपने को बर्बाद कर दिया। मेरे साथी शागिर्द लोग बेचारे अपने दिल में क्या कहते होंगे ? वे लोग अगर मेरे साथ दुश्मनी करें तो इसमें उनका कोई कसूर नहीं।

राम०। यह क्या बात हुई, भला कुछ मैं भी सुनूं।

भूत०। तुमसे कुछ छिपा न रहेगा, मैं सब कुछ तुमसे बयान करूंगा, पहले तुम अपना किस्सा कह जाओ।

राम०। नहीं नहीं पहिले मैं आपका यह हाल सुन लूंगा तब कुछ कहूंगा।

रामदास ने इस बात पर बहुत जिद्द किया, आखिर लाचार होकर भूतनाथ को अपना सब हाल बयान करना ही पड़ा जिसे सुन कर रामदास को बड़ा ही दुःख हुआ।

भूत०। अच्छा और क्या तुम्हें मालूम हुआ ?

राम०। और यह मालुम हुआ कि जिस साधु महाशय का अभी अभी आपने जिक्र किया है, जिन्होंने आपको खजाना दिया था, वह कला और बिमला के पक्ष-पाती हैं। जो रंग ढंग आपने उनके अभी बयान किये हैं ठीक उसी सूरत शक्ल में मैंने उन्हें वहां देखा और यह करते अपने कानों से सुना था कि—'भूतनाथ को मैंने खूब ही लालच में फंसा लिया है, अब वह इस घाटी को कदापि न छोड़ेगा और प्रभाकरसिंह को भी इसी जगह ले आवेगा, तब हम लोग उन्हें सहज ही में छुड़ा

लेंगे'। इसके अतिरिक्त मुझे यह भी निश्चय हो गया कि वह साधू अपनी असली सूरत में नहीं है बल्कि कोई ऐयार है, मेरे सामने ही उसने विमला से कहा था कि 'अब मैं इसी सूरत में आया करूंगा'।

भूत०। बेशक वह कोई ऐयार था, मगर अशर्फियां किस तरह निकल गईं इसका भी पता कुछ लगा ?

राम०। इस विषय में तो मैं कुछ भी नहीं कह सकता।

भूत०। खैर इस बारे में फिर सोचेंगे, अच्छा और क्या देखा सुना ?

राम०। और यह मालूम हुआ कि गुलाबसिंह आपकी शिकायत लेकर दलीपशाह के पास गये थे, उस समय भी उस बुड्ढे साधु को मैंने उन दोनों के साथ देखा था।

भूत०। खैर तो अब मालूम हुआ कि दलीपशाह के सिर में भी खुजलाहट होने लगी।

राम०। बात तो ऐसी ही है, यह आपका बगली दुश्मन ठीक नहीं उससे होशियार रहना चाहिये।

भूत०। बेशक वह बड़ा ही दुष्ट है, आश्चर्य नहीं कि वही भोलासिंह बन कर मेरे पास आया हो।

राम०। हो सकता है वही आया हो।

भूत०। खैर उससे समझ लिया जायगा। अच्छा यह बताओ कि कुछ इन्द्रदेव का हाल भी तुम्हें मालूम हुआ या नहीं ? मुझे शक होता है कि इन्द्रदेव उन दोनों की मदद पर हैं, ताज्जुब नहीं कि वहां वे भी जाते हों।

राम०। इन्द्रदेव को तो मैंने वहां नहीं देखा और न उनके विषय में कुछ सुना, मगर वे तो आपके मित्र है फिर आपके विरुद्ध क्यों कोई कार्रवाई करेंगे ?

भूत०। हां मैं भी यही ख्याल करता हूं, खैर अब और बताओ क्या क्या....

राम०। प्रभाकरसिंह मेरे सामने ही वहां पहुंच गये थे मगर मैं उनके विषय में कुछ विशेष हाल न जान सका क्योंकि और ज्यादे दिन वहां रहने की हिम्मत न पड़ी। मुझे मालूम हो गया कि अब अगर और यहां रहूँगा तो मेरा भेद खुल जायगा क्योंकि दलीपशाह ने दो तीन दफे मुझे जांच की निगाह से देखा, अस्तु लाचार हो मैं बहाना करके एक लौंडी के साथ जो सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना जानती थी घाटी के बाहर निकल आया।

भूत०। तुम्हें सुरंग का दर्वाजा खोलने और बन्द करने की तर्कीब मालूम हुई या नहीं ?

राम०। नहीं लेकिन अगर दो चार दिन और वहां रहता तो शायद मालूम हो जाती।

इतने ही में पानी बरसने लगा और हवा में भी तेजी आ गई।

राम०। अब यहां से उठना चाहिये।

भूत०। हां चलो किसी आड़ की जगह में चल कर आराम करें। मेरी राय में तो अब इस घाटी में रहना मुनासिब न होगा, और साथ ही अब भविष्य के लिये बचे हुए आदमियों को आपस में कोई इशारा कायम कर लेना चाहिये जिससे मुलाकात होने पर हम लोग जांच के खयाल से बरता करें, जिसमें फिर कभी ऐसा धोखा न हो जैसा भोलासिंह के विषय में हुआ है। तुम्हारा इशारा अर्थात् एक आंख बन्द करके प्रणाम करना तो बहुत ठीक है, तुम्हारे विषय में किसी तरह का धोखा नहीं हो सकता।

राम०। बहुत मुनासिब होगा, अब यह सोचना चाहिये कि हम लोग अपना डेरा कहां कायम करेंगे।

भूत०। तुम ही बताओ?

राम०। मेरी राय में तो लामाघाटी उत्तम होगी।*

भूत०। ख़ूब कहा, इस राय को मैं पसन्द करता हूं।

इतना कह के भूतनाथ ने पुनः उस औरत की गठरी बांधी जिसे रामदास ले आया था और अपनी पीठ पर लाद वहां से रवाना हुआ। रामदास भी उसके पीछे पीछे चल पड़ा।

ग्यारहवां बयान

भूतनाथ के हाथ से छुटकारा पाकर प्रभाकरसिंह अपनी स्त्री से मिलने के लिये उस घाटी में चले गये जिसमें कला और बिमला रहती थीं। संध्या का समय था जब वे उस घाटी में पहुंच कर कला बिमला और इन्दुमति से मिले। उस समय वे तीनों बंगले के आगे सुन्दर मैदान में पत्थर की चट्टानों पर बैठी आपस में बातें कर रही थीं। प्रभाकरसिंह को देख कर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुईं, कई कदम आगे बढ़ कर उनका इस्तकबाल किया तथा उसी जगह लाकर अपने पास बैठाया जहां वे सब बैठी हुई थीं।

बिमला०। मैं भूतनाथ के हाथ से छुटटी मिलने पर आपको मुबारकबाद देती

* लामाघाटी का जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है।

हूँ। वास्तव में इन्द्रदेवजी ने इस विषय में बड़ी चालाकी की नहीं तो हम लोगों से
गहरी भूल हो गई थी कि भूतनाथ को घाटी का रास्ता बन्द कर दिया था। उन्होंने
साधू बन कर भूतनाथ को ऐसा धोखा दिया कि वह जन्म भर याद रक्खेगा।

प्रभा०। बेशक ऐसी ही बात है, मुझे अभी थोड़ी देर हुई है यहां आते समय
इन्द्रदेवजी रास्ते में मिले थे जो तुम्हारे पास होकर जा रहे थे, उन्होंने सब हाल
मुझसे कहा था और उस समय भी वे उसी तरह साधू महात्मा बने हुए थे।

विमला०। जी हां, अब वे बराबर उसी सूरत में यहां आया करेंगे, उनका
खयाल है कि असली सूरत में आने जाने से कभी भूतनाथ को जरूर पता लग
जायगा और भूतनाथ उनसे खटक जायगा क्योंकि वह बड़ा ही चांगला है।

प्रभा०। उनका खयाल बहुत ही ठीक है, मुझसे भी ऐसा ही कहते थे। उन्होंने
मुझसे यह भी पूछा था कि अब तुम्हारा क्या इरादा है, भूतनाथ का पीछा करोगे
या नहीं? इसके जवाब में मैंने कहा कि 'भूतनाथ का पीछा करने की बनिस्बत
मैं नौगढ़ के राजा से मिल कर चुनारगढ़ पर चढ़ाई करना अच्छा समझता हूं
क्योंकि राजा शिवदत्त से बदला लिये बिना मेरा जी ठिकाने न होगा और इस
काम को मैं सब से बढ़ कर समझता हूं। इन्द्रदेवजी ने मेरी यह बात स्वीकार कर
ली और इस विषय में जो जो बातें मैंने सोची थी उन्हें भी पसन्द किया।

इन्दु०। तो क्या अब आप नौगढ़ जाकर चुनार की लड़ाई में शरीक होंगे!

प्रभा०। हां मैं जरूर ऐसा ही करूंगा, आजकल कुमारी चन्द्रकान्ता की बदौलत
बीरेन्द्रसिंह से और शिवदत्त से खूब खिचाखिची हो रही है, मेरे लिए इससे बढ़ कर
और कौन सा मौका मिलेगा!

विमला०। आप स्वयम् फौज तैयार करके चुनार पर चढ़ाई कर सकते हैं।
इस काम में मैं आपकी मदद करूंगी। वे सब अशर्फियां जो भूतनाथ को दिखाई
गई थीं और पुनः ले ली गईं मैं आपको दे सकती हूं क्योंकि इन्द्रदेवजी ने वे सब
मुझे दे दी हैं। आप जानते ही हैं कि इस घाटी में जाने लिए कई रास्ते हैं, इसी
तरह उस खजाने वाली कोठरी में भी जाने के लिए एक रास्ता यहां से है और
इसी रास्ते से हम लोग उन अशर्फियों को उठा लाये थे।

प्रभा०। मुझे मालूम है, यह हाल इन्द्रदेवजी से सुन चुका हूं मगर चुनार के
विषय में मैं इस राय को पसन्द नहीं करता और न इस मामले में किसी से विशेष
मदद ही लूंगा। हां मेरे दोस्त गुलाबसिंह जरूर मेरा साथ देंगे मगर सुना है कि
वे इस समय दलीपशाह के साथ कहीं गये हैं और दलीपशाह भी सुबह शाम में
यहां आने वाले हैं।

बिमला० । भोलासिंह की सूरत बन कर दलीपशाह जब से गए हैं तब से पुनः मुझसे नहीं मिले ।

प्रभा० । क्या हुआ अगर नहीं मिले तो, इन्द्रदेवजी ने मुझसे कहा है कि वे कल तक यहाँ आवेंगे ।

बिमला० । मालूम होता है कि आपने इन्द्रदेवजी से अपने बारे में सब बातें तै कर ली हैं ।

प्रभा० । हां जो कुछ मुझे करना है कम से कम उसके विषय में तो मैंने सभी बातें तै कर ली हैं ।

बिमला० । तो आप जरूर नौगढ़ जांयगे ?

प्रभा० । जरूर ।

बिमला० । दूसरे ढंग से बदला नहीं लेंगे ?

प्रभा० । नहीं ।

इन्दु० । तब मैं कहां रहूंगी ?

प्रभा० । तुम्हारे बारे में यह निश्चय हुआ है कि तुम्हें मैं तब तक के लिए जमानिया में राजा साहब के यहां रख दूं, क्योंकि इस समय वे हो मेरे बड़े और बुजुर्ग जो कुछ हैं सो हैं ।

बिमला० । (चौंक कर) मगर ऐसा करने से तो मेरा भेद खुल जायगा ।

प्रभा० । तुम्हारा भेद क्यों खुलेगा ? मैं इन्द्रदेवजी से वादा कर चुका हूं कि इन सब बातों का वहां कभी जिक्र तक न करूंगा, मेरी जुबानी तुम्हारा हाल उन्हें कभी मालूम न होगा, इन्दु को भी मैं ऐसा ही करने के लिए ताकीद करूंगा और तुम भी अच्छी तरह समझा देना । क्या मैं नहीं समझता कि तुम्हारा भेद खुल जाने से आपस में कई आदमियों को खटपट हो जायगी और बेदाग दोस्ती तथा मुहब्बत में बट्टा लग जायगा ।

बिमला० । अगर भूतनाथ किसी तरह इन्दु को वहां देख ले तो क्या होगा, क्योंकि वह अकसर जमानिया जाया करता है ?

प्रभा० । तब क्या होगा ? भूतनाथ अपने मुंह से इन सब बातों का जिक्र कदापि न करेगा ।

बिमला० । मगर दुश्मनी तो जरूर करेगा, क्योंकि उसे इस बात का डर हो जायगा कि कहीं इन्दु इन सब बातों का भेद किसी से खोल न दे ।

प्रभा० । एक तो वह जमानिया विशेष जाता ही नहीं है दूसरे अगर कभी

गया भी तो महल के अन्दर उसकी गुजर नहीं होगी, तीसरे अगर वह किसी तरह इन्दु को देख भी लेगा तो वहां कुछ गड़बड़ी करने की उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। फिर इसके अतिरिक्त और मैं कह ही क्या सकता हूं, मेरे लिये दूसरा कौन सा घर है ? हां अपने साथ नौगढ़ ले चलूं तो हो सकता है, वहां भूतनाथ के जाने का डर नहीं है।

इन्दु०। मेरा ख्याल तो यही है कि जमानिया की बनिस्बत नौगढ़ में मैं ज्यादा निडर रहूंगी।

बिमला०। तो आप इन्हें इसी जगह हमारे पास क्यों नहीं छोड़ जाते।

प्रभा०। यहां तुम लोग स्वयम ही तरद्दुद में पड़ी हुई हो इसके सबब से और भी....

बिमला०। नहीं नहीं, इनके सबब से किसी तरह की तकलीफ मुझे नहीं हो सकती है, और फिर अगर मैं ज्यादे बखेड़ा देखूंगी तो इन्हें इन्द्रदेवजी के सुपुर्द कर दूंगी वे अपने घर ले जायगे।

प्रभा०। यह सबसे ठीक है, इन्द्रदेवजी का घर हमारे लिए सब से अच्छा है, और उन्होंने ऐसा कहा भी था कि अगर तुम्हारी राय हो तो इन्दु को मेरे घर पर रख सकते हो।

बिमला०। तो बस यही ठीक रखिये और इन्हें मेरे पास छोड़ जाइये।

प्रभाकरसिंह से और कला बिमला तथा इन्दुमति से इस विषय पर बड़ी देर तक बहस होती रही और अन्त में लाचार होकर प्रभाकरसिंह को बिमला की बात माननी पड़ी अर्थात् इन्दुमति को बिमला ही के पास छोड़ देना पड़ा।

रात भर प्रभाकरसिंह वहां रहे और प्रातःकाल सभों से मिल जुल कर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

बारहवां बयान

गुलाबसिंह को साथ लेकर प्रभाकरसिंह नौगढ़ चले गये। वहां उन्हें फौज में एक ऊंचे दर्जे की नौकरी मिल गई और चुनार पर चढ़ाई होने से उन्होंने दिल का हौसला खूब ही निकाला। वे मुद्दत तक लौट कर इन्दुमति के पास न आये और न इस तरफ का कुछ हाल ही उन्हें मालूम हुआ।

जब चुनारगढ़ फतह हो गया, राजा शिवदत्त उदासीन होकर भाग गए, चन्द्रकान्ता की शादी हो गई और चुनार की गद्दी पर राजा बीरेन्द्रसिंह बैठ गये, तब

बहुत दिनों के बाद प्रभाकरसिंह को इस बात का मौका मिला कि वे जाकर इन्दुमति से मुलाकात करें।

प्रभाकरसिंह के दिल में तरह तरह का खुटका पैदा हो रहा था और यह जानने के लिए वे बहुत ही उत्सुक हो रहे थे कि उनके पीछे कला बिमला और इन्दुमति पर क्या क्या बीती, अस्तु वे गुलाबसिंह को साथ लिए हुए बहुत तेजी के साथ कूच और मुकाम करते एक दिन दोपहर के समय उस पहाड़ी के पास पहुंचे जिसके अन्दर वह सुन्दर घाटी थी जिसमें कला और बिमला रहती थीं। सोच रहे थे कि अब थोड़ी ही देर में उन लोगों से मुलाकात हुआ चाहती है जिनसे मिलने के लिए जी बेचैन हो रहा है।

आज कई वर्ष के बाद प्रभाकरसिंह इस घाटी के अन्दर पैर रक्खेंगे। आज पहिले की तरह गर्मी या बरसात का मौसम नहीं है, बल्कि जाड़े के दिनों में प्रभाकरसिंह उस घाटी के अन्दर जा रहे हैं, देखा चाहिये वहां का मौसम कैसा दिखाई देता है।

सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना उन्हें बखूबी मालूम था, बल्कि इस घाटी के विषय में वे और भी बहुत कुछ जान चुके थे अस्तु गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़ कर वे सुरंग के अन्दर घुसे और दर्वाजा खोलते और बन्द करते हुए उस घाटी के अन्दर चले गये। मगर उन्हें पहुँचने के साथ ही वहां कुछ उदासी सी मालूम हुई, ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखते हुए बंगले के अन्दर गये और वहां बिल्कुल ही सन्नाटा पाया। जिस बंगले को ये पहिले सजा हुआ देख चुके थे और जिसके अन्दर पहिले तरह तरह के सामान मौजूद थे आज वह बंगला बिल्कुल ही खाली दिखाई दे रहा है। सजावट की बात तो दूर रही वहां एक चटाई बैठने के लिये और एक लुटिया पानी पीने के लिए भी मौजूद न थी। यही हाल वहां की आलमारियों का भी था जिनमें से एक भी पहिले खाली नहीं दिखाई देती थी। आज वहां हर तरह से सन्नाटा छाया हुआ है और ऐसा मालूम होता है कि वर्षों से इस बंगले के अन्दर किसी आदमी ने पैर नहीं रक्खा।

इस बंगले में से एक रास्ता उस मकान के अन्दर जाने के लिए था जिसमें कला और बिमला खास तौर पर रहती थीं अथवा जिस मकान में पहिले पहिल इन्दुमति की बेहोशी दूर हुई थी। प्रभाकरसिंह हैरान और परेशान उस मकान में पहुंचे मगर देखा कि वहां की उदासी उस बंगले से भी ज्यादे बढ़ी चढ़ी है और एक तिनका भी वहां दिखाई नहीं देता।

"यह क्या मामला है, यहां ऐसा सन्नाटा क्यों छाया हुआ है ? कला, बिमला और इन्दुमति कहां चली गई ? अगर कहीं किसी आपस वाले के घर में चली गईं तो यहां इस तरह उजाड़ कर जाने की क्या जरूरत थी ? कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वे तीनों भूतनाथ के कब्जे में पड़ गई हों और भूतनाथ ने ही इस मकान को ऐसा उजाड़ बना दिया हो।" इन सब बातों को सोचते हुए प्रभाकरसिंह उदास और दुःखित चित्त से बहुत देर तक चारो तरफ घूमते रहे और तब यह निश्चय कर वहां से चल पड़े कि अब भूतनाथ की घाटी का हाल मालूम करना चाहिये और देखना चाहिये कि वह किस अवस्था में है।

पहिले प्रभाकरसिंह उस सुरंग में घुसे जिसमें से उन्होंने पहिले दिन भूतनाथ की घाटी में इन्दुमति को एक अपनी ही सूरत वाले के साथ ठगे जाते हुए देखा था। सुरंग के अन्त में पहुंच सूराख की राह से उन्होंने देखा कि भूतनाथ की घाटी में भी बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है अर्थात् यह नहीं जान पड़ता कि इसमें कोई आदमी रहता है। कुछ देर तक देखने और गौर करने के बाद प्रभाकरसिंह सुरंग के बाहर निकल आये। अब उनकी हिम्मत न पड़ी कि एक सायत के लिए भी उस घाटी के अन्दर ठहरें। उदास और दुःखित चित्त से सोचते और गौर करते हुए वे वहां से रवाना हुए और सुरंग की राह से कहीं निकल कर संध्या होने के पहिले ही उस ठिकाने पहुंचे जहां गुलाबसिंह को छोड़ गये थे। दूर ही से प्रभाकर-सिंह की सूरत और चाल देख कर गुलाबसिंह समझ गए कि कुछ दाल में काला है, रंग अच्छा नहीं दिखाई देता। जब गुलाबसिंह के पास प्रभाकरसिंह पहुंचे तो सब हाल बयान किया और उदास होकर उनके पास बैठ गया। गुलाबसिंह को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वे सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

प्रभाकरसिंह के दिल पर क्या गुजरी होगी इसे पाठक स्वयं समझ सकते हैं। उनके लिये दुनिया ही उजाड़ हो गई थी और चुनारगढ़ की लड़ाई में जो कुछ बहादुरी कर आये थे वह सब व्यर्थ जान पड़ती थी। दोनों बहादुरों ने मुश्किल से उस जंगलमें रात बिताई और सवेरा होने पर अच्छी तरह निश्चय करनेके लिए भूतनाथ की घाटी में जाने का इरादा किया। दोनों आदमी वहां से रवाना हुए और कुछ देर के बाद उस सुरंग के मुहाने पर जा पहुंचे जिस राह से भूतनाथ अपनी घाटी में आया जाया करता था। रास्ते तक दर्वाजे का हाल प्रभाकरसिंह से कुछ छिपा न था अस्तु वे दोनों शीघ्र ही घाटी के अन्दर जा पहुंचे और देखा कि वास्तव में यहां भी सब उजाड़ पड़ा हुआ है और लक्षणों से जाना जाता था कि यहां वर्षों

से कोई नहीं आया और न कोई रहता है। अब कहां चलना चाहिये।

तरह तरह की बातें सोचते विचारते प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह घाटी के बाहर निकल आये और एक पेड़ के नीचे बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगे:—

गुलाब०। आश्चर्य की बात तो यह है कि दोनों घाटियां एक दम से खाली हो गईं। अब रणधीरसिंहजी के यहां चल कर पता लगाना चाहिए कि भूतनाथ का क्या हाल है, क्योंकि असल में भूतनाथ ही इस बखेड़े की जड़ है और ताज्जुब नहीं कि वे तीनों औरतें भूतनाथ के कब्जे में आ गई हों। वहां चलने से कुछ न कुछ पता जरूर लग जायगा।

प्रभा०। रणधीरसिंहजी के यहां तो मैं किसी तरह नहीं जा सकता। यद्यपि वे मेरे रिश्तेदार हैं मगर इस समय में उनके दामाद (शिवदत्त) से लड़ कर आ रहा हूं, इसलिये मुझे देखते ही वे आग हो जांयगे क्योंकि उन्हें अपने दामाद और अपनी लड़की की बुरी अवस्था पर बहुत दुःख हो रहा होगा।

गुलाब०। ठीक है, ऐसा जरूर होगा, मगर मैं यह तो नहीं कहता कि आप सीधे रणधीरसिंह के पास चले चलिये, मेरा मतलब यह है कि हम लोग सौदागरों की सूरत में वहां जाकर किसी सराय में डेरा डालें तथा ऊपर ही ऊपर लोगों से मिलजुल कर भूतनाथ का पता लगावें और जो कुछ हाल हो मालूम करें।

प्रभा०। हां यह हो सकता है, अच्छा तो अब यहां ठहरना व्यर्थ है, चलो उठो, मैं समझता हूं कि इन्द्रदेवजी से मुलाकात किये बिना दिल को तसल्ली न होगी।

गुलाब०। जरूर, वहां भी चलना ही होगा, मगर पहिले भूतनाथ की खबर लेनी चाहिये।

इतना कह कर गुलाबसिंह उठ खड़े हुए, प्रभाकरसिंह ने भी उनका साथ दिया और दोनों आदमी मिर्जापुर की तरफ रवाना हुए, इस बात का कुछ भी खयाल न किया कि समय कौन है और रास्ता कैसा कठिन है।

तेरहवां बयान

प्रेमी पाठक महाशय, अभी तक भूतनाथ के विषय में जो कुछ हम लिख आये हैं उसे आप भूतनाथ के जीवनी की भूमिका ही समझें, भूतनाथ का मजेदार हाल जो अद्भुत घटनाओं से भरा हुआ है पढ़ने के लिये अभी आप थोड़ा सा और सब्र कीजिए, अब उसका अनूठा किस्सा आया ही चाहता है। यद्यपि चन्द्रकान्ता सन्तति में प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का नाम नहीं आया है मगर भूतनाथ की जीवनी का

इन दोनों व्यक्तियों से बहुत ही घना सम्बन्ध है और भूतनाथ की बरबादी या ढिठाई का जमाना शुरू होने के बहुत दिन पहिले ही से भूतनाथ को इन दोनों से वास्ता पड़ चुका था और इन्हीं दोनों के सबब से इन्द्रदेव और दलीपशाह के ऊपर भी भूतनाथ की निगाह पड़ चुकी थी इसलिये हमें सबसे पहिले प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का परिचय देना पड़ा, तथापि आपको आगे चल कर प्रभाकरसिंह और इन्दुमति की अवस्था पर आश्चर्य करना पड़ेगा।

यद्यपि इन्दुमति का पता न लगने से प्रभाकरसिंह को बहुत दुख हुआ परन्तु इन्द्रदेव का खयाल उन्हें ढाढ़स दे रहा था। वे समझते थे कि इन्दुमति अपनी दोनों बहिनों के साथ जरूर इन्द्रदेव के यहां चली गई होगी, अस्तु सबसे पहिले इन्द्रदेव के यहां चल कर उसका पता लगाना चाहिए, इस बात का निश्चय कर गुलाबसिंह को साथ लिए हुए प्रभाकरसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए रवाना हुए

जमना और सरस्वती की जुबानी प्रभाकरसिंह को मालूम हो चुका था कि इन्द्रदेव वास्तव में किसी तिलिस्म के दारोगा हैं परन्तु इन्द्रदेव ने अपने को ऐसा मशहूर नहीं किया था और न साधारण लोगों को उनके विषय में ऐसा खयाल ही था। उसके मुलाकातियों में से भी बहुत कम आदमियों को यह बात मालूम थी कि इन्द्रदेव किसी तिलिस्म के दारोगा हैं और यदि कोई इस बात को जानता भी था तो उसे तिलिस्म के विषय में कुछ ज्ञान ही न था। अगर कोई इन्द्रदेव से तिलिस्म के विषय में कुछ पूछता भी तो इन्द्रदेव समझा देते कि यह सब दिल्लगी की बातें हैं। हां, दो चार आदमियों को इस बात का पूरा पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव किसी भारी तिलिस्म के दारोगा हैं, मगर अपनी जबान से उन्हें भी पूरा पूरा पता नहीं लगने देते थे। इसके अतिरिक्त इन्द्रदेव का रहन सहन ऐसा था कि किसी को उनके विषय में जानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी और न वे विशेष दुनियादारी के मामले मे ही पड़ते थे, वह वास्तव में साधू और महात्मा की तरह अपनी जिन्दगी बिताते थे मगर ढंग उनका अमीराना था। मतलब यह है कि सर्वसाधारण को इन्द्रदेव के विषय में पूरा पूरा ज्ञान नहीं था, हां इतना जरूर मशहूर था कि इन्द्रदेव ऊंचे दर्जे के ऐयार हैं और उनके बुजुर्गों ने ऐयारी के फन में बहुत दौलत पैदा की है जिसकी बदौलत आज तक इन्द्रदेव बहुत रईस और अमीर बने हुए हैं।

यह सब कुछ था सही परन्तु इन्द्रदेव के दो चार दोस्त ऐसे भी थे जिन्हें इन्द्रदेव का पूरा पूरा हाल मालूम था। मगर इन्द्रदेव की तरह वे लोग भी इस बात को मन्त्र की भांति छिपाये रहते थे।

इन्द्रदेव का रहने का स्थान कैसा था और वहां जाने के लिये कैसी कैसी कठनाइयां उठानी पड़ती थीं इसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है यहां पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है, हां इतना कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि जिन दिनों का हाल इस जगह लिखा जा रहा है उन दिनों इन्द्रदेव निश्चित रूप से उस तिलिस्मी घाटी ही में नहीं रहा करते थे बल्कि अपने लिये उन्होंने एक मकान तिलिस्मी घाटी के बाहर उसके पास ही एक पहाड़ी पर बनवाया हुआ था जिसका नाम "कैलाश" रक्खा था और इसी मकान में वह ज्यादा रहा करते थे, हां जब जमाने के हाथों से वह ज्यादे सताये गये और उन्होंने उदास होकर दुनिया ही को तुच्छ समझ लिया तब उन्होंने बाहर का रहना एक दम से बन्द कर दिया जैसा कि चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है।

प्रभाकरसिंह जब इन्द्रदेव से मिलने गये तब उस 'कैलाश भवन' में मुलाकात हुई। उन दिनों इन्द्रदेव बीमार थे, यद्यपि उनकी बीमारी ऐसा न थी कि चारपाई पर पड़े रहते परन्तु घर के बाहर निकलने योग्य भी वह न थे।

प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह से मिल कर इन्द्रदेव ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और बड़ी खातिरदारी से इन दोनों का अपने यहां रक्खा। प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह ने भी इन्द्रदेव की बीमारी पर खेद प्रकट किया और उसी के साथ अपने आने का सबब भी प्रभाकरसिंह ने बयान किया जिसे सुन इन्द्रदेव की आंखें डबडबा आईं और एकान्त होने पर उन दोनों में इस तरह बातचीत होने लगी, इस बातचीत में गुलाबसिंह शरीक नहीं थे।

इन्द्र०। प्रभाकरसिंह, तुम्हें यह सुन कर बहुत दुःख होगा कि तुम्हारी स्त्री इन्दुमति हमारे यहां नहीं है तथा जमना और सरस्वती का भी कुछ पता नहीं लगता कि वे दोनों कहां गायब हो गईं। अफसोस, उन दोनों ने मेरी शिक्षा पर कुछ ध्यान नहीं दिया और अपनी बेवकूफी से अपने को थोड़े ही दिनों में जाहिर कर दिया, अगर वे मेरी आज्ञानुसार अपने को छिपाये रहतीं और धीरे धीरे कार्य करतीं तो धोखा न उठातीं।

प्रभा०। (दुःखित चित्त से) निःसन्देह ऐसा ही है, उस घाटी में पहिले जब मुझसे मुलाकात हुई थी तब उन्होंने कहा था कि ऐसे स्थान में रह कर भी हम लोग अपने को हर वक्त छिपाये रहती हैं, यहां तक कि अपनी लौंडियों को भी अपनी असली सूरत नहीं दिखातीं......

इन्द्र०। (बात काट के) बेशक ऐसी ही बात थी और मैंने ऐसा ही प्रबन्ध कर

दिया था कि उनके साथ रहने वाली लौंडियों को भी इस बात का ज्ञान न था कि ये दोनों वास्तव में जमना सरस्वती हैं। वे सब उन दोनों को कला और बिमला ही जानती थीं मगर इस बात को जमना ने बहुत जल्द चौपट कर दिया और लौंडियों पर भरोसा करके शीघ्र ही अपने को प्रकट कर दिया। अगर लौंडियों को यह भेद मालूम न हो गया होता तो भूतनाथ की समझ में खाक न आता कि वे दोनों कौन हैं और क्या चाहती हैं।

प्रभा०। आपका कहना बहुत ठीक है।

इन्द्र०। बड़ों ने सच कहा है कि स्त्रियों के विचार में स्थिरता नहीं होती और वे किसी भेद को ज्यादे दिनों तक छिपा नहीं सकतीं, कइयों का कथन तो यह है कि स्त्रियों की बुद्धि प्रलय करने वाली होती है, और मैं भी इसी बात का पक्षपाती हूं।

प्रभा०। अफसोस करने के सिवाय और मैं क्या कहूं, इन बखेड़ों में मैं तो व्यर्थ ही पीसा गया, मेरे हौसले सब मटियामेट हो गये और मैं कहीं का भी न रहा, मैं क्या कहूं कि कैसी उम्मीदें अपने साथ लेकर आपके पास आया था, मगर.......

इन्द्र०। प्रभाकरसिंह, तुम एक दम से हताश न हो जाओ और उद्योग का पल्ला मत छोड़ो। क्या कहूं, मैं बहुत दिनों से बीमार पड़ा हुआ हूं और इस योग्य नहीं कि स्वयम् कुछ कर सकूं तथापि मैंने अपने कई आदमी उन सभों की खोज में दौड़ा रक्खे हैं। दलीपशाह का भी बहुत दिनों से पता नहीं है, वे भी उन सभों के साथ ही गायब हैं।

प्रभा०। और भूतनाथ?

इन्द्र०। भूतनाथ अपने मालिक के यहां स्थिर भाव से बैठा हुआ है। मुद्दत से वह कहीं आता जाता नहीं है, रणधीरसिंहजी को जो कुछ उसकी तरफ से रंज हो गया था उसे भी भूतनाथ ने ठीक कर लिया। अब तो ऐसा मालूम होता है कि मानों भूतनाथ ने कभी रंग बदला ही न था, इधर साल भर में चार पांच दफे भूतनाथ मुझसे मिलने के लिये आया था मगर जमना और सरस्वती के विषय में न तो मैंने ही कुछ जिक्र किया और न उसने ही कुछ छेड़ा, यद्यपि मालूम होता है कि भूतनाथ उसी विषय में छेड़छाड़ करने के लिये आया था मगर मैंने कुछ चर्चा उठाना मुनासिब न समझा।

प्रभा०। अस्तु अब क्या करना चाहिये सो कहिये। मैं तो आपका बहुत भरोसा रख के यहां आया था परन्तु यह जान कर मुझे आश्चर्य हुआ कि आपने जमना सरस्वती के लिये कुछ भी नहीं किया।

इन्द्र०। ऐसा मत कहो, मैंने उन सभों के लिये बहुत उद्योग किया मगर लाचार हूं कि उद्योग का कोई अच्छा नतीजा न निकला, हां यह जरूर मानना

पड़ेगा कि मैं स्वयम् अपने हाथ पैर से कुछ न कर सका, इसका सबसे बड़ा सबब तो यह है कि मैं इस मामले में अपने को प्रकट करना उचित नहीं समझता, दूसरे बीमारी से भी लाचार हो रहा हूं। खैर जो कुछ होना था सो तो हो गया। अब तुम आ गये हो तो उद्योग करो। ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा और मैं हर तरह से तुम्हारी मदद के लिये तैयार हूं। मेरी यह प्रबल इच्छा है कि किसी तरह उन तीनों का पता लगे, यदि मुझे इस बात का निश्चय हो जायगा कि उन तीनों से भूतनाथ ने कोई अनुचित व्यवहार किया है तो मैं निःसन्देह भूतनाथ से बदला लूंगा मगर जब तक इस बात का निश्चय न होगा मैं कदापि भूतनाथ से सम्बन्ध न तोड़ूंगा, हां तुम्हें हर तरह से मदद बराबर देता रहूंगा।

प्रभा०। अच्छा तो फिर मुझे शीघ्र बताइये कि अब क्या करना चाहिये, अब मुझमें बैठे रहने की सामर्थ्य नहीं है।

इन्द्र०। जल्दी न करो, मैं सोच विचार कर कल तुमसे कहूंगा कि अब क्या करना चाहिए, एक दिन के लिये और सब्र करो।

प्रभा०। जो आज्ञा, परन्तु.......

लाचार होकर प्रभाकरसिंह को इन्द्रदेव की बात मानना पड़ी परन्तु इस बात का उनको आश्चर्य बना ही रहा कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती के लिए इतनी सुस्ती क्यों की और वास्तव में जमना और सरस्वती गायब हो गई हैं या इसमें भी कोई भेद है।

चौदहवां बयान

अब हम कुछ हाल जमना सरस्वती और इन्दुमति का बयान करना उचित समझते हैं। जब महाराज शिवदत्त से बदला लेने का विचार करके प्रभाकरसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हो गये तो उनके चले जाने के बाद बहुत दिनों तक जमना और सरस्वती को कोई ऐसा मौका हाथ न आया कि भूतनाथ से कुछ छेड़छाड़ करें और न भूतनाथ ही ने उनके साथ कोई बदसलूकी की, हां यह जरूर होता रहा कि जमना और सरस्वती भूतनाथ की घाटी में ताकझांक करके इस बात की बराबर टोह लगाती रहीं कि भूतनाथ क्या करता है अथवा किस धुन में है।

थोड़े ही दिनों में उन दोनों को मालूम हो गया कि भूतनाथ अब इस घाटी में नहीं रहता, न मालूम वह कहीं चला गया या उसने जगह बदल दी। बहुत दिनों तक उनकी लौंडियां और ऐयारा इस विषय का पता लगाने के लिए इधर उधर दौड़ती रहीं मगर सफल मनोरथ न हो सकीं। कुछ दिन बीत जाने के बाद यह

मालूम हुआ कि भूतनाथ अपने मालिक रणधीरसिंह के यहां चला गया तथा अब बराबर एक चित्त से उन्हीं का काम किया करता है और उन्हीं के यहां स्थिर भाव से रहता है। यह बात इन दोनों को अच्छी नहीं मालूम हुई और इन दोनों ने समझा कि अब भूतनाथ से बदला लेना कठिन हो गया तथा अब बिना प्रकट भये काम नहीं चलेगा। कई दफे इन दोनों ने सोचा कि रणधीरसिंह के यहां चली जांय और जो कुछ मामला हो चुका है उसे साफ कह के भूतनाथ को सजा दिलावें, परन्तु इन्द्रदेव ने ऐसा करने से मना किया और समझाया कि अगर तुम वहां चली जाओगी तो रणधीरसिंह मुझसे इस बात के लिए रंज हो जांयगे कि मैंने इतने दिनों तक तुम दोनों को छिपा रक्खा और झूठ ही मशहूर कर दिया कि जमना और सरस्वती मर गयीं, साथ ही इसके हमसे और भूतनाथ से भी खुल्लम खुल्ला लड़ाई हो जायगी। केवल इतना ही नहीं बल्कि यह भी सोच रखना चाहिये कि रणधीरसिंह भूतनाथ का कुछ बिगाड़ न सकेंगे, सिवाय इसके कि उसे अपने यहा से निकाल दें, बल्कि ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ रणधीरसिंह से रंज होकर उन्हें भी किसी तरह की तकलीफ पहुंचावे।

इन्द्रदेव का यह विचार भी बहुत ठीक था, इसलिये दोनों बहुत दिनों तक चुपचाप बैठी रह गयीं और रणधीरसिंह के यहां भी न गईं।

इसी तरह सोचते विचारते और समय का इन्तजार करते वर्षों बीत गये और इस बीच में जमना सरस्वती और इन्दुमति प्रायः घूमने फिरने के लिए उस घाटी के बाहर निकलती रहीं।

एक दिन माघ के महीने में दोपहर के समय अपनी कई लौंडियों को साथ लिए हुए वे तीनों भेष बदले हुए उस घाटी के बाहर निकलीं और जंगल में चारो तरफ घूम फिर कर दिल बहलाने लगीं। यकायक उनकी निगाह एक मरे हुए घोड़े पर पड़ी जिस पर अभी तक चारजामा कसा हुआ था। वे सब ताज्जुब में आकर उसके पास गईं और गौर से देखने लगीं। यह घोड़ा कई जगह से जख्मी हो रहा था जिससे गुमान होता था कि किसी लड़ाई में इसके सवार ने बहादुरी दिखाई और अन्त में किसी सबब से यह भाग निकला है, सम्भव है कि इसका सवार लड़ाई में गिर गया हो। मगर इस बात पर भी बिमला का विचार नहीं जमा, वह यही सोचती थी कि जरूर यह अपने सवार को लेकर भागा है, अस्तु बिमला आंख फैला कर चारो तरफ इस खयाल से देखने लगी कि शायद इस घोड़े की तरह गिरा हुआ कोई आदमी भी कहीं दिखाई दे जाय।

बिमला कला और इन्दुमति घूम घूम कर इस बात का पता लगाने लगीं और

आखिर थोड़ी देर में एक आदमी पर उनकी निगाह पड़ी। ये सब तेजी के साथ घबराई हुई उसके पास गईं और देखा कि प्रभाकरसिंह बेहोश पड़े हुए हैं, उनका कपड़ा खून से तरबतर हो रहा है और उनके बदन में कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए हैं तथा सर पर भी एक भारी जख्म लगा हुआ है जिसमें से निकले हुए खून के छींटे चेहरे पर अच्छी तरह पड़े हुए हैं। लड़ाई के समय जो तलवार उनके हाथ में थी इस समय भी उसका कब्जा उनके हाथ ही में है।

प्रभाकरसिंह को इस अवस्था में देखते ही इन्दुमति एक दफे चिल्ला उठी और उसकी आंखों में आंसू भर आए, परन्तु तुरत ही उसने अपने दिल को संभाल लिया और जमना तथा सरस्वती की तरफ देखा जिनकी आंखों से आंसू की धारा बह रही थी और जो बड़े गौर से प्रभाकरसिंह के चेहरे पर निगाह जमाये हुए थीं।

इन्दु०। (जमना से) बहिन, तुम इनके चेहरे की तरफ क्या देख रही हो? जो बातें देखने लायक हैं पहिले उन्हें देखो इसके बाद रोने धोने का खयाल करना।

जमना०। (ताज्जुब से) सो क्या है?

इन्दु०। पहिले तो यह देखो कि इनके पीठ में भी कोई जख्म लगा है या नहीं जिससे यह मालूम हो कि इन्होंने लड़ाई में पीठ तो नहीं दिखाई है, इसके बाद इस बात की जांच करो कि इनमें कुछ दम है या नहीं। अगर इन्होंने लड़ाई में वीरता दिखाई और बहादुरी के साथ प्राण-त्याग किया है तो कोई चिन्ता नहीं, मैं बड़ी प्रसन्नता से इनके साथ सती होकर अपना कर्तव्य पूरा करूंगी, और इनके हाथ की तलवार मुझे विश्वास दिलाती है कि इन्होंने लड़ाई में पीठ नहीं दिखाई।

जमना०। मेरा भी यही खयाल है, और वीर पत्नियों के लिए रोना कैसे? उन्हें तो हरदम अपने पति के साथ जाने के लिए तैयार रहना ही चाहिये।

सरस्वती०। (प्रभाकरसिंह की नाक पर हाथ रख कर) जीते हैं! जख्मी होने के सबब से बेहोश हो गये हैं!!

सरस्वती की बात सुन कर जमना और इन्दुमति ने भी उन्हें अच्छी तरह देखा और निश्चय कर लिया कि प्रभाकरसिंह मरे नहीं हैं और इलाज करने से बहुत जल्द अच्छे हो जायगे। अब पुनः इन्दुमति की आंखों से आंसू की धारा बहने लगी तथा जमना और सरस्वती ने उसे समझाया और दिलासा दिया। इसके बाद सब कोई मिल जुल कर प्रभाकरसिंह को उठा कर घाटी के अन्दर ले गईं और बंगले के बाहर दालान में एक सुन्दर चारपाई पर लेटा कर उन्हें होश में लाने का उद्योग करने लगीं।

मुंह पर केवड़ा और बेदमुश्क छिड़कने तथा लखलखा सुंघाने से थोड़ी ही

देर में प्रभाकरसिंह चैतन्य हो गये और जमना की तरफ देख कर बोले, "मैं कहां हूं ?"

जमना०। आप उस घाटी में हैं जहां हम दोनों बहिनों तथा इन्दुमति से मुलाकात हुई थी।

प्रभा०। (चारो तरफ देख कर) ठीक है, मगर मैं यहां कैसे आया ?

जमना०। पहले यह बताइये कि अब आपकी तबीयत कैसी है ?

प्रभा०। अब मैं अच्छा हूं होश में हूं और सब कुछ समझ सकता हूं। मगर आश्चर्य में हूं कि यहां कैसे आया।

जमना०। हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थीं जहां आपको बेहोश पड़े हुए देख कर उठा लाईं। उस जगह एक घोड़ा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोड़ा हो।

प्रभा०। बेशक वह मेरा ही घोड़ा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बड़ी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उड़ाये हुए ले आया।

इन्दु०। क्या वह घोड़ा लड़ाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा०। हां, लड़ाई ऐसी गहरी हो गई थी कि संध्या हो जाने पर भी दोनों तरफ की फौजें बराबर दिल तोड़ कर लड़ती ही रह गईं यहां तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुंअर बीरेन्द्रसिंह लड़ते हुए दुश्मन की फौज में घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुंचे जहां कम्बख्त शिवदत्त खड़ा हुआ अपने सिपाहियों को लड़ने के लिए ललकार रहा था। चांद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तकलीफ नहीं मालूम हो सकती थी। महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोड़ा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नहीं दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोड़े की पीठ पर से लुढ़क कर जमीन पर आ रहा। मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लड़ते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, जिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनों ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनों के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला। उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनों हाथों से घोड़े का गला थाम उससे चिपट गया। फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नहीं कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु०। (प्रसन्न होकर) बेशक आपने बड़ी बहादुरी की। घोड़ा भी उस समय

समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये हैं और इसलिये आपको वहां से ले भागा।

प्रभा० । बेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपड़े उतार कर आपके जख्म धोये जायें।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हूं । जख्म मुझे बहुत गहरे नहीं लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पड़ेगी, केवल धोकर साफ कर देना ही काफी होगा ! मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहां से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खड़ा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहां से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे कई लौंडियां भी जाने लगीं । उस समय वहां हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊंगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड़ दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ़ आई और अपने दूसरे हाथ से प्रभाकरसिंह का हाथ थाम कर धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़ी ।

जमना सरस्वती और इन्दुमति वहां से पीछे हट कर एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गईं और इन्तजार करने लगीं कि प्रभाकरसिंह मैदान से होकर लौटें और चश्मे पर जायं तो हम लोग भी उनके पास चलें मगर ऐसा न हो सका क्योंकि घण्टे भर से भी कम देर में सब कामों से छुट्टी पाकर हरदेई के हाथ का सहारा लिये हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चलते हुए उस जगह आ पहुँचे जहां जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई इनका इन्तजार कर रही थीं । जख्मों के विषय में सवाल करने पर प्रभाकरसिंह ने उत्तर दिया कि नहर के जल से मैं सब जख्मों को साफ कर चुका हूं अब उनके विषय में चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है ।

प्रभाकरसिंह भी उन तीनों के पास बैठ गये और लड़ाई के विषय में तरह तरह की बातें करने लगे। जब संध्या होने में थोड़ी देर रह गई और हवा में सर्दी बढ़ने लगी तब सब कोई वहां से उठ कर बंगले के अन्दर चले गये। एक कमरे के अन्दर जाकर प्रभाकरसिंह चारपाई पर लेट रहे। थोड़ी देर तक वहां सन्नाटा रहा क्योंकि जरूरी कामों से छुट्टी पाने तथा भोजन का तैयारी करने के लिए जमना और सरस्वती वहां से चली गईं और केवल चारपाई की पाटी पकड़े हुए इन्दुमति तथा पैर दबाती हुई हरदेई वहां रह गईं।

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह और इन्दुमति में मामूली ढंग पर धीरे धीरे बातचीत होती रही इसके बाद प्रभाकरसिंह ने यह कह कर इन्दुमति को बिदा किया कि 'मैं भूख से बहुत दुःखी हो रहा हूं, जो कुछ तैयार हो थोड़ा बहुत खाने के लिए जल्द लाओ।'

आज्ञानुसार इन्दुमति वहां से उठ कर कमरे के बाहर चली गई और तब प्रभाकरसिंह और हरदेई में धीरे धीरे इस तरह बातचीत होने लगी :—

प्रभा०। हां तुम्हें दर्वाजा खोलने का ढंग अच्छी तरह मालूम हो चुका है?

हरदेई०। जी हां उसके लिये आप कोई चिन्ता न करें।

प्रभा०। मैं तो इसी फिक्र में लगा हुआ था कि पहले किसी तरह दर्वाजा खोलने की तर्कीब मालूम कर लूं तब दूसरा काम करूं।

हरदेई०। नहीं अब आप अपनी कार्रवाई कीजिये, सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना अब मेरे लिये कोई कठिन काम नहीं है।

प्रभा०। (अपने जेब में से एक पुड़िया निकाल कर और हरदेई के हाथ में दे कर) अच्छा तो अब तुम इस दवा को भोजन के किसी पदार्थ में मिला देने का उद्योग करो फिर मैं समझ लूंगा।

हरदेई०। अब इन्दुमति आ जायं तो मैं जाऊं।

प्रभा०। हां मेरी भी यही राय है।

थोड़ी देर बाद चांदी की रकाबी में कुछ मेवा लिए हुए इन्दुमति वहां आ पहुंची, उसके साथ एक लौंडी चांदी के लोटे में जल और एक गिलास लिए हुए थी।

प्रभाकरसिंह ने मेवा खाकर जल पीया और इसी बीच में हरदेई किसी काम के बहाने से उठ कर कमरे के बाहर चल गई।

पन्द्रहवां बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। बंगले के अन्दर जितने आदमी हैं सभी बेहोशी की नींद सो रहे हैं क्योंकि हरदेई ने जो बेहोशी की दवा खाने की वस्तुओं

में मिला दी थी उसके सबब से सभी आदमी (उस अन्न के खाने से) बेहोश हो रहे हैं। हरदेई एक विश्वासी लौंडी थी और जमना तथा सरस्वती उसे जी जान से मानती थीं इसलिए कोई आदमी उस पर शक नहीं कर सकता था, परन्तु इस समय हमारे पाठक बखूबी समझ गये होंगे कि यह हरदेई नहीं है बल्कि जिस तरह भूतनाथ प्रभाकरसिंह का रूप धारण किए हैं उसी तरह भूतनाथ का शागिर्द रामदास हरदेई की सूरत में काम कर रहा है, असली हरदेई को तो वह गिरफ्तार करके ले गया था। और सभों की तरह नकली प्रभाकरसिंह भी अपनी चारपाई पर बेहोश पड़े हुए हैं। हरदेई ने आकर प्रभाकरसिंह को लखलखा सुंघाया और जब वे होश में आ गए तो उनसे कहा, "अब उठिए, काम करने का समय आ गया।"

प्रभा०। कितनी रात जा चुकी है ?

हरदेई०। आधी से ज्यादे।

प्रभा०। सभों के साथ मुझे भी वही अन्न खाना पड़ा, यद्यपि मैंने बहुत कम भोजन किया था तथापि बेहोशी का असर बहुत ज्यादे रहा।

इतना कह प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए और सब तरफ घूम कर देखने लगे कि कहां कौन सोया हुआ है। जमना सरस्वती और इन्दुमति तो उसी कमरे में फर्श के ऊपर सोई हुई थीं जिसमें प्रभाकरसिंह थे और बाकी को सब लौंडियां तथा ऐयार दूसरे कमरे में पड़े हुए थे।

प्रभाकरसिंह ने जमना और सरस्वती की तरफ देख कर हरदेई से कहा, "पहले तो मुझे यह देखना है कि इन लोगों ने किस ढंग पर अपना चेहरा रंगा हुआ है।"

हरदेई०। मैं आपसे कह चुका हूं कि इन लोगों ने एक प्रकार की झिल्ली चेहरे पर चढ़ाई हुई है जिस पर पानी का असर नहीं होता।

प्रभा०। (जमना और सरस्वती के चेहरे पर से झिल्ली उतार कर) बेशक यह एक अनूठी चीज है, इसे मैं अपने पास रक्खूंगा।

हरदेई०। (अथवा रामदास) बेशक यह चीज रखने योग्य है।

प्रभा०। इन लोगों ने भी बड़ा ही उत्पात मचा रक्खा था, आज इनकी चालबाजियों का अन्त हुआ। अब इन्हें शीघ्र ही दुनिया से उठा देना चाहिए नहीं तो एक न एक दिन इन दोनों की बदौलत बड़ा ही अनर्थ हो जायगा और मैं किसी को अपना मुंह दिखाने लायक न रहूंगा। (कुछ सोच कर) मगर मुझसे इनके गले पर छुरी न चलाई जायेगी, यद्यपि मैं इनकी जान लेने के लिए तैयार हूं मगर लाचारी से।

हरदेई०। यदि दया आती हो तो इन्हें किसी कूएं में ढकेल कर निश्चिन्त हो

जाईये। इस जंगल के पीछे की तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ के एक कूआं है जो इस काम के लिए बहुत ही मुनासिब होगा। मैं अच्छी तरह जांच कर चुका हूं कि वह बहुत गहरा और अंधेरा है, उसमें गया हुआ आदमी फिर नहीं निकल सकता।

प्रभा०। अच्छी बात है, दोनों को ले चल कर उसी कूएं में डाल दो, मगर इन्दुमति को मैं अपने घर अर्थात् लामाघाटी में ले जाऊंगा क्योंकि इसकी जुबानी बहुत सी बातों का पता लगाना है।

हरदेई०। मैं इस राय को पसन्द नहीं करता, मैं इन्दुमति को भी उसी कूएं में पहुंचाना मुनासिब समझता हूं।

प्रभा०। (कुछ सोच कर) अच्छा खैर इसे भी उसी में दाखिल करो।

इतना कह कर नकली प्रभाकरसिंह ने जमना को और रामदास ने सरस्वती को उठा कर पीठ पर लाद लिया और उस कूएं पर चले गये जिसका पता रामदास ने दिया था।

यह कूआं बंगले के पश्चिम तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ कर पड़ता था। कूआं बहुत प्रशस्त और गहरा था मगर इसका मुंह इतना छोटा था कि वहां के रहने वालों ने एक मामूली पत्थर की चट्टान से उसे ढांक रक्खा था। कदाचित् रामदास को इसका पता अच्छी तरह लग चुका था इसलिए वह नकली प्रभाकर-सिंह को लिए हुए बहुत जल्द वहां जा पहुंचा। जमना और सरस्वती को जमीन पर रख दोनों ने मिल कर उस कूएं का मुंह खोला और फिर उन दोनों औरतों को एक एक करके उसके अन्दर फेंक दिया। अफसोस! अफसोस! अफसोस! भूतनाथ को इस दुष्कर्म का क्या नतीजा भोगना पड़ेगा इस पर उसने कुछ भी ध्यान न दिया!

दोनों बेचारियों को कूएं में ढकेल कर भूतनाथ ने ध्यान देकर और कान लगा कर सुना कि नीचे गिरने की आवाज आती है या नहीं, मगर किसी तरह की आवाज उसके कान में न गई जिससे उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

उन दोनों को कूएं में ढकेलने बाद रामदास दौड़ा हुआ गया और इन्दुमति को उठा लाया। भूतनाथ ने उसे भी कूएं के अन्दर ढकेल दिया और फिर पत्थर से उसका मुंह उसी तरह ढांक दिया जैसा पहिले था।

इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ और रामदास ने यह सोचा कि अब बाकी की औरतें जो इस घाटी में मौजूद हैं उन्हें भी मार कर बखेड़ा तय कर देना चाहिये क्योंकि इनमें से अगर एक भी जीती रह जायगी तो भण्डा फूटने का डर लगा ही रह जायगा, अस्तु यह निश्चय किया गया कि उन सभों के लिये कोई दूसरा कूआं खोजना चाहिए, क्योंकि जिस कूएं में जमना और सरस्वती तथा इन्दु

को डाला है उसके अन्दर घुस कर देखना उचित है कि उसमें पानी है कि नहीं अथवा उसके अन्दर का क्या हाल है।

आखिर ऐसा ही हुआ। उस कूएं से थोड़ी दूर पहाड़ के कुछ ऊपर चढ़ कर एक कूआं और था जिसका मुंह बहुत चौड़ा था। भूतनाथ और रामदास दोनों आदमी सब बेहोश लौंडियों को बंगले के अन्दर और बाहर से उठा लाये और एक एक करके उस कूएं के अन्दर डाल दिया। आह, भूतनाथ का कैसा कड़ा कलेजा था और यह कैसा घृणित कार्य उसने किया। अब उस घाटी के अन्दर कोई भी न रहा जो इन दोनों की खबर ले।

अब सवेरा हो गया बल्कि सूर्य भगवान भी उदयाचल से निकल कर अपनी आंखों से भूतनाथ और रामदास के कुकर्म देखने लगे।

भूतनाथ और रामदास उस कूएं पर आये जिसमें जमना सरस्वती और इन्दुमति को ढकेल दिया था। भूतनाथ ने रामदास से कहा कि तू कमन्द के सहारे इस कूएं के अन्दर उतर जा और देख कि इसमें पानी है या नहीं।

भूतनाथ की आज्ञानुसार रामदास कमन्द थाम कर उसके अन्दर उतर गया। कमन्द का दूसरा सिरा भूतनाथ ने एक पत्थर से मजबूती के साथ अड़ा दिया था। रामदास ने नीचे आकर आवाज दी—'गुरुजी, यह कूआं इस लायक नहीं था कि इसके अन्दर दुश्मनों को डाला जाता बल्कि यह तो स्वर्ग से भी बढ़ कर सुख देने वाला है। लीजिए अब कमन्द को छोड़ता हूं खैंच लीजिये क्योंकि अब मैं बाहर आने की इच्छा नहीं करता।'

रामदास की बात सुन कर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और जब उसने कमन्द खैंच कर देखा तो वास्तव में उसे ढीला पाया।

सोलहवां बयान

धीरे धीरे बिल्कुल कमन्द खिंच कर भूतनाथ के हाथ में आ गया और तब वह बड़ी ही बेचैनी के साथ कूएं के अन्दर झांक कर देखने लगा मगर अंधकार के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं दिया।

रामदास भुतनाथ का बहुत ही प्यारा शागिर्द था और साथ ही इसके भुतनाथ को उस पर विश्वास भी परले सिरे का था। इस मौके पर हरदेई की सूरत में जो कुछ काम उसने किया था उससे भूतनाथ बहुत प्रसन्न था और समझता था कि मेरा यह होनहार शागिर्द निःसन्देह किसी दिन मेरा ही स्वरूप हो जायगा! केवल इतना ही नहीं, जिस तरह भूतनाथ उसे लड़के के समान मानता था उसी तरह रामदास भी भूतनाथ को पिता-तुल्य मानता था, अस्तु ऐसे रामदास का इस

तरह कूएं के अन्दर जाकर बेमुरौवत हो जाना कोई मामूली बात न थी। इससे भूतनाथ को बड़ा ही सदमा हुआ और उसने ऐसा समझा कि मानों पला पलाया और दुनिया में नाम पैदा करने वाला बराबर का लड़का जिसे निधिरूप समझता था हाथ से निकला जा रहा है। भूतनाथ इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर सकता था और उससे यह नहीं हो सकता था कि रामदास को ऐसी अवस्था में छोड़ कर वहां से चला जाय।

कुछ देर तक सोचने और विचारने के बाद भूतनाथ ने कमन्द का एक सिरा पत्थर के साथ अड़ाया और तब खुद भी उसी के सहारे नीचे उतर गया।

भूतनाथ को विश्वास था कि कूएं के नीचे या तो पानी होगा या बिलकुल सूखे में कला बिमला और इन्दुमति की लाश पावेगा और वहीं अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी देखेगा मगर ये सब कुछ भी बातें न थीं। न तो वह कूआं सूखा था और न उसमें पानी ही दिखाई दिया। इसी तरह कला बिमला इन्दुमति और रामदास का भी वहां नामोनिशान न था। कमर बराबर मुलायम और गुदगुदी घास कूएं की तह में जमी हुई थी जिस पर खड़े होकर भूतनाथ ने सोचा कि कोई आदमी ऊपर से इस घास पर गिर कर चुटीला नहीं हो सकता, अतएव निश्चय है कि कला बिमला और इन्दुमति मरी न होंगी, मगर आश्चर्य है कि यहां उनमें से एक भी नजर नहीं आती और न रामदास ही का कुछ पता है।

उस कूएं की तह में बिलकुल ही अंधकार था इसलिये अच्छी तरह देखने ढूंढ़ने और जांच करने के लिए भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की और बड़े गौर से चारो तरफ देखने लगा।

अन्दर से वह कूआं बहुत चौड़ा था और उसकी दीवारें संगीन थीं। जब कोई आदमी वहां नजर न आया तब भूतनाथ ने उस घास के अन्दर टटोलना और ढूंढ़ना शुरू किया मगर इससे भी कोई काम न चला, हां दो बातें जरूर ताज्जुब की वहां दिखाई पड़ीं। एक तो उस कूएं की दीवार में से (चारो तरफ) थोड़ा थोड़ा पानी टपक कर तह में आ रहा था जिससे सिर्फ वहां की घास जो एक अजीब किस्म की थी बराबर तर और ताजा बनी रहती थी, दूसरे छोटे छोटे दो दर्वाजे भी दीवार में दिखाई दिये जो एक दूसरे के मुकाबले में थे। भूतनाथ बड़े ही आश्चर्य से उन दोनों दर्वाजों को देख रहा था क्योंकि जब कूएं में इधर उधर घूमता तो कभी कोई दर्वाजा (उन दोनों में से) बंद हो जाता और कोई खुल जाता। मगर जब वह कुछ देर तक एक ही जगह पर स्थिर भाव से खड़ा रह जाता तब वे दर्वाजे भी ज्यों के त्यों एक ही ढंग पर कायम रह जाते अर्थात् जो खुल जाता वह खुला

ही रह जाता और जो बन्द होता वह बन्द ही रह जाता। अस्तु भूतनाथ ने समझा कि इन दर्वाजों के खुलने और बन्द होने के लिये वहां की जमीन ही में कदाचित् कोई कमानी लगी हुई हैं। वह बहुत देर तक इधर उधर घूम कर इन दर्वाजों के खुलने और बन्द होने का तमाशा देखता रहा।

इसी बीच में एकाएक गाने की सुरीली आवाज भूतनाथ के कानों में पड़ी जो किसी औरत की मालूम पड़ रही थी और उन्हीं दोनों मे से एक दर्वाजे के अन्दर से आ रही थी तथा थोड़ी देर बाद ही पखावज तथा कई पाजेबों के बजने की आवाज आई जो सम और ताल से खाली न थी। कभी कभी गाने की आवाज एक दम बन्द हो जाती और केवल पाजेब की आवाज सुनाई देती जिससे भास होता कि वे सब औरतें (या जो कोई हों) पखावज की गत से साथ मिल कर नाच रही हैं।

अब भूतनाथ से ज्यादे देर तक ठहरा न गया और वह हाथ में मोमबत्ती लिये हुए उस दर्वाजे के अन्दर घुस गया जिसके अन्दर से गाने तथा घुंघरू के बजने की आवाज आ रही थी।

दर्वाजे के अन्दर पैर रखते ही भूतनाथ को मालूम हो गया कि यहां तो खासी लम्बी चौड़ी इमारत बनी हुई है और ताज्जुब नहीं कि कुछ और आगे बढ़ने से बड़े बड़े दालान और कमरे भी दिखाई पड़ें। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी।

कुछ दूर आगे बढ़ते ही भूतनाथ ने उजाला पाया और देखा कि एक सुन्दर दालान में चार या पांच औरतें हाथ में मशाल लिये खड़ी हैं और कई औरतें गा बजा तथा कई नाच रही हैं। यद्यपि भूतनाथ के दिल में आगे बढ़ कर देखने और उन लोगों को पहिचानने का उत्साह भरा हुआ था मगर साथ ही इसके वह डरता भी था कि आगे बढ़ने से कहीं मुझ पर कोई आफत न आवे।

भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा कर बटुए में रख ली और हाथ में खंजर लेकर दबे कदम धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। ओफ, यह क्या भूतनाथ के लिये कोई कम आश्चर्य की बात है कि उन औरतों में भूतनाथ ने अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी नाचते हुए देखा और मालूम किया कि वह अपनी धुन में ऐसा मस्त हो रहा है कि उसे किसी बात की मानो परवाह ही नहीं है। सबसे ज्यादे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह (रामदास) भूतनाथ को देख कर बहुत रंज हुआ और कड़े शब्दों को बौछार करते हुए उसने भूतनाथ को निकल जाने के लिए कहा।

॥ दूसरा भाग समाप्त ॥

२६ वां संस्करण] १६७५ ई० [१२५० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्री: ॥

भूतनाथ

तीसरा भाग

पहिला बयान

काशी शहर के बाहर उत्तर तरफ लाट भैरव का एक प्रसिद्ध स्थान है। पास ही में एक पक्का तालाब है और स्थान के इर्द गिर्द कई पक्के कूएं भी हैं। वही पक्का तालाब कपालमोचन तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। काशी खण्ड में वहां स्नान करने का बड़ा ही माहात्म्य लिखा है। इस तालाब के कोने पर (कुछ हट के) एक कूआं है जिसकी जगत बहुत ऊंची है और ऊपर बैठने का स्थान भी बहुत प्रशस्त है तथा सीढ़ी के दोनों तरफ छोटे छोटे दो दालान भी बने हैं जिनसे मुसाफिरों और यात्रियों का बहुत उपकार होता है तथा काशी के मनचले और आशिक मिजाज लोगों को सैल सपाटे के समय (यदि बरसात का मौसम हो तो) रोटी बाटी बनाने में भी अच्छी सहायता मिलती है।

इस तालाब या कूएं के पास में सिवाय जंगल मैदान के किसी गृहस्थ का कोई कच्चा या पक्का मकान नहीं। अगर यहां दस पांच आदमी आपस में लड़ भिड़ जांय तो पास से किसी अड़ोसी पड़ोसी की सहायता भी नहीं मिल सकती।

इसी कूएं पर संध्या होने से कुछ पहिले हम काशी के पांच सात खुशमिजाज आदमियों को बैठे हंसी दिल्लगी करते तथा भंग बूटी के इन्तजाम में व्यस्त देख रहे हैं। कोई भंग धो रहा है, कोई पीसने का चिकना पत्थर धोकर जगह साफ करने की धुन में है, कोई टिकिया सुलगा रहा है और कोई गोरैया (मिट्टी के हुक्के) में पानी भर रहा है, इत्यादि तरह तरह के काम में सब लगे हुए हैं और साथ ही साथ अपनी बनारसी अधकचरी तथा अक्खड़ भाषा में हंसी दिल्लगी भी करते जाते

हैं। उनकी बातें भी सुनने के ही लायक हैं। यद्यपि इससे किसी तरह का उपकार तो नहीं हो सकता परन्तु मनबहलाव जरूर है और एक प्रकार की जानकारी भी हो सकती है अस्तु सुनिए तो सही।

एक०। (जो भंग धो रहा था) यार, देखो सारे दूकानदार ने मुफ्त ही चार पैसे ले लिए। हमें तो यह भंग दो पैसे की भी जमा नहीं दिखाई देती। यह देखो निचोड़ने पर मुट्ठी भर के भी नहीं होती!

दूसरा०। (उचक के देख के) हां यार, यह तो कुछ भी नहीं है। तू हूं निरे गोखे ही रह्यो, पहिले काहे नहीं कहा, सारे की टोपी उतार लेते और ऐसा गड्डो देते कि जनम भर याद रखता।

तीसरा०। ऐसे ही तो जमा मार मार के सरवा मुटा गया है, तोंद कैसी निकली हुई है सारे की।

चौथा०। अच्छा अब कल समझेंगे चौधर से।

पांचवां०। कल आती दफे धीरे से उसकी दौरी ही उलट देंगे, ज्यादे बोलेगा तो लड़ जांयगे और गुल करेंगे कि चार आना पैसा तो ले लिहिस है मगर भांग देता ही नहीं।

छठा०। (जो भला आदमी और कुछ पैसे वाला भी मालूम होता है क्योंकि उसके गले में सोने की सिकरी पड़ी हुई थी) नहीं नहीं ऐसा न करना, कोई जान पहिचान का देख लेगा और जा कर कह देगा तो मुफ्त की झाड़* सुनना पड़ेगी।

दूसरा०। अरे रहो बाबू साहब, हम लोगन के साथ आया करो तो ऐसी भल-मनसी घर छोड़ आया करो, हम लोग ऐसा दबा करें तो दिन दुपहरिए लुट जांय।

लेखक०। कंगाल बांकड़े भी खूब ही लुटा करते होंगे!

सातवां०। (सुलग गई हुई टिकिया हाथ में हिलाते हु) अर यारो ये बाबू साहब ठहरे महाजन आदमी, भला ई लोग लड़ना भिड़ना का (क्या) जानें, चाहे कोई धोती उतार के ले जाय। ई (यह) हम ही लोगन (लोगों) के काम हो कि कोई आंख दिखावे तो कान उपार (उखाड़) लेईं। हमी लोगन की बदौलत बाबू साहब बचत भी जात हैं, नहीं तो गूदड़ सफरदा सरवा ऐसा रंग बांधे लगा था कि बस कुछ पूछो नहीं, ओ रोज (उस दिन) चियड़ू न होते तो गले को सिकरिये उतार लिए होता।

छठां०। (अर्थात् बाबू साहब) हां यह बात तो ठीक है और जी में तो उसी रोज आ गया था कि अब आज से इस रास्ते को छोड़ दें और रंडी मुंडी का नाम

---

* झाड़ अर्थात् डांट।

भी न लें बल्कि कसम खाने के लिए भी तैयार हो गया था मगर क्या करें, 'नागर' की मुहब्बत ने ऐसा करने नहीं दिया, वह बेशक मुझे प्यार करती है और मुझ पर आशिक है।

सातवां०। (मुस्कुराते हुए) बल्कि तुम पर मरती है ! एक दिन हमसे कहती थी कि बाबू साहब हमें छोड़ देंगे तो हम जहर खा लेंगे !!

इसी तरह ये लोग बेतुकी और अक्खड़पन लिये हुए मिश्रित भाषा में बातचीत कर रहे थे कि यकायक विचित्र ढंग का एक नया मुसाफिर यहां आ पहुंचा और उसने कूएं के ऊपर चढ़ते हुए इस सातवें आदमी की बात बखूबी सुन ली। इस आदमी की उम्र का पता लगाना जरा कठिन है, तथापि बाबू साहब की निगाह में वह पैंतीस वर्ष का मालूम पड़ता था। कद जरा लम्बा और चेहरा रोआबदार था। कपड़े की तरफ ध्यान देकर कोई नहीं कह सकता था कि यह किस देश का रहने वाला है। भीतर चाहे जैसी पोशाक हो मगर ऊपर एक स्याह अबां डाले हुए था और एक छोटी सी गठरी हाथ में थी।

पहिले से जो लोग उस कूएं पर बैठे हंसी दिल्लगी कर रहे थे उनके दिल में आया कि इस नये मुसाफिर से कुछ छेड़ छाड़ करें और यहां से भगा दें क्योंकि वास्तव में काशी के रहने वाले अक्खड़ मिजाज लोगों की आदत ही ऐसी होती है, जहां इस मिजाज के चार पांच आदमी इकट्ठे होते हैं वहां वे लोग अपने आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं और दूसरे लोगों से बिना दिल्लगी किये नहीं रहते।

एक०। (नये मुसाफिर से) कहां रहते हो साहब ?

मुसाफिर०। गयाजी।

दूसरा०। यहां कब आये ?

मुसाफिर०। आज ही तो आये हैं।

दूसरा०। तभी आप इस कूएं पर आए हैं, अगर कोई जानकार होता तो यहां कभी न आता।

मुसाफिर०। सो क्यों ?

चौथा०। यहां शैतान और जिन्न लोग रहते हैं, जो कोई नया मुसाफिर आता है उसे चपत लगाए बिना नहीं रहते।

मुसाफिर०। ठीक है, तो तुम लोगों को भी उन्होंने चपत लगाया होगा ?

दूसरा०। (चिढ़ कर, जोर से) हम लोगों से वे लोग नहीं बोल सकते क्योंकि हम लोग यहां के रहने वाले हैं और उन सभों के दोस्त हैं !

मुसाफिर०। बेशक शैतान के दोस्त शैतान ही होते हैं!

चौथा०। क्यों बे, मुंह सम्हाल के नहीं बोलता!

मुसाफिर०। अबे तबे करोगे बच्चा तो ठीक करके रख देंगे! हमें कोई मामूली मुसाफिर न समझना!!

पांचवां०। (ललकार कर) मार सारे के, दे अढ़ैया चपत।

इतना कह कर पांचवां आदमी उठा और मुक्का तान कर उस मुसाफिर की तरफ झपटा। मारना ही चाहता था कि मुसाफिर ने हाथ पकड़ लिया और ऐसा झटका दिया कि वह कूएं के नीचे जा गिरा और बहुत चुटीला हो गया। यह कैफियत देखते ही बाबू साहब तो डर के मारे कूएं के नीचे उतर गये और किसी झाड़ी में जाकर छिप रहे मगर बाकी के आदमी सब उस मुसाफिर पर जा टूटे और एक ने अपनी कमर में से एक छुरी भी निकाल ली मगर मुसाफिर ने उन सभों की कुछ भी पर्वाह न की। बात की बात में उसने और तीन आदमियों को कूएं के नीचे ढकेल दिया और उसके बाद कमर से खंजर निकाल कर मुकाबिले को तैयार हो गया। खंजर की चमक देखते ही सभी का मिजाज ठण्डा हो गया और मेल माफत के ढंग की बातचीत करने लगे, मगर मुसाफिर का गुस्सा कम न हुआ और उसने लात तथा मुक्कों से खूब सभों की मरम्मत की इसके बाद एक किनारे हट कर खड़ा हो गया और बोला, "कहो अब क्या इरादा है?"

मुसाफिर की हिम्मत और मर्दानगी देख कर सभों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उनको इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यह अकेला आदमी हम लोगों को इस तरह नीचा दिखा देगा। सभों ने समझा कि यह जरूर कोई राक्षस या जिन्न है जो आदमी का रूप धर के हम लोगों को छकाने के लिए आया है, अस्तु किसी ने भी उसकी बातों का जवाब नहीं दिया बल्कि डरते हुए अपना सामान और कपड़ा लत्ता उठा कर भागने के लिए तैयार हो गये मगर मुसाफिर ने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा, "देखो तुम लोगों ने जान बूझ कर मुझसे छेड़खानी की और तकलीफ उठाई अस्तु अब शान्त होकर बैठो और अपना अपना काम करो। तुम्हारे कई साथियों को सख्त चोट आ गई है सो उसे धो कर पट्टी बांधो और कुछ देर आराम लेने दो, और हां यह तो बताओ कि तुम्हारे वह सुन्दर सलोने बाबू साहब कहां चले गये जिन पर बीबी नागर आशिक हो गई हैं?"

एक०। न मालूम कहां चला गया, ऐसा भग्गू आदमी....

दूसरा०। जाने दो, अगर भाग गया तो जहन्नुम में जाय, उसी के सबब से

तो हम लोग तकलीफ उठाते हैं।

मुसाफिर०। नहीं नहीं, भागो मत, अपने साथी को आने दो बल्कि खोजो कि वह कहां चला गया है। यह कोई भलमनसी की बात नहीं है कि उसे इस तरह छोड़ कर सब कोई चले जाओ, हम तुम लोगों को कभी न जाने देंगे और खास करके तुम्हारे सुन्दर सलोने से तो जरूर ही बातचीत करेंगे।

मुसाफिर की बातों ने उन लोगों को और भी परेशान कर दिया। उसका रोब इन सभों पर ऐसा छा गया था कि उसकी तरफ आंख उठा कर देख नहीं सकते थे और उसे आदमी नहीं बल्कि देवता या राक्षस समझने लग गये थे, अस्तु उसका रोकना इन लोगों को और भी बुरा मालुम हुआ और सभों ने डरते हुए हाथ जोड़ कर कहा, "बस अब कृपा कीजिए और हम लोगों को जाने दीजिए।"

मुसाफिर०। नहीं नहीं यह कभी न होगा, पहले तुम अपने साथी को तो खोजो।

एक०। अब हम उसे कहां खोजें?

मुसा०। चलो हम भी तुम लोगों के साथ मिल कर उसे खोजें। वह कहीं दूर न गया होगा इसी जगह किसी झाड़ी में छिपा होगा। तुम लोग डरो मत, अब हमारी तरफ से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न पहुंचेगी।

यद्यपि मुसाफिर ने उन लोगों को बहुत दिलासा दिया और समझाया मगर उन लोगों का जी ठिकाने न हुआ और डर उनके दिल से न गया बल्कि इस बात का ख्याल हुआ कि यह मुसाफिर बाबू साहब को खोजने के लिए जिद्द करता है तो इसमें कोई भेद जरूर है, बेशक बाबू साहब को खोज कर उन्हें तकलीफ देगा। मगर जो हो उन सभों को खोजना ही पड़ा।

उधर बाबू साहब उस कूएं के पास ही एक झाड़ी में छिपे हुए सब देख सुन रहे थे और डर के मारे उनका तमाम बदन कांप रहा था। जब उन्होंने देखा कि वह राक्षस सभों को लिए हुए उनकी खोज में कूएं के नीचे उतरा है तब तो वह एक दम घबड़ा उठे और उनके मुंह से हजार कोशिश कर के रोकने पर भी एक चीख की आवाज निकल ही पड़ी। आवाज सुनते ही वह मुसाफिर समझ गया कि इसी झाड़ी के अन्दर बाबू साहब छिपे हुए हैं, झपट कर वहां जा पहुंचा और झाड़ी के अन्दर से हाथ पकड़ के बाबू साहब को बाहर निकाला। मालूम होता था कि बाबू साहब को इस समय जड़ैया बुखार चढ़ आया है। उनका तमाम बदन तेजी के साथ कांप रहा था। बाबू साहब जल्दी से मुसाफिर के पैरों पर गिर पड़े और आंसू बहाते हुए बोले, "ईश्वर के लिए मुझे माफ करो, मैं बड़ा ही गरीब हूं

किसी के भले बुरे से मुझे कुछ सरोकार नहीं, मैंने आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ा है।"

मुसा०। डरो मत मैंने तुम्हें किसी बुरी नीयत से नहीं ढूंढ़ा है, ये लोग तुम्हें यहां जंगल में छोड़ कर भागे जाते थे। इसीलिए मैंने सभी को रोक लिया और कहा कि अपने साथी को खोज कर अपने साथ लिये जाओ। अब तुम बेखौफ होकर अपने दोस्तों के साथ अपनी प्यारी नागर के पास चले जाओ मुझसे विलकुल मत डरो।

मुसाफिर की बातों से बाबू साहब को कुछ ढाढ़स हुई, वे सम्हल कर उठ खड़े हुए और मुसाफिर से कुछ कहा ही चाहते थे कि पास की दूसरी झाड़ी में से एक दूसरा आदमी निकल कर झपटता हुआ इन सभों के पास आ पहुंचा और मुसाफिर की तरफ देख के बोला, "तुम क्यों इस बेचारे सीधे और डरपोक आदमी को तंग कर रहे हो, नहीं जानते कि तुम्हारा गुरु चन्द्रशेखर इसी जगह छिपा हुआ तुम्हारी शैतानी का तमाशा देख रहा है!"

उस आदमी की सूरत शक्ल का अंदाजा नहीं मिल सकता था क्योंकि उसका तमाम बदन स्याह कपड़े से छिपा हुआ था और चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई थी, मगर वह मुसाफिर उसकी बात सुन कर बड़े गौर में पड़ गया और आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखने लगा।

मुसाफिर०। तुम कौन हो, पहिले अपना परिचय दो तब मैं तुमसे कुछ बात करूं।

नया आदमी०। तुम्हारा मुंह इस योग्य नहीं है कि मुझसे बात करो और परिचय के लिये यही काफी है कि मेरा नाम चन्द्रशेखर है। लेकिन अगर इससे भी विशेष कुछ जानने की इच्छा हो तो मैं और भी कुछ कहने के लिये तैयार हूं! आह, वह धोखा देने वाली चांदनी रात। बात की बात में चन्द्रमा बादलों में छिप गया और अंधकार हो जाने के कारण तरह तरह की भयानक सूरतें दिखाई देने लगीं। उसी समय पहिले एक स्याह रंग का ऊंट दिखाई दिया जिसके सिर पर लम्बे सींघ बिजली की तरह चमक रहे थे।

मुसाफिर०। (डर के मारे कांपता और पीछे की तरफ हटता हुआ) बस-बस! मैं समझ गया कि तुम कौन हो!!

चन्द्रशे०। उसके बाद एक सफेद रंग का हाथी दिखाई दिया जिस के ऊपर नागर और मनोरमा मशाल लिये हुई थीं और जोर जोर से श्यामलाल को पुकार रही थीं क्योंकि वे चाहती थीं कि किसी तरह खून से लिखी हुई किताब उनके हाथ लगे।

मुसाफिर०। (हाथ जोड़ कर) मैं कह चुका और फिर भी कहता हूं कि बस

करो, माफ करो, दया करो, मैं तुम्हें पहिचान गया, अगर तुम्हें कुछ कहना ही हो तो किनारे चल कर कहो जिसमें कोई तीसरा न सुनने पावे।

चन्द्रशेखर०। नहीं नहीं, मैं इसी जगह सब के सामने ही कहूंगा क्योंकि इन बाबू साहब का इस मामले से बहुत ही घना सम्बन्ध है तथा इनके साथी लोग भी इसी जगह आकर इकट्ठे हो गये हैं और आश्चर्य भरी निगाहों से हम दानों का तमाशा देख रहे हैं। हां तो मैं क्या कह रहा था ? अच्छा, अब याद आया, उसी अंधेरी रात में एक बिल्ली भी आ पहुँची जो अपने मुंह में लम्बी गर्दन वाला स्याह रंग का ऊंट दबाये हुए थी और ऊंट के माथे पर लिखा हुआ था—

"सर्वगुण सम्पन्न चांचला सेठ।"

"बस बस बस !" कहता हुआ मुसाफिर पीछे की तरफ हटा और कांपता हुआ जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

इस नए आए हुए व्यक्ति तथा इस मुसाफिर की बातचीत से सभी को आश्चर्य तो हुआ ही था परन्तु मुसाफिर की अन्तिम अवस्था देख कर सभों को बड़ा विस्मय और आनन्द भी हुआ। इसके बाद जब मुसाफिर खौफ से बेहोश हो गया और नये आदमी अर्थात् चन्द्रशेखर ने बाबू साहब तथा उनके साथियों को बहुत जल्द वहां से चले जाने के लिए कहा तब वे लोग इस तरह वहां से भागे जैसे बाज के झपट्टे से बची हुई चिड़ियाएं भागती हैं। जब वे लोग तेजी के साथ चल कर घने मुहल्ले में पहुंचे तब उन लोगों का जी ठिकाने हुआ और उन्होंने समझा कि जान बची।

दूसरा बयान

पाठक महाशय, अब हम कुछ हाल जमानिया का लिखना मुनासिब समझते हैं और उस समय का हाल लिखते हैं जब राजा गोपालसिंह की कम्बख्ती का जमाना शुरू हो चुका था और जमानिया में तरह तरह की घटनायें होने लग गई थीं। जमानिया तथा दारोगा और जैपाल वगैरह के सम्बन्ध की बातें जो चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखी जा चुकी हैं उन्हें हम इस ग्रन्थ में बिना कारण लिखना उचित नहीं समझते, उनके अतिरिक्त और जो बातें हुई हैं उन्हें लिखने की इच्छा है, हां यदि मजबूरी से कोई जरूरत आ ही पड़ेगी तो बेशक पिछली बातें संक्षेप के साथ दोहराई जायंगी और राजा गोपालसिंह की शादी के पहिले का कुछ हाल लिखा जायगा। इसका कारण यही है कि यह भूतनाथ चन्द्रकान्ता सन्तति का परिशिष्ट भाग समझा जाता है।

अपने संगी साथियों को साथ लिए हुए बाबू साहब जो भागे तो सीधे अपने घर की तरफ नहीं गये बल्कि नागर रंडी के मकान पर चले गये क्योंकि बनिस्वत अपने घर के उन्हें उसी का घर प्यारा था और उसी को वे अपना हमदर्द और दोस्त समझते थे। जिस समय वे उस जगह पहुंचे तो सुना कि नागर अभी तक बैठी हुई उनका इन्तजार कर रही है। बाबू साहब को देखते ही नागर उठ खड़ी हुई और बड़ी खातिरदारी के साथ उनका हाथ पकड़ कर अपने पास एक ऊंची गद्दी पर बैठाया और मामूल के खिलाफ आज देर हो जाने का सबब पूछा, मगर बाबू साहब ऐसे बदहवास हो रहे थे कि उनके मुंह से कोई बात न निकलती थी। उनकी ऐसी अवस्था देख नागर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उसने लाचार होकर उनके साथियों से उनकी परेशानी और बदहवासी का कारण पूछा।

बाबू साहब कौन हैं और उनका नाम क्या है इसका पता अभी तक नहीं मालूम हुआ, खैर इसके जानने की विशेष आवश्यकता भी नहीं जान पड़ती इसलिए अभी उन्हें बाबू साहब के नाम ही से सम्बोधित करने दीजिए आगे चलकर देखा जायगा।

बाबू साहब ने अपनी जुबान से अपनी परेशानी का हाल यद्यपि नागर से कुछ भी नहीं कहा मगर उनके साथियों की जुबानी उनका कुल हाल नागर को मालूम हो गया और तब नागर ने दिलासा देते हुए बाबू साहब से कहा, "यह तो मामूली घटना थी।"

बाबू साहब०। जी हां, मामूली घटना थी! अगर उस समय आप वहां होतीं तो मालूम हो जाता कि मामुली घटना कैसी होती है!

नागर०। (मुस्कुराती हुई) खैर किसी तरह मुंह से बोले तो सही!

बाबू साहब०। पहिले यह तो बताओ कि नीचे का दर्वाजा तो बन्द है? कहीं कोई आ न जाय और हम लोगों की बातें न सुन ले।

नागर०। आप जानते हैं कि आपके आने के साथ ही लौंडियां फाटक बन्द कर दिया करती हैं। हमारे यहां सिवाय आपके दूसरे किसी ऐसे सर्दार का आना जाना तो है ही नहीं कि जिससे मुझे किसी तरह का लगाव या मुहब्बत हो, हाँ बाजार में बैठा करती हू इसलिए कभी कभी कोई मारा पीटा आ ही जाया करता है, सो भी जब आप आते हैं तो उसी वक्त फाटक बन्द कर दिया जाता है।

बाबू साहब इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि एक आदमी यह कहता हुआ कमरे के अन्दर दाखिल हुआ, "झूठ भी बोलना तो मुंह पर!"

इस आदमी की सूरत देखते ही बाबू साहब चौंक पड़े और घबराहट के साथ

बोल उठे, "यही तो है !"

यह वही आदमी था जिसे बाबू साहब और उनके संगी साथियों ने कपालमोचन के कूएं पर देखा था और जिसके डर से अभी तक बाबू साहब की जान पर सदमा हो रहा था ।

बाबू साहब की ऐसी हालत देख कर उस आदमी ने जो अभी अभी आया था कहा, "डरो मत, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं बल्कि दोस्त हूं ।" इतना कह उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी एक किनारे रख दी और मामूली कपड़े उतार कर इस तरह खूटियों पर सजा दिये कि जैसे यह उसी का घर हो या इस घर पर उसका बहुत बड़ा अधिकार हो और नित्य ही वह यहां आता जाता हो ।

यह आदमी असल में भूतनाथ (गदाधरसिंह) था जिससे नागर की गहरी दोस्ती थी मगर बाबू साहब को इसकी कुछ भी खबर न थी और न कभी ऐसा ही इत्तिफाक हुआ था कि इस जगह पर इन दोनों का सामना हुआ हो । हां बाबू साहब ने गदाधर-सिंह का नाम जरूर सुना था और यह भी सुना था कि वह मामूली आदमी नहीं है ।

नागर ने जिस खातिरदारी और आवभगत के साथ भूतनाथ का सम्मान किया और प्रेम दिखाया उससे बाबू साहब को मालूम हो गया कि नागर बनिस्बत मेरे इस आदमी को बहुत प्यार करती है ।

खूंटियों पर कपड़े रख कर भूतनाथ बाबू साहब के पास बैठ गया और बोला, "भला मैंने आपको क्या तकलीफ दी है जो आप मुझसे इतना डरते हैं ? एक ऐयाश और खुशदिल आदमी को इतना डरपोक न होना चाहिए । आप मुझे शायद पहि-चानते नहीं, मेरा नाम गदाधरसिंह है, आपने अगर मुझे देखा नहीं तो नाम जरूर ही सुना होगा ।"

बाबू साहब० । (आश्चर्य और डर के साथ) हां मैंने आपका नाम सुना है और अच्छी तरह सुना है ।

नागर० । (मुस्कुराती हुई, बाबू साहब से) आपके तो अब ये गहरे रिश्तेदार हो गये हैं फिर भी आप इन्हें न पहिचानेंगे ।

बाबू साहब० । (कुछ शर्माते हुए) हां हां मैं बखूबी जानता हूं मगर पहिचानता नहीं था, अफसोस की बात है कि इतने दिनों तक इनसे कभी मुलाकात नहीं हुई ।

नागर० । (बाबू साहब से) आपसे इनसे कुछ नातेदारी भी तो है ?

बाबू साहब० । हां, मेरी मौसेरी बहिन रामदेई* इनके साथ ब्याही है । आज

* रामदेई—नानक की मां, जिसका जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है।

अगर मुझे इस बात की खबर होती कि आप ही मेरे बहनोई हैं तो मैं उस कूएं पर इतना परेशान न होता बल्कि खुशी के साथ मुलाकात होती। (भूतनाथ से) हाँ यह तो बताइये कि वह चन्द्रशेखर कौन था जिसके खौफ से आप परेशान हो गये थे।

गदाधरसिंह०। (कुछ डर और संकोच के साथ) वह मेरा बहुत पुराना दुश्मन है। मेरे हाथ से कई दफे जक उठा चुका और नीचा देख चुका है, अब वह मुझसे बदला लेने की धुन में लगा हुआ है। आज बड़े बेमौके मिल गया था क्योंकि मैं बेफिक्र था और वह हर तरह का सामान लेकर मेरी खोज में निकला था।

बाबू साहब०। आखिर हम लोगों के चले आने के बाद क्या हुआ? आपसे और उससे कैसी निपटी?

गदाधर०। मैं इस मौके को बचा गया और लड़ता हुआ धोखा देकर निकल भागा। खैर फिर कभी देखा जायगा, अबकी दफे उस साले को ऐसा छकाऊंगा कि वह भी याद करेगा।

चन्द्रशेखर का नाम सुन कर नागर चौंक पड़ी और उसके चेहरे का रंगत बदल गई। मालूम होता था कि वह भूतनाथ से कुछ पूछने के लिए उतावली हो रही है मगर बाबू साहब के खयाल से चुप है और चाहती है कि किसी तरह बाबू साहब यहा से चले जायें तो बात करे।

बाबू साहब०। (भूतनाथ से) ठीक है वह बेशक आपका दुश्मन है, आज आठ दस दिन हुए होंगे कि वह मुझसे बरना* के किनारे एकान्त में मिला था। उस समय उसके साथ तीन चार औरतें भी थीं जिनमें से एक का नाम बिमला था।

गदाधर०। (चौंक कर) बिमला?

बाबू साहब०। हां बिमला, और एक मर्द भी उसके साथ था जिसे उसने एक दफे प्रभाकरसिंह के नाम से सम्बोधन किया था।

गदाधर०। (घबड़ा कर) क्या तुम उस समय उसके सामने मौजूद थे?

बाबू साहब०। जी नहीं, मैं उन सभों को वहां आते देख एक झाड़ी में छिप गया था।

गदाधर०। तब तो तुमने और भी बहुत सी बातें सुनी होंगी।

बाबू साहब०। नहीं मैं कुछ विशेष बातें न सुन सका, हाँ इतना जरूर मालूम हुआ कि वह मनोरमा से और जमानिया के राजा से मिलने का उद्योग कर रहा है।

गदाधर०। (कुछ सोच कर और बाबू साहब की तरफ घिसक कर) बेशक

---

* काशी के उत्तर बहती हुई नदी का नाम वरुणा है।

आपने और भी बहुत सी बातें सुनी होंगी, और यह भी मालूम किया होगा कि वे औरतें वास्तव में कौन थीं।

बाबू साहब०। सो मैं कुछ भी न जान सका कि वे औरतें कौन थीं या वहां पहुंचने से उन लोगों का क्या मतलब था।

गदाधर०। खैर मैं थोड़ी देर के लिए आपकी बातें मान लेता हूं।

नागर०। (बाबू साहब से) मगर मैंने तो सुना था कि आपका और उन लोगों का सामना हो गया था और आप उसी समय उनके साथ कहीं चले भी गए थे।

बाबू साहब०। (घबड़ाने से होकर) नहीं नहीं मेरा उनका सामना बिल्कुल नहीं हुआ बल्कि मैं उन लोगों को उसी जगह छोड़ कर छिपता हुआ किसी तरह निकल भागा और अपने घर चला आया क्योंकि मुझे उन लोगों की बातों से कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर मुझे जरूरत ही क्या थी कि छिप कर उन लोगों की बात सुनता या उन लोगों के साथ कहीं जाता।

नागर०। शायद ऐसा ही हो, मगर जिसने मुझे यह खबर दी थी उसे झूठ बोलने की आदत नहीं है।

बाबू साहब०। तो उसने धोखा खाया होगा। अथवा किसी दूसरे को मौके पर देखा होगा।

नागर ने इस मौके पर जो कुछ बाबू साहब से कहा वह केवल धोखा देने की नीयत से था और वह चाहती थी कि बातों के हेर फेर में डाल कर बाबू-साहब से कुछ और पता लगा ले, अस्तु जो कुछ हो मगर इस खबर ने भूतनाथ को बहुत ही परेशान कर दिया और वह सर नीचा कर तरह तरह की बातें सोचने लगा। उसे इस बात का निश्चय हो गया कि बाबू साहब ने जो कुछ कहा है वह बहुत कम है अथवा जान बूझ कर वे असल बातों को छिपा रहे हैं।

कुछ देर तक सिर झुका कर सोचते सोचते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने कुछ तीखी आवाज में बाबू साहब से कहा—

गदाधर०। सुनिए रामलालजी*, इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप मेरे नातेदार हैं और इस ख्याल से मुझे आपका मुलाहिजा करना चाहिए मगर ऐसी अवस्था में जब कि आप मुझसे झूठ बोलने और मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं अथवा यों कह सकते हैं आप मेरे दुश्मन से मिल कर उसके मददगार बनते हैं तो मैं आपका मुलहिजा कुछ भी न करूंगी! हां यदि आप मुझसे सब कुछ साफ साफ कह दें तो फिर मैं भी........

---

* बाबू साहब का असली नाम रामलाल था।

रामलाल० । (अर्थात् बाबू साहब) ठीक है, अब मुझे मालूम हो गया कि उन औरतों से और प्रभाकरसिंह से आप डरते हैं, यदि यह बात सच है तो डरपोक और कमजोर होने पर भी मैं आपसे डरना पसन्द नहीं करता ......

रामलाल ने अपनी बात पुरी भी नहीं की थी कि सीढ़ियों पर से जिसका दर्वाजा इन लोगों के सामने ही था तेजी के साथ एक नकाबपोश आया और एक लिफाफा भूतनाथ के सामने फेंक कर यह कहता हुआ वहां से निकल गया—"बेशक डरने की कोई जरूरत नहीं है, और खास कर ऐसे आदमी से जो पूरा नमकहराम और बेईमान है तथा जिसने अपने मालिक और दोस्त दयाराम को अपने हाथ से जख्मी किया था, ईश्वर की कृपा थी कि वह बेचारा बच गया और जमानिया में बैठा हुआ भूतनाथ के इस्तकबाल की कोशिश कर रहा है।"

इस आवाज ने भूतनाथ को एक दम परेशान कर दिया। उसने लिफाफा खोल कर चिट्ठी पढ़ने का इन्तजार न किया और खंजर के कब्जे पर हाथ रखता हुआ तेजी के साथ दर्वाजे पर और फिर सीढ़ियों पर जा पहुँचा मगर किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी। वह धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियों के नीचे उतर आया और फाटक के बाहर निकलने पर उस नकाबपोश को कुछ दूरी पर जाते हुए देखा। भूतनाथ ने उसका पीछा किया मगर वह गलियों में घूम फिर कर ऐसा गायब हुआ कि भूतनाथ को उसकी गंध तक न मिली और अन्त में वह लाचार होकर नागर के मकान में लौट आया। आने पर उसन देखा कि बाबू साहब नहीं हैं कहीं चले गये। तब उसने उस लिफाफे की खोज की जो नकाबपोश उसके सामने फेंक गया था और देखना चाहा कि उसमें क्या लिखा हुआ है।

लिफाफा वहां मोजूद न देख कर भूतनाथ ने नागर से पूछा, "क्या वह लिफाफा तुम्हारे पास है ?"

नागर० । हां तुमको उस नकाबपोश के पीछे जाते देख मैं भी तुम्हारे पीछे पीछे सीढ़ियां उतर कर फाटक तक चली गई थी, जब तुम दूर निकल गये तब मैं वापस लौट आई और देखा कि बाबू साहब उस लिफाफे को खोल कर चीठी पढ़ रहे हैं। मुझको उसकी ऐसी नालायकी पर क्रोध चढ़ आया और मैंने उसके हाथ से वह चीठी छीन कर बहुत कुछ बुरा भला कहा जिस पर वह नाराज होकर यहां से चला गया।

भूतनाथ० । यह बहुत बुरा हुआ कि उसने यह चीठी पढ़ ली। फिर तुमने उसे जाने क्यों दिया ? मैं उसे बिना ठीक किए कभी न रहता और बता देता कि इस तरह की बदमाशी का क्या नतीजा होता है।

नागर० । खैर अगर भाग भी गया तो क्या हर्ज है, जब तुम उसे सजा देने पर तैयार हो ही जाओगे तो क्या वह तुम्हारे हाथ न आवेगा ?

भूत० । खैर वह चीठी कहां है जरा दिखाओ तो सही ।

नागर० । (खुला हुआ लिफाफा भूतनाथ के हाथ में देकर) लो यह चीठी है ।

भूतनाथ० । (चीठी पढ़ कर) क्या तुमने भी यह चीठी पढ़ी है ?

नागर० । नहीं मगर यह सुनने की इच्छा है कि इसमें क्या लिखा है ?

भूत० । (पुनः उस चीठी को अच्छी तरह पढ़ के और लिफाफे को गौर से देख कर) अन्दाज से मालूम होता है कि इस लिफाफे में केवल यही एक चीठी नहीं बल्कि और भी कोई कागज था ।

नागर० । शायद ऐसा ही हो और बाबू साहब ने कोई कागज निकाल लिया हो तो मैं नहीं कह सकती ।

भूत० । खैर देखा जायगा, मेरा द्रोही मुझसे बच के कहां जा सकता है, फिर भी आज मैं जिस नियत से तुम्हारे पास आया था वह न हो सका, अच्छा अब मैं जाता हूं।

नागर० । नहीं नहीं, मैं तुम्हे इस समय जाने न दूंगी, मुझे बहुत सी बातें तुमसे पूछनी और कहनी हैं । मुझे इस बात का दिन रात खुटका बना रहता है कि कहीं तुम अपने दुश्मनों के फेर में न पड़ जाओ क्योंकि केवल तुम्हारे ही तक मेरी जिन्दगी है, मुझे सिवाय तुम्हारे इस दुनिया में और किसी का भी भरोसा नहीं है, और तुम्हारे दुश्मनों की गिनती दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है ।

भूत० । हां ठीक है । (कुछ सोच कर) मगर इस समय मैं यहां नहीं रह सकता और... ....

नागर० । कल मनोरमाजी भी तो तुमसे मिलने के लिए यहां आने वाली हैं ।

भूत० । खैर देखा जायगा, बन पड़ेगा तो कल मैं फिर आ जाऊंगा ।

इतना कह कर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और सीढ़ियों के नीचे उतर कर देखते देखते नजरों से गायब हो गया ।

भूतनाथ के चले जाने के बाद नागर आधे घंटे तक चुपचाप बैठी रही, इसके बाद उसने उठ कर अपनी लौंडियों को बुलाया और कुछ बातचीत करने के बाद एक लौंडी को साथ लिए हुए सीढ़ियों के नीचे उतरी ।

चन्द्रकान्ता सन्तति में नागर के जिस मकान का हाल हम लिख आये हैं वह मकान इस समय नागर के कब्जे में नहीं है क्योंकि अभी तक जमानिया राज्य की वह हालत नहीं हुई थी और न उस इज्जत को अभी नागर पहुंची थी । इस समय

नागर रण्डियों की सी अवस्था में है और उसके कब्जे में एक मामूली छोटा सा मकान है, फिर भी मकान सुन्दर और मजबूत है तथा उसके सामने एक छोटा सा नजरबाग भी है। यद्यपि अभी तक कम उम्र नागर की हैसियत बढ़ी नहीं है फिर भी उसकी चालाकियों का जाल अच्छी तरह फैल चुका है जिसका एक सिरा जमानिया राजधानी में भी जा पहुंचा है क्योंकि उस मनोरमा से इसकी दोस्ती अच्छी तरह हो चुकी है जिसने जमानिया की खराबी में सबसे बड़ा हिस्सा लिया हुआ था।

नागर सीढ़ियों से नीचे उतर कर नजरबाग में होती हुई सदर फाटक पर पहुंची और उसे बन्द करके एक मजबूत ताला उसकी कुन्डी में लगा दिया। इसके बाद लौट कर मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने वाला दर्वाजा भी अच्छी तरह बन्द करके अपने कमरे में चली आई।

लौंडी को कमरे का फर्श साफ करने की आज्ञा देकर नागर ऊपर छत पर चढ़ गई जहां एक बंगला था और इस समय उसके बाहर ताला लगा हुआ था जिसे खोल कर नागर बंगले के अन्दर चली गई।

यह बंगला बहुत खुलासा और मामूली ढंग पर सजा हुआ था। जमीन पर साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था, एक तरफ सुन्दर मसहरी थी तथा छोटे बड़े कई तकिए फर्श पर पड़े हुए थे। मगर यह कमरा खाली न था, इसमें इस समय मनोरमा बैठी हुई थी और जमानिया राजधानी का बेईमान दारोगा (बाबाजी) भी उसके साथ था। नागर भी उन दोनों के पास जाकर बैठ गई।

तीसरा बयान

अब हम अपने पाठकों को पुनः उस घाटी में ले चलते हैं जिसमें कला और बिमला रहती थीं और जिसमें भूतनाथ ने पहुंच कर बड़ी ही संगदिली का काम किया था अर्थात् कला बिमला और इन्दुमति के साथ ही साथ कई लौंडियों को भी कूएं में ढकेल कर अपनी जिन्दगी का आईना गंदला किया था।

भूतनाथ यद्यपि अपने शागिर्द रामदास की मदद से उस घाटी में पहुंच गया था और अपनी इच्छानुसार उसने सब कुछ करके अपने दिल का गुबार निकाल लिया था मगर घाटी के बीच वाले उस बंगले के सिवाय वह वहां का और कोई स्थान नहीं देख सका जिसमें कला और बिमला रहती थीं या जहां जख्मी इन्दुमति का इलाज किया गया था, और न वहां का कोई भेद ही भूतनाथ को मालूम हुआ। वह केवल अपने दुश्मनों को मार कर उस घाटी के बाहर निकल आया

और फिर कभी उसके अन्दर नहीं गया। मगर प्रभाकरसिंह को उस घाटी का बहुत ज्यादा हाल मालूम हो गया था। कुछ तो उन्होंने बीच वाले बगले की तलाशी लेते समय कई तरह के कागजों पुर्जों और किताबों को देख कर मालूम कर लिया था और कुछ कला बिमला ने बताया था और बाकी का भेद इन्द्रदेव ने बता कर प्रभाकरसिंह को खूब पक्का कर दिया था।

आज प्रातः काल सूर्योदय के समय हम उस घाटी में प्रभाकरसिंह को एक पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए देखते हैं। उनके बगल में ऐयारी का बटूआ लटक रहा है और हाथ में एक छोटी सी किताब है जिसे वे बड़े गौर से देख रहे हैं। यह किताब हाथ की लिखी हुई हैं और इसके अक्षर बहुत ही बारीक हैं तथा इसमें कई तरह के नक्शे भी दिखाई दे रहे हैं जिन्हें वे बार बार उलट कर देखते हैं और फिर कोई दूसरा मजमून पढ़ने लगते हैं।

इस काम में उन्हें कई घण्टे बीत गए। जब धूप की तेजी ने उन्हें परेशान कर दिया तब वे वहां से उठ खड़े हुए तथा बड़े गौर से दक्षिण और पश्चिम कोण की तरफ देखने लगे और कुछ देर तक देखने के बाद उसी तरफ चल निकले। नीचे उतर कर मैदान खतम करने के बाद जब दक्षिण और पश्चिम कोण वाली पहाड़ी के नीचे पहुंचे तब इधर उधर बड़े गौर से देख कर उन्होंने एक पगडंडी का पता लगाया और उसी सीध पर चलते हुए पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। करीब करीब पचास साठ कदम चले जाने के बाद उन्हें एक छोटी सी गुफा मिली और वे लापरवाही के साथ उस गुफा के अन्दर चले गये।

यह गुफा बहुत बड़ी न थी और इसमें केवल दो आदमी एक साथ मिल कर चल सकते थे, फिर भी ऊंचाई इसकी ऐसी कम न थी कि इसके अन्दर जाने वाले का सिर छत के साथ टकराये, अस्तु प्रभाकरसिंह धीरे धीरे टटोलते हुए इसके अन्दर जाने लगे। जब लगभग दो सौ कदम चले गये तब उन्हें एक छोटी सी कोठरी मिली जिसके अन्दर जाने के लिए दरवाजे की किस्म से किसी तरह की रुकावट न थी सिर्फ एक चौखट लांघने ही के सबब से कह सकते हैं कि वे उस कोठरी के अन्दर जा पहुंचे। अंधकार के सबब से प्रभाकरसिंह को कुछ दिखाई नहीं देता था इसलिए वे बैठ कर वहां की जमीन हाथ से इस तरह टटोलने लगे मानों किसी खास चीज को ढूंढ़ रहे हैं।

एक छोटा सा चबूतरा कोठरी के बीचोबीच मिला जो हाथ भर चौड़ा और इसी कदर लम्बा था। उसके बीच में किसी तरह का खटका था जिसे प्रभाकर-

सिंह ने दबाया और साथ ही इसके चबूतरे के ऊपर वाला भाग किवाड़ के पल्ले की तरह खुल गया, मानो वह पत्थर का नहीं बल्कि किसी धातु या लकड़ी का बना हो।

अब प्रभाकरसिंह ने अपने बटुए में से मोमबत्ती निकाली और इसके बाद चकमक पत्थर निकाल कर रोशनी की। प्रभाकरसिंह ने देखा कि ऊपर का भाग खुल जाने से उस चबूतरे के अन्दर नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां लगी दिखाई देती हैं। प्रभाकरसिंह ने रोशनी में उस कोठरी को बड़े गौर से देखा। वहां चारों तरफ दीवार में चार आले (ताक) थे जिनमें से सिर्फ सामने वाले एक आले में गुलाब का बनावटी एक पेड़ बना हुआ था जिसमें बेहिसाब कलियां लगी हुई थीं और सिर्फ चार फूल खिले हुए थे। बाकी के तीनों आले खाली थे।

प्रभाकरसिंह ने उस गुलाब के पेड़ और फूलों को बड़े गौर से देखा और यह जानने के लिए कि वह पेड़ किस चीज का बना हुआ है उसे हाथ से अच्छी तरह टटोला। मालूम हुआ कि वह पत्थर या किसी और जमबूत चीज का बना हुआ है।

प्रभाकरसिंह उन खिले हुए चार फूलों का देखकर बहुत ही खुश हुए और इस तरह धीर धीरे बुदबुदाने लगे जैसे कोई अपने मन से दिल खोल कर बातें करता हो। उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा, "हैं यह चार फूल कैसे! खैर मेरा परिश्रम तो सुफल हुआ चाहता है। इन्द्रदेवजी का ख्याल ठीक निकला कि वे तीनों औरतें (जमुना सरस्वती और इन्दु) जरूर उस तिलिस्म के अन्दर चली गई होंगी अब इन खिले फूलों को देखकर मुझे भी विश्वास होता है कि उन तीनों से तिलिस्म में मुलाकात होगी और मैं उन्हें खोज निकालूंगा, मगर इन्द्रदेवजी ने कहा था कि जितने आदमी इस तिलिस्म के अन्दर जायेंगे इस पेड़ के उतने ही फूल खिले दिखाई देंगे। इसके अतिरिक्त उस कागज में भी ऐसा ही लिखा है, मगर अब जो देखता हूं तो तीन की जगह चार फूल खिले हुए हैं, अस्तु यह चौथा आदमी इस तिलिस्म में कौन जा पहुंचा? इस बात का मुझे विश्वास नहीं होता कि किसी लौंडी को भी वे तीनों अपने साथ लेगई होंगी क्योंकि ऐसा करने के लिए इन्द्रदेवजी ने उन्हे सख्त मनाही कर दी थी। या सम्भव है कि किसा विशेष कारण से वे किसी लौंडो को अपने साथ ले भी गई हों, खैर जो होगा देखा जायगा मगर ऐसा किया तो यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया।

इस तरह की बहुत सी बातें वे देर तक सोचते रहे, साथ ही इसके इस बात पर भी गौर करते रहे कि उन तीनों को तिलिस्म के अन्दर आने की जरूरत ही क्या पड़ी।

प्रभाकरसिंह बेखटके उन सीढ़ियों के नीचे उतर गये। नीचे उतर जाने के बाद उन्हें पुनः एक सुरंग मिली जिसमें तीस या चालीस हाथ से ज्यादे जाना न पड़ा। जब वे उस सुरंग को खतम कर चुके तब उन्हें रोशनी दिखाई दी तथा सुरंग के बाहर निकलने पर एक छोटा सा बाग और कुछ इमारतों पर उनकी निगाह पड़ी। आसमान पर निगाह करने से ख्याल हुआ कि दोपहर ढल चुकी है और दिन का तीसरा पहर बीत रहा है।

इस बाग में मकान बारहदरी कमरे दालान चबूतरे या इसी तरह की इमारतों के अतिरिक्त और कुछ भी न था अर्थात फूल के अच्छे दरख्त दिखाई नहीं देते थे या अगर कुछ थे भी तो केवल थे जंगली पेड़ जो कि यहां बहते हुए एक चश्मे के सबब से कदाचित् बराबर ही हरे भरे भी रहते थे, हां केले के दरख्त यहां बहुतायत से दिखाई दे रहे थे और उनमें फल भी बहुत लगे हुए थे।

प्रभाकरसिंह थक गये थे इसलिए कुछ आराम करने की नीयत से नहर के किनारे एक चबूतरे पर बैठ गये और वहां की इमारतों को बड़े गौर से देखने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने अपने बटुए में से मेवा निकाला और उसे खाकर चश्मे का बिल्लौर की तरह साफ बहता हुआ जल पी कर सन्तोष किया।

प्रभाकरसिंह सिपाही और बहादुर आदमी थे कोई ऐयार न थे मगर आज इनके बगल में ऐयारी का बटुआ लटका हुआ देख रहे हैं इससे मालूम होता है कि इन्होंने समयानुकूल चलने के लिए कुछ ऐयारी जरूर सीखी है मगर इनका उस्ताद कौन है सो अभी मालूम नहीं हुआ।

हम कह चुके हैं कि यह बाग नाम मात्र को बाग था मगर इसमें इमारतों का हिस्सा बहुत ज्यादे था। बाग के बीचो बीच में एक गोल गुम्बद था जिसके चारों तरफ छोटी छोटी पांच कोठरियां थी और वह गुम्बद इस समय प्रभाकरसिंह की आंखों के सामने था जिसे वह बड़े गौर से देख रहे थे। बाग के चारों तरफ चार बड़ी बड़ी बारहदरियां थीं और उनके ऊपर उतने ही खूबसूरत कमरे बने हुए थे जिनके दर्वाजे इस समय बन्द थे, सिर्फ पूरब तरफ वाले कमरे के दर्वाजों में से एक दर्वाजा खुला हुआ था और प्रभाकरसिंह को अच्छी तरह दिखाई दे रहा था।

प्रभाकरसिंह और कमरों तथा दालानों को छोड़ कर उसी बीच वाले गुम्बद को बड़े गौर से देख रहे थे जिसके चारो तरफ वाली कोठड़ियों के दर्वाजे बन्द मालूम होते थे। कुछ देर बाद प्रभाकरसिंह उठे और उस गुम्बद के पास चले गये। एक कोठरी के दर्वाजे को हाथ से हटाया तो वह खुल गया अस्तु वह कोठरी के अन्दर

चले गये। इस कोठरी की जमीन संगमर्मर की थी और बीच में स्याह पत्थर का एक सिंहासन था जिस पर हाथ रखते ही प्रभाकरसिंह का शरीर कांपा और वे चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गये तथा उसी समय उस कोठड़ी का दर्वाजा भी बन्द हो गया।

दिन बीत गया, आधी रात का समय था जब प्रभाकरसिंह की आंख खुली। अंधेरी रात होने के कारण वे कुछ स्थिर नहीं कर सकते थे कि वे कहां पर हैं। घबराहट में उन्होंने पहिले अपने हर्बों का टटोला और फिर ऐयारी का बटुआ खोला। ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे सब चीजें इनके पास मौजूद थीं, इसके बाद वे विचारने लगे कि यह स्थान कैसा है तथा हमको अब क्या करना चाहिए। बहुत देर के बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे किसी छोटे दालान में हैं और उनके सामने एक घना जंगल है। इस अन्धकार के समय में उनकी हिम्मत न पड़ी कि उठ कर इधर उधर घूमें या किसी बात का पता लगावें वस्तु उन्होंने चुपचाप उसी दालान में पड़े रह कर रात बिता दी।

रात बीत गई और सूर्य भगवान का पेशखेमा आसमान पर अच्छी तरह तन गया। प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए और यह जानने के लिए उस दालान में घूमने और दरोदीवार को अच्छी तरह देखने लगे कि वे क्योंकर इस स्थान में पहुचे तथा उनके यहां आने का जरिया क्या है, परन्तु इस बात का उन्हें कुछ भी पता न लगा। उस दालान के सामने जो जंगल था वह वास्तव में बहुत घना था और सिर्फ देखने से इस बात का पता नहीं लगता था कि वह कितना बड़ा है तथा उसके बाद किसी तरह की इमारत है या कोई पहाड़, साथ ही इसके इन्हें इस बात की फिक्र भी थी कि अगर कोई पानी का चश्मा दिखाई दे तो स्नान इत्यादि का काम चले।

जगल में घूम कर क्या करें और किसको ढूढ़ें इस विचार में वे बहुत देर तक सोचते और इधर उधर घूमते रह गये, यहां तक कि कि सूर्य भगवान ने चौथाई आसमान का सफर तै कर लिया और धूप में कुछ गर्मी मालूम होने लगा। उसी समय प्रभाकरसिंह के कान में यह आवाज आई, "हाय, बहुत ही बुरे फंसे! यह मेरे कर्मों का फल है। ईश्वर न करे किसी..." बस इसके आगे की आवाज इतनी बारीक हो गई थी कि प्रभाकरसिंह उसे अच्छी तरह समझ न सके।

इस आवाज ने प्रभाकरसिंह को परेशान कर दिया और खुटके में डाल दिया। आवाज जंगल के बीच में से आई थी अतएव वे उसी आवाज की सीध पर चल पड़े और उस घने जंगल में ढूंढ़ने लगे कि वह दुखिया कौन और कहां है जिसके मुंह

से ऐसी आवाज आई है।

प्रभाकरसिंह को ज्यादा ढूंढ़ना न पड़ा। उस जंगल में थोड़ी ही दूर जाने पर उन्हें पानी का एक सुन्दर चश्मा दिखाई दिया और उसी चश्मे के किनारे उन्होंने एक औरत को देखा जो बदहवास और परेशान जमीन पर पड़ी हुई थी और न मालूम किस तरह की तकलीफ से करवटें बदल रही थी। प्रभाकरसिंह बड़े गौर से उस औरत को देखने लगे क्योंकि वह कुछ जानी पहिचानी सी मालूम पड़ी थी। उस औरत ने प्रभाकरसिंह को देख के हाथ जोड़ा और कहा, "मेरी जान बचाइये, मैं बेतरह इस आफत में फंस गई हूं। मुझे उम्मीद थी कि अब कुछ ही देर में इस दुनिया से कूच कर जाऊंगी, परन्तु आपको देखने से विश्वास हो गया कि अभी थोड़ी जिन्दगी बाकी है। आप बड़े गौर से मुझे देख रहे हैं, मालूम होता है कि आपने मुझे पहिचाना नहीं। मैं आपकी ताबेदार लौंडी हरदेई हूं, आपकी स्त्री और सालियों को बहुत दिनों तक खिदमत कर चुकी हूं।"

प्रभाकर०। हां अब मैंने तुझे पहिचाना, कला और बिमला के साथ मैंने तुझे देखा था मगर सामना बहुत कम हुआ इसलिये पहिचानने में जरा कठिनाई हुई, अच्छा यह तो बता कि वे तीनों कहां हैं?

हरदेई०। मैं उन्हीं की सताई होने पर भी उनकी ही खोज में यहां आई थी, एक दफे वे तीनों दिखाई देकर पुनःगायब हो गईं—आह अब मुझसे बोला नहीं जाता।

प्रभाकर०। तुझे किस बात की तकलीफ है?

हरदेई०। मैं भूख से परेशान हो रही हूं। आज कई दिन से मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला ... बस ... अब....प्राण निकला ही...

प्रभाकर०। तुझे यहां आये कै दिन हुए?

हरदेई०। आज से सात.....

बस इससे ज्यादे हरदेई कुछ भी बोल न सकी अस्तु प्रभाकरसिंह ने अपने बटुए में से कुछ मेवा निकाल कर खाने के लिए दिया और हाथ का सहारा देकर उसे बैठाया। मेवा देख कर हरदेई खुश हो गई, भोजन किया और नहर का जल पीकर सम्हल बैठी और बोली, "अब मेरा जी ठिकाने हुआ, अब मैं बखूबी बातचीत कर सकती हूं।"

प्रभा०। (उसके पास बैठ कर) अच्छा अब बता कि तुझे यहां आये कितने दिन हुए और तूने कला बिमला तथा इन्दु को कहां और किस अवस्था में देखा तथा क्यों-कर उनका साथ छूटा। क्या तू भी उन तीनों के साथ ही इस तिलिस्म में आई थी?

हरदेई० । नहीं मैं तो बेसबब और विना कसूर के मारी गई । मैंने आज तक अपने मालिकों के साथ कोई बुराई नहीं की थी मगर न मालूम उन्होंने क्यों मुझे इस तरह की सजा दी ! यद्यपि उन्होंने अपना धर्म बिगाड़ दिया था और जिस तरह सती साध्वियों को चलना चाहिए उस तरह नहीं चलती थीं, अपनी सुफेद और साफ चादर में बदनामी के कई धब्बे लगा चुकी थीं मगर मैंने आपसे भी इस बात की कभी शिकायत नहीं की और उनका भेद किसी तरह प्रकट होने न दिया, फिर भी अन्त में मैं ही कसूरवार समझी गई और मुझी को प्राणदण्ड दिया गया, परन्तु ईश्वर की कृपा से मैं जीती बच गई । अब मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं और जो कुछ कहने की बातें हैं वह आपसे......

प्रभाकर० । (कुछ घबड़ा कर) तू क्या कर रही है ! क्या कला और बिमला के सतीत्व में धब्बा लग चुका है ? और क्या उन दोनों ने अपनी चाल चलन खराब कर डाली है ?

हरदेई० । बेशक ऐसी ही बात है । आज से नहीं बल्कि आपसे मुलाकात होने के पहले ही से ये दोनों बिगड़ी हुई हैं और दो आदमियों से अनुचित प्रेम करके अपने धर्म को बिगाड़ चुकी हैं, बल्कि बड़े अफसोस की बात है कि इन्दुमति को भी उन्होंने अपनी पंक्ति में मिला लिया है । ईश्वर ने इसी पाप का फल उन्हें दिया है, मेरी तरह वे भी इस तिलिस्म में कैद कर दी गई हैं और आश्चर्य नहीं कि वे भी इसी तरह की तकलीफें उठा रही हों । बस इससे ज्यादे और मैं कुछ भी नहीं कहूंगी क्योंकि...

प्रभाकर० । नहीं नहीं, रुक मत, जो कुछ तू जानती है बेशक कहे जा मैं खुशी से सुनने के लिए तैयार हूं ।

हरदेई० । अगर मैं ऐसा करूंगी तो फिर मेरी क्या दशा होगी यही मैं सोच रही हूं ।

हरदेई की बातों ने प्रभाकरसिंह के दिल में एक तरह का दर्द पैदा कर दिया। 'कला और बिमला बदकार हैं और उन्होंने इन्दु को भी खराब कर दिया ।' यह सुन कर उनका क्या हाल हुआ सो वे ही जानते होंगे । नेक और पतिव्रता इन्दु की कोई बदनामी करे यह बात प्रभाकरसिंह के दिल में नहीं जम सकती थी मगर कला और बिमला पर उन्हें पहले भी एक दफे शक हो चुका था । जब वे उस घाटी में थे तभी उनकी स्वतन्त्रता देख कर उनका मन आशंकित हो गया था मगर जांच करने पर उनका दिल साफ हो गया था । आज हरदेई ने उन्हें फिर उसी चिन्ता

में डाल दिया, और साथ ही इसके इन्दु का भी आंचल गंदला सुन कर उनका कलेजा कांप उठा तथा वे सोचने लगे कि क्या यह बात सच हो सकती है ?

केवल इतना ही नहीं, प्रभाकरसिंह के चित्त में चिन्ता और घृणा के साथ ही साथ क्रोध की भी उत्पत्ति हो गई और बहुत कुछ विचार करने के बाद उन्होंने सोचा कि यदि वास्तव में हरदेई का कहना सच है तो मुझे फिर उन दुष्टाओं के लिये परिश्रम करने की आवश्यकता ही क्या है, परन्तु सत्य की जांच तो आवश्यक है इत्यादि सोचते हुए फिर उन्होंने हरदेई से पूछा—

प्रभाकर० । हां तो जो कुछ असल मामला है तू बेखौफ होकर कह जा, मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि तेरी रक्षा करूंगा और तुझे इस आफत से बचाऊंगा ।

हरदेई० । यदि आप वास्तव में प्रतिज्ञा करते हैं तो फिर मैं सब बातें साफ साफ कह दूंगी ।

प्रभा० । बेशक मैं प्रतिज्ञा करता हूं मगर साथ ही इसके यह भी कहता हूं कि अगर तेरी बात झूठ निकली तो तेरे लिए सबसे बुरी मौत का ढंग तजवीज करूंगा ।

हरदेई० । बेशक मैं इसे मंजूर करती हूँ ।

प्रभा० । अच्छा तो जो कुछ ठीक ठीक मामला है तू कह जा और यह बता कि वह सब कहां गईं और क्या हुईं और तू क्योंकर इस दशा को पहुंची ।

हरदेई० । अच्छा तो मैं कहती हूं, सुनिए । कला और बिमला की चालचलन अच्छी नहीं है । आप स्वयम् सोच सकते हैं कि जिन्हें ऐसी नौजवानी में इस तरह की स्वतन्त्रता मिल गई हो और रहने तथा आनन्द करने के लिए ऐसा स्वर्ग-तुल्य स्थान मिल गया हो तथा दौलत की भी किसी तरह कमी न हो तो वे कहां तक अपने चित्त को रोक सकती हैं ? खैर जो कुछ हो, कला और बिमला दोनों ही ने अपने लिए दो प्रेमी खोज निकाले और दोनों को औरतों के भेष में ठीक करके अपने यहां रख छोड़ा तथा नित्य नया आनन्द करने लगीं, मगर साथ ही इसके भूतनाथ से बदला लेने का भी ध्यान उनके दिल में बना रहा और उन दोनों मर्दों से भी इस काम में बराबर मदद मांगती रहीं । वे दोनों मर्द कुछ दिन तक इस घाटी में रह आनन्द करते और फिर कुछ दिन के लिये कहीं चले जाया करते थे।

प्रभाकर० । (बात काट कर) उन दोनों का नाम क्या था ?

हरदेई० । सो मैं नहीं कह सकती क्योंकि कला और बिमला ने बड़ी कारीगरी से उन दोनों का भेष बदल दिया था, कभी कभी मर्दाने भेष में रहने पर भी उनकी सूरत दिखाई नहीं देती थी, इसलिए मैं उनके नाम और ग्राम के विषय में ठीक

तौर पर कुछ भी नहीं कह सकती, हां इतना जरूर है कि अगर मुझे कुछ मदद मिले तो मैं उन दोनों का पता जरूर लगा सकती हूं क्योंकि एकान्त की अवस्था में छिप लुक कर उन लोगों की बहुत सी बातें सुन चुकी हूं जिसका......

प्रभा० । खैर इस बात को जाने दे फिर देखा जायगा, अच्छा तब क्या हुआ ?

हरदेई० । बहुत दिनों तक कला और विमला ने दोनों से सम्बन्ध रक्खा मगर जब इन्दु इस घाटी में लाई गई और आपका आना भी यहां हुआ तब वे दोनों कुछ दिन के लिए गायब कर दिए गये । मैं ठीक नहीं कह सकती कि वे कहां चले गये या क्या हुए । मैं इस किस्से को बहुत मुख्तसर में बयान करती हूं । फिर जब आप विजयगढ़ और चुनार की लड़ाई में चल गये और बहुत दिनों तक आपके आने की उम्मीद न रही तब पुन: वे दोनों इस घाटी में दिखाई देने लगे । संग और कुसंग का असर मनुष्य के ऊपर अवश्य पड़ा करता है । कुछ ही दिनों के बाद इन्दुमति को मैंने उन दोनों में से एक के साथ मुहब्बत करते देखा और इसी कारण से कला बिमला और इन्दुमति में अन्दर अन्दर कुछ खिचाव भी हो गया था ।

मैं समझती हूँ कि भूतनाथ को इस विषय का हाल जरूर मालूम हो गया जिसने उन दोनों को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया और उस घाटी में जाने आने का रास्ता देख लिया । इसी बीच में मैंने आपको उस घाटी में देखा । पहिले तो मुझे विश्वास हो गया कि वास्तव में प्रभाकरसिंहजी ही लड़ाई में नामवरी हासिल करके यहां आ गये हैं परन्तु कुछ दिन के बाद मेरा वह ख्याल जाता रहा और निश्चय हो गया कि असल में आपकी सूरत बन कर यहां आने वाला कोई दूसरा ही था ।

मैं इस विषय में कला और बिमला को बार बार टोका करती थी और कहा करती थी कि तुम लोगों के रहन सहन का यह ढंग अच्छा नहीं है, एक न एक दिन इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकलेगा, मगर वे दोनों इस बात का कुछ ख्याल नहीं करती थीं और मुझे यह कह कर टाल दिया करती थीं कि खैर जो कुछ हुआ सो हुआ अब ऐसा न होगा । मगर मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि मेरे रोक टोक करने से उनके दिल में रंज बैठता जाता है । मैंने अपने काम में और भी कई लौंडियों को शरीक कर लिया मगर इसका नतीजा मेरे लिए अच्छा न निकला ।

एक दिन वह आदमी जो आपकी सूरत बना हुआ था जब उस घाटी में आया तो उसके साथ और भी दस बारह आदमी आए । जब वे लोग कला बिमला और इन्दुमति से मिले तो उनका रंग ढंग देख कर मैं डर गई और एक किनारे हट कर उनका तमाशा देखने लगी । थोड़ी देर के बाद जब संध्या हुई तब कला बिमला

और इन्दुमति उन सभों को साथ लिए हुए बंगले के अन्दर चली गईं अस्तु इसके बाद क्या क्या हुआ सो मैं कुछ भी न जान सकी, लाचार मैं अपनी हमजोलिगों के साथ जा मिली और भोजन इत्यादि की सामग्री जुटाने के काम में लगी।

पहर रात बीत जाने के बाद जब भोजन तैयार हुआ तब सभों ने मिल जुल कर भोजन किया, तत्पश्चात् हम लोगों ने भी खाना खाया मगर भोजन करने के थोड़ी देर बाद हम लोगों का सर घूमने लगा जिससे निश्चय हो गया कि आज के भोजन में बेहोशी की दवा मिलाई गई है। खैर जो हो आधी रात जाते जाते तक हम सब की सब बेहोश होकर दीन दुनिया को भूल गईं। प्रातःकाल जब मेरी आंख खुली तो मैंने अपने आपको इसी स्थान पर पड़े हुए पाया। घबड़ा कर उठ बैठी और आश्चर्य के साथ चारो तरफ देखने लगी, उस समय मेरे सर में बेहिसाब दर्द हो रहा था।

तीन दिन और रात मैं घबड़ाई हुई इस जंगल में और (हाथ का इशारा करके) इस पास वाली इमारत और दालान में घूमती रही मगर न तो किसी से मुलाकात हुई और न यहां से निकल भागने के लिए कोई रास्ता ही दिखाई दिया। चौथे दिन भूख से बेचैन होकर मैं इसी जंगल में घूम रही थी कि यकायक इन्दुमति कुछ दूरी पर दिखाई पड़ी जो कि आपके गले में हाथ डाले हुए धीरे धीरे पूरब की तरफ जा रही थी। मैं नहीं कह सकती कि वह वास्तव में आप ही के गले में हाथ डाले हुए थी या किसी दूसरे ऐयार के गले में जो आपकी सूरत बना हुआ था। उसी के पीछे मैंने कला और बिमला को भी जाते हुए देखा। मैं खुशी खुशी लपकती उनकी तरफ बढ़ी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। देखते ही देखते इसी जंगल और झाड़ियों में घूम फिर वे सब की सब न जाने कहां गायब हो गईं, तब से आज तक कई दिन हुए मैं उनकी खोज में परेशान हूं, अन्त में भूख के मारे बदहवास होकर इसी जगह गिर पड़ी और कई पहर तक मुझे तनोबदन की कुछ भी सुध न रही, जब होश में आई तब आपसे मुलाकात हुई। बस यही तो मुख्तसर हाल है।

हरदेई की बात सुन कर प्रभाकरसिंह के तो होश उड़ गये। वे ऐसे बेसुध हो गये कि उन्हें तनोबदन की सुध बिल्कुल ही जाती रही। थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा कि वे प्रभाकरसिंह नहीं बल्कि पत्थर की कोई मूरत हैं, इसके बाद उन्होंने एक लम्बी सांस ली और बड़े गौर से हरदेई के चेहरे की तरफ देखने लगे। कई क्षण बाद उन्होंने सिर नीचा कर लिया और किसी गहरे चिन्ता-सागर में डुबकियां लगाने लगे। हरदेई मन ही मन प्रसन्न होकर उनके चेहरे की तरफ

देखने लगी जिसका रंग थोड़ी थोड़ी देर पर गिरगिट के रंग की तरह बराबर बदल रहा था।

प्रभाकरसिंह के चेहरे पर कभी तो क्रोध कभी दुःख कभी चिन्ता कभी घबराहट और कभी घृणा की निशानी दिखाई देने लगी। आह, प्रभाकरसिंह के जिस हृदय में इन्दुमति का अगाध प्रेम भरा हुआ था उसमें इस समय भयानक रस का संचार हो रहा है। जो वीर हृदय सदैव करुण रस से परिपूरित रहता था वह क्षण मात्र के लिये अद्भुत रस का स्वाद लेकर रौद्र और तत्पश्चात् वीभत्स रस की इच्छा कर रहा है! जिस हृदय में इन्दुमति पर निगाह पड़ते ही शृंगार रस की लहरें उठने लगती थीं वह अपनी भविष्य जीवनी पर हास्य करता हुआ अब सदैव के लिये शान्त हुआ चाहता है। आह, इन्दुमति के विषय में स्वप्न में भी ऐसे शब्दों के सुनने की क्या प्रभाकरसिंह को आशा हो सकती थी? कदापि नहीं, यह प्रभाकरसिंह की भूल है कि हरदेई की जुबान से विष भरी अघटित घटना को सुन अनुचित चिन्ता करने लग गये हैं। वह नहीं जानते कि यह हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है। परन्तु हमारे प्रेमी पाठक इस बात को जरूर समझ रहे होंगे कि यह भूतनाथ का शागिर्द रामदास है जिसकी मदद से भूतनाथ ने उस घाटी में पहुँच कर बड़ा ही अनुचित और घृणित व्यवहार किया था। निःसन्देह भूतनाथ ने जमना सरस्वती और इन्दुमति के साथ जो कुछ किया था वह ऐयारी के नियम के बिल्कुल ही बाहर था, ऐयारी का यह मतलब नहीं है कि वह बेकसूरों के खून से अपने जीवन की पवित्र चादर में धब्बा लगाये। यदि प्रभाकरसिंह उसकी कार्रवाईं का हाल सच्चा सच्चा सुनते तो न मालूम उनकी क्या अवस्था हो जाती। परन्तु इस रामदास ने उन्हें बड़ा ही धोखा दिया और ऐसी बेढंगी बातें सुनाईं कि उनका पवित्र हृदय कांप उठा और इन्दुमति तथा कला और बिमला की तरफ से उन्हें एकदम घृणा उत्पन्न हो गई। तब क्या प्रभाकरसिंह ऐसे बेवकूफ थे कि एक मामूली ऐयार अथवा लौंडी के मुंह से ऐसी अनहोनी बात सुन कर उन्होंने उस पर कुछ विचार न किया और उसे सच्चा मान कर अपने आपे से बाहर हो गये? नहीं, प्रभाकरसिंह तो ऐसे न थे परन्तु प्रेम ने उनका हृदय ऐसा बना दिया था कि इन्दु के विषय में ऐसी बातें सुन कर वे अपने चित्त को सम्हाल नहीं सकते थे। प्रेम का अगाध समुद्र थोड़ी ही सी आंच लगने से सूख सकता है, और प्रेमी का मन मुकुल जरा ही सी ठेस लगने से चकनाचूर हो जाता है। अस्तु जो हो प्रभाकरसिंह के दिल की उस समय क्या अवस्था थी वे ही ठीक जानते होंगे या उनको देख कर

रामदास कुछ कुछ समझता होगा क्योंकि वह उनके सामने बैठा हुआ उनके चेहरे
की तरफ बड़े गौर से देख रहा था।

नकली हरदेई अर्थात् रामदास के दिल की अवस्था भी अच्छी न थी। वह
कहने के लिये तो सब कुछ कह गया परन्तु उसका परिणाम क्या होगा यह सोच
कर उसका दिल डांवाडोल होने लगा। यद्यपि इस तिलिस्म में फंस कर वह बर्बाद
हो चुका था बल्कि थोड़ी देर पहिले तो मौत की भयानक सूरत अपनी आंखों के
सामने देख रहा था परन्तु प्रभाकरसिंह पर निगाह पड़ते ही उसकी कायापलट हो
गई और उसे विश्वास हो गया कि अब किसी न किसी तरह उसकी जान बच
जायगी। परन्तु इन्दुमति को बदनाम करके उसका चित्त भी शान्त न रहा और
थोड़ी ही देर बाद वह सोचने लगा कि मैंने यह काम अच्छा नहीं किया। यदि मैं
कोई दूसरा ढंग निकालता तो कदाचित यहां से शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता
परन्तु अब जल्दी छुटकारा मिलना मुश्किल है क्योंकि मेरी बात का निर्णय किये
बिना प्रभाकरसिंह मुझे यहां से बाहर नहीं जाने देंगे। अफसोस भूतनाथ को मदद
पहुंचाने के खयाल से मैंने व्यर्थ ही इन्दु को बदनाम किया। इन्दुमति निःसन्देह
सती और साध्वी है, उस पर कलंक लगाने का नतीजा मुझे अच्छा न मिलेगा।
अफसोस, खैर अब क्या करना चाहिये, जबान से जो बात निकल गई वह तो लौट
नहीं सकती। तब ? मुझे अपने बचाव के लिए शीघ्र ही कोई तर्कीब सोचना
चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि इन्दुमति कला और बिमला घूमती फिरती इस समय
यहां आ पहुंचें। यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा होगा, मेरी कलई खुल जायगी
और मैं तुरन्त ही जान से मारा जाऊंगा। यदि मैं उन सभों को बदनाम न किये
होता तो इतना डर न था।

इसी तरह की बातें सोचते हुए रामदास का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल
रहा था। वह बड़ी बेचैनी से प्रभाकरसिंह की सूरत देख रहा था।

बहुत देर तक तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह ने पुनः नकली
हरदेई से सवाल किया—

प्रभाकर०। अच्छा यह तो बता कि कला और बिमला किसी विषय में किसी
दिन तुझसे रंज भी हुई थीं ?

हरदेई०। (मन में) इस सवाल का क्या मतलब ? (प्रकट) नहीं अगर कभी
कुछ रंज हुई थीं तो केवल उसी विषय में जो मैं आपसे बयान कर चुकी हूं।

इस जवाब को सुन कर प्रभाकरसिंह चुप हो गये और फिर कुछ गौर करके

बोले, "खैर कोई बात नहीं देखा जायगा, यह जगत ही कर्म-प्रधान है, जो जैसा करेगा वैसा फल भोगेगा। यदि वे तीनों इस तिलिस्म के अन्दर हैं तो मैं उन्हें जरूर खोज निकालूंगा, तू सब्र कर और मेरे साथ साथ रह।"

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने फिर वही छोटी किताब निकाली और पढ़ने लगे जिसे इस तिलिस्म के अन्दर घुसने के पहिले एक दफे पढ़ चुके थे।

प्रभाकरसिंह घंटे भर से ज्यादे देर तक वह किताब पढ़ते रहे और तब तक रामदास बराबर उनके चेहरे की तरफ गौर से देखता रहा। जब वे उस किताब में अपने मतलब की बात अच्छी तरह देख चुके तब यह कहते हुए उठ खड़े हुए कि 'कोई चिन्ता नहीं, यहां हमारे खाने पीने का सामान बहुत कुछ मिल जायगा और हम उन सभों को जल्द ही खोज भी निकालेंगे! (नकली हरदेई से) आ तू भी हमारे साथ चली आ।'

रामदास उस किताब के पढ़ने और उनके इन शब्दों के कहने से समझ गया कि उस किताब में जरूर इस तिलिस्म का ही हाल लिखा हुआ है, अगर किसी तरह वह किताब मेरे हाथ लग जाय तो सहज ही में मैं यहां से निकल भागूं बल्कि और भी बहुत सा काम निकालूं।

रामदास अर्थात् नकली हरदेई को साथ लिए हुए प्रभाकरसिंह उसी जंगल में घुस गये और दक्षिण झुकते हुए पूरब की तरफ चल निकले। आधे घंटे तक बराबर चले जाने के बाद उन्हें एक बहुत ऊंची दीवार मिली जिसकी लम्बाई का वे कुछ अंदाज नहीं कर सकते थे और न इसकी जांच करने की उन्हें कोई जरूरत ही थी। इस दीवार में बहुत दूर तक ढूंढ़ने के बाद उन्हें एक छोटा सा दर्वाजा दिखाई दिया। वह दर्वाजा लोहे का बना हुआ था मगर उसमें ताला या जंजीर वगैरह का कुछ निशान नहीं दिखाई देता था। रामदास का ध्यान किसी दूसरी तरफ था तथापि वह जानना चाहता था कि यह दर्वाजा क्योंकर खुलता है, परन्तु प्रभाकरसिंह ने उसे खोलने के लिये जो कुछ कार्रवाई की वह देख न सका, यकायक दर्वाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह ने उसके अन्दर कदम रक्खा तथा रामदास को भी अपने साथ आने के लिये कहा।

प्रभाकरसिंह और रामदास दर्वाजे के अन्दर जाकर कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि दरवाजा पुनः ज्यों का त्यों बन्द हो गया। प्रभाकरसिंह एक ऐसे बाग में पहुंचे जहां केले और अनार के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और पानी का सुन्दर चश्मा भी बड़ी खूबसूरती के साथ चारो तरफ बह रहा था। इस बाग के

अन्दर एक छोटा सा बंगला भी बना हुआ था जिसमें कई कोठड़ियां थीं और इस बंगले के चारों तरफ संगमर्मर के चार चबूतरे बने हुए थे। बस इस बाग में इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। प्रभाकरसिंह ने यहां के पके हुए स्वादिष्ट केले और अनार से पेट भरा और चश्मे का जल पीकर कुछ शान्त हुए तथा नकली हरदेई से भी ऐसा ही करने के लिये कहा।

जब आदमी की तबीयत परेशान होती है तो थोड़ी सी भी मेहनत बुरी मालूम होती है और वह बहुत जल्द थक जाता है। प्रभाकरसिंह का चित्त बहुत ही व्यग्र हो रहा था और चिन्ता ने उदास और हताश भी कर दिया था अतएव आज थोड़ी ही देर की मेहनत से थक कर वे एक संगमर्मर के चबूतरे पर कुछ आराम करने की नीयत से लेट गये और साथ ही निद्रादेवी ने भी उन पर अपना अधिकार जमा लिया।

यहां प्रभाकरसिंह ने बहुत ही बुरा धोखा खाया। नकली हरदेई की बातों ने उन्हें अधमूआ कर ही दिया था और इस दुनिया से वे एक तौर पर विरक्त हो चुके थे, कारण यही था कि उन्होंने नकली हरदेई को पहिचाना न था। अगर इन बातों के हो जाने के बाद भी वे जांच कर लेते तो कदाचित् सम्हल जाते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और नकली हरदेई को वास्तव में हरदेई मान कर अपने भाग्य का सब दोष समझ लिया, यही सबब था कि यहां पर भी वे रामदास की तरफ से बिलकुल ही बेफिक्र बने रहे और चबूतरे पर लेट कर बेफिक्री के साथ खर्राटे लेने लगे।

प्रभाकरसिंह को निद्रा के वशीभूत देख कर रामदास चौकन्ना हो गया। उसने ऐयारी के बटुए में से जिसे वह बड़ी सावधानी से छिपाए हुए था बेहोशी की दवा निकाली और होशियारी से प्रभाकरसिंह को सुंघाया। जब उसे विश्वास हो गया कि अब ये बेहोश हो गये तब उनके जेब में से वह किताब निकाल ली जिसमें इस तिलिस्म का कुछ हाल लिखा हुआ था और जिसे प्रभाकरसिंह दो दफे पढ़ चुके थे।

किताब निकाल कर उसने बड़े गौर से थोड़ा सा पढ़ा तब बड़ी प्रसन्नता के साथ सिर हिला कर उठ खड़ा हुआ और दिल्लगी के ढंग पर बेहोश प्रभाकरसिंह को झुक कर सलाम करता हुआ एक तरफ को चला गया।

बेहोशी का असर दूर हो जाने पर जब प्रभाकरसिंह की आंखें खुलीं तो वे घबड़ा कर उठ बैठे और बेचैनी से चारो तरफ देखने लगे। आसमान की तरफ निगाह दौड़ाई तो मालूम हुआ कि सूर्य भगवान का रथ अस्ताचल को प्राप्त कर चुका है परन्तु अभी अन्धकार को मुंह दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती, वह केवल

दूर ही से ताक झांक कर रहा है। हरदेई को जब देखना चाहा तो निगाहों की दौड़ धूप से उसका कुछ भी पता न लगा। तब वे लाचार होकर उठ बैठे और उसे इधर उधर ढूंढ़ने लगे, परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी उसका पता न लगा। आखिर वे पुनः उस चबूतरे पर बैठ कर तरह तरह की बातें सोचने लगे।

"हरदेई कहां चली गई। इस बाग में जहां तक सम्भव था अच्छी तरह खोज चुका मगर उसका कुछ भी पता न लगा। तब वह गई कहां? इस बाग के बाहर हो जाना तो उसके लिए बिल्कुल ही असम्भव है, तो क्या उसे किसी तरह की मदद मिल गई? मगर मदद भी मिली होती या कोई उसका दोस्त यहां आया होता तो भी बिना मेरी आज्ञा के उसे यहां से चले जाना मुनासिब न था। (अपना सर पकड़ के) ओफ, सर में बेहिसाब दर्द हो रहा है। मालूम होता है कि जैसे किसी ने बेहोशी की दवा का मुझ पर प्रयोग किया हो। ठीक है, बेशक यह सरदर्द उसी ढंग का है। तो क्या हरदेई की सूरत में वह कोई ऐयार तो नहीं था जिसने मुझे धोखा दिया हो। (घबराहट के साथ जेब टटोल के) आह, वह किताब तो जेब में है ही नहीं? क्या कोई ले गया? या हरदेई ले गई? (पुनः उस किताब को अच्छी तरह खोज कर) हैं, वह किताब निःसन्देह गायब हो गई और ताज्जुब नहीं कि वही किताब लेने की नीयत से उस ऐयार ने मुझे बेहोशी की दवा दी हो और इसी किताब की मदद पाकर यहां से चला गया हो। अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा हुआ और मैंने बेढब धोखा खाया। लेकिन अगर वह वास्तव में कोई ऐयार था तो कला बिमला और इन्दुमति वाली बात भी उसने झूठ ही कही होगी। ऐसी अवस्था में मैं उसका पता लगाये बिना नहीं रह सकता और इस काम में सुस्ती करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना है।"

इत्यादि बातों को सोच कर प्रभाकरसिंह पुनः उठ खड़े हुए और नकली हरदेई को खोजने लगे। अबकी दफे उनका खोजना बड़ी सावधानी के साथ था यहां तक कि एक एक पेड़ के नीचे जा और खोज खोज कर वे उसकी टोह लेने लगे। यकायक केलों की झुरमुट में उन्हें कोई कपड़ा दिखाई दिया, जब उसके पास गये और अच्छी तरह देखा तो मालूम हुआ कि वह हरदेई का कपड़ा है, मुलाकात होने के समय वह यही कपड़ा पहिने हुए थी। और भी अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि वह साड़ी का एक भाग है और खून से तर हो रहा है। वहां जमीन और पेड़ों के निचले हिस्से पर भी खून के छींटे दिखाई दिए।

अब प्रभाकरसिंह का खयाल बदल गया और वे सोचने लगे कि क्या यहां कोई

हमारा दुश्मन आ पहुंचा और हरदेई उसके हाथ से मारी गई या जख्मी हुई ? ताज्जुब नहीं कि वही हरदेई को गिरफ्तार भी कर ले गया हो ? परन्तु यहां दूसरे आदमी का आना बिल्कुल ही असम्भव है ? हां हो सकता है कि कला बिमला और इन्दु यहां आ पहुंची हों और उन्होंने हरदेई को दुश्मन समझ के उसका काम तमाम कर दिया हो ? ईश्वर ही जाने यह क्या मामला है पर वह तिलिस्मी किताब मेरे कब्जे से निकल गई यह बहुत ही बुरा हुआ।

इत्यादि बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह बहुत ही परेशान हो गये। वे और भी घूम फिर कर हरदेई के विषय में कुछ पता लगाने का उद्योग करते परन्तु रात की अंधेरी घिर आने के कारण कुछ भी न कर सके। साथ ही इसके सर्दी भी मालूम होने लगी और आराम करने के लिए वे आड़ की जगह तलाश करने लगे।

आज की रात प्रभाकरसिंह ने उसी बाग के बीच वाले बंगले में बिताई और तरह तरह की चिन्ता में रात भर जागते रहे। तिलिस्मी किताब के चले जाने का दुःख तो उन्हें था ही परन्तु इस बात का खयाल उन्हें बहुत ज्यादे था कि अगर वह किताब किसी दुश्मन के हाथ में पड़ गई होगी तो वह इस तिलिस्म में पहुंच कर बहुत कुछ नुकसान पहुंचा सकेगा और यहां की बहुत सी अनमोल चीजें भी ले जायगा।

यद्यपि वह किताब इस तिलिस्म की चाभी न थी और न उसमें यहां का पूरा पूरा हाल ही लिखा हुआ था तथापि वह यहां के मुख्तसर हाल का गुटका जरूर थी और उसमें की बहुत सी बातें इन्द्रदेव ने जरूरी समझ कर नोट करा दी थीं। प्रभाकरसिंह उसे कई दफे पढ़ चुके थे परन्तु फिर भी उसके पढ़ने की जरूरत थी। इस समय अपनी भूल से वे शर्मिन्दा हो रहे थे और सोचते थे कि इस विषय में इन्द्रदेव के सामने मुझे बेवकूफ बनना पड़ेगा।

ज्यों त्यों करके रात बीत गई। सवेरा होते ही प्रभाकरसिंह बंगले के बाहर निकले। मामूली कामों से छुट्टी पाकर चश्मे के जल से स्नान किया और सन्ध्या पूजा करके पुनः बंगले के अन्दर चले गये। कई कोठरियों में घूमते फिरते वे एक ऐसी कोठरी में पहुंचे जिसकी लम्बाई चौड़ाई यहां की सब कोठरियों से ज्यादे थी। यहां चारो तरफ की दीवारों में बड़ी बड़ी आलमारियां बनी हुई थीं और उन सभों के ऊपर नम्बर लगे थे। सात नम्बर की आलमारी उन्होंने किसी गुप्त रीति से खोली और उसके अन्दर चले गये। नीचे उतर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं अस्तु उसी राह से प्रभाकरसिंह नीचे उतर गये और एक दालान में पहुंचे। बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की तो मालूम हुआ कि यह दालान लम्बा

चौड़ा है और यहां की जमीन में बहुत सी लोहे की नालियां बनी हुई हैं जो सड़क का काम देने के लिए हैं तथा उन पर छोटी छोटी बहुत सी गाड़ियां रक्खी हुई हैं जिन पर सिर्फ एक आदमी के बैठने की जगह है। दालान के चारो तरफ दीवारों में बहुत से रास्ते बने हुए हैं जिनमें से होकर वे लोहे की सड़कें न मालूम कहां तक चली गई हैं।

गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि उन छोटी छोटी गाड़ियों पर पीठ की तरफ नम्बर लगे हुए हैं और उन नम्बरों के नीचे कुछ लिखा हुआ भी है। प्रभाकरसिंह बड़ी उत्कण्ठा से पढ़ने लगे। एक गाड़ी पर लिखा हुआ था 'जमानिया दुर्ग' दूसरी पर लिखा हुआ था 'खास बाग' तीसरी पर लिखा हुआ 'चुनार विक्रमी केन्द्र' चौथी पर लिखा हुआ था 'केन्द्र', इसी तरह किसी पर 'मुकुट' किसी पर 'सूर्य' और किसी पर 'सभा-मण्डप' लिखा हुआ था, मतलब यह है कि सभी गाड़ियों पर कुछ न कुछ लिखा था। प्रभाकरसिंह एक गाड़ी के ऊपर सवार हो गए जिसकी पीठ पर 'चन्द्र' लिखा हुआ था। सवार होने के साथ ही वह गाड़ी चलने लगी। दालान के बाहर हो जाने पर मालूम हुआ कि वह किसी सुरंग के अन्दर जा रही है। जैसे जैसे वह गाड़ी आगे बढ़ती जाती थी वैसे वैसे उसकी चाल भी तेज होती जाती थी और हवा के झपेटे भी अच्छी तरह लग रहे थे, यहां तक कि उनके हाथ की मोमबत्ती बुझ गई और हवा के झपेटों से मजबूर होकर उन्होंने अपनी दोनों आंखें बन्द कर लीं।

आधे घण्टे तक तेजी के साथ चले जाने के बाद गाड़ी एक ठिकाने पहुंच कर रुक गई। प्रभाकरसिंह ने आंखें खोल कर देखा तो उजाला मालूम हुआ। वे गाड़ी से नीचे उतर पड़े और गौर से चारो तरफ देखने लगे। वह स्थान ठीक उसी तरह का था जैसा कि कला और विमला के रहने का स्थान था और इसे देखते ही प्रभाकरसिंह को शक हो गया कि हम पुनः उसी ठिकाने पहुंच गये जहां कला और विमला से मुलाकात हुई थी परन्तु वहां की जमीन पर पहुंच कर उनका खयाल बदल गया और वे पुनः दूसरी निगाह से उस स्थान को देखने लगे।

यहां भी ठीक उसी ढंग का एक बंगला बना हुआ था जैसा कि कला और विमला के रहने वाली घाटी में था मगर इसके पास मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ न थे। दक्षिण तरफ पहाड़ के ऊपर चढ़ जाने के लिए सीढ़ियां दिखाई दे रही थीं और जहां पर वह सीढ़ियां खत्म हुई थीं वहां एक सुन्दर मन्दिर बना हुआ था जिसके ऊपर का सुनहरा शिखर ध्वजा और त्रिशूल सूर्य की रोशनी पड़ने से बड़ी

तेजी के साथ चमक रहा था।

जब प्रभाकरसिंह गाड़ी से नीचे उतर पड़े तो वह गाड़ी पीछे की तरफ उसी तेजी के साथ चली गई जिस तेजी के साथ यहां आई थी। प्रभाकरसिंह चारो तरफ अच्छी तरह देखने के बाद दक्षिण तरफ वाली पहाड़ी के नीचे चले गये और सीढ़ियां चढ़ने लगे। जब तमाम सीढ़ियां खतम कर चुके तब उस मन्दिर के अन्दर जाने वाला फाटक मिला अस्तु प्रभाकरसिंह उस फाटक के अन्दर चले गये।

इस पहाड़ी के ऊपर चढ़ने वाला इस मन्दिर के अन्दर आने के सिवाय और कहीं भी नहीं जा सकता था क्योंकि मन्दिर के चारो तरफ बहुत दूर तक फैली हुई ऊंची ऊंची जालीदार चारदीवारी थी जिसके उत्तर तरफ सिर्फ एक फाटक था जो इन सीढ़ियों के साथ मिला हुआ था अर्थात् इस सिलसिले की कई सीढ़ियां फाटक के अन्दर तक चली गई थीं। सीढ़ियों के बगल बगल से भी कोई रास्ता या मौका ऐसा न था जिसे लांघ या कूद कर आदमी दूसरी तरफ निकल जा सके। यह पहाड़ बहुत बड़ा और ऊपर से प्रशस्त था बल्कि यह कह सकते हैं कि ऊपर से कोसों तक चौड़ा था परन्तु इस मन्दिर में से न तो कोई उस तरफ जा सकता था और न उस तरफ से कोई इस मन्दिर के अन्दर आ सकता था।

प्रभाकरसिंह ने उस मन्दिर और चारदीवारी को बड़े गौर से देखा। मन्दिर के अन्दर किसी देवता की मूर्ति न थी, केवल एक फौवारा बीचोबीच में बना हुआ था और दीवारों पर तरह तरह की सुन्दर तस्वीरें लिखी हुई थीं। मन्दिर के आगे सभामण्डप में लोहे के बड़े बड़े सन्दूक रक्खे हुए थे मगर उनमें ताले का स्थान बिल्कुल खाली था अर्थात् यह नहीं जाना जाता था कि इनमें ताली लगाने की भी कोई जगह है या नहीं।

उन लोहे के संदूकों को भी अच्छी तरह देखते प्रभाकरसिंह मन्दिर के बाहर निकले और खड़े होकर कुछ सोच ही रहे थे कि उस जालीदार चारदीवारी के बाहर मैदान में मन्दिर की तरफ आती हुई कई औरतों पर निगाह पड़ी। प्रभाकरसिंह घबड़ा कर दीवार के पास चले गये और इसके सूराखों में से उन औरतों को देखने लगे। इस दीवार के सूराख बहुत बड़े बड़े थे, यहां तक कि आदमी का हाथ बखूबी उन सूराखों के अन्दर जा सकता था।

प्रभाकरसिंह ने देखा कि कला बिमला और ईन्दुमति धीरे धीरे इसी मन्दिर की तरफ चली आ रही हैं और उन तीनों के चेहरे से हद दर्जे की उदासी और परेशानी टपक रही है। उस समय प्रभाकरसिंह को हरदेई वाली बात भी याद

आ गई मगर क्रोध आ जाने पर भी उनका दिल उन तीनों के पास गये बिना बहुत बेचैन होने लगा। यद्यपि वे दीवार के पार जाकर उन सभों से मिल नहीं सकते थे तथापि सोचने लगे कि अब इन लोगों के साथ कैसा वर्ताव करना चाहिये ? हरदेई की जुबानी जो कुछ सुना है उसे साफ साफ कह देना चाहिए या धीरे धीरे सवाल करके उन बातों की जाँच करनी चाहिए।

धीरे धीरे चल कर वे तीनों औरतें भी मन्दिर की दीवार के पास आ पहुंचीं और एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगीं।

इन्दु०। (कला से) बहिन अभी तक समझ में नहीं आया कि हम लोग किस तरह इस तिलिस्म के अन्दर आकर फंस गईं।

कला०। मेरी बुद्धि भी किसी बात पर नहीं जमती और न खयाल ही को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। अगर कोई दुश्मन भी हमारी घाटी में आ पहुंचा होता तो समझते कि यह सब उसी की कार्रवाई है, मगर...

बिमला०। भला यह कैसे कह सकते हैं कि कोई दुश्मन वहां नहीं आया। अगर नहीं आया तो यह मुसीबत किसके साथ आई ? हां यह जरूर कहेंगे कि प्रकट में सिवाय प्रभाकरसिंह के और कोई आया हुआ मालूम नहीं हुआ और न इसी बात का पता लगा कि हमारी लौंडियों में से किसी की नीयत खराब हुई या नहीं।

इन्दु०। (लम्बी सांस लेकर) हाय ! इस बात का भी कुछ पता नहीं लगा कि उन पर (प्रभाकरसिंह पर) क्या बीती ? एक तो लड़ाई में जख्मी होकर वे स्वयम् कमजोर हो रहे थे, दूसरे यह नई आफत और भी आ पहुंची ? ईश्वर ही कुशल करे !!

बिमला०। हां बहिन, मुझे भी जीजाजी के विषय में बड़ी चिन्ता लगी हुई है परन्तु साथ ही इसके मेरे दिल में इस बात का भी बड़ा ही खटका लगा हुआ है कि उन्होंने बदन खोल कर अपने जख्म जो घोर संग्राम में लगे थे हम लोगों को क्यों नहीं देखने दिये ! इसके अतिरिक्त हम लोगों के भोजन में बेहोशी की दवा देने वाला कौन था इस बात को जब मैं विचारती हूं.........(चौंक कर) इस चार-दीवारी के अन्दर कौन है ?

कला०। अरे, यह तो जीजाजी मालूम पड़ते हैं।

बात करते करते बिमला की निगाह मन्दिर की चारदीवार के अन्दर जा पड़ी जहां प्रभाकरसिंह खड़े थे और नजदीक होने के कारण इन सभों की बातें सुन रहे थे। दीवार के जालीदार सूराख बहुत बड़े होने के कारण इनका चेहरा बिमला

को अच्छी तरह दिखाई दे गया था।

कला विमला और इन्दु लपक कर प्रभाकरसिंह के पास आ गईं। प्रभाकरसिंह भी अपने दिल का भाव छिपा कर इन लोगों से बातचीत करने लगे।

प्रभाकरसिंह०। तुम तीनों यहां पर किस तरह आ पहुंचीं? मैं तुम लोगों की खोज में बहुत दिनों से बेतरह परेशान हो रहा हूं। लड़ाई से लौट कर जब मैं तुम्हारी घाटी में गया तो उसे बिल्कुल ही उजाड़ देख कर मैं हैरान रह गया।

इन्दु०। यही बात मैं आपसे पूछने वाली थी मगर........

विमला०। ताज्जुब की बात है कि आप कहते हैं कि 'लड़ाई से लौट कर जब हम उस घाटी में आये तो उसे बिलकुल ही उजाड़ पाया'। क्या लड़ाई से लौटने के बाद आप हम लोगों से नहीं मिले? और आपको घायल देख कर हमलोगों ने इलाज नहीं करना चाहा? या यह कहिए कि आपका जख्मी घोड़ा आपको लड़ाई में से बचा कर भागता हुआ क्या हमारी घाटी के बाहर तक नहीं आया था।

प्रभा०। न मालूम तुम क्या कह रही हो? मैं लड़ाई में से भाग कर नहीं आया बल्कि प्रसन्नता के साथ महाराज सुरेन्द्रसिंह से बिदा होकर तुम्हारी तरफ आया था।

इन्दु०। (ऊंची सांस लेकर) हाय, बड़ा ही अनर्थ हुआ! हम लोग बेढब धोखे में डाले गये? हाय आपका जख्मों को छिपाना हमें खुटके में डाल चुका था, परन्तु प्रेम! तेरा बुरा हो। तू ही ने मुझे सम्हलने न दिया।

प्रभा०। (मन में) मालूम होता है कि हरदेई का कहना ठीक है और कोई दूसरा गैर आदमी मेरी सूरत बन कर इन लोगों के पास जरूर आया था, परन्तु इन्दु के भाव से यह नहीं जाना जाता कि इसने जान बूझ कर उसके साथ.....अस्तु जो हो, सम्भव है कि यह अपने बचाव के लिए मुझे बनावटी भाव दिखा रही हो, हां यह निश्चय हो गया कि हरदेई एक दम झूठी नहीं है कुछ न कुछ दाल में काला अवश्य है। (प्रकट) मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रही हो, खुलासा कहो तो मालूम हो और विचार किया जाय कि मामला क्या है? क्या तुम्हारे कहने का वास्तव में यही मतलब है कि मैं लड़ाई से लौट कर तुम लोगों से मिल चुका हूं?

इन्दु०। बेशक! आपका जख्मी घोड़ा आपके शरीर को बचाता हुआ वहां तक ले आया था और हम लोग आपको जब कि आप बिल्कुल ही बेहोश थे उठा कर घाटी के अन्दर ले आए थे।

प्रभाकर०। मगर ऐसा नहीं हुआ। हरदेई ने तुम लोगों का पर्दा खोलते समय यह भी कहा था कि कोई गैर आदमी प्रभाकरसिंह बन कर उस घाटी में

आया था और बहुत दिनों तक इन्दुमति ने उसके साथ.......

इन्दु०। (बात काट कर) क्या यह बात हरदेई ने आपसे कही थी ?

प्रभा०। हां बेशक। साथ ही इसके (बिमला की तरफ देख के) तुम लोगों के गुप्त प्रेम का हाल भी हरदेई ने मुझसे कह दिया था।

इन्दु०। हाय! अब मैं क्या करूं ? (आसमान की तरफ देख के) हे सर्वशक्तिमान जगदीश! तू ही मेरा न्याय करने वाला है!

इतना कहते कहते इन्दुमति की आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी।

बिमला०। मालूम होता है कि हरदेई ने मेरे साथ दुश्मनी की।

प्रभाकर०। बेशक।

बिमला०। और उसी ने घाटी में आपसे मिल कर......

प्रभाकर०। (बात काट कर) नहीं वह मुझसे घाटी में नहीं मिली बल्कि तुम लोगों की सताई हुई हरदेई इसी तिलिस्म के अन्दर मुझसे मिली थी। बेशक उसने तुम लोगों का भण्डा फोड़ के तुम लोगों के साथ बड़ी दुश्मनी की, मगर वह ऐसा क्यों न करती ? तुम लोगों ने भी तो उसके साथ बड़ी बेदर्दी का बर्ताव किया था!

प्रभाकरसिंह के मुंह से इतना सुनते ही कला बिमला और इन्दुमति ने अपना माथा ठोंका और इसके बाद इन्दुमति ने एक लम्बी सांस लेकर प्रभाकरसिंह से कहा, "अगर तुझमें सामर्थ्य होती तो मैं जरूर अपना कलेजा फाड़ कर आपको दिखाती, हां जरूर दिखाती, नहीं नहीं दिखाऊंगी, मेरे में इतनी सामर्थ्य है, परन्तु अफसोस! हम लोगों के पास इस समय कोई हर्बा नहीं है और आप ऐसी जगह खड़े हैं जहां......

बिमला०। अच्छा कोई चिन्ता नहीं, जिसने धर्म को नहीं छोड़ा है ईश्वर उसका मददगार है! आप पहिले हम लोगों के पास आइये फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

प्रभाकर०। मैं भी यही चाहता हूं परन्तु क्योंकर तुम लोगों के पास आ सकता हूं यह विचारने की बात है।

बिमला०। आप यदि उस सामने वाली पहाड़ी के ऊपर चढ़ते तो ऊपर ही ऊपर यहां तक आ जाते जहां मैं खड़ी हूं और अब भी आप ऐसा कर सकते हैं, या आज्ञा कीजिये तो हम लोग स्वयम् उस राह से घूम कर आपके पास...

बिमला और कुछ कहा ही चाहती थी कि राक्षस की तरह की भयानक सूरत का एक आदमी हाथ में नंगी तलवार लिए हुए कला बिमला और इन्दुमति की तरफ आता प्रभाकरसिंह को दिखाई पड़ा क्योंकि वह उन तीनों के पीछे की तरफ

से आ रहा था जिधर प्रभाकरसिंह का सामना पड़ता था।

प्रभाकर०। (ताज्जुब के साथ) बिमला, क्या बता सकती हो कि वह आदमी कौन है जो तुम लोगों की तरफ आ रहा है?

बिमला कला और इन्दुमति ने घबड़ा कर पीछे की तरफ देखा और तीनों एक दम चिल्ला उठीं। बिमला ने चिल्लाते और आंसू गिराते हुए प्रभाकरसिंह से कहा, "बचाइये बचाइये, आप जल्दी यहां आकर हम लोगों की रक्षा कीजिये, यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है।"

इतना कह कर वे वहां से भागने की चेष्टा करने लगीं परन्तु भाग कर जा ही कहां सकती थीं। बात की बात में वह दुष्ट इन तीनों के पास आ पहुंचा और अपनी जलती हुई क्रोध भरी आंखों से बिमला की तरफ देख कर बोला, "क्यों कम्बख्त! अब बता कि तू मेरे हाथ से बच कर कहां जा सकती है? आज मैं तुम लोगों के खून से अपनी प्यासी तलवार को सन्तुष्ट करूंगा और......"

बस इससे ज्यादे उसने क्या कहा सो प्रभाकरसिंह सुन न सके और न सुनने के लिए वे वहां खड़े रह सके। इस पहाड़ी के नीचे उतर कर और सामने वाले पहाड़ पर चढ़ कर ऊपर उन लोगों के पास पहुंचने की नीयत से प्रभाकरसिंह दौड़े और तेजी के साथ सीढ़ियां उतरने लगे।

प्रभाकरसिंह का मन इस समय बहुत ही व्यग्र हो रहा था और वे सोचते जाते थे कि क्या वहां पहुंचते पहुंचते तक मैं उन तीनों को जीती पाऊंगा और क्या वह दुष्ट मेरा मुकाबला करने के लिये वहां मुझे तैयार मिलेगा!

चौथा बयान

अब देखना चाहिये कि नागर से बिदा होकर भूतनाथ कहां गया और उसने क्या कारंवाई की।

नागर के मकान से उतर कर भूतनाथ सीधे दक्खिन की तरफ रवाना हुआ और रात भर बराबर चलता गया। सुबह होते होते तक वह एक पहाड़ के दामन में पहुंचा जिसके पास एक सुन्दर तालाब था। उस तालाब पर भूतनाथ ठहर गया और कुछ देर आराम करने बाद जरूरी कामों से निपटने के फेर में पड़ा, जब स्नान सन्ध्या इत्यादि से छुट्टी पा चुका तो बटुए में से मेवा निकाल कर खाया जल पीया और इसके बाद पहाड़ पर चढ़ने लगा।

यहां से पहाड़ों का सिलसिला बराबर बहुत दूर तक चला गया था अस्तु भूतनाथ पहाड़ के ऊपर चढ़ कर दोपहर दिन चढ़े तक बराबर चला गया। इस बीच में उसने

कई बड़े बड़े और भयानक जंगल पार किये और अन्त में वह एक गुफा के मुहाने पर पहुंचा जहां साखू और शीशम के बड़े बड़े पेड़ों से अंधकार हो रहा था। भूतनाथ वहां एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और किसी का इन्तजार करने लगा।

भूतनाथ को वहां बैठे हुए घंटे भर से कुछ ज्यादे देर भई होगी कि उसका एक शागिर्द वहीं आ पहुंचा जो इस समय एक देहाती जमींदार की सूरत बना हुआ था। उसने भूतनाथ को जो इस समय अपनी असली सूरत में था देखते ही प्रणाम किया और बोला, "मैं श्यामदास हूं, आपको खोजने के लिए काशी गया हुआ था।"

भूत०। आओ हमारे पास बैठ जाओ और बोलो कि वहां तुमने क्या क्या देखा और किन किन बातों का पता लगाया।

श्यामदास०। वहां बहुत कुछ टोह लेने पर मुझे मालूम हुआ कि प्रभाकरसिंह सही सलामत लड़ाई पर से लौट आये और जब वे उस घाटी में गये तो जमना सरस्वती इन्दुमति को न पाकर बहुत ही परेशान हुए। इसके बाद वे इन्द्रदेव के पास गये और अपने दोस्त गुलाबसिंह के साथ कई दिनों तक वहां मेहमान रहे।

भूत०। ठीक है, यह खबर मुझे भी वहां लगी थी, मैं इन्द्रदेव को देखने के लिए वहां गया था क्योंकि आज कल वे बीमार पड़े हुए हैं। अच्छा तब क्या हुआ?

श्याम०। इसके बाद मैं जमानिया गया, वहां मालूम हुआ कि कुंअर गोपालसिंह की शादी के बारे में तरह तरह की खिचड़ी पक रही है जिसका खुलासा हाल मैं फिर किसी समय आपसे बयान करूंगा, इसके अतिरिक्त आज पन्द्रह दिन से भैयाराजा (गोपालसिंह के चाचा) कहीं गायब हो गये हैं। बाबाजी (दारोगा) वगैरह उनकी खोज में लगे हुए हैं, बहुत से जासूस भी चारो तरफ भेजे गये हैं, मगर अभी तक उनका पता नहीं लगा।

भूतनाथ०। ऐसी अवस्था में कुंअर गोपालसिंह तो बहुत ही परेशान और दुःखी हो रहे होंगे।

श्याम०। होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर उनके चेहरे पर उदासी और तरद्दुद की कोई निशानी मालूम नहीं पड़ती और इस बात से लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है। आज तीन चार दिन हुए होंगे कि कुंअर गोपालसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए 'कैलाश' गये थे, दोपहर तक रह कर वह पुनः जमानिया लौट गये। सुनते हैं कि इन्द्रदेव भी दो चार दिन में जमानियाजाने वाले हैं।

भूतनाथ०। इन्द्रदेव के बारे में जो कुछ सुना करो उसका निश्चय मत माना करो, वह बड़े विचित्र आदमी हैं और यद्यपि मुझे विश्वास है कि वह मेरे साथ

कभी कोई बुराई न करेंगे मगर फिर भी मैं उनसे डरता हूं। दूसरी बातों को जाने दो उनके चेहरे से इस बात का भी शक नहीं लगता कि आज वह खुश हैं या नाखुश।

श्याम०। इन्द्रदेवजी चाहे आपके दोस्त हों मगर मुझे इस बात का शक जरूर है कि वे जमना और सरस्वती को मदद दे रहे हैं।

भूत०। शक क्या मुझे तो इस बात का यकीन सा हो रहा है परन्तु हजार कोशिश करने पर भी इसका मुझे कोई पक्का सबूत नहीं मिला। अभी तक मैं इस विषय का भेद जानने के लिए बराबर कोशिश कर रहा हूं।

श्याम०। ठीक है परन्तु मैं तो इसी बात को एक बहुत बड़ा सबूत समझता हूं कि जमना और सरस्वती उस अद्भुत घाटी में रहती हैं जो एक छोटा सा तिलिस्म समझा जा सकता है। क्या इन्द्रदेव के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी ने उन्हें ऐसी सुन्दर घाटी दी होगी? मुझे तो ऐसा विश्वास नहीं होता।

भूत०। जो हो मगर फिर भी यह एक अनुमान है प्रमाण नहीं। खैर इस विषय पर इस समय बहस करने की कोई जरूरत नहीं, मैं आज किसी दूसरे ही तरद्दुद में पड़ा हुआ हूं जिसके सबब से मेरी तबीयत भी बेचैन हो रही है।

श्याम०। वह क्या?

भूत०। तुम जानते हो कि तुम्हारे भाई रामदास की मदद से मैं जमना सरस्वती इन्दुमति तथा उनकी लौंडियों को उसी घाटी में एक कूएं के अन्दर ढकेल कर जहन्नुम में पहुंचा चुका हूं।

श्याम०। जी हां उसी में मेरा भाई भी तो....

भूत०। बेशक मुझे रामदास के लिए बड़ी चिन्ता लगी हुई है मगर जिस अवस्था में मैं रामदास को देख कर लौटा हूं उसे विचारने से खयाल होता है कि जमना सरस्वती और इन्दुमति जीती बच गई हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

श्याम०। सम्भव है कि ऐसा ही हुआ हो, परन्तु जीती बच जाने पर भी मैं समझता हूं कि वे सब कुछ दिन बाद भूख और प्यास की तकलीफ से मर गई होंगी।

भूत०। नहीं ऐसा नहीं हुआ, अभी कल ही मैंने काशी में सुना है कि वे तीनों प्रभाकरसिंह के साथ बरना नदी के किनारे घूमती फिरती देखी गई हैं।

श्याम०। (चौंक कर) हैं! अगर ऐसी बात है तो उन लोगों की तरह मेरा भाई भी बच कर निकल भागा होगा!!

भूत०। होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर रामदास अभी तक मुझसे नहीं मिला।

श्याम०। तो आपने काशी में किसकी जुबानी ऐसा सुना था ?

इसके जवाब में भूतनाथ ने बाबू साहब नागर तथा चन्द्रशेखर का कुछ हाल बयान किया और कहा—

भूत०। जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में मेरा खयाल है कि रामलाल (बाबू साहब) भी कुछ जानता होगा, मगर उस समय डांट डपट बताने पर भी उसने मुझसे कुछ नहीं कहा।

श्याम०। अगर आप आज्ञा दें और बुरा न मानें क्योंकि वह आपका साला है तो मैं उसे अपने फन्दे में फंसा कर असल भेद का पता लगा लूं। मुझे विश्वास है कि अगर जमना और सरस्वती छूट कर आ गई हैं तो मेरा भाई भी उस आफत से जरूर बच गया होगा।

इतने में भूतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पड़ी। एक आदमी को अपनी तरफ आते देख कर वह चौंका और बोला—

भूत०। देखो देखो, वह कौन आ रहा है !!

श्याम०। (मैदान की तरफ देख कर) हां कोई आ रहा है। ईश्वर करे मेरा भाई रामदास ही हो !

भूत०। मेरे पक्षपाती के सिवाय दूसरा कोई यहां कब आ सकता है ?

देखते ही देखते वह आदमी भूतनाथ के पास आ पहुंचा और झुक कर सलाम करने बाद बोला, "मेरा नाम रामदास है, पहिचान के लिए मैं 'चंचल' शब्द का परिचय देता हूं। ईश्वर की कृपा से मेरी जान बच गई और मैं राजी खुशी आपकी खिदमत में हाजिर हो गया, खाली हाथ नहीं बल्कि अपने साथ एक ऐसी चीज लाया हूं जिसे देख कर आप फड़क उठेंगे और बारबार मेरी पीठ ठोंकेंगे।"

भूत०। (प्रसन्न होकर) वाह वाह, तुम जो कुछ तारीफ का काम करो वह थोड़ा है ! तुम्हारे ऐसा नेक ईमानदार और धूर्त शागिर्द पाकर मैं दुनिया में अपने को धन्य मानता हूं। आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो कि किस तरह तुम्हारी जान बची और मेरे लिये क्या तोहफा लाए हो।

रामदास परिचय लेने के बाद अपने भाई श्यामदास के गले मिला और भूतनाथ के पास बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगा—

राम०। मेरी जान ऐसी दिल्लगी के साथ और ऐसे ढंग से बची है कि उसे याद करके मैं बार बार खुश हुआ करता हूं।

श्याम०। मैंने अभी अभी ओस्तादजी से यही बात कही थी कि अगर जमना

सरस्वती और इन्दु बच कर निकल आई हैं तो मेरा भाई भी जरूर बच कर निकल आया होगा।

राम०। (ताज्जुब के ढंग पर) सो क्या! जमना सरस्वती और इन्दुमति छूट कर कैसे निकल आईं ?

भूत०। कैसे छूट कर निकल आईं सो तो मैं नहीं जानता मगर इतना सुना है कि तीनों प्रभाकरसिंह के साथ काशी में बरना नदी के किनारे टहलती हुई देखी गईं ?

राम०। कब देखी गई है ?

भूत०। आज आठ दस दिन हुए होंगे।

राम०। और उन्हें देखा किसने ?

भूत०। मेरे साले रामलाल ने।

राम०। झुठ, बिल्कुल झूठ! अगर आपने स्वयं अपनी आँखों से देखा होता तब भी मैं न मानता।

भूत०। सो क्यों ?

राम०। कभी चौबीस घंटे भी नहीं हुए होंगे कि मैं उन्हें तिलिस्म के अन्दर फंसी हुई छोड़ कर आया हूं।

भूत०। किस तिलिस्म में ?

राम०। उसी तिलिस्म में, जिस कूएं में आपने उन तीनों को फेंक दिया था वह उसी घाटी वाले तिलिस्म का एक रास्ता है। उसके अन्दर गया हुआ आदमी मरता नहीं बल्कि तिलिस्म के अन्दर फंस जाता है, यही सबब है कि उन लोगों के साथ ही मैं भी उस तिलिस्म में जा फंसा। कुछ दिन के बाद प्रभाकरसिंह उन तीनों की खोज में उस तिलिस्म के अन्दर गये और वहां एकाएक मुझसे मुलाकात हो गई। मुझे देख कर वे धोखे में पड़ गये क्योंकि इश्वर की प्रेरणा से मैं उस समय भी हरदेई की सूरत में ही था। प्रभाकरसिंह ने मुझसे कई तरह के सवाल किए और मैंने उन्हें खूब ही धोखे में डाला। उनके पास एक छोटी सी किताब थी जिसमें उस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था। उसी किताब की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर गए थे। मैंने धोखा देकर वह किताब उनकी जेब में से निकाल ली और उसी की मदद से मुझे छुटकारा मिला। तिलिस्म से निकलते ही मैं सीधा आपसे मिलने के लिए इस तरफ रवाना हुआ और उन सभों को तिलिस्म के अन्दर ही छोड़ दिया। (बटुए में से किताब निकाल और भूतनाथ के हाथ में देकर) देखिये यही वह तिलिस्मी किताब है, अब आप इसकी मदद से बखूबी उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते है।

भूत०। (किताब देख कर और दो चार पन्ने उलट पुलट कर रामदास की पीठ ठोंकता हुआ) शाबाश, तुमने वह काम किया जो आज मेरे किए भी कदाचित नहीं हो सकता था ? वाह वाह वाह ! अब मेरे बराबर कौन हो सकता है ? अच्छा अब तुम हमारे साथ इस खोह के अन्दर चलो और कुछ खा पीकर निश्चिन्त होने के बाद मुझसे खुलासे तौर पर कहो कि उस कूए में जाने के बाद क्या हुआ। निःसंदेह तुमने बड़ा काम किया, तुम्हारी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। अच्छा यह तो बताओ कि वह तिलिस्मी किताब प्रभाकरसिंह को कहां से मिली, क्या इस बात का भी कुछ पता लगा ?

राम०। इसके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता।

भूत०। खैर इसके जांच करने की कुछ विशेष जरूरत भी नहीं है।

राम०। मैं समझता हूं कि अब आप उस तिलिस्म के अन्दर जरूर जायंगे और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को अपने कब्जे में करेंगे।

भूत०। जरूर, क्या इसमें भी कोई शक है ! अभी घंटे डेढ़ घंटे में हम और तुम यहां से रवाना हो जायंगे और आधी रात बीतने के पहिले ही वहां जा पहुंचेंगे। अब तो हम लोग पास आ गये हैं सिर्फ तीन चार घंटे का ही रास्ता है। आज के पहिले जमना और सरस्वती का इतना डर न था जितना अब है। अब उनके खयाल से मैं कांप उठता हूं क्योंकि पहिले तो सिवाय दयाराम के मारने के और किसी तरह का इल्जाम वे मुझ पर नहीं लगा सकती थीं और उस बात का कुछ सबूत मिल भी नहीं सकता था क्योंकि मैंने ऐसा किया ही नहीं, परन्तु अब तो वे लोग कई तरह का इल्जाम मुझ पर लगा सकती हैं और बेशक इधर मैंने उन सभों के साथ बड़ी बड़ी बुराइयां भी की हैं, ऐसी अवस्था में उनका बच जाना मेरे लिए बड़ा ही अनर्थकारक होगा अस्तु जिस तरह हो सकेगा मैं जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह को भी जान से मार कर बखेड़ा तै करूंगा। हां गुलाबसिंह का कुछ पता है कि वह कहां है और क्या कर रहा है ? क्योंकि तुम्हारी जुबानी जो कुछ सुना है उससे मालूम होता है कि वह प्रभाकरसिंह के साथ तिलिस्म के अन्दर नहीं गया।

राम०। हां ठीक है, पर गुलाबसिंह का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ। अच्छा मैं एक बात आपसे पूछा चाहता हूं।

भूत०। वह क्या ?

राम०। आपने अभी जो अपना हाल बयान किया है उसमें चन्द्रशेखर का

हाल सुनने से मुझे बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है। कृपा कर यह बताइये कि वह चन्द्रशेखर कौन है और आप उससे इतना क्यों डरते हैं? क्या उसे अपने कब्जे में करने की सामर्थ्य आपमें नहीं है?

भूत०। (उसकी याद से कांप कर) इस दुनिया में मेरा सबसे बड़ा दुश्मन वही है, ताज्जुब नहीं कि एक दिन उसी की बदौलत जीते जागते रहने पर भी मुझे यह दुनिया छोड़नी पड़े। वह बड़ा ही गेढब आदमी है, बड़ा ही भयानक है, तथा ऐयारी में वह कई दफे मुझे जक दे चुका है। आश्चर्य होता है कि उसके बदन पर कोई हरबा असर नहीं करता। न मालूम उसने किसी तरह का कवच पहिर रक्खा है या ईश्वर ने उसका बदन ही ऐसा बनाया है! उसके बदन पर मेरी दो तलवारें टूट चुकी हैं। उसकी तो सूरत ही देख कर मैं बदहवास हो जाता हूं।

राम० (आश्चर्य के साथ) आखिर वह है कौन?

भूत०। (कुछ सोच कर) अच्छा फिर कभी उसका हाल तुमसे कहेंगे, इस समय जो कुछ बातें दिमाग में पैदा हो रही हैं उन्हें पूरा करना चाहिए अर्थात् जमना सरस्वती और इन्दुमति के बखेड़े से तो छुट्टी पा लें फिर चन्द्रशेखर को भी देख लिया जायगा, आखिर वह अमृत पीकर थोड़े ही आया होगा।

इतना कह कर भूतनाथ उठखड़ा हुआ और अपने दोनों शागिर्दों को साथ लिए हुए खोह के अन्दर चला गया। इस समय रात घंटे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी।

पांचवां बयान

दूसरी पहाड़ी पर चढ़ कर ऊपर ही ऊपर जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास पहुंचने में जल्दी करने पर भी प्रभाकरसिंह को आधे घंटे से ज्यादे देर लग गई। "क्या इतनी देर तक दुश्मन ठहर सकता है? क्या इतनी देर तक ये नाजुक औरतें ऐसे भयानक दुश्मन के हाथ से अपने को बचा सकती हैं? क्या इस निर्जन स्थान में कोई उन औरतों का मददगार पहुंच सकता है? नहीं ऐसी बात तो नहीं हो सकती!" यही सब कुछ सोचते हुए प्रभाकरसिंह बड़ी तेजी के साथ रास्ता तै करके वहां पहुंचे जहां जमना सरस्वती और इन्दुमति को छोड़ गये थे। उन्हें यह आशा न थी कि उन तीनों से मुलाकात होगी, मगर नहीं, ईश्वर बड़ा ही कारसाज है, उसने इस निर्जन स्थान में भी उन औरतों के लिए एक बहुत बड़ा मददगार भेज दिया जिसकी बदौलत प्रभाकरसिंह के पहुंचने तक वे तीनों दुश्मन के हाथ से बची रह गईं।

प्रभाकरसिंह ने वहां पहुंच कर देखा कि जमना सरस्वती और इन्दमति दुश्मन के खौफ से बदहवास होकर मैदान की तरफ भागी जा रही हैं और एक नौजवान बहादुर आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है तलवार से उस दुश्मन का मुकाबला कर रहा है जो उन तीनों औरतों को मारने के लिए वहां आया था। यह तमाशा देख प्रभाकरसिंह तरद्दुद में पड़ गये और सोचने लगे कि हम उन भागती हुई औरतों को ढाढ़स देकर लौटा लावें या पहिले इस बहादुर की मदद करें जो इस समय हमारे दुश्मन का मुकाबला बड़ी बहादरी के साथ कर रहा है। उन दोनों बहादुरों की अद्भुत लड़ाई देख कर प्रभाकरसिंह प्रसन्न हो गये। थोड़ी देर के लिए उनके दिल से तमाम कुलफत जाती रही और वे एकटक उन दोनों की लड़ाई का तमाशा देखने लगे। शैतान जो जमना इत्यादि को मारने आया था यद्यपि बहादुर था और लड़ाई में अपनी तमाम कारीगरी खर्च कर रहा था मगर उस नकाबपोश के मुकाबले वह बहुत दबा हुआ मालूम पड़ने लगा, यहां तक कि उसका दम फूलने लगा और नकाबपोश के झोढ़े पर बैठ कर उसकी तलवार दो टुकड़े हो गई।

कुछ देर के लिए लड़ाई रुक गई और दोनों बहादुर हट कर खड़े हो गये। उस शैतान दुश्मन को जिसका नाम इस मौके के लिये हम बैताल रख देते हैं विश्वास था कि तलवार टूट जाने पर नकाबपोश उस पर जरूर हमला करेगा, मगर नकाबपोश ने ऐसा न किया। वह हट कर खड़ा हो गया और बैताल से बोला, "कहो अब किस चीज से लड़ोगे? मैं उस आदमी पर हर्बा चलाना उचित नहीं समझता जिसका हाथ हथियार से खाली हो।"

इसका जवाब बैताल ने कुछ न दिया, उसी समय नकाबपोश ने प्रभाकरसिंह की तरफ देखा और कहा, "मुझे तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं है, तुम (हाथ का इशारा करके) उन औरतों को सम्हालो और ढाढ़स दो जो इस शैतान के डर से बदहवास होकर भागी जा रही हैं या दुश्मन का मुकाबला करो तो मैं उन्हें जाकर समझाऊं और यहां लौटा ले आऊं।"

प्रभाकरसिंह के दिल में यह खयाल बिजली की तरह दौड़ गया कि मैं उन औरतों की तरफ जाता हूं तो यह नकाबपोश मुझे नामर्द समझेगा और अगर स्वयं दुश्मन का मुकाबला करके नकाबपोश को औरतों की तरफ जाने के लिए कहता हूं तो क्या जाने यह भी उन सभों का दुश्मन ही हो और उन औरतों के पास जाकर कोई बुराई का काम कर बैठे। इस खयाल ने क्षणमात्र के लिए प्रभाकर-

सिंह को चुप कर दिया इसके बाद प्रभाकरसिंह ने कहा, "जो तुम कहो वही करूं ?"

नकाब० । बेहतर होगा कि तुम उन्हीं औरतों की तरफ जाओ ।

"बहुत अच्छा" कह प्रभाकरसिंह बड़ी तेजी के साथ उनकी तरफ लपक पड़े जो भागती हुई अब कुछ आंखों की ओट हो चली थीं । वे भागती चली जाती थीं और पीछे की तरफ फिर फिर कर देखती जाती थीं । दौड़ते दौड़ते वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचीं जिसके आगे एक लम्बी और बहुत ऊंची दीवार थी और बीच में उस पार जाने के लिए एक दर्वाजा बना हुआ था जो इस समय खुला था । इन औरतों को इतनी फुर्सत कहां कि दीवार की लम्बाई चौड़ाई की जांच करतीं या दूसरी तरफ भागने की कोशिश करतीं ? वे सीधी उस दर्वाजे के अन्दर घुस गईं, खास करके इस खयाल से भी कि अगर इसके अन्दर दर्वाजा बन्द कर लेंगे तो दुश्मन से बचाव हो जायगा ।

उसी समय प्रभाकरसिंह भी नजदीक पहुंच गये और इन्दुमति की निगाह प्रभाकरसिंह के ऊपर जा पड़ी । प्रभाकरसिंह ने हाथ के इशारे से उसे रुक जाने के लिए कहा परन्तु उसी समय वह दर्वाजा बन्द हो गया जिसके अन्दर जमना सरस्वती और इन्दुमति घुस गई थीं । प्रभाकरसिंह को यह चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह दर्वाजा खुद बन्द हो गया या इन्दुमति ने जान बूझ कर बन्द कर दिया ।

थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह उस दर्वाजे के पास पहुंचे और धक्का देकर उसे खोलना चाहा मगर दर्वाजा न खुला । प्रभाकरसिंह ने चाहा कि आगे बढ़ कर देखें कि यह दीवार कहां तक गई है परन्तु उसी समय सरस्वती की आवाज कान में पड़ने से वे रुक गये और ध्यान देकर सुनने लगे । यह आवाज उस दर्वाजे के पास दीवार के अन्दर से आ रही थी मानो सरस्वती किसी दूसरे आदमी से बातचीत कर रही है जैसा कि नीचे लिखा जाता है :—

सरस्वती० । हाय, यहां भी दुष्टों से हम लोगों का पिंड न छूटेगा ! ये लोग इस तिलिस्म के अन्दर आ क्योंकर गये यही ताज्जुब है ।

जवाब० । (जो किसी जानकार आदमी के मुंह से निकली हुई आवाज मालूम पड़ती थी) खैर अब तो आ ही गये, अब तुम लोगों के निकाले हम लोग नहीं निकल सकते और अब तुम लोग जान बचा ही कर क्या करोगी क्योंकि प्रभाकरसिंह की निगाह में तुम लोगों की कुछ भी इज्जत न रही, उन्हीं को नहीं बल्कि मुझे भी वह सब हाल मालूम हो गया । इस समय तुम लोग उसी पाप का फल भोग रही हो । अफसोस मुझे तुम लोगों से ऐसी आशा कदापि न थी । अगर मैं ऐसा जानता

तो इस पवित्र घाटी को तुम लोगों के पापमय शरीर से कभी अपवित्र होने न देता।

प्रभाकर०। (ताज्जुब से मन में) हैं ? क्या यह आवाज इन्द्रदेव की है !

सरस्वती०। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो ! क्या किसी दुष्ट ने हम लोगों को बदनाम किया है ? क्या किसी कमीने ने हम लोगों पर कलंक का धब्बा लगाना चाहा है ? नहीं कदापि नहीं, स्वप्न में भी ऐसा नहीं हो सकता ? हम लोगों के पवित्र मनों को डावांडोल करने वाला इस संसार में कोई भी नहीं है । मैं इसके लिए खुले दिल से कसम खा सकती हूं।

जवाब०। दुनिया में जितने बदकार आदमी होते हैं वे कसम खाने में बहुत तेज होते हैं ! मुझसे तुम लोगों की यह चालाकी नहीं लग सकती । जो कुछ मैं इस समय कह रहा हूं वह केवल किसी से सुनी सुनाई बातों के कारण नहीं है बल्कि मुझे इस बात का बहुत ही पक्का सबूत मिल चुका है जिससे तुम कदापि इन्कार नहीं कर सकतीं।

प्रभाकर०। (मन में) बेशक वह बात ठीक मालूम होती है जो हरदेई ने मुझसे कही थी।

सर०। कैसा सबूत और कैसी बदनामी ? भला मैं भी तो उसे सुनूं।

जवाब०। तुम तो जरूर ही सुनोगी, अभी नहीं तो और घंटे भर में सही प्रभाकरसिंह के सामने ही मैं इस बात को खोलूंगा और इस कहावत को चरितार्थ करके दिखा दूंगा कि 'छिपत न दुष्कर पाप, कोटि जतन कीजे तऊ।'

सर०। कोई चिन्ता नहीं, मैं भी अच्छी तरह उस आदमी का मुंह काला करूंगी जिसने हम लोगों को बदनाम किया है और अपने को अच्छी तरह निर्दोष साबित कर दिखाऊंगी।

आवाज०। अगर तुम्हारे किये हो सकेगा तो जरूर ऐसा करना।

सर०। हां हां जरूर ही ऐसा करूंगी । मेरा दिल उसी समय खटका था जब प्रभाकरसिंह ने कुछ व्यंग के साथ बातें की थीं । मैं उस समय उनका मतलब कुछ नहीं समझ सकी थी मगर अब मालूम हो गया कि कोई महापुरुष हम लोगों को बदनाम करके अपना काम निकाला चाहते हैं।

जवाब०। इस तरह की बातें तुम प्रभाकरसिंह को समझाना, मुझ पर इसका कुछ भी असर नहीं हो सकता, यदि मैं तुम्हारा नातेदार न होता तो मुझे इतना कहने की कुछ जरूरत भी न थी, मैं तुम लोगों का मुंह भी न देखता और अब भी ऐसा ही करूंगा । मैं नहीं चाहता कि अपना हाथ औरतों के खून से नापाक

करूं तथापि एक दफे प्रभाकरसिंह के सामने इन बातों को साबित जरूर करूंगा जिसमें कोई यह न कहे कि जमना सरस्वती और इन्दुमति पर किसी ने व्यर्थ ही कलंक लगाया ! अच्छा अब मैं जाता हूं फिर मिलूंगा ।

सरस्वती० । अच्छा अच्छा देखा जायगा, इन चालबाजियों से काम नहीं चलेगा।

बस इसके बाद किसी तरह की आवाज न आई, अस्तु कुछ देर तक और कान लगा कर ध्यान देने के बाद प्रभाकरसिंह पुनः उस दीवार के अन्दर जाने का उद्योग करने लगे । इस ख्याल से कि देखें यह दीवार कहां पर खतम हुई है वे दीवार के साथ ही साथ पूरब तरफ रवाना हुए । दीवार बहुत दूर तक नहीं गई थी, केवल चार या पांच बिगहे के बाद मुड़ गई थी, अस्तु प्रभाकरसिंह भी घूम कर दूसरी तरफ चल पड़े । बीस पचीस कदम आगे जाने के बाद उन्हें एक खुला दर्वाजा मिला । प्रभाकरसिंह उस दर्वाजे के अन्दर चले गये और दूर से जमना सरस्वती और इन्दुमति को एक पेड़ के नीचे बैठे देखा जो नीचे की तरफ सिर झुकाये हुए आंखों से गरम गरम आंसू गिरा रही थीं । क्रोध में भरे हुए प्रभाकरसिंह उन तीनों के पास चले गये और सरस्वती की तरफ देख के बोले—"वह कौन आदमी था जो अभी तुमसे बातें कर रहा था ?"

सरस्वती० । मुझे नहीं मालूम कि वह कौन था ।

प्रभा० । फिर तुमसे इस तरह की बातें करने की उसे जरूरत ही क्या थी ?

सरस्वती० । सो भी मैं कुछ कह नहीं सकती ।

प्रभाकर० । हां ठीक है, मुझसे कहने की तुम्हें जरूरत ही क्या है ! खैर जाने दो, मुझे भी विशेष सुननें की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं तो पहिले ही हरदेई की जुबानी तुम लोगों की बदकारियों का हाल सुन कर अपना दिल ठंढा कर चुका था, अब इस आदमी की बातें सुन कर और भी रहा सहा शक जाता रहा । यद्यपि तुम लोग इस योग्य थीं कि इस दुनिया से उठा दी जातीं और यह पृथ्वी तुम्हारे असह्य बोझ से हलकी कर दी जाती, परन्तु नहीं, उस आदमी की तरह जो अभी तुमसे बातें कर रहा था मैं भी तुम लोगों के खून से अपना हाथ अपवित्र नहीं किया चाहता । खैर तुम दोनों बहिनों से तो मुझे कुछ विशेष कहना नहीं है, रही इन्दुमति सो इसे मैं इस समय से सदैव कें लिए त्याग करता हूं । शास्त्र में लिखा हुआ है कि किसी का त्याग कर देना मार डालने के ही बराबर है ।

इन्दु० । (रोती हुई हाथ जोड़ कर) प्राणनाथ ! क्या तुम दुश्मनों की जुबानी गढ़ी गढ़ाई बातें सुन कर मुझे त्याग कर दोगे !!

प्रभा० । हां त्याग कर दूंगा, क्योंकि जो कुछ बातें तुम्हारे विषय में मैंने सुनी हैं उन्हें यह दूसरा सबूत मिल जाने के कारण मैं सत्य मानता हूं। केवल इतना ही नहीं तुम्हारी ही जुबान से उन बातों की पुष्टि हो चुकी है। अब इसकी भी कोई जरूरत नहीं कि तुम लोगों को इस तिलिस्म के बाहर ले जाने का उद्योग करूं अस्तु अब मैं जाता हूं। (छाती पर हाथ रख कर) मैं इस वज्र की चोट को इसी छाती पर सहन करूंगा और फिर जो कुछ ईश्वर दिखावेगा देखूंगा। मुझे विश्वास हो गया कि बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह वहां से रवाना हो गये। इन्दुमति रो रो कर पुकारती ही रह गई मगर उन्होंने उसकी कुछ भी न सुनी। जिस खिड़की की राह वे इस दीवार के अन्दर गये थे उसी राह से बाहर चले आये और उस तरफ रवाना हुए जहां नकाबपोश और बैताल को लड़ते हुए छोड़ आये थे।

वहां पहुंच कर प्रभाकरसिंह ने दोनों में से एक को भी न पाया, न तो बैताल ही पर निगाह पड़ी और न नकाबपोश ही की सूरत दिखाई दी। ताज्जुब के साथ प्रभाकरसिंह चारो तरफ देखने और सोचने लगे कि कहीं मैं जगह तो नहीं भूल गया, या वे दोनों ही तो आपुस में फैसला करके कहीं नहीं चले गये।

कुछ देर तक इधर उधर ढूंढ़ने के बाद प्रभाकरसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये और झुकी हुई गर्दन को हाथ का सहारा देकर तरह तरह की बातें सोचने लगे। उन्हें इन्दुमति को त्याग देने का बहुत ही रंज था और वे अपनी जल्दबाजी पर कुछ देर के बाद पछताने लग गये थे। वे अपने दिल से कहने लगे कि 'अफसोस, मैंने इस काम में जल्दबाजी की। यद्यपि इन्दुमति की बदकारी का हाल सुन कर मेरे सिर से पैर तक आग लग गई थी मगर मुझे उसका कुछ सबूत भी तो ढूंढ़ लेना चाहिए था। सम्भव है कि हरदेई इन सभों की दुश्मन बन गई हो और उसने हम लोगों को रंज पहुंचाने के खयाल से ऐसी मनगढ़न्त कहानी कह कर और इन्दुमति पर इल्जाम लगा कर अपना कलेजा ठंडा किया हो। अगर वास्तव में यही बात हो तो कोई ताज्जुब नहीं क्योंकि हरदेई का उन तीनों के साथ न रह कर अलग ही तिलिस्म के अन्दर दिखाई देना कोई मामूली बात नहीं है बल्कि इसका कोई खास सबब जरूर है। अच्छा तो वह दूसरा आदमी कौन हो सकता है जिसने उस दीवार के अन्दर सरस्वती से बातचीत की थी? सम्भव है कि बैताल की तरह वह भी इन्दुमति जमना और सरस्वती का दुश्मन हो और मुझे सुनाने और धोखे में डालने के लिए उसने यह ढंग रचा हो। हो सकता

है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। साथ ही इसके यह भी तो सोचना चाहिये कि अगर जमना और सरस्वती को ऐसा ही बुरा काम करना होता तो वे मुझे और इन्दुमति को अपने घर क्यों लातीं और मेरे साथ ऐसा अच्छा सलूक क्यों करतीं ? नहीं नहीं, इन्दुमति से मुझे ऐसा आशा नहीं हो सकती। वह इन्दुमति जो लड़कपन से आज तक अपने विशुद्ध आचरण के कारण बराबर अच्छी और नेक गिनी गई है आज ऐसा कर्म करे यह कब सम्भव है ? और हो भी तो क्या आश्चर्य है, आदमी के दिल को बदलते क्या देर लगती है? जो हो मगर मुझे ऐसी जल्दी न करनी चाहिए थी। और कुछ नहीं तो इन्दुमति से हरदेई वाली बात खुलासे तौर पर कह कर उसका जवाब भी तो सुन लेना उचित था। आह, मैंने जो कुछ किया वह कर्तव्य के विरुद्ध था। हरदेई ने जरूर मुझे धोखे में डाला, वह दगाबाज थी, अगर ऐसा न होता तो मेरे जेब से तिलिस्मी किताब चुरा कर क्यों भाग जाती ? परन्तु उसके भाग जाने का भी तो कोई सबूत नहीं हैं। उसका खून से भरा हुआ कपड़ा केलों के झुरमुट में मिला था जिससे खयाल हो सकता है कि वह दुश्मनों के हाथ पड़ गई। लेकिन अगर ऐसा ही था और दुश्मन उसके सर पर आ गया था तो उसने चिल्ला कर मुझे जगा क्यों न दिया। सम्भव है कि वह खून से भरा हुआ कपड़ा हरदेई ही के हाथ का रक्खा हो।'

इसी तरह की बातें थोड़ी देर तक प्रभाकरसिंह सोचते और दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने से बेचैन होते रहे, परन्तु इस बात का ठीक ठीक निश्चय नहीं कर सकते थे कि उन्होंने जो कुछ बर्ताव इन्दुमति के साथ किया वह उचित था या अनुचित।

इस तरह की चिन्ता करते करते सन्ध्या हो गई। सूर्य भगवान इस दुनिया को छोड़ किसी दूसरी ही दुनिया को अपनी चमक दमक से प्रफुल्लित करने के लिए चले गये। यह बात औरों को चाहे बुरी मालूम हो परन्तु खुले दिल से मुंह दिखाने वालों में आसमान के सितारों को बहुत भली मालूम हुई, अस्तु व दुनिया के विचित्र मामले को लापरवाही के साथ देखने के लिए निकल आये और औरों के साथ ही प्रभाकरसिंह की अवस्था पर अफसोस करने लगे। प्रभाकरसिंह अपने विचारों में ऐसा डूबे हुए थे कि उनको इस बात की कुछ खबर ही न थी।

जब रात कुछ ज्यादे बीत गई और सर्दी लगने लगी तब प्रभाकरसिंह चैतन्य हुए और आसमान की तरफ देख कर आश्चर्य करने लगे तथा अपने ही आप बोल उठे, "ओह बहुत देर हो गई। मैंने इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया और न

अपने लिये कुछ बन्दोबस्त ही किया। अस्तु अब तो रात इसी जंगल मैदान में बिता देनी पड़ेगी।"

अपनी चिन्ता में निमग्न प्रभाकरसिंह को खाने पीने की तथा और किसी जरूरी काम की फिक्र न रही और वे पुनः उसी तरह सिर नीचा करके सोचने लग गये। ऐसी अवस्था में निद्रादेवी ने भी उनका साथ छोड़ दिया और उन्हें अपने खयाल में डूबे रहने दिया।

आधी रात बीत जाने के बाद अपनी बाईं तरफ कुछ उजाला देख प्रभाकरसिंह चौंक पड़े और उसी उजाले की तरफ देखने लगे। यह रोशनी उसी दीवार के अन्दर से आ रही थी जिसके अन्दर जाकर प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति से मुलाकात की थी और अनुचित अवस्था में उनका तिरस्कार किया था।

यह रोशनी मामूली नहीं थी बल्कि बहुत ज्यादे और दिल में खुटका पैदा करने वाली थी, मालूम होता था कि कई मन लकड़ियां बटोर कर उसमें किसी ने आग लगा दी हो। प्रभाकरसिंह का दिल धकड़ने लगा और वे घबराहट के साथ उस पल पल में बढ़ती हुई रोशनी को बड़े गौर से देखते हुए उठ खड़े हुए।

प्रभाकरसिंह के दिल की इस समय क्या अवस्था थी इसका कहना बड़ा ही कठिन है। यद्यपि वे उस दीवार के अन्दर जाकर उस रोशनी का कारण जानने के लिए उत्कंठित हो रहे थे परन्तु दिल की परेशानी और घबड़ाहट ने मानों उनकी ताकत छीन ली थी और पैर उठाना भारी हो गया था। तथापि उन्होंने बड़ी कठिनता से अपने दिल को सम्हाला और धीरे धीरे कदम उठा कर उसी दीवार की तरफ जाने लगे। जब उस दीवार के पास पहुचे तो उसी खिड़की की राह उसके अन्दर घुसे जिस राह से पहिले गये थे। इस समय वह रोशनी जो एक दफे बड़ी तेजी के साथ बढ़ चुकी थी धीरे धीरे कम होने लगी थी।

जहां पर जमना सरस्वती और इन्दुमति से मुलाकात हुई थी वहां पहुंच कर प्रभाकरसिंह ने देखा कि एक बहुत बड़ी चिता सुलग रही है और बहुत ध्यान देने पर मालूम होता है कि उसके अन्दर कोई लाश भी-जल रही है जो अब अन्तिम अवस्था को पहुंच कर भस्म हुआ ही चाहती है। धूएं में बदबू होने से भी इस बात की पुष्टि होती थी।

प्रभाकरसिंह का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था और वे बेचैनी और घबराहट के साथ उस चिता को देख रहे थे कि यकायक उनकी आंखें डबडबा आईं और गरम गरम आंसू उनके गुलाबी गालों पर मोतियों की तरह लुढ़कने

लगे। इससे भी उनके दिल की हालत न सम्हली और वे बड़े जोर से पुकार उठे, "हाय इन्दे! क्या इस धधकती हुई अग्नि के अन्दर तू ही तो नहीं है?" इतना कह कर प्रभाकरसिंह जमीन पर बैठ गए और सर पर हाथ रख कर अपने बेचैन दिल को काबू में लाने की कोशिश करने लगे।

घंटे भर तक अपने को सम्हालने का उद्योग करने पर भी वे कृतकार्य न हुए और फिर उठ कर बड़ी बेदिली के साथ पुनः उस चिता की तरफ देखने लगे जो अब लगभग निर्धूम हो रही थी परन्तु उसकी रोशनी दूर दूर तक फैल रही थी।

यकायक प्रभाकरसिंह की निगाह किसी चीज पर पड़ी जो उस चिता से कुछ दूरी पर थी परंतु आग की रोशनी के कारण अच्छी तरह दिखाई दे रही थी। प्रभाकरसिंह उसके पास चले गये और बिना कुछ सोचे विचारे उसे उठा कर बड़े गौर से देखने लगे। यह कपड़े का एक टुकड़ा था जो हाथ भर से कुछ ज्यादे बड़ा था। प्रभाकरसिंह ने पहिचाना कि यह इन्दुमति की उसी साड़ी में का एक टुकड़ा है जिसे पहिरे हुए उसे आज उन्होंने उस जगह पर देखा था। इस टुकड़े ने उनके दिल को चकनाचूर कर दिया और उस समय तो उनकी अजीब हालत हो गई जब उस टुकड़े के एक कोने में कुछ बंधा हुआ उन्होंने देखा। खोलने पर मालूम हुआ कि वह एक चीठी है जिसकी लिखावट ठीक इन्दुमति के हाथ की लिखावट की सी है, परन्तु अफसोस कि इस रोशनी में तो वह पढ़ी ही नहीं जाती और चिता की आंच अपने पास आने की इजाजत नहीं देती। अब उस चिता में इतनी रोशनी भी नहीं रह गई थी कि दूर ही से इस लिखावट को पढ़ सकें। इस समय कोई दुश्मन भी प्रभाकरसिंह की बेचैनी को देखता तो कदाचित उनके साथ हमदर्दी का बर्ताव करता।

धीरे धीरे चिता ठंडी हो गई मगर प्रभाकरसिंह ने उसका पीछा न छोड़ उसी के पास ही बैठ कर रात बिता दी। हाथ में वह कागज लिए हुए कई घण्टे तक प्रभाकरसिंह सुबह की सुफेदी का इन्तजार करते रहे और जब पत्र पढ़ने योग्य चांदना हो गया तब उसे बड़ी बेचैनी के साथ पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ था :—

"प्राणनाथ! बस हो चुका, दुनिया इतनी ही थी। मैं अब जाती हूं और तुम्हें दयामय परमात्मा के सुपुर्द करती हूं। मैं जब तक इस दुनिया में रही बहुत ही सुखी रही, तरह तरह के दुःख भोगने पर भी मुझे विशेष कष्ट न हुआ क्योंकि तुम्हारे प्रेम का सहारा हर दम मेरे साथ था। इसके अतिरिक्त आशालता की हरियाली जिसका सब कुछ सम्बन्ध तुम्हारे ही शरीर के साथ था मुझे सदैव प्रसन्न

रखती थी, परन्तु अब इस दुनिया में मेरे लिए कुछ नहीं रहा और मेरी वह आशा-लता भी बिल्कुल ही सूख गई। तुम्हारे अतिरिक्त यदि और कुछ इस दुनिया में मुझे देखना होता तो मैं अवश्य जीती रहती परन्तु नहीं, जब तुम्हीं ने मुझे त्याग दिया तो अब क्यों और किसके लिए जीऊं? मैं इसी विचार से बहुत सन्तुष्ट हूं कि तुम्हें मेरे लिए दुःख न होगा क्योंकि किसी दुष्ट की कृपा से तुम मुझसे रुष्ट हो चुके हो इसलिए तुमने मुझे त्याग दिया और तुम्हें मेरे मरने का कुछ भी दुःख न होगा, परन्तु यदि कदाचित् किसी समय इस जालसाजी का भंडा फूट जाय और तुम्हारे विचार से मैं बेकसूर समझी जाऊं तो यही प्रार्थना है कि तुम मेरे लिए कदापि दुःखित न होना, बस...."

इस पत्र को पढ़ कर प्रभाकरसिंह बहुत बेचैन हुए। मालूम होता था कि किसी ने अन्दर घुस और हाथ से पकड़ के उनका कलेजा ऐंठ दिया है। यद्यपि उन्होंने इन्दुमति का तिरस्कार कर दिया था परन्तु इस समय उनके दिल ने गवाही दे दी कि 'हाय, तूने व्यर्थ इन्दुमति को त्याग दिया? वह वास्तव में निर्दोष थी इसी कारण तेरे उन शब्दों को बर्दाश्त न कर सकी जो उसके सतीत्व में धब्बा लगाने के लिये तूने कहे थे। हाय इन्दे! अब मुझे मालूम हो गया कि तू वास्तव में निर्दोष थी, आज नहीं तो कल इस बात का पता लग ही जायगा।' इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने पुनः उस चिता की तरफ देखा और कुछ सोचने के बाद गरम आंसू बहाते हुए वहां से रवाना हुए मगर उनकी भृकुटी, उनके फड़कते हुए होंठ और उनकी लाल लाल आंखों से जाना जाता है कि इस समय किसी से बदला लेने का ध्यान उनके दिल में जोश मार रहा था।

उस दीवार के बाहर हो जाने बाद प्रभाकरसिंह को यकायक यह खयाल पैदा हुआ कि इन्दुमति का हाल तो जो कुछ हुआ मालूम हो गया, परन्तु जमना और सरस्वती के विषय में कुछ मालूम न हुआ, सम्भव है कि वहां उन लोगों ने भी इसी तरह कुछ लिख कर रख दिया हो जिसके देखने से उन लोगों का कुछ हाल मालूम हो जाय। यदि उन लोगों से मुलाकात हो गई तो उनकी जुबानी इन्दुमति की अन्तिम अवस्था का ठीक ठीक हाल मालूम हो जायगा। यह सोच कर प्रभाकरसिंह पुनः पलट पड़े और उस चिता के पास जाकर इधर उधर देखने लगे परन्तु और किसी बात का पता न लगा, लाचार प्रभाकरसिंह लौट कर उस दीवार के बाहर निकल आये।

अब दिन घंटे भर से ज्यादे चढ़ चुका था। दीवार के बाहर निकल कर प्रभा-

करसिंह कुछ सोचने लगे और इधर उधर देखने के बाद कुछ सोच कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गये और दूर तक निगाह दौड़ा कर देखने लगे। यकायक उनकी निगाह हरदेई के ऊपर पड़ी जो उसी दीवार की तरफ बढ़ी जा रही थी जिसके अन्दर जमना सरस्वती और इन्दुमति को प्रभाकरसिंह ने छोड़ा था। हरदेई को देखते ही प्रभाकरसिंह पेड़ के नीचे उतरे और बड़ी तेजी के साथ उसी तरफ जाने लगे।

यह हरदेई वास्तव में वही नकली हरदेई थी जो एक दफे प्रभाकरसिंह को धोखे में डाल चुकी थी अर्थात भूतनाथ का शागिर्द रामदास इस समय भी हरदेई की सूरत बना हुआ भूतनाथ के साथ ही इस तिलिस्म के अन्दर आया हुआ था और पुन: जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को धोखे में डाल कर अपना या अपने ओस्ताद का कुछ काम निकालना चाहता था, मगर इस समय उसे यह खबर न थी कि प्रभाकरसिंह मुझे देख रहे हैं और न वह प्रभाकरसिंह से मिला ही चाहता था।

रामदास ने जब आशा के विरुद्ध प्रभाकरसिंह को अपनी तरफ आते देखा तो ताज्जुब में आकर चौंक पड़ा तथा भाग जाना मुनासिब न समझ कर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

प्रभाकर०। (नकली हरदेई के पास पहुंच कर) हरदेई, तू यहां कैसे आई?

हरदेई०। मेरी किस्मत मुझे यहाँ ले आई। मैं तो उसी समय अपनी जान से हाथ धो चुकी थी जिस समय आपसे अलग हुई थी, मगर मेरी किस्मत में अभी कुछ दिन और जीना बदा था इसलिए एक महापुरुष की मदद से बच गई।

प्रभाकर०। आखिर तुम पर क्या आफत आई थी सो तो सुनूं?

हरदेई०। आप जब थकावट मिटाने के लिये उस चबूतरे पर लेट गये तो उसी समय आपकी आंख लग गई, मैं बड़ी देर तक चुपचाप बैठी बैठी घबड़ा गई थी इस लिए उठ कर इधर उधर टहलने लगी। घूमती फिरती मैं कुछ दूर निकल गई, उसी समय यकायक पत्तों की झुरमुट में से एक आदमी निकल आया जो स्याह कपड़े और नकाब से अपने बदन और चेहरे को छिपाये हुए था। मैं उसे देख कर घबड़ा गई और दौड़ कर आपकी तरफ आने लगी मगर उसने झपट कर मुझे पकड़ लिया और एक मुक्का मेरी पीठ पर इस जोर से मारा कि मैं तिलमिला कर बैठ गई। उसने मुझे जबर्दस्ती कोई दवा सुंघा दी जिससे मैं बेहोश हो गई और तनोबदन की सुधि जाती रही, दूसरे दिन जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया, तब से मैं आपको बराबर खोज रही हूं।

प्रभाकर० । (हरदेई की बेतुकी बातों को ताज्जुब से सुन कर) आखिर उसने तुझे इस तरह सता कर क्या फायदा उठाया ?

हरदेई०। (कुछ घबड़ानी सी होकर) सो तो मैं कुछ भी नहीं जानती।

प्रभाकर० । उसने छुरी या खञ्जर से तुझे जख्मी तो नहीं किया ?

हरदेई० । जी नहीं ।

प्रभाकर० । मैं जब सो कर उठा तो तुझे ढूंढ़ने लगा । एक जगह केले की झुरमुट में तेरे कपड़े का टुकड़ा खून से भीगा हुआ देखा था जिससे मुझे खयाल हुआ कि हरदेई को किसी ने खञ्जर या छुरी से जख्मी किया है।

हरदेई० । जी नहीं मुझे तो इस बात की कुछ भी खबर नहीं ।

प्रभाकर० । और वह महात्मा पुरुष कौन थे जिन्होंने तुझे बचाया ? अभी अभी तू कह चुकी है कि 'बेहोशी के बाद जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया' अस्तु कैसे समझा जाय कि किसी महापुरुष ने तुझे बचाया ?

नकली हरदेई के चेहरे पर घबड़ाहट की निशानी छा गई और वह इस भाव को छिपाने के लिए मुड़ कर पीछे की तरफ देखने लगी मगर प्रभाकरसिंह इस ढंग को अच्छी तरह समझ गये और जरा तीखी आवाज में बोले, "बस मुझे ज्यादे देर तक ठहरने की फुरसत नहीं है, मेरी बातों का जवाब जल्दी जल्दी देती जा !"

हरदेई० । जी हां जब मैं खुलासे तौर पर अपना हाल कहूंगी तब आपको मालूम हो जायगा कि वह महात्मा कौन था और अब कहां है जिसने मुझे बचाया था, अभी मैंने संक्षेप में ही अपना हाल आपसे कहा था ।

प्रभा० । खैर तो वह खुलासा हाल कहने में देर क्या है ! अच्छा जाने दे खुलासा हाल भी मैं सुन लूंगा, पहिले तेरी तलाशी लिया चाहता हूं ।

हरदेई० । (घबड़ा कर) तलाशी कैसी और क्यों ?

प्रभा० । इसका जवाब मैं तलाशी ले लेने के बाद दूंगा ।

हरदेई० । आखिर मुझ पर आपको किस तरह का शक हुआ ?

प्रभा० । मुझे कई बातों का शक हुआ जो मैं अभी कहना नहीं चाहता ।

इतना कहते ही कहते प्रभाकरसिंह ने हरदेई का हाथ पकड़ लिया क्योंकि उसके रंग ढंग से मालूम होता था कि वह भागना चाहती है। हरदेई ने पहिले तो चाहा कि झटका देकर अपने को प्रभाकरसिंह के कब्जे से छुड़ा ले मगर ऐसा न हो सका । प्रभाकरसिंह ने जब देखा कि यह धोखा देकर भाग जाने की फिक्र में है तब उन्हें बेहिसाब क्रोध चढ़ आया और एक मुक्का उसकी गरदन पर मार

कर जबर्दस्ती उन्होंने उसके ऊपर का कपड़ा खैंच लिया।
रामदास यद्यपि ऐयार था मगर उसमें इतनी ताकत न थी कि वह प्रभाकर-
सिंह का मुकाबला कर सकता। प्रभाकरसिंह के हाथ का मुक्का खाकर वह बेचैन
हो गया और उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और फिर उसकी हिम्मत न
पड़ी कि वह भाग जाने के लिए उद्योग करे। प्रभाकरसिंह को भी विश्वास हो
गया कि यह हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है। मामूली कपड़ा उतार लेने के
साथ ही प्रभाकरसिंह का बचा बचाया शक भी जाता रहा साथ ही इसके उन्होंने
यह भी निश्चय कर लिया कि हमारी तिलिस्मी किताब जरूर इसी ऐयार ने चुराई है।
तिलिस्मी किताब पा जाने की उम्मीद में प्रभाकरसिंह ने जहां तक हो सका
बड़ी होशियारी के साथ उसकी तलाशी ली और उसके ऐयारी के बटुए में भी
जिसे वह छिपा कर रक्खे हुए था देखा मगर किताब हाथ न लगी। तलाशी में
केवल ऐयारी का बटुआ खंजर और एक कटार उसके पास से मिला जिसे प्रभा-
करसिंह ने अपने कब्जे में कर लिया और पूछा, "बस अब तो तेरा भेद अच्छी
तरह खुल गया। खैर यह बता कि तेरा क्या नाम है और मेरे साथ तूने इस तरह
की दगाबाजी क्यों की?"

राम०। क्या जो कुछ मैं बताऊंगा उस पर आप विश्वास कर लेंगे?

प्रभाकर०। नहीं।

राम०। फिर इसे पूछने से फायदा क्या?

प्रभाकरसिंह ने क्रोध भरी आंखों से सिर से पैर तक उसे देखा और कहा,
"बेशक कोई फायदा नहीं मगर तूने मेरे साथ बड़ी दगाबाजी की और व्यर्थ ही
बेचारी इन्दुमति पर झूठा कलंक लगा कर उसे और साथ ही इसके मुझे भी बर्बाद
कर दिया।"

राम०। बेशक मैंने किया तो बहुत बुरा मगर मैं तो ऐयार हूं, मालिक की
भलाई के लिए उद्योग करना मेरा धर्म है। जो कुछ मुझसे बन पड़ा किया, अब
आपके कब्जे में हूं जो उचित और धर्म समझिये कीजिये।

प्रभाकर०। (क्रोध को दबाते हुए) तू किसका ऐयार है?

राम०। मैं पहिले ही कह चुका हूं कि मेरी बातों पर आपको विश्वास न होगा,
फिर इन सब बातों को पूछने से फायदा क्या है?

प्रभाकरसिंह का दिल पहिले ही से जख्मी हो रहा था, अब जो मालूम हुआ
कि हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है और इसने धोखा देकर

अपना काम निकालने के लिए इन्दुमति जमना और सरस्वती को बदनाम किया था तो उनके दुःख और क्रोध की सीमा न रही, तिस पर रामदास की ढिठाई ने उनकी क्रोधाग्नि को और भड़का दिया, अस्तु वे उचित अनुचित का कुछ भी विचार न कर सके। उन्होंने रामदास की कमर में एक लात ऐसी मारी कि वह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पड़ा, इसके बाद लात और जूते से उसकी ऐसी खातिरदारी की कि वह बेहोश हो गया और उसके मुंह से खून भी बहने लगा। इतने पर भी प्रभाकरसिंह का क्रोध शान्त न हुआ और उसे कुछ और सजा दिया चाहते थे कि सामने से आवाज आई, "हां हां, बस जाने दो, हो चुका बहुत हुआ।"

प्रभाकरसिंह ने आंख उठा कर सामने की तरफ देखा तो एक वृद्ध महात्मा पर उनकी निगाह पड़ी जो तेजी के साथ प्रभाकरसिंह की तरफ बढ़े आ रहे थे।

छठवां बयान

वृद्ध महात्मा का ठाठ कुछ अजब ही ढंग का था, सिर से पैर तक तमाम बदन में भस्म लगे रहने के कारण इनके रंग का बयान करना चाहे कठिन हो परन्तु फिर भी इतना जरूर कहेंगे कि लगभग सत्तर वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी उनके खूबसूरत और सुडौल बदन में अभी तक कहीं झुर्री नहीं पड़ी थी और न उनके सीधेपन में कोई झुकाव आया था। बड़ी बड़ी आंखों में अभी तक गुलाबी डोरियां दिखाई दे रही थीं और उनके कटाक्ष से जाना जाता था कि अभी तक उनकी रोशनी और ताकत में किसी तरह की कमी नहीं हुई है। रोआबदार चेहरा चौड़ी छाती तथा मजबूत और गठीले हाथ पैरों की तरफ ध्यान देने से यही कहने को जी चाहता है कि यह शरीर तो छत्र और मुकुट धारण करने योग्य है न कि जटा और कम्बल की कफनी के योग्य।

महात्मा के सिर पर लम्बी जटा थी जो खुली हुई पीठ की तरफ लहरा रही थी। मोटे और मुलायम कम्बल का झगा बदन में और लोहे का एक डण्डा हाथ में था, बस इसके अतिरिक्त उनके पास और कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

महात्मा को देखते ही प्रभाकरसिंह ने झुक के प्रणाम किया, बाबाजी ने भी पास आकर आशीर्वाद दिया और कहा, "प्रभाकरसिंह, बस जाने दो, बहादुर लोग ऐयारों की जान नहीं मारते और ऐयार भी जान से मारने के योग्य नहीं होते बल्कि कैद करने के योग्य होते हैं। तुम इस समय यद्यपि इस योग्य नहीं हो कि इसे कैद करके कहीं रख सको तथापि यदि कहो तो हम इसका प्रबन्ध कर दें क्योंकि

इस तिलिस्म के अन्दर हम इस बात को बखूबी कर सकते हैं।"

प्रभाकर०। (बात काट कर) आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं कदापि न करूंगा। आप बड़े हैं, मेरा दिल गवाही देता है और कहता है कि यदि आप वास्तव में साधू न भी हों तो भी मेरे पूज्य और बड़े हैं। जो कुछ आज्ञा कीजिये मैं करने को तैयार हूं पर आपको कदाचित यह न मालूम हुआ होगा कि इसने मुझे कैसी कैसी तकलीफें दी हैं और किस तरह मेरा सर्वनाश किया है, और इस समय भी यह कैसी ढिठाई के साथ बातें कर रहा है, अपना नाम तक नहीं बताता।

बाबा०। मैं सब कुछ जानता हूं, तुमने स्वयम् भूल कर अपने को इसके हाथ फंसा दिया है, अगर वह किताब जिसमें इस तिलिस्म का कुछ थोड़ा सा हाल लिखा हुआ था और जो इन्द्रदेव ने तुमको दी थी इसने तुम्हारे जेब से न निकाल ली होती तो यह कदापि यहां तक पहुंच न सकता, मगर अफसोस, तुमने पूरा धोखा खाया और उस किताब की भी बखूबी हिफाजत न कर सके।

प्रभाकर०। बेशक ऐसा ही है, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि वास्तव में यह कौन है।

बाबा०। हां तुम इसे नहीं जानते, हरदेई समझ कर तुम इसके हाथ से बर्बाद हो गये, यह असल में गदाधरसिंह का शागिर्द रामदास है। इसी ने असली हरदेई को धोखा दकर गिरफ्तार कर लिया और स्वयम् हरदेई की सूरत बन जमना और सरस्वती को धोखे में डाला, इस तिलिस्मी घाटी का रास्ता देख लिया और भूतनाथ को इस घाटी के अन्दर लाकर जमना सरस्वती और इन्दुमति को आफत में फंसा दिया। भूतनाथ ने अपने हिसाब से तो उन तीनों को मार ही डाला था परन्तु ईश्वर ने उन्हें बचा लिया, सुनो हम इसका खुलासा हाल तुमसे बयान करते हैं।

इतना कह कर बाबाजी ने भूतनाथ और रामदास का पुरा पूरा हाल जो हम ऊपर के बयानों में लिख आए हैं कह सुनाया अर्थात् जिस तरह रामदास ने हरदेई को गिरफ्तार किया, स्वयं हरदेई की सूरत बन कर कई दिनों तक जमना सरस्वती के साथ रहा, घाटी में आने जाने का रास्ता देख कर भूतनाथ का बताया, प्रभाकरसिंह की सूरत बन कर जिस तरह भूतनाथ इस घाटी के अन्दर आया, और जमना सरस्वती इन्दुमति तथा और लौंडियों को भी कूएं के अन्दर फेंक कर बखेड़ा तै किया और अन्त में रामदास स्वयं जिस तरह कूए के अन्दर जाकर खुद भी उसमें फंस गया आदि आदि रत्ती रत्ती हाल बयान किया, जिसे सुन कर प्रभाकरसिंह हैरान हो गये और ताज्जुब करने लगे।

प्रभाकर० । (आश्चर्य से) यह सब हाल आपको कैसे मालूम हुआ ?

बाबा० । इसके पूछने की कोई जरूरत नहीं, जब हमको तुम पहिचान जाओगे तब स्वयं तुम्हें इसका सबब मालूम हो जायगा । (रामदास की तरफ देख के) क्यों रामदास ! जो कुछ हमने कहा वह सब सच है या नहीं ?

रामदास० । बेशक आपने जो कुछ कहा सब सच है ।

बाबा० । (रामदास से) अब तो बताओ कि तुम्हारा गुरु भूतनाथ कहां है ।

रामदास० । मुझे नहीं मालूम ।

बाबा० । (हंस कर) अगर तुम्हें मालूम नहीं है तो मुझे जरूर मालूम है ! (प्रभाकरसिंह से) अच्छा अब हम जाते हैं, जरूरत होगी तो फिर मुलाकात करेंगे। केवल इसीलिए तुम्हारे पास आये थे कि इस रामदास और भूतनाथ को चालबाजी से तुम्हें होशियार कर दें जिसमें इन लोगों के बहकाने में पड़ कर तुम जमना सरस्वती और इन्दुमति के साथ किसी तरह की बेमुरौवती न कर जाओ मगर अफसोस हमारे पहुंचने के पहिले ही तुमने इन लोगों के धोखे में पड़ कर इन्दुमति और साथ ही उसके जमना सरस्वती का तिरस्कार कर दिया और उन लोगों के साथ ऐसा वर्ताव किया जो तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान के योग्य न था ।

प्रभाकर० । (डबडबाई हुई आंखों से और एक लम्बी सांस लेकर) बेशक मैंने बहुत बुरा धोखा खाया, मेरी किस्मत ने मुझे डुबा दिया और कहीं का न रक्खा। (आसमान की तरफ देख कर) हे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ? क्या मैं इसीलिए इस दुनिया में आया था कि तरह तरह की तकलीफें उठाऊं ? जब से मैंने होश सम्हाला तब से आज तक साल भर सुख से बैठना नसीब न हुआ । किस किस दुःख को रोऊं और किस किस को याद करूं ! हाय माता पिता की अवस्था पर ध्यान देता हूं तो कलेजा मुंह को आता है, अपनी दुर्दशा पर विचार करता हूं तो दुनिया अंधकारमय दिखाई पड़ती है । तो फिर क्या मैं ऐसा ही बदकिस्मत बनाया गया हूं ? क्या यह मेरे कर्मों का फल है ! कदाचित ऐसा भी हो तो फिर दुनिया में जितने आदमी हैं सभी तो अपने अपने कर्म का फल भोग रहे हैं । फिर मुझमें और अन्य अभागों में भेद ही किस बात का ठहरा ? और जब अपने ही कर्मों का फल भोगना ठहरा तो तुम्हारा भरोसा ही करके क्या किया । अगर यह कहो कि इस भरोसे का फल किसी और समय मिलेगा तो यह भी कोई बात न ठहरी, जब मेरे समय पर तुम्हारा भरोसा काम न आया तो खेत सूखे पर वर्षा वाली कहावत सिद्ध हुई ...

बाबा० । (बात काट कर) बेटा घबड़ाओ मत और परमेश्वर का भरोसा मत

छोड़ो, वह तुम्हारे सभी दुःखों को दूर करेगा। उसकी कृपा के आगे कोई बात कठिन नहीं है। वह यदि दयालु होगा तो तुम्हें तुम्हारे माता पिता से भी मिला देगा और तुम्हारी स्त्री इन्दुमति भी पुनः तुम्हारी सेवा में दिखाई दे जायगी। बस अब मैं जाता हूं, ईश्वर तुम्हारा भला करे।

प्रभाकर०। (बाबाजी को रोक कर) कृपा कर और भी मेरी दो एक बातों का जवाब देते जाइये।

बाबा०। पूछो क्या पूछना चाहते हो!

प्रभाकर०। जिस मनुष्य के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह पञ्चतत्व में मिल गया भला उससे पुनः क्योंकर मुलाकात हो सकती है!

बाबा०। ईश्वर की माया बड़ी प्रबल है, जिसे आज 'नहीं' समझते हैं वही कल 'हां' के रूप में दिखाई देता है, मैं यह नहीं कह सकता कि ऐसा अवश्य ही होगा परन्तु यह जरूर कहूंगा कि ईश्वर पर भरोसा रखने वाले के लिए कोई भी बात असम्भव नहीं। अच्छा पूछो और क्या पूछते हो।

प्रभाकर०। मैं यह जानना चाहता हूं कि आज के बाद मैं आपसे मिलना चाहूं तो क्योंकर मिल सकता हूं?

बाबा०। तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे नहीं मिल सकते।

प्रभाकर०। आपका परिचय जान सकता हूं?

बाबा०। नहीं।

इतना कह कर बाबाजी वहां से रवाना हो गये और देखते देखते प्रभाकरसिंह की नजरों से गायब हो गये।

बाबाजी के चले जाने के बाद कुछ देर तक प्रभाकरसिंह खड़े कुछ सोचते रहे, इसके बाद क्रोध भरी आंखों से रामदास की तरफ देखा और कहा, "रामदास, यद्यपि लोग कहते हैं कि ऐयारों को मारना न चाहिए बल्कि कैद कर रखना चाहिए परन्तु यह काम ऐयारों का और राजा लोगों का है। मैं न तो ऐयार हूं और न राजा ही हूं, इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई ऐसी जगह भी नहीं है जहां तुझे कैद करके रक्खूं, अतएव मैं तुझ पर किसी तरह का रहम नहीं कर सकता। (रामदास का खंजर उसके आगे फेंक कर) ले अपना खंजर उठा ले और मेरा मुकाबला कर क्योंकि मैं उस आदमी पर वार करना पसन्द नहीं करता जिसके हाथ में किसी तरह का हर्बा नहीं है, साथ ही तूने मुझ पर जो जुल्म किया है उसे मैं बर्दाश्त भी नहीं कर सकता।

रामदास० । (खंजर उठा कर) तो क्या मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं हूं ?

प्रभाकर० । नहीं, अगर इन्दुमति इस दुनिया से उठ न गई होती तो कदाचित् मैं तेरा अपराध क्षमा कर सकता, मगर इन्दुमति का वियोग जो केवल तेरी ही दुष्टता के कारण हुआ है मैं सह नहीं सकता ।

रामदास० । अगर तुम्हारी इन्दुमति को तुमसे मिला दूं तो ?

प्रभाकर० । अरे दुष्ट ! क्या अब भी तू मूझे धोखा दे सकेगा ? जिसकी चिता मैं अपनी आंखों से देख चुका हूं उसके विषय में तू इस तरह की बातें करता है मानो ब्रह्मा तू ही है ।

रामदास० । नहीं नहीं, आपने मेरा मतलब नहीं समझा ।

प्रभाकर० । तेरा मतलब मैं खूब समझ चुका, अब समझने की जरूरत नहीं है, बस अब सम्हल जा और अपनी हिफाजत कर ।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने म्यान से तलवार खींच ली और रामदास को ललकारा । रामदास ने जब देखा कि अब वह भाग कर भी अपने को प्रभाकरसिंह के हाथ से नहीं बचा सकता तब उसने खंजर सम्हाल कर प्रभाकरसिंह का मुकाबला किया ।

प्रभाकरसिंह ऐसे बहादुर आदमी से मुकाबला करना रामदास का काम न था, दो ही चार हाथ के लेने देने के बाद प्रभाकरसिंह की तलवार से रामदास दो टुकड़े होकर जमीन पर गिर पड़ा और वहां की मिट्टी से अपनी तलवार साफ करके प्रभाकरसिंह पुनः उसी दीवार की तरफ रवाना हुए जिसके अन्दर इन्दुमति को सुलगती हुई चिता देख चुके थे ।

तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चल कर उसी चिता के पास पहुंचे जो अभी तक निर्धूम हो जाने पर भी बड़े बड़े अंगारों के कारण धधक रही थी और जिसके बीच बीच में हड्डियों के छोटे छोटे टुकड़े दिखाई दे रहे थे ।

सातवां बयान

यद्यपि सूर्य भगवान अभी उदय नहीं हुए थे तथापि उनके आने का समय निकट जान अंधकार ने पहिले ही से अपना दखल छोड़ना आरम्भ कर दिया था और धीरे धीरे भाग कर पहाड़ की कन्दराओं और गुफाओं में अपने शरीर को सिकोड़ता या समेटता हुआ घुसा चला जा रहा था ।

एक छोटे मैदान में जिसे चारो तरफ से ऊंचे ऊंचे पहाड़ों ने घेर रक्खा है हम एक विचित्र तमाशा देख रहे हैं। वह मैदान चार या पांच बिगहे से ज्यादा न होगा जिसके बीचोबीच में स्याह पत्थर का पुरसे भर ऊंचा बहुत बड़ा और खूबसूरत चबूतरा बना हुआ था, जिसके ऊपर जाने के लिए चारो तरफ सीढ़ियां बनी थीं। चबूतरे के ऊपर चढ़ जाने पर देखा कि एक बहुत ही सुन्दर हौज बना हुआ है जिसमें बिल्लौर की तरह साफ सुथरा जल भरा हुआ था और उतरने के लिए संगमर्मर की छोटी छोटी सीढ़ियां बनी हुई थीं।

हौज के चारो कोनों पर चार हंस इस कारीगरी से बनाये और बैठाये हुए थे कि जिन्हें देख कर कोई भी न कह सकेगा कि ये हंस असली नहीं बल्कि नकली हैं। देखने वाला जब तक उन्हें अच्छी तरह टटोल न लेगा तब तक उसके दिल से असली हंस होने का शक न मिटेगा। इस तरह हौज के अन्दर उतरने वाली सीढ़ियों पर भी मोर और सारस इत्यादि कई जानवर दिखाई दे रहे थे और वे भी उन्हीं हंसों की तरह नकली किसी धातु के बने हुए थे, मगर देखने में ठीक असली जान पड़ते थे। इनके अतिरिक्त उसी हौज के अन्दर संगमर्मर की सीढ़ी पर एक नेहायत हसीन और खूबसूरत औरत भी बेहोश पड़ी हुई दिखाई दे रही थी जिसके खुले हुए बाल सुफेद पत्थर की चट्टान पर बिखरे हुए थे बल्कि बालों का कुछ भाग जल की हलकी लहरों के कारण हिलता हुआ बहुत ही भला मालूम होता था। पहिले तो मेरे दिल में आया कि मैं और जानवरों की तरह इस औरत को भी नकली और बनावटी समझूं मगर उसकी खूबसूरती और नजाकत को देख कर मैं सहम गया। आह, क्या ही खूबसूरत चेहरा, बड़ी बड़ी मगर इस समय पलकों से ढकी हुई आंखें, चौड़ी पेशानी में सिंदूर की केवल एक बिन्दी कैसी अच्छी मालूम होती थी कि हजार रोकन पर भी मुंह से निकल ही पड़ा कि 'यह जरूर स्वर्ग की देवी है।' चाहे उसके हाथों में सिवाय दस बारह पतली स्याह चूड़ियों के और कुछ भी न हो, किसी अंग में किसी तरह का कोई भी गहना दिखाई देता न हो, परन्तु उसकी खूबसूरती किसी गहने की मुहताज न थी।

मैं खड़ा यही सोच रहा था कि यह औरत असली है या बनावटी और यह इरादा भी हो चुका था कि जिस तरह ऊपर वाले हंस को टटोल कर देख चुका हूं उसी तरह नीचे की सीढ़ियों पर बैठे हुए जानवरों के साथ ही साथ इस औरत को भी टटोल कर देखूं और निश्चय करूं कि असली है या नकली कि इतने ही में उस औरत ने गर्दन हिलाई और अपना चेहरा जल की तरफ से घुमा कर सीढ़ी

की तरफ कर दिया। बस फिर क्या था, मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, मुझे विश्वास हो गया कि और जानवरों की तरह यह औरत बनावटी नहीं है। फिर मैं सोचने लगा कि इसे किसी तरह जगाना चाहिए अस्तु मैंने जोर से कई तालियां बजाईं मगर इसका असर कुछ भी न हुआ। उस समय मुझे पुनः उसकी सचाई पर शक हुआ और मैं यह जांचने के लिए कि देखूं इस औरत की सांस चलती है या नहीं उसके पेट की तरफ गौर से देखने लगा जिसके आधे भाग का कपड़ा घिसक जाने के कारण खुला हुआ था, मगर सांस चलने की आहट मालूम न हुई। इतने ही में हवा का एक बहुत कड़ा झपेटा आया, मैंने तो समझा कि इस झपेटे के लगते ही वह जाग जायगी और उसके बदन का कपड़ा भी जो लापरवाही के साथ हर तरह से ढीला पड़ा हुआ है जरूर घिसक जायगा और उसका सुन्दर तथा सुडौल बदन मुझे अच्छी तरह देखने का मौका मिलेगा मगर अफसोस ऐसा न हुआ। न तो उसकी निद्रा ही भंग हुई और न उसके बदन पर से कपड़ा ही खिसका।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और अन्त में मैंने निश्चय कर लिया कि स्वयं हौज के अन्दर उतर कर उस औरत की निद्रा भंग करूंगा क्योंकि उसकी खूबसूरती और उसके अंग की सुडौली मेरे दिल को बेतरह मसोस रही थी।

मैं दिल कड़ा करके हौज के अन्दर उतरने लगा। एक सीढ़ी उतरा, दूसरी सीढ़ी उतरा, तीसरी सीढ़ी पर पैर रक्खा ही था कि मैं डर कर चौंक उठा और मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा क्योंकि यकायक वे चारो हंस जो हौज के ऊपर खड़े थे और जिन्हें मैं अच्छी तरह देख भाल चुका था कि वे असली नहीं बनावटी हैं, अपनी जगह छोड़ और गरदन ऊंची कर इधर उधर और बड़ी बेचैनी के साथ मेरी तरफ देखने लगे मानों मेरा हौज के अन्दर उतरना उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ। यह बात सिर्फ दस बारह सायत तक रही, इसके बाद वे अपने बड़े बड़े परों को फैला कर बेतरह मुझ पर टूट पड़े जिसे देख मैं डर गया और अपना दाहिना हाथ (जिसमें खंजर था) आगे की तरफ बढ़ाये हुए पीछे हट कर चौथी सीढ़ी पर उतर गया।

हौज के अन्दर चौथी सीढ़ी पर उतर जाना तो मेरे लिए बड़ा ही भयानक हुआ। हौज के अन्दर सीढ़ियों पर जो बहुत से बनावटी जानवर (परिन्दे) थे वे भी ऊपर वाले हंसों की तरह अपनी क्रोध वाली अवस्था दिखाते हुए पर फैला कर इस तरह मुझ पर झपट पड़े मानों ये सब बात की बात में मुझे नोच कर खा

जायेंगे। केवल इतना ही नहीं, वह औरत भी उठ कर बैठ गई और गर्दन ऊंची करके क्रोध भरी आंखों से मेरी तरफ देखने लगी।

वह दृश्य बड़ा ही भयंकर था, जानवरों के बेतरह झपट पड़ने से मैं कदापि न डरता यदि वह वास्तव में सच्चे होते और मैं उन्हें अपने खन्जर से काट सकता, परन्तु मैं तो अच्छी तरह जांच कर समझ चुका था कि वे सब असली नहीं हैं फिर भी जब उन्होंने हमला किया तब मैंने अपने खंजर से उन्हें रोकना चाहा, परन्तु खंजर ने भी उनके बदन पर कुछ असर न किया मानों उनका बदन फौलाद का बना हुआ हो। ऐसी अवस्था में उन सभों का एक साथ मिल कर हमला करना मुझे जरूर नुकसान पहुंचा सकता था अस्तु आश्चर्य के साथ ही साथ भय ने भी मुझ पर अपना असर जमा लिया। इसके अतिरिक्त उस औरत का एक अजीब ढंग से मेरी तरफ देखना और भी घबराहट पैदा करने लगा।

पहिले तो मैंने चाहा कि जिस तरह हो सके इस बावली के बाहर निकल जाऊं मगर ऐसा न हो सका, लाचार पीछे की सरफ हट मैं और भी दो सीढ़ी नीचे उतर गया मगर वहां भी ठहरने की हिम्मत न पड़ी क्योंकि उन जानवरों का हमला और भी तेज हो गया तथा वह औरत भी इस जोर से चिल्ला उठी कि मैं घबड़ा गया तथा और भी कई सीढ़ी नीचे उतर कर उस औरत के पास जा पहुंचा। बस उसी समय औरत ने मेरा पैर पकड़ लिया और एक ऐसा झटका दिया कि मैं जल के अन्दर जा पड़ा और बेहोश हो गया। इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं है।

छोटी छोटी चार पहाड़ियों के अन्दर एक खुशनुमा बाग है। इसमें सुन्दर सुन्दर बहुत सी क्यारियां बनी हुई हैं, हर तरफ छोटी छोटी नहरें जारी हैं और पेड़ों के ऊपर बैठ कर बोलने वाली तरह तरह की चिड़ियों की सुरीली आवाजों से वह सुबह का सुहावना समय और भी मजेदार मालूम हो रहा है।

इस बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ी इमारत है जिसमें सैकड़ों आदमियों का खुशी से गुजारा हो सकता है। यह इमारत तिमंजिली है। नीचे के हिस्से में एक बहुत बड़ा दीवानखाना है और दीवानखाने के दोनों तरफ बारहदरियां हैं। ऊपर की मंजिलों में छोटे बड़े बहुत से खूबसूरत दर्वाजे दिखाई दे रहे हैं, उसके अन्दर क्या है सो तो इस समय नहीं कह सकते मगर अन्दाज से मालूम होता है कि ऊपर भी कई कमरे कोठड़ियां दालान शहनशीन और बारहदरियां जरूर होंगी।

नीचे वाला दीवानखाना मामूली नहीं बल्कि राजसी ढंग का बना हुआ है।

छःपहले चालीस खम्भों पर इसकी छत कायम है। खम्बे स्याह पत्थर के हैं और उन पर सोने से पच्चीकारी का काम किया हुआ है। बाहर के रुख पर बड़े बड़े पांच महाराब हैं और उन महाराबों पर भी नेहायत खूबसूरत पच्चीकारी का काम किया हुआ है। अन्दर की तरफ अर्थात् पिछली दीवार पर भी जहां एक जड़ाऊ सिंहासन रक्खा है जड़ाऊ तथा मीनाकारी का काम बना हुआ है जिसमें कारीगर ने जंगली सीन और शिकारगाह की तस्वीरों पर कुछ ऐसा मसाला चढ़ाया हुआ है जिससे मालूम होता है कि ये दोनों दीवारें बिल्लौरी शीशे की बनी हुई हैं। सिंहासन पिछली दीवार के साथ मध्य में रक्खा हुआ है और उस सिंहासन से चार हाथ ऊपर एक खूबसूरत दरीची (खिड़की) है जिसमें एक नफीस चिक पड़ी हुई है और उस चिक के अन्दर कदाचित् कोई औरत बैठी हुई है, और आवाज से यही जान पड़ता है कि बेशक वह औरत ही है। सिंहासन के ऊपर एक खूबसूरत और बहादुर नौजवान खड़ा चिक की तरफ गर्दन ऊंची करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आए हैं वह सब इसी नौजवान ने ऊपर खिड़की की तरफ मुंह करके बयान किया है। जब उस जवान ने यह कहा कि 'इसके बाद क्या हुआ इसको मुझे कुछ भी खबर नहीं' तब उस चिक के अन्दर से यह बारीक आवाज आई—"आखिर तुम यहां तक क्योंकर पहुँचे?"

नौजवान०। जब मेरी आंखें खुलीं और मैं होश में आया तो अपने को इसी बाग में एक रविश के ऊपर पड़े हुए पाया। उस समय वहां कई औरतें मौजूद थीं जिन्होंने मुझसे तरह तरह सवाल किये और इसके बाद मुझे इस दीवानखाने में पहुँचा कर वह सब न मालूम कहां चली गईं।

चिक के अन्दर से०। अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो बताओ?

नौजवान०। पहिले तो मैं यहां के मालिक का परिचय लिया चाहता हूं।

चिक के०। समझ लो कि यहां की मालिक मैं ही हूं!

नौजवान०। मगर यह मालूम होना चाहिए कि आप कौन हैं?

चिक के०। मैं एक स्वतन्त्र औरत हूं, यहां की रानी कह कर मुझे सम्बोधन करते हैं।

नौजवान०। आपका कोई मालिक या अफसर भी यहां नहीं है?

चिक के०। मैं एक राजा की लड़की हूं, मेरा बाप मौजूद है और अपनी रियासत में है, मुझे उसने इस तिलिस्म के अन्दर कैद कर रक्खा है मगर मैं अपने को यहां स्वतन्त्र समझती हूं और खुश हूं, दुःख इतना ही है कि इस तिलिस्म

के बाहर मैं नहीं जा सकती।

नौजवान०। आपके पिता ने आपको कैद क्यों कर रक्खा है ?

चिक के०। इसलिए कि मैं शादी करना मंजूर नहीं करती और इसमें वह अपनी बेइज्जती समझता है।

नौजवान०। क्या आपका और आपके पिता का नाम मैं सुन सकता हूं ?

चिक के०। नहीं, पहिले मैं आपका नाम सुनना चाहती हूं।

नौजवान०। मेरा नाम प्रभाकरसिंह है।

चिक के०। हैं, क्या आप सच कहते हैं ? मुझे विश्वास नहीं होता !!

प्रभाकर०। बेशक मैं सच कहता हूं, झूठ बोलने की मुझे जरूरत ही क्या है ?

चिक के०। और आपके पिता का नाम क्या है ?

प्रभाकर०। दिवाकरसिंहजी।

चिक के०। आह, क्या यह सम्भव है ! फिर भी मैं कहती हूं कि मुझे विश्वास नहीं होता !!

प्रभाकर०। अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता तो लाचारी है, मुझे कोई ऐसी तर्कीब नहीं सूझती जिससे मैं आपको विश्वास दिला सकूं।

चिक के०। हां मुझे तर्कीब याद आई है।

प्रभाकर०। वह क्या !

चिक के०। लड़कपन में गेंद खेलते समय आपको जो चोट लगी थी उसे मैं देखूंगी तो जरूर विश्वास कर लूंगा !

प्रभाकर०। (आश्चर्य से) यह बात आपको कैसे मालूम हुई !

चिक के०। सो मैं पीछे बताऊंगी।

इतना सुनते ही प्रभाकरसिंह ने अपना कपड़ा उतार दिया और दाहिने मोढ़े के नीचे पीठ पर एक बड़े जख्म का निशान चिक की तरफ दिखा कर कहा, "यही वह निशान है।"

इसके जवाब में चिक का पर्दा उठ गया और एक बहुत ही हसीन औरत उस खिड़की में बैठी हुई प्रभाकरसिंह को दिखाई दी, उसे देखने के साथ ही प्रभाकरसिंह बदहवास से हो गये और उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा।

अब हम थोड़ा हाल जमना सरस्वती और इन्दुमति का बयान करते हैं। नकली हरदेई अर्थात् रामदास ने जमना सरस्वती और इन्दुमति की तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल जिस तरह खट्टा कर दिया था उसे हमारे प्रेमी पाठक अच्छी तरह पढ़

हो चुके हैं, इसके बाद बाबाजी ने जब रामदास का असली भेद खोल कर सच्चा हाल प्रभाकरसिंह को बता दिया तब प्रभाकरसिंह चैतन्य हो गये और समझ गये कि जमना सरस्वती और इन्दुमति वास्तव में निर्दोष हैं और उनके बारे में जो कुछ हमने सोचा समझा और किया वह सब अनुचित था अस्तु प्रभाकरसिंह को अपनी कारंवाई पर बड़ा खेद हुआ। यह सब कुछ था परन्तु जमना सरस्वती और इन्दुमति के दिल पर जो गहरी चोट बैठ चुकी थी उसकी तकलीफ किसी तरह कम न हुई और न उन तीनों को इस बात का पता ही लगा कि किसी बाबाजी ने पहुँच कर हमारी तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल साफ कर दिया।

अपने शागिर्द की मदद से प्रभाकरसिंह वाली तिलिस्मी किताब पाकर भूतनाथ वहां की बहुत सी बातों से जानकार हो चुका था जो सिर्फ काम चलाने और जरूरी कारंवाई करने के लिए इन्द्रदेव ने तैयार करके प्रभाकरसिंह को दे दी थी, परन्तु भूतनाथ ऐसे धूर्त और शैतान के लिए वही बहुत थी, उसी की मदद से भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों के साथ उस तिलिस्म के अन्दर पहुंच कर जमना सरस्वती और इन्दुमति को बेतरह सताया और दुःख दिया जिसका हाल हम खुलासे तौर पर नीचे लिखते हैं।

ग्रहदशा की सताई हुई जमना सरस्वती और इन्दुमति को जब भूतनाथ ने तिलिस्मी कूप में ढकेल दिया तो वहां उन्हें एक मददगार मिल गया जिसके सबब से तीनों की जान बच गई और उसी आदमी की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर किसी कार्यवश स्वतंत्रता के साथ घूम रही थीं। वह मददगार कौन था और उस कूएं के अन्दर ढकेल देने के बाद उन लोगों की जान क्योंकर बची इसका हाल फिर किसी मौके पर बयान किया जायगा, इस समय हम वहां से उन तीनों का हाल बयान करते हैं जहां से तिलिस्म के अन्दर प्रभाकरसिंह ने उन तीनों को देखा था।

जमना सरस्वती और इन्दुमति का जो मददगार था वह बराबर अपने चेहरे पर नकाब डाले रहता था इससे उन तीनों ने उसकी सूरत नहीं देखी थी कि उनका मददगार किस सूरत का और कैसा आदमी है, यही सबब था कि जब भूतनाथ उस तिलिस्म के अन्दर गया तो उसने भी जमना और सरस्वती के मददगार को नहीं पहिचाना हां पहिचानने के लिए उद्योग बराबर करता रहा।

एक दफे जमना ने अपने मददगार से प्रार्थना भी की थी कि अपनी सूरत दिखा दे और अपना परिचय दे, परन्तु नकाबपोश ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की थी, हाँ इतना जरूर कह दिया था कि तुम लोग मुझे अपने बाप के बराबर समझो

और जब कभी सम्बोधन करने की जरूरत पड़े तो नारायण के नाम से सम्बोधन किया करो अस्तु अब हम भी आगे चल कर मौका पड़ने पर उसे नारायण ही के नाम से सम्बोधन किया करेंगे।

जब मन्दिर की जालीदार दीवार के अन्दर से प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को देखा था और कुछ रूखी सूखी बातचीत भी की थी उस समय जो आदमी उन तीनों को मारने के लिए आया था और जिसे हम बैताल के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं वह वास्तव में भूतनाथ ही था। प्रभाकरसिंह को तो उसके हाथ से उन तीनों की रक्षा करने के लिए वहां तक पहुंचने में देर लगी परन्तु नारायण ने बहुत जल्द वहां पहुंच कर उस शैतान के हाथ से उन तीनों को बचा लिया। नारायण जानते थे कि वह वास्तव में भूतनाथ है और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को भी शक हो चुका था कि वह भूतनाथ है क्योंकि उससे घंटे ही भर पहिले वह तीनों से मिल चुका था और अपना विचित्र ढंग दिखला कर अच्छी तरह धमका चुका था मगर उस समय उसे काम करने का मौका नहीं मिला था। यही सबब था कि उसकी सूरत देखते ही वे तीनों चिल्ला उठीं और बिमला (जमना) ने आंसू गिराते हुए चिल्ला कर प्रभाकरसिंह से कहा था—"बचाइये, आप जल्दी यहां आकर हम लोगों की रक्षा कीजिये, यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है!"

इसके बाद जब प्रभाकरसिंह दूसरी पहाड़ी पर चढ़ कर ऊपर ही ऊपर वहां पहुंचे तो देखा कि बैताल अर्थात भूतनाथ से एक नकाबपोश मुकाबला कर रहा है। यही नकाबपोश नारायण था। नारायण ने वहां पहुंच कर उन तीनों औरतों को भाग जाने का इशारा करके भूतनाथ का मुकाबला किया और बड़ी खूबी के साथ लड़ा। जब प्रभाकरसिंह वहां पहुंचे और नारायण के कहे मुताबिक जमना सरस्वती और इन्दुमति के पीछे चले तब पुनः भूतनाथ और नारायण में लड़ाई होने लगी। भूतनाथ का कोई हर्बा नारायण के बदन पर कारगर नहीं होता था बल्कि नारायण के मोढ़े पर बैठ कर भूतनाथ की तलवार टूट चुकी थी, अन्त में नारायण के हाथ से जख्मी होकर भूतनाथ ने मुकाबले से मुंह फेर लिया। उसे विश्वास हो गया कि अगर थोड़ी देर तक और मुकाबला करूंगा तो बेशक मारा जाऊंगा, अस्तु वह धोखा देकर वहां से भाग खड़ा हुआ और नारायण ने भी उसका पीछा किया।

नारायण यद्यपि लड़ाई में भूतनाथ से ज्यादा ताकतवर और होशियार था मगर दौड़ने में उसका मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता था इसलिए भूतनाथ

को पकड़ न सका और वह भाग कर नारायण की आंखों की ओट हो गया।

प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति का पीछा किया। वे तीनों दीवार के दूसरी तरफ चली गईं मगर दरवाजा बन्द हो जाने के कारण प्रभाकरसिंह उसके अन्दर न जा सके। उसी समय उन्होंने बाहर ही से खड़े खड़े सुना कि सरस्वती से और किसी गैर आदमी से बातचीत हो रही है। गैर आदमी जमना सरस्वती और इन्दुमति को बदकार साबित किया चाहता था और उसकी बातों से प्रभाकरसिंह के दिल की खटाई और भी बढ़ गई थी मगर वास्तव में मामला दूसरा ही था। वह आदमी जो प्रभाकरसिंह को सुना सुना कर सरस्वती से बातें कर रहा था असल में भूतनाथ का एक शागिर्द था और उसका मतलब यही था कि अपनी बातों से प्रभाकरसिंह का दिल जमना सरस्वती और इन्दुमति की तरफ से फेर दे, साथ ही इसके उस ऐयार ने यह भी चालाकी की थी कि अपनी असली सूरत में उन औरतों के पास न जाकर उसने एक जमींदार की सूरत बनाई थी और बातचीत करने के बाद बिना किसी तरह की तकलीफ दिए जमना सरस्वती और इन्दुमति के सामने से चला गया था। इसके बाद प्रभाकरसिंह स्वयं जमना सरस्वती और इन्दुमति से जाकर मिले और जिस तरह से बातचीत करके इन्दु का परित्याग किया आप लोग पढ़ ही चुके हैं। अब हमें इस जगह केवल उन औरतों ही का हाल लिखना है।

जब प्रभाकरसिंह इन्दुमति का त्याग कर उन तीनों के सामने से चले गये तब इन्दुमति बहुत ही उदास हुई और देर तक बिलख कर रोती रही। अन्त में उसने जमना से कहा—"बहिन, अब मेरे लिए जिन्दगी अपार हो गई जब पति ने ही मुझे त्याग दिया तब इस पापमय शरीर को लेकर इस दुनिया में रहना और चारों तरफ मारे मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं अस्तु मैं इस शरीर को इसी जगह त्याग कर बखेड़ा तै करूंगी।"

जमना०। नहीं बहिन, तुम इस काम में जल्दी मत करो और इस तरह यकायक हताश भी मत हो जाओ। मालूम होता कि किसी दुश्मन ने उन्हें भड़का दिया है और इसी से उनका मिजाज बदल गया है मगर यह बात बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकती, धर्म हमारी सहायता करेगा और एक न एक दिन असल भेद खुल जाने से वे अपने किए पर पश्चात्ताप करेंगे।

इन्दुमति०। मगर बहिन, मैं कब तक उस दिन का इन्तजार करूंगी?

जमना०। इन बातों का फैसला बहुत जल्द हो जायगा, हम लोगों को ज्यादे

इन्तजार न करना पड़ेगा।

इन्दुमति०। खैर अगर तुम्हारी बात मान ली जाय तो भी उस दुश्मन के हाथ से बचे रहने की क्या तर्कीब हो सकती है जो बार बार हम लोगों का पीछा करके भी शान्त नहीं होता। अगर नारायण की मदद न होती तो वह....

इन्दुमति इसके आगे कुछ कहने ही को थी कि उसने सामने से अपने मददगार नारायण को आते देखा। इस समय नारायण की पीठ पर एक गठरी थी जिसमें कोई आदमी बंधा था।

नारायण तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास आया और गठरी जमीन पर रख कर तथा अपना परिचय देकर इन्दुमति से बोला, "इन्दु मुझे मालूम हो गया कि तेरे दुश्मनों ने तुम बल्कि जमना और सरस्वती को भी व्यर्थ बदनाम किया है और तुम लोगों की तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल फेर दिया है। यह काम खास भूतनाथ के एक ऐयार का है जिसने हरदेई की सूरत बन कर तुमको और प्रभाकरसिंह को धोखा दिया। आज कल में जरूर उसकी खबर लूंगा। इस समय मैं तुम्हारे जिस दुश्मन से लड़ रहा था वह वास्तव में भूतनाथ था।"

इन्दु०। (ताज्जुब से बात काट कर) क्या वह भूतनाथ है? मगर इस तिलिस्म के अन्दर वह क्योंकर आ पहुंचा?

नारायण०। हां वह भूतनाथ ही है। इन्द्रदेव ने प्रभाकरसिंह को हाथ की लिखी हुई एक छोटी सी किताब दी थी, उसी किताब को पढ़ कर प्रभाकरसिंह इस तिलिस्म के अन्दर आए थे, भूतनाथ के उसी ऐयार ने जो हरदेई बना हुआ था धोखा देकर वह किताब प्रभाकरसिंह की जेब से निकाल ली और अपने गुरु भूतनाथ को दे आया। उसी किताब की मदद से भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुंचा है और तुम तीनों को तथा प्रभाकरसिंह को मारने का उद्योग कर रहा है। खैर कोई चिन्ता नहीं, जहां तक हो सकेगा मैं तुम लोगों की मदद करूंगा। अफसोस इस बात का है कि मैं इस समय यहां अकेला हूं मगर भूतनाथ अपने कई ऐयारों को साथ लेकर आया हुआ है और तुम लोगों की मदद करते हुए इस समय मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि घर जाकर अपने आदमियों को ले आऊं या इन्द्रदेव को ही इस मामले की खबर करूं, अगर चार पहर की भी मोहलत मिल जाय तो मैं इन्द्रदेव को खबर पहुंचा सकता हूं, वह अगर यहां आ जायगा तो फिर किसी दुश्मन के किए कुछ न हो सकेगा।

इन्दु० । तो हम लोगों का आप अपने साथ इन्द्रदेव के पास क्यों नहीं ले चलते ?

नारायण० । हां तुम लोगों को मैं अपने साथ वहां ले जा सकता हूं मगर प्रभाकरसिंह की मदद भी तो करनी है । अगर उन्हें इसी अवस्था में छोड़ कर तुम लोगों को साथ लेकर चला जाऊं तो भूतनाथ का ऐयार उन्हें जरूर मार डालेगा क्योंकि वह अभी तक हरदेई की सूरत में है और प्रभाकरसिंह उस पर विश्वास करते हैं।

जमना० । तो उन्हें इस मामले की खबर कर देनी चाहिए ।

नारायण० । मैं इसी फिक्र में हूं । तुम्हारे जिस दुश्मन से मैं लड़ रहा था वह अर्थात् भूतनाथ जख्मी होकर मेरे सामने से भाग गया, मैं उसी के पीछे दौड़ा हुआ चला गया था मगर उसे पकड़ न सका क्योंकि बीच में उसका एक शागिर्द पहुंच गया और उसने मेरा मुकाबला किया । अन्त में वह मेरे हाथ से मारा गया, मैं उसी को इस गठरी में बांध कर उठा लाया हूं अब इसी जगह चिता बना कर इसे फूंक दूंगा, इसके बाद तुम लोगों को यहां से ले चलूंगा और किसी अच्छे ठिकाने बैठा कर प्रभाकरसिंह के पास जाऊंगा । अब ज्यादे देर तक बातचीत करना मैं मुनासिब नहीं समझता क्योंकि काम बहुत करना है और समय कम है, तुम लोग मेरी मदद करो और जल्दी से लकड़ी बटोर कर चिता बनाओ ।

बात की बात में चिता तैयार हो गई और नारायण ने उस ऐयार की लाश को चिता पर रख कर आग लगा दी । थोड़ी देर तक इन्दुमति खड़ी उस चिता की तरफ देखती और कुछ सोचती रही इसके बाद नारायण से बोली, "आपके बगल में बटुआ लटक रहा है, इससे मालूम होता है कि आप भी कोई ऐयार हैं, अगर मेरा खयाल ठीक है तो आपके पास लिखने का सामान भी जरूर होगा।"

नारायण० । हां-हां, मेरे पास लिखने का सामान है, क्या तुमको चाहिए ?

इन्दमति० । जी हां, कागज का एक टुकड़ा और कलम दावात चाहिए ।

नारायण ने अपने बटुए में से कागज का टुकड़ा और स्याही से भरी हुई एक सोने की जड़ाऊ कलम निकाल कर इन्दु को दी । इन्दु ने उस कागज पर कुछ लिखा और अपने आंचल में से कपड़े का टुकड़ा फाड़ कर उसी में उस कागज को बांध कर एक तरफ फेंक दिया । यही वह चीठी थी जो प्रभाकरसिंह को उस चिता के पास मिली थी ।

इन्दुमति ने उस पुर्जे में क्या लिखा है सो इस समय उसने किसी से न बताया और न किसी ने उससे पूछा ही, हां कुछ देर बाद उसने यह भेद कला और बिमला पर खोल दिया ।

जमना सरस्वती और इन्दु को साथ लिए हुए नारायण वहां से रवाना हुए। वे उस तरफ नहीं गए जिस तरफ दीवार थी बल्कि उसके विपरीत दूसरी तरफ रवाना हुए। थोड़ी दूर जाने बाद उन लोगों को जंगल मिला, वे लोग उस जंगल में चले गये। क्रमशः वह जंगल घना मिलता गया यहां तक कि लगभग दो कोस के जाते वे लोग एक ऐसी भयानक जगह में जा पहुंचे जहां बारीक बारीक सैकड़ों पगडंडियां थीं और उनमें से अपने मतलब का रास्ता निकाल लेना बड़ा ही कठिन था मगर तीनों औरतों को लिए हुए नारायण अपने रास्ते पर इस तरह चले जाते थे मानों उन्हें सिवाय एक रास्ते या पगडण्डी के कोई दूसरी पगडण्डी दिखाई देती ही नहीं थी।

उस भयानक जंगल में थोड़ी दूर चले जाने के बाद उन्हें ढालवीं जमीन मिली और वे लोग पहाड़ी के नीचे उतरने लगे। जंगल पतला होता गया और वे लोग क्रमशः मैदान की हवा खाते हुए नीचे की तरफ जाने लगे।

लगभग आधा घंटे और चले जाने के बाद वे लोग एक खूबसूरत मकान के पास पहुंचे जो बड़ी ऊंची चारदीवारी से घिरा हुआ था और अन्दर जाने के लिए सिर्फ पूरब तरफ एक बहुत बड़ा लोहे का फाटक था।

वह मकान यद्यपि बाहर से देखने में खूबसूरत और शानदार मालूम होता था मगर उसके अंदर एक सहन और दस बारह कमरे तथा कोठड़ियों के सिवाय और कुछ भी न था। मकान क्या मानों कोई महाराजी धर्मशाला था।

मकान के चारो तरफ बाग था मगर इस समय उसकी अवस्था जंगल को सी दिखाई दे रही थी। उसके चारो तरफ ऊंची चारदीवारी थी मगर वह भी कई जगह से मरम्मत के लायक हो रही थी।

तीनों औरतों को साथ लिए नारायण उस चारदीवारी के अन्दर घुसे और इधर उधर देखते हुए उस इमारत के अन्दर चले गये जहां एक कमरे के अन्दर जाकर वे जमना से बोले, "देखो जमना यह बाग के अन्दर जाने का दरवाजा है। इस मकान में जितने कमरे हैं उन सभी को कहीं न कहीं जाने का रास्ता समझना चाहिये। मैं तुम लोगों को जिस स्थान में ले जाया चाहता हूं वहां का रास्ता यही है। मैं इस दर्वाजे का भेद तुमको दिखा और समझा देना चाहता हूं जिसमें यहां से जाने आने के लिए तुम किसी की मुहताज न रहो। भूतनाथ जिस किताब को पाकर फूल रहा है और जिसकी मदद से वह इस तिलिस्म के अन्दर चला आया है उस किताब में इस इमारत का हाल कुछ भी नहीं लिखा है इसलिए समझ

रखना कि भूतनाथ इसके अन्दर आकर तुम लोगों को सता नहीं सकता। (सामने की दीवार की तरफ इशारा करके) देखो दीवार में जो वह आलमारी दिखाई देती है वही यहां से जाने का रास्ता है, इसमें एक ही पल्ला है और खेंचने के लिए एक मुट्ठा लगा हुआ है, इसी मुट्ठे को चाभी समझना चाहिए। और देखो उस आलमारी के ऊपर क्या लिखा हुआ है?'

इतना कह कर नारायण ठहर गए और जमना का मुंह देखने लगे जो कि उन हरूफों को बड़े गौर से देख रही थी। इन्दुमति आगे बढ़ गई और उसने उन अक्षरों को पढ़ कर नारायण को सुनाया। यह लिखा हुआ था:—

"दच्छिण ऋषि वसु वाम, पुनरपि चन्द्रादित्य इमि
पुनि इमि गनहुं सुजान, जौलौं वेद न पूरहीं।"

नारायण०। ठीक है, यही लिखा हुआ है, अच्छा बताओ इसका मतलब क्या है?

इन्दु०। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आया, चाहे शब्दों का अर्थ कुछ चला सकूं मगर यह लिखा क्या है सो आप जानिए।

नारायण०। यह इस दरवाजे को खोलने के विषय में लिखा है। इसका मतलब यह है कि इस मुट्ठे को (जो दर्वाजे में लगा हुआ है) सात दफे दाहिने, आठ दफे बायें, फिर एक दफे दाहिने और बारह दफे बांए घुमाओ, इस तरह चार दफे करो तो दर्वाजा खुल जायगा।

जमना०। (कुछ देर तक उस लेख पर गौर करके) ठीक है, इस लेख का यही मतलब है, मगर पढ़ने वाला यह कैसे जान सकेगा कि यह लेख इसी मुट्ठे को घुमाने के विषय में लिखा है?

नारा०। यह बात होशियार आदमी अपनी अक्ल से समझ सकता है, तिलिस्म बनाने वाले बिल्कुल साफ साफ तो लिखेंगे नहीं।

जमना०। ठीक है।

नारा०। अच्छा तो अब आगे बढ़ो और अपने हाथ से दर्वाजा खोलो।

नारायण की आज्ञानुसार जमना ने ऊपर लिखे ढंग से उस मुट्ठे को घुमाया। दर्वाजा खुल गया और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां दिखाई दीं। सामने एक आला था और उसमें एक छोटा सा पीतल का सन्दूक रखा हुआ था जिसमें किसी तरह का ताला लगा हुआ न था। नारायण ने वह सन्दूक खोल कर सभों को दिखाया कि इसमें रोशनी करने का काफी सामान मौजूद है अर्थात् कई मोमबत्तियां और चकमक पत्थर वगैरह उसमें मौजूद है।

एक मोमबत्ती जलाई गई और उसी की रोशनी के सहारे दर्वाजा बन्द करने के बाद सब कोई नीचे उतरे। जिस तरह दर्वाजा खुलता था उसी ढंग से बन्द भी होता था और यह बात दर्वाजे के पिछली तरफ लिखी हुई थी।

कई सीढ़ियां नीचे उतर जाने के बाद एक सुरंग मिली। ये चारों आदमी सुरंग के अन्दर चले गये और जब सुरंग खतम हुई तो सब कोई एक सरसब्ज मैदान में पहुंचे जहां दूर तक खुशनुमा पहाड़ी गुल बूटे लगे हुए थे और एक छोटा सा सुन्दर मकान भी मौजूद था जिसके आगे छोटा सा झरना बह रहा था और झरने के किनारे बहुत से केले के दरख्त लगे हुए थे जिनमें कच्चे और पक्के सभी तरह के फल मौजूद थे।

नारायण ने जमना सरस्वती और इन्दुमति से कहा, "अब दो तीन दिन तक तुम लोग इसी मकान में रहो तब तक मैं जाकर देखता हूं कि नकली हरदेई और प्रभाकरसिंह में क्योंकर निपटी। नकली हरदेई की तरफ से उन्हें होशियार कर देना बहुत जरूरी है। (एक छोटी सी किताब जमना के हाथ में देकर) लो इस किताब को तुम तीनों अच्छी तरह पढ़ जाओ और जहां तक हो सके खूब याद कर लो, इसमें उससे ज्याद हाल लिखा है जो इन्द्रदेव ने तुम्हें बताया है या उस किताब में लिखा हुआ है जो प्रभाकरसिंह के हाथ से निकल कर भूतनाथ के कब्जे में चली गई है।" इतना कह कर नारायण वहां से चले गए।

नौवां बयान

जमानिया में आधी रात के समय तिलिस्मी दारोगा* अपने मकान में बैठा किसी विषय पर विचार कर रहा है। इसके सामने कई तरह के कागज और चीठियों के लिफाफे फैले हुए हैं जिनमें से एक चीठी को यह बार बार उठा कर गौर से देखता और फिर जमीन पर रख कर कुछ सोचने लगता है। दारोगा के बगल मे सट कर एक कमसिन खूबसूरत और हसीन औरत बैठी हुई है। उसके कपड़े और गहने के ढंग तथा भाव से मालूम होता है कि वह बाबाजी (दारोगा) की स्त्री या गृहस्थ औरत नहीं है बल्कि कोई वेश्या है जो कि तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बाबाजी से कोई घना संबंध रखती है।

---

* तिलिस्मी दारोगा का परिचय चन्द्रकान्ता सन्तति में दिया जा चुका है। इस समय यह बेईमान कुंअर गोपालसिंह के बाप राजा गिरधरसिंह का खास मुसाहब था और दीवानी के काम में भी दखल दिया करता था।

एक चीठी पर कुछ देर तक बिचार करने के बाद दारोगा ने उस औरत की तरफ देखा और कहा—"बीबी मनोरमा, वास्तव में यह चीठी गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है। इस चीठी को देकर तुमने मुझ पर बड़ा अहसान किया, अब वह जरूर मेरे कब्जे में आ जायगा। मैं उसे अपना साथी बनाने के लिए बहुत दिनों से उद्योग कर रहा हूं पर वह मेरे कब्जे में नहीं आता था, मगर अब उसे भागने की जगह न रहेगी।

मनोरमा०। (मुस्कुराती हुई) ठीक है, मगर मैं अफसोस के साथ कहती हूं कि इस चीठी को जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई हैं बल्कि उसकी लिखी हुई और चीठियों को भी जो आपके सामने पड़ी हुई है और जिन्हें मैं जबरदस्ती नागर से ले आई हूँ आज ही वापस ले जाऊंगी क्योंकि नागर से तुरत ही वापस कर देने का वादा करके ये चीठियां आपको दिखाने के लिए मैं लाई थी।

दारोगा। (कुछ उदास चेहरा बना के) ऐसा करने से तो मेरा काम नहीं चलेगा।

मनोरमा०। चाहे जो कुछ हो, आपने भी तो तुरन्त वापस कर देने का वादा किया था।

दारोगा०। ठीक है, मगर अब जो मैं देखता हूं तो इन चीठियों की बदौलत मेरा बहुत काम निकलता दिखाई देता है।

मनो०। तो क्या आप चाहते हैं कि मैं नागर से झूठी बनूं और वह मुझे दगाबाज कहके दुश्मनी की निगाह से देखे जिसे मैं अपनी बहिन से भी ज्यादा बढ़ कर मानती हूं।

दारोगा०। नहीं नहीं, ऐसा क्यों होने लगा, जब तुम उसे बहिन से बढ़ कर मानती हो और वह भी तुम्हें ऐसा ही मानती है तो क्या वह दो तीन चीठियां तुम्हारी खुशी के लिए नहीं दे सकती और तुम मेरी खुशी के लिए उन्हें मेरे पास नहीं छोड़ सकतीं?

मनो०। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। गदाधरसिंह और नागर में बहुत गहरी मुहब्बत का बर्ताव हो रहा है, क्या उसे आप मेरे ही हाथ से खराब कराया चाहते हैं?

दारोगा०। नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहता। अगर तुम और नागर चाहोगी तो गदाधरसिंह को इन चीठियों के बारे में कुछ भी खबर न होने पावेगी और उन दोनों की मुहब्बत का सिलसिला ज्यों का त्यों कायम रहेगा।

मनोरमा०। क्या खूब! आप भी कैसी भोली भाली बातें कहते हैं, इन्हीं चीठियों को दिखा कर तो आप गदाधरसिंह को अपने कब्जे में किया चाहते हैं

और फिर कहते हैं कि इन चीठियों के बारे में गदाधरसिंह को कुछ भी खबर न होगी कि वे आपके कब्जे में आ गई हैं।

दारोगा०। (शर्मिन्दा हो कर) तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं और किस तरह तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार हूं।

मनोरमा०। मैं खूब जानती हूं और इसीलिए आपकी खातिर इन चीठियों को थोड़ी देर के लिए नागर से मांग लाई हूं नहीं तो क्या गदाधरसिंह की शैतानी और उद्दण्डता को नहीं जानती! वह बात की बात में बिगड़ खड़ा होगा और मुझको तथा नागर को जहन्नुम में मिला देगा, बल्कि मैं जहां तक समझती हूं इन चीठियों का भेद खुलने से वह आपका भी दुश्मन हो जायगा।

दारोगा०। नहीं ऐसा नहीं है। इन चीठियों का भेद खुलने से यद्यपि वह हम लोगों का दुश्मन हो जायगा मगर वह हम लोगों को तब तक तकलीफ न दे सकेगा जब तक ये चीठियां पुनः लौट कर उसके कब्जे में न चली जायं मगर ऐसा होना बिल्कुल ही असम्भव है। इन चीठियों की नकल दिखा कर मैं उसे धमकाऊंगा सही मगर इन असल चीठियों को ऐसी जगह रक्खूंगा कि उसके देवता को भी पता न लगने पावेगा।

मनोरमा०। यह सब आपका ख्याल है। आपने सुना नहीं कि जब बिल्ली मजबूर होती है तब कुत्ते के ऊपर हमला करती है! न मालूम नागर के ऊपर गदाधरसिंह को कितना भरोसा है कि ये सब खबरें गदाधरसिंह ने नागर को लिखीं, नहीं तो भूतनाथ ऐसे होशियार आदमी को ऐसी भूल न करनी चाहिए थी। इन चीठियों को पढ़ करके एक अदना आदमी भी समझ सकता है कि दयाराम का घातक गदाधरसिंह ही है और वही अब उनकी जमना सरस्वती नाम की दोनों स्त्रियों को मारना चाहता है। क्या ऐसी चीठी का प्रकट हो जाना गदाधरसिंह के लिए कोई साधारण बात है? और ऐसा होने पर क्या वह नागर को जीता छोड़ देगा? कदापि नहीं। इसके अतिरिक्त अभी तो चीठियों का सिलसिला जारी ही है और वह जमना तथा सरस्वती को मारने के लिए तिलिस्म के अन्दर घुसा ही है, आगे चल कर देखिए तो सही कि कैसी कैसी चीठियां आती हैं और उनमें क्या क्या खबरें वह लिखता है। सिर्फ इन्हीं दो चार चीठियों पर अभी आप क्यों इतना फूल रहे हैं?

दारोगा इसका जवाब कुछ दिया ही चाहता था कि दरवाजे की तरफ से घण्टी बजने की आवाज आई। उसके जवाब में दारोगा ने भी एक घण्टी बजाई

जो उसके पास पहिले ही से रक्खी हुई थी। एक लड़का लपकता हुआ दारोगा के सामने आया और बोला, "गदाधरसिंह आए हैं, दर्वाजे पर खड़े हैं।"

लड़के की बात सुन कर दारोगा ने मनोरमा की तरफ देखा और कहा, "आया तो है बड़े मौके पर!"

"मौके पर नहीं बल्कि बेमौके!" इतना कह कर मनोरमा ने वे चीठियां दारोगा के सामने से उठा लीं जो गदाधरसिंह के हाथ का लिखी हुई थीं या जिनके बारे में बड़ी देर से बहस हो रही थी, और यह कह कर उठ खड़ी हुई कि 'मैं दूसरे कमरे में जाती हूं, उसे बुलाइये मगर मेरे यहां रहने की उसे खबर न होने पावे'।

दसवां बयान

गदाधरसिंह को लेने के लिए दारोगा खुद दर्वाजे तक गया और बड़े आवभगत के साथ अपनी बैठक में ले आया। मामूली बातचीत और कुशल मंगल पूछने के बाद दोनों में इस तरह की बातचीत होने लगी :—

दारोगा०। मैंने आपके घर आदमी भेजा था मगर वह मुलाकात न होने के कारण सूखा ही लौट आया और उसी की जुबानी मालूम हुआ कि आप कई दिनों से किसी कार्यवश बाहर गए हुए हैं।

गदाधर०। ठीक है, मैं कई दिनों से अपने घर पर नहीं हूं, मगर आपको आदमी भेजने की जरूरत क्यों पड़ी?

दारोगा०। आप जानते हैं कि मैं जब किसी तरद्दुद में पड़ जाता हूं तब सब के पहिले आपको याद करता हूँ क्योंकि मेरे दोस्तों में सिवाय आपके कोई भी ऐसा लायक और हिम्मतवर नहीं है जो समय पड़ने पर मेरी मदद कर सके।

गदाधर०। कहिए क्या काम है? मैं आपके लिए हर वक्त तैयार रहता हूं और आपसे भी बहुत उम्मीद रखता हूं। मैं सच कहता हूं कि आपकी दोस्ती का मुझे बहुत बड़ा घमण्ड है और यही सबब है कि मैं इस समय आपके पास आया हूं क्योंकि इधर महीनों से मैं सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हो रहा हूं, अगर मेरी इस मुसीबत का शीघ्र अन्त न होगा तो मुझे इस दुनिया से एक दम अन्तर्ध्यान हो जाना पड़ेगा।

दारोगा०। आपने तो बड़े ही तरद्दुद की बात सुनाई। कहिये तो सही क्या मामला है?

गदाधर०। पहिले आप ही कहिये कि मुझे क्यों याद किया था।

दारोगा० । नहीं पहिले मैं आपका हाल सुन लूंगा तो कुछ कहूँगा ।

गदाधर० । नहीं, पहिले आपका हाल सुने बिना कुछ भी नहीं बताऊंगा ।

दारोगा० । अच्छा पहिले मेरी ही राम कहानी सुन लीजिए । आप जानते ही हैं कि शहर के आस पास ही में कोई कुमेटी* है जिसके स्थान का और सभासदों का कुछ भी पता नहीं लगता ।

गदाधर० । हां मैं सुन चुका हूं, (मुस्कुरा कर) मगर मेरा तो ख़याल है कि आप भी उस कुमेटी के मेम्बर हैं ।

दारोगा० । हरे हरे, आप अच्छी दिल्लगी करते हैं, भला जिस राजा की बदौलत मैं इस दर्जे को पहुंच रहा हूं और इतना सुख भोग रहा हूँ उसी के विपक्ष में हुई किसी कुमेटी का मेम्बर हो सकता हूं ? आज भी अगर मुझे उस कुमेटी का पता लग जाय और सभासदों का नाम मालूम हो जाय तो मैं एक एक को चुन कर कुत्ते की मौत मारूं और कलेजा ठंडा करूं ।

गदाधर० । (मुस्कुराता हुआ) कदाचित् ऐसा ही हो, मगर इस विषय पर आज मुझसे बहस न कीजिए जाने दीजिए, अपना हाल कहिए । मैं उस कुमेटी का हाल अच्छी तरह जानता हूं ।

दारोगा० । (जिसका चेहरा गदाधरसिंह की बातों से कुछ फीका पड़ गया था) आप ही की तरह हमारे महाराज के छोटे भाई शंकरसिंहजी का भी उस कुमेटी के विषय में मुझ पर शक पड़ गया है । उनका भी यही कथन है कि मैं उस कुमेटी का मेम्बर हूं ।

गदाधर० । ठीक है, शंकरसिंहजी बड़े ही होशियार और बुद्धिमान आदमी हैं, आपके महाराज की तरह बोदे और बेवकूफ नहीं हैं जिन्हें आप मदारी के बन्दर की तरह जिस तरह चाहते हैं नचाया करते हैं ।

दारोगा० । बेशक वे बहुत होशियार और तेज आदमी हैं मगर मुझे विश्वास हो गया है कि वे मेरी जड़ खोदने के लिए तैयार हैं । यद्यपि मैं अपने को चालाक और धूर्त लगाता हूं मगर सच कहता हूं कि शंकरसिंहजी का मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता । तिलिस्म के विषय में भी जितनी जानकारी उनको है उतनी हमारे महाराज को नहीं है । कुंअर गोपालसिंहजो को भो वह हद से ज्यादे प्यार करते हैं । अभी थोड़े दिन का जिक्र है कि स्वयम् मुझे लाल लाल आँखें करके धमका चुके हैं

* इस कुमेटी का हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है.। इसी कुमेटी का हाल इन्दिरा ने अपने किस्से में दोनों कुमारों से बयान किया था ।

और कह चुके हैं कि 'देख दारोगा, होशियार हो जा, अपने राजा के भरोसे पर भूला न रहियो। मैं बहुत जल्द साबित कर दूंगा कि तू उस कुमेटी का मेम्बर है और इसके बाद तुझे सूअर के गलीज में रख कर फुंकवा दूंगा। खबरदार, मेरे धमकाने का हाल भाई साहब से कदापि न कहियो नहीं तो दुर्दशा का दिन ......'

गदाधरसिंह०। इससे मालूम होता है कि आपकी उस गुप्त कुमेटी का हाल उन्हें मुझसे ज्यादा मालूम हो चुका है, ऐसी अवस्था में आपको चाहिए कि उन्हें इस दुनिया से उठा कर हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाइए नहीं तो उनका जीते रहना आपके लिए सुखदाई न रहेगा।

दारोगा०। (कुछ देर तक आश्चर्य से भूतनाथ का मुंह देख कर) क्या यह बात आप हमदर्दी के साथ कह रहे हैं?

गदाधर०। बेशक, मैं आपसे दिल्लगी नहीं करता।

दारोगा०। अगर मैं ऐसा करने के लिए तैयार हो जाऊं तो जरूरत पड़ने पर क्या आप मेरी मदद करेंगे?

गदाधर०। जरूर मदद करूंगा मगर शर्त यह है कि आप अपना कोई भेद मुझसे छिपाया न करें?

दारोगा०। मैं तो अपना कोई भेद आपसे नहीं छिपाता और भविष्य के लिए भी कहता हूं कि न छिपाऊंगा।

गदाधर०। बेशक आप छिपाते हैं।

दारोगा०। नमूने के तौर पर कोई बात कहिये?

गदाधर०। पहिले तो इस कुमेटी के विषय में ही देख लीजिए, आज तक आपने इस विषय में मुझसे कुछ कहा?

दारोगा०। (कुछ देर तक सिर नीचा कर के और सोच के) अच्छा मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूं और कसम खाकर एकरार करता हूं कि इस कुमेटी का भेद और स्थान तुमको बता दूंगा।

गदाधर०। मैं भी कसम खा कर एकरार करता हूं कि हर एक काम में आपकी मदद तब तक बराबर करता रहूंगा जब तक आप मेरे साथ या मेरे दोस्त इन्द्रदेव के साथ किसी तरह की दगाबाजी न करेंगे।

दारोगा०। मैं आपके इस एकरार से बहुत ही प्रसन्न हुआ, मगर आश्चर्य की बात है कि आपने अपने साथ ही साथ इन्द्रदेव को शरीक कर लिया! मैं खूब जानता हूं कि आज कल इन्द्रदेव आपके साथ दोस्ती का बर्ताव नहीं करता। यद्यपि

वह मेरा गुरुभाई है और मैं भी उसका भरोसा करता हूं मगर बात जो वाजिब है वह कहने में आती है।

गदाधर०। इन्द्रदेव की बातों को आप नहीं समझ सकते खास करके मेरे सम्बन्ध में, यों तो आपने जो कुछ देखा या सुना हो मगर मैं इन्द्रदेव पर भरोसा रखता हूं। मेरी और उनकी दोस्ती का अन्त सिवाय मौत के और कोई नहीं कर सकता।

दारोगा०। खैर, इस बहस से कोई मतलब नहीं, आप जानिए और वह जाने, मैं तो पहिले ही कह चुका हूं कि वह मेरा गुरुभाई है और मैं उसका भरोसा रखता हूं। ऐसी अवस्था में भला मैं उसके साथ क्या दुश्मनी कर सकता हूं। अच्छा अब आप अपने तरद्दुद का हाल बयान करिये कि आज कल आप किस मुसीबत में फंसे हुए हैं।

गदाधर०। मेरी मुसीबत के बढ़ाने वाले भी आपके शंकरसिंह ही हैं और कुछ कुछ इन्द्रदेव ने भी चांड़ लगा रक्खी है, मगर मैं इसके लिए इन्द्रदेव को बदनाम नहीं कर सकता क्योंकि जिनकी वे मदद कर रहे हैं वे उनके खास रिश्तेदार और आपुस वाले लोग हैं।

दारोगा०। अगर यह बात है तो आपको भी जरूर शंकरसिंह से दुश्मनी हो गई होगी?

गदाधर०। निःसन्देह।

दारोगा०। अच्छा खुलासा तो कहिए।

गदा०। बात वही पुरानी है—दयाराम वाली।

दारोगा०। (आश्चर्य से) क्या यह बात प्रसिद्ध हो गई कि आप दयाराम के घातक हैं?

गदा०। अगर प्रसिद्ध हो नहीं गई तो अब कुछ दिन बाद प्रसिद्ध हो जाने में कुछ सन्देह भी नहीं रहा, क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियां जिन्हें तमाम जमाना मुर्दा समझे हुए था जीती जागती पाई गई हैं और उन्हें इस बात का विश्वास है कि उनके पति को गदाधरसिंह ने मारा है यद्यपि यह बात बिल्कुल निर्मूल है......

दारोगा०। (बात काट कर आश्चर्य से) क्या वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियां अभी तक जीती हैं? फिर उनके मरने की गप्प किसने और क्यों उड़ाई?

गदाधर०। यह सब तिलिस्म इन्द्रदेव ही के बांधे हुए हैं और अब उन दोनों को मदद भी इन्द्रदेव ही कुछ कुछ कर रहे हैं, मगर बीच में शंकरसिंह का कूद पड़ना मेरे लिए बड़ा ही दुःखदाई हो रहा है। इन्द्रदेव की मदद तो नाम मात्र

ही के लिए थी, मगर ये हजरत जी छोड़कर उन दोनों की मदद कर रहे हैं और मुझे जहन्नुम में मिलाने के लिए तैयार हैं। क्या करें, तिलिस्म के अन्दर की बात है नहीं तो मैं दिखा देता कि गदाधरसिंह के साथ दुश्मनी करने का नतीजा कैसा होता है।

दारोगा०। यह तो बड़ा ही नाजुक मामला निकला....

इसके बाद कुछ कहता कहता दारोगा रुक गया क्योंकि उसे यह बात याद आ गई कि मनोरमा इसी जगह दूसरी कोठड़ी में छिपी हुई हम लोगों की बातें सुन रही है। सम्भव है कि दारोगा इसके आगे की बातचीत मनोरमा से छिपाना चाहता हो, अस्तु धीरे से गदाधरसिंह से कुछ कह आंख का इशारा करने बाद वह उठ खड़ा हुआ और गदाधरसिंह का हाथ पकड़े हुए दूसरे कमरे में चला गया।

ग्यारहवां बयान

जमना सरस्वती और इन्दुमति तिलिस्म के अन्दर (जहां नारायण उन्हें रख गये थे) बैठी हुई आपुस में कुछ बातें कर रही हैं। यद्यपि रात आधी से कुछ ज्यादे ढल चुकी है परन्तु चन्द्रमा की किरणों द्वारा फैली चांदनी के कारण दूर दूर तक की चीजें बखूबी दिखाई दे रहीं हैं और पहाड़ी छटा का एक अपूर्व आनन्द मिल रहा है। बातें करती हुई जमना की निगाह उस तरफ जा पड़ी जिधर से झरने का पानी बड़ी सफाई के साथ बहता हुआ जा रहा था और ऐसा मालूम होता था कि तिलिस्मी कारीगर ने इस पानी के ऊपर भी चांदी की कलई चढ़ा दी है। किसी आदमी की आहट पाकर जमना चौंकी और बोली, "बहिन, देखो तो सही वह क्या है ? मैं तो समझती हूं कि कोई आदमी है।"

इन्दु०। मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है।

सरस्वती०। यद्यपि किसी आदमी का यहां तक आ पहुंचना असंभव है, परन्तु मैं यह भी नहीं कह सकती कि यह आदमी नहीं कोई जानवर है।

जमना०। (जोर देकर) बेशक आदमी है !!

इन्दु०। देखो इसी तरफ चला आ रहा है, कुछ इधर आ जाने से अब साफ मालूम होता है कि आदमी है, जरा रुक कर दबकता और आहट लेता हुआ आ रहा है इससे मालूम होता है कि हमारा दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन है। देखो यह मेरी दाहिनी आंख फड़की, ईश्वर ही कुशल करें। (चौंक कर) बहिन वह देखो उसके पीछे और भी एक आदमी मालूम पड़ता है।

सर०। (अच्छी तरह देख कर) हां ठीक तो है, दूसरा आदमी भी साफ मालूम पड़ता है, आश्चर्य नहीं कि कोई और भी दिखाई दे ! बहिन, मुझे भी खुटका होता है और दिल गवाही देता है कि वे आने वाले हमारे दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन हैं।

जमना०। बेशक ऐसा ही है, अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इन्दु०। इनसे मुकाबला करना मुनासिब होगा या भाग कर अपने को छिपा लेना ? लो अब तो वे लोग बहुत नजदीक आ गये और मालूम होता है कि उन्होंने हम लोगों को देख भी लिया।

जमना०। बेशक उन लोगों ने हमें देख लिया, चलो हमलोग भाग कर मकान के अन्दर चलें और दर्वाजा बन्द कर लें, मुकाबला करना ठीक न होगा।

इतना कह कर जमना मकान की तरफ तेजी के साथ चल पड़ी, सरस्वती तथा इन्दुमति ने भी उसका साथ दिया।

यह मकान देखने में यद्यपि बहुत छोटा था मगर इसके अन्दर गुंजाइश बहुत ज्यादे थी और बनिस्बत ऊपर के इसका बहुत बड़ा हिस्सा जमीन के अन्दर था। इसके रास्तों का पता लगाना अनजान आदमी के लिए कठिन ही नहीं बल्कि बिल्कुल ही असम्भव था। दो चार आदमी तो क्या पचासों आदमी इसके अन्दर छिप कर रह सकते थे जिनका पता सिवाय जानकार के कोई दूसरा नहीं लगा सकता था। इस मकान के अन्दर कैसी कैसी कोठरियां, कैसे कैसे तहखाने और कैसी सुरंगें या रास्ते थे इसे उस तिलिस्म से संबंध रखने वाला भी हर एक आदमी नहीं जान सकता था, परन्तु नारायण ने जो किताब जमना को दी थी उसमें वहां का कुल हाल अच्छी तरह लिखा हुआ था।

अब हम यह लिख सकते हैं कि वे दोनों आने वाले कौन थे जिन्हें देख कर जमना सरस्वती और इन्दुमति भाग कर घर में चली गई थीं।

वे दोनों भूतनाथ और तिलिस्मी दारोगा साहब थे। दारोगा भूतनाथ की मदद पर तैयार हो गया था और उसने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हें तिलिस्म के अन्दर ले चल कर जमना, सरस्वती और इन्दुमति को गिरफ्तार करा दूंगा। इसी तरह भूतनाथ ने भी दारोगा से वादा किया था कि महाराज जमानिया के भाई शंकरसिंह के मारने में मैं तुम्हारी मदद करूंगा और यह कार्रवाई इस ढंग से की जायगी कि किसी को इस बात का गुमान भी न होगा कि शंकरसिंह कब और कहां मारे गये या उन्हें किसने मारा इत्यादि।

यही सबब था कि ये दोनों इस समय तिलिस्म के अन्दर दिखाई दिए। यहां

का बहुत कुछ हाल दारोगा को मालूम था मगर शंकरसिंह को यह आशा न थी कि दारोगा उनके साथ यहाँ तक बुरा बर्ताव कर गुजरेगा, अस्तु वे दारोगा की तरफ से बिल्कुल ही बेखबर थे।

दारोगा और भूतनाथ दोनों आदमी सूरत बदलने के अतिरिक्त चेहरे पर नकाब भी डाले हुए थे इसलिए उन्हें कोई पहिचान नहीं सकता था।

जिस समय वे तीनों औरतें भाग कर मकान के अन्दर चली गईं उसके थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ और दारोगा मकान के दरवाजे पर आ पहुंचे। उन्होंने तीनों को भाग कर मकान के अन्दर जाते हुए देख लिया था अस्तु तिलिस्मी ढंग से दर्वाजा खोलने के लिए दारोगा साहब ने हाथ बढ़ाया ही था कि पीछे से किसी ने आवाज दी, "कौन है?"

दारोगा और भूतनाथ को इस बात का निश्चय नहीं था कि जमना सरस्वती और इन्दुमती तिलिस्म के अन्दर किस ठिकाने पर हैं परन्तु भूतनाथ ने अपने कई शागिर्द इस तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिये थे जो कि नारायण की कार्रवाई पर बराबर ध्यान रखते थे। जब भूतनाथ और दारोगा तिलिस्म के अन्दर आये तब भूतनाथ का एक शागिर्द उन्हें मिला जिसके माथे पर अपना खास निशान देख कर भूतनाथ ने पहिचान लिया और उससे वहां का हाल पूछा। उस शागिर्द ने बता दिया कि जमना सरस्वती और इन्दुमति को नारायण ने फलाने मकान में रक्खा है, उसी के दिए निशान के अन्दाजे पर भूतनाथ और दारोगा वहां आये थे और उन्होंने जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को अपनी आँखों से उस मकान के अन्दर जाते देख लिया था।

जब दारोगा ने मकान का दर्वाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया उसी समय पीछे से आवाज आई, "कौन है?" दारोगा ने अपना हाथ खैंच लिया और पीछे फिर कर देखा। एक आदमी पर निगाह पड़ी जिसने सिर से पैर तक अपने को स्याह लबादे से ढांक रक्खा था। भूतनाथ हाथ में खंजर लिए हुए उस आदमी के पास चला गया और डपट कर बोला, "तू कौन है!"

उस आदमी ने भूतनाथ की बात का कुछ भी जवाब न दिया और पीछे की तरफ हटने लगा। भूतनाथ भी उसी के साथ उसकी तरफ आगे बढ़ता गया और उसने कई दफे डपट डपट उस आदमी से तरह तरह के सवाल किए और कटुवचन भी कहे परन्तु भूतनाथ की किसी बात का भी उसने जवाब न दिया और बराबर पीछे की तरफ हटता ही चला गया। भूतनाथ भी उसके साथ ही साथ आगे बढ़ता

गया, यहां तक कि एक झाड़ी के पास पहुँच कर वह आदमी रुक गया और उसने अपने दोनों हाथ लबादे के बाहर निकाले जिनमें से एक में ढाल और दूसरे में तलवार थी। यहां पर घनी झाड़ी होने के कारण चन्द्रमा की चांदनी नहीं पहुँचती थी अस्तु अपने लिए उत्तम स्थान समझ कर उस आदमी ने जबान खोली और भूतनाथ से कहा, "हां अब तुझको बताना पड़ेगा कि तू कौन है और इस तिलिस्म के अन्दर क्योंकर आया ?" पाठक, थोड़ी देर के लिए हम इस आदमी का नाम 'भीम' रख देते हैं।

भीम को बात सुन कर पहिले तो भूतनाथ चुप हो गया मगर फिर कुछ सोच कर बोला, "मैं तुम्हारी बात का जवाब क्योंकर दे सकता हूं जब कि तुमने खुद मेरी बात का कुछ भी जवाब नहीं दिया ?"

भीम०। यद्यपि मैंने वहां पर तुम्हारी बातों का कुछ भी जवाब नहीं दिया परन्तु अब तुम्हारी हर एक बात का जवाब देने के लिए तैयार हूं मगर शर्त यह है कि तुम ठीक ठीक ईमानदारी के साथ अपना परिचय दो।'

भूत०। बेशक मैं ईमानदारी के साथ अपना परिचय दूंगा, मेरा नाम रंगनाथ ऐयार है, मैं मिर्जापुर का रहने वाला हूं।

भीम०। (खिलखिला कर हंसने के बाद) वाह वाह ! खूब ईमानदारी के साथ अपना परिचय दिया। रंगनाथ तो आज कल हमारे यहां मेहमान है, यह दूसरा रंगनाथ कहां से आया ?

भूत०। (कुछ सकपकाना सा होकर) नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता, अगर कोई आदमी रंगनाथ के नाम का तुम्हारे पास आया है तो बेशक उसने तुमको धोखा दिया, असल रंगनाथ मैं ही हूं और मैं प्रभाकरसिंह को इस कैद से छुड़ाने के लिए यहां आया हूं।

भीम०। अगर तुम्हारा कहना सच है और रंगनाथ के नाम से किसी दूसरे आदमी ने मेरे यहां आकर मुझे धोखा दिया है तो तुम उसे जरूर पहिचान सकते हो, उसकी तस्वीर मेरे पास है, तुम देखो और पहिचानो। उसका कथन है कि भूत-
नाथ इस तिलिस्म के अन्दर आया है और कई आदमियों को धोखा दिया चाहता है।

भूत०। (बड़ी चाह के साथ) मैं जरूर उसकी तस्वीर देखूंगा और पहिचानूंगा।

मीम ने अपनी जेब से निकाल कर एक पीतल की डिबिया भूतनाथ के हाथ में दी और कहा, "देखो हिफाजत से खोलो, इसी के अन्दर उसकी तस्वीर है।"

भूतनाथ ने भीम के हाथ से डिबिया ले ली और दो कदम बढ़ कर चन्द्रमा

की चांदनी में वह डिबिया खोलने लगा। डिबिया बड़ी मजबूती के साथ बन्द थी और हल्के हाथों से उसका खुलना कठिन था अस्तु गर्दन झुका कर और दोनों हाथों से जोर लगा कर भूतनाथ ने वह डिबिया खोली। उसके अन्दर बहुत हल्की और गर्द के समान बारीक बुकनी भरी हुई थी जो झटके के साथ डिबिया खुलने के कारण उसमें से उछली और उड़ कर भूतनाथ की आंख और नाक में पड़ गई। वह बहुत ही तेज बेहोशी की बुकनी थी जिसने भूतनाथ को बात करने की भी मोहलत न दी। वह तुरन्त चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। मीम ने झपट कर अपनी डिबिया सम्हाली और भूतनाथ के हाथ से लेकर अपनी जेब में रख ली, इसके बाद अपने लबादे में भूतनाथ की गठरी बांधी और उसे पीठ पर लाद एक तरफ का रास्ता लिया।

अब उधर का हाल सुनिये। मीम के साथ ही जाकर भूतनाथ तो बहुत दूर निकल गया मगर दारोगा अपनी जगह से न हिला। उसने मकान का दर्वाजा खोला और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा। दर्वाजा खोलता हुआ वह एक दालान में पहुंचा जिसके दोनों तरफ दो कोठड़ियां थीं और उन सभी कोठड़ियों के दर्वाजे किस तरह खुलते थे इसका पता केवल देखने से नहीं लग सकता था। किसी खास तर्कीब से दारोगा ने बाईं तरफ वाली कोठरी का दर्वाजा खोला और हाथ में नंगी तलवार लिए हुए उसके अन्दर घुसा। यह एक छोटी सी सुरंग थी जिसमें दस बारह हाथ चल कर दारोगा एक बारहदरी में पहुंचा जहां बिल्कुल ही अंधकार था, सिर्फ दो तीन जगह किसी सूराख की राह से चन्द्रमा की रोशनी पड़ रही थी मगर उससे वहां का अंधकार दूर नहीं हो सकता था।

दारोगा को विश्वास था कि जमना सरस्वती और इन्दुमति जरूर इसी दालान में होंगी और उनके हाथ में किसी तरह का कोई हर्बा भी जरूर होगा, इसी ख्याल से उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह इस अंधकार में आगे की तरफ बढ़े अस्तु वह चुपचाप खड़ा रह कर वहां की आहट लेने लगा। कुछ ही देर बाद किसी के धीरे धीरे बोलने की आवाज उसके कान में आई और उसके बाद मालूम हुआ कि कई आदमी आपुस में धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। आवाज हल्की और नाजुक थी इसीलिए दारोगा समझ गया कि जरूर यह जमना सरस्वती और इन्दुमति हैं। दारोगा ऐयारी का छोटा सा बटुआ अपने कपड़ों के अन्दर छिपाये हुए था जिसमें से उसने टटोल कर एक छोटी डिबिया निकाली, उस डिबिया में कई तरह के खटके और पुरजे लगे हुए थे। दारोगा ने खटका दबाया जिससे वह डिबिया चमकने लगी और उसकी

रोशनी ने वहां के अंधकार को अच्छी तरह दूर कर दिया। अब दारोगा ने देख लिया कि उसके सामने दालान में तीन औरतें हाथ में खंजर लिए खड़ी हैं।

जमना सरस्वती और इन्दुमति को दारोगा अच्छी तरह पहिचानता न था मगर सुनी सुनाई बातों से वह अनुमान जरूर कर सकता था। इस मौके पर तो उसे यह मालूम ही था कि यहां पर जमना सरस्वती और इन्दमति विराज रही हैं और वे तीनों औरतें अपनी असल सूरत में भी थीं इसलिए दारोगा को विश्वास हो गया कि जमना सरस्वती और इन्दुमति ये ही हैं। दारोगा ने उसी जगह खड़े रह कर जमना की तरफ देखा और कहा, "तुम लोग मुझसे व्यर्थ ही डर कर भाग रही हो! मैं तुम्हरा दुश्मन नहीं हूं और न तुम्हारे किसी दुश्मन का भेजा हुआ हूं।"

जमना०। फिर तुम कौन हो और हम लोगों का पीछा क्यों कर रहे हो?

दारोगा०। मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूं और प्रभाकरसिंह का भेजा हुआ तुम लोगों के पास आया हूं। उनका हुक्म है कि तुम तीनों को अपने साथ ले जाकर उनके पास पहुंचा दूं!

जमना०। तुम्हारी बातों का हमें क्योंकर विश्वास हो? क्या उनके हाथ की कोई चीठी भी लाये हो?

दारोगा०। हां मैं चीठी लाया हूं। उन्होंने खुद ही ख्याल करके एक चीठी भी अपने हाथ से लिख कर दी है।

जमना०। अगर ऐसा हो तो लाओ वह चीठी मुझे दो, मैं पहिले उसे पढ़ लूं तब तुम्हारी बातों पर विचार करूं।

दारोगा०। हां लो मैं चीठी देता हूं, यह रोशनी जो मेरे हाथ में है ज्यादे देर तक ठहर नहीं सकती इसलिए पहिले मैं दूसरी रोशनी का इन्तजाम कर लूं तब चीठी तलाश कर दूं।

इतना कह कर दारोगा ने वह डिबिया जमीन पर रख दी और उसी की रोशनी में उसने अपना बटुआ खोल कर एक खाकी रंग की मोमबत्ती निकाली और चक-मक से आग पैदा करके उससे रोशनी करने बाद वह डिबिया बन्द करके अपने बटुए में रख ली। अब दालान भर में उसी मोमबत्ती की रोशनी फैली हुई थी। वह मोमबत्ती कुछ खास तर्कीब और कई दवाइयों के योग से तैयार की गई थी। उसका रंग खाकी था और बलने पर उसमें से बेहोशी पैदा करने वाला बहुत ज्यादा धूआं निकलता था। दारोगा ने यह सोच कर कि शायद आज की कार्रवाई में इस मोमबत्ती की जरूरत पड़े, पहिले ही से अपने बचाव का बन्दोबस्त कर लिया था

अर्थात् किसी तरह की दवा खा या सूंघ ली थी मगर जमना सरस्वती और इन्दुमति अपने को इस धूएं से बचा नहीं सकती थीं और न इस बात का उन्हें गुमान ही हुआ कि बेहिसाब धूआं पैदा करने वाली इस मोमबत्ती में कोई खास बात है।

दारोगा ने मोमबत्ती बाल कर जमीन पर जमा दी और उसकी रोशनी में प्रभाकरसिंह के हाथ की चीठी खोजने के बहाने से अपना बटुआ टटोलने लगा।

कभी बटुए की तलाशी लेता, कभी अपने जेबों को टटोलता और कभी कमर में देख कर बनावटी ताज्जुब से हाथ पटकता और कहता कि 'न मालूम चीठी कहां रख दी है। मेरे ऐसा बेवकूफ भी कोई न होगा। भला ऐसी जरूरी चीठी को इस तरह रखना चाहिए कि समय पर जल्दी मिल न सके।'

चीठी की खोज और कपड़ों की तलाशी में दारोगा ने बहुत देर लगा दी और तब तक उस मोमबत्ती का धूआं तमाम कमरे में फैल गया। बेचारी जमना सरस्वती और इन्दुमति चीठी की चाह में बड़ी उत्कण्ठा से दारोगा की हरकतों को खड़ी खड़ी देख रही थीं मगर उन लोगों को यह नहीं मालूम होता था कि इस धूएं की बदौलत हम लोगों की हालत बदलती चली जा रही है।

थोड़ी देर ही में वे तीनों बेचारी औरतें बेहोश होकर जमीन पर लेट गईं और तब दारोगा ने बड़ी फतहमन्दी और खुशी की निगाह से उन तीनों की तरफ देखा।

बारहवां बयान

यह नहीं मालूम होता कि कृष्णपक्ष है या शुक्लपक्ष अथवा रात है या दिन क्योंकि हम इस समय जिस स्थान पर पहुंचते हैं वहां चिराग या इसी तरह की किसी रोशनी के सिवाय और किसी सच्चे उजाले या चांदने का गुजर नहीं हो सकता। हम यह भी नहीं कह सकते कि यह कोई तहखाना है या सुरंग, अंधकारमयी कोई कोठड़ी है या बालाखाना, सिर्फ इतना ही देख रहे हैं कि एक मामूली कोठड़ी में जिसमें सिवाय एक मद्धिम चिराग के और किसी तरह की रोशनी नहीं है, जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई गर्म गर्म आंसू गिरा रही हैं जिसका विशेष पता उनकी हिचकियों से लग रहा है। उन तीनों के पैर बंधे हुए हैं और किसी मोटी रस्सी के सहारे वे एक लकड़ी के खम्भे के साथ भी बंधी हुई हैं जिसमें पैर से चलना तो असम्भव ही है घिसक कर भी दो कदम इधर उधर न जा सकें। उन तीनों के सामने बैठे हुए तिलिस्मी दारोगा पर निगाह पड़ने ही से विश्वास होता है कि इन तीनों पर इतनी सख्ती होने का कारण यही बेईमान दारोगा है।

पहिले क्या क्या हो चुका है सो हम कुछ नहीं कह सकते परन्तु इस समय हम देखते हैं कि वे तीनों अपनी बेबसी और मजबूरी पर जमीन की तरफ देखती हुई गर्म गर्म आंसू गिरा रही हैं और इस अवस्था में कभी कोई सर उठा कर दारोगा की तरफ देख भी लेती है।

कुछ देर तक सन्नाटा रहने के बाद जमना ने एक लम्बी सांस ली और सर उठा कर दारोगा की तरफ देख धीमी आवाज में कहा—"बहुत देर तक सोचने बाद अब मैं आपको पहिचान गई और जान गई कि आप जमानिया राज के कर्ता-धर्ता दारोगा साहब हैं।"

दारोगा०। बेशक मैं वही हूं, इस समय अपने आपको छिपाना नहीं चाहता इसलिए असली सूरत में तुम लोगों के सामने बैठा हुआ हूं।

जमना०। ठीक है, तो मैं समझती हूं कि उस तिलिस्म के अन्दर हम लोगों को बेहोश करके यहां ले आने वाले भी आप ही हैं।

दारोगा०। बेशक !

जमना०। आखिर इसका कारण क्या है ! हम लोगों ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप हमारे साथ इतनी सख्ती का बर्ताव कर रहे हैं ?

दारोगा०। मेरा तुम लोगों ने कुछ भी नहीं बिगाड़ा है मगर मेरे दोस्त भूतनाथ को तुम लोग व्यर्थ सता रही हो इसलिए मुझे मजबूर होकर तुम लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करना पड़ा।

जमना०। (क्रोध में आकर कुछ तेजी से) क्या भूतनाथ को हम लोग सता रही हैं ! क्या वह हमलोगों को मिट्टी में मिला कर भी अभी तक बाज नहीं आता और बराबर जख्म लगाये नहीं जा रहा है !!

दारोगा०। कदाचित् ऐसा ही हो परन्तु उसका कहना तो यही है कि तुम लोग व्यर्थ ही उसे कलंकित करके दुनिया में रहने के अयोग्य बनाने की चेष्टा कर रही हो।

जमना०। आह ! बड़े अफसोस की बात है कि आप अपने मुंह से ऐसे शब्द निकाल रहे हैं और अपने को उन बातों से पूरा पूरा अनजान साबित किया चाहते हैं?

दारोगा०। सो क्या ? मुझे इन बातों से क्या मतलब ?

जमना०। अगर कुछ सम्बन्ध नहीं है तो हम लोगों को वहां से क्यों कैद कर लाये?

दारोगा०। केवल अपने दोस्त की मदद कर रहा हूं।

जमना०। और आप इस बात को नहीं जानते कि हमारा पति इसी दुष्ट के हाथ से मारा गया है ? और क्या आपकी मण्डली में यह बात मशहूर नहीं है ?

दारोगा० । हां दो चार आदमी ऐसा कहते हैं, परन्तु भूतनाथ का कथन है कि इसका कारण तुम ही हो, अर्थात् केवल तुम ही लोगों ने यह बात व्यर्थं मशहूर कर रखी है । मुझे स्वयम् इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है ।

जमना० । (ताने के ढंग पर) बहुत सच्चे ! अगर यह बात आपको मालूम नहीं है तो भूतनाथ आपका दोस्त भी नहीं है ।

दारोगा० । भूतनाथ मेरा दोस्त जरूर है और वह मुझसे कोई बात छिपा नहीं रखता ! खैर थोड़ी देर के लिए अगर यह भी मान लिया जाय कि तुम्हारा ही कहना ठीक है तो मैं तुमसे पूछता हूं कि तुम भूतनाथ को बदनाम करके क्या फायदा उठा सकती हो ? भूतनाथ इस समय स्वतन्त्र है किसी रियासत का तावेदार नहीं जो उस पर नालिश कर सकोगी, फिर ऐसी अवस्था में उससे दुश्मनी करके तुम अपना ही नुकसान कर रही हो। इसके अतिरिक्त मैं खूब जानता हूं कि भूतनाथ तुम्हारे पति का सच्चा और दिली दोस्त था और तुम्हारे पति भी उसको ऐसा ही मानते थे, ऐसी अवस्था में यह कब सम्भव है कि स्वयं भूतनाथ अपने ही हाथों से तुम्हारे पति को मारे । ऐसा करके वह क्या फायदा उठा सकता था ! क्या तुमको विश्वास है कि भूतनाथ ने तुम्हारे पति को मारा ? अच्छा तुम बताओ कि ऐसा करके उसने क्या फायदा उठाया ?

जमना० । हम लोगों ने एक तौर पर इस दुनिया ही को छोड़ा हुआ है और बिल्कुल मुर्दों की हालत में पहाड़ी खोह और कन्दराओं में रहकर जिन्दगी के दिन बिता रही हैं, इसलिए आज कल की दुनिया का हाल मालूम नहीं है अस्तु मैं नहीं कह सकती कि उसने मेरे पति को मार कर क्या फायदा उठाया, परन्तु इतना मैं जरूर जानती हूं कि मेरे पति की मौत भूतनाथ के ही हाथ से हुई है ।

दारोगा० । यह बात तुमसे किसने कही ?

जमना० । सो मैं तुमसे नहीं कह सकती ।

दारोगा० । खैर न कहो, तुम्हें अख्तियार है, मगर मैं फिर भी इतना जरूर कहूंगा कि तुम्हारा ख्याल गलत है । भूतनाथ ने तुम्हारे पति को कदापि नहीं मारा और कदाचित धोखे में ऐसा हो गया हो तो धोखे की बात पर सिवाय अफसोस करने के और कुछ भी उचित नहीं है । कई दफे ऐसा होता है कि धोखे में मां का पैर बच्चे के ऊपर पड़ जाता है, तो क्या इसका बदला बच्चे को मां से लेना चाहिए ? कभी नहीं । तुम खुद जानती हो कि भूतनाथ से जो वास्तव में गदाधरसिंह है तुम्हारे पति की कैसी दोस्ती थी ।

जमना० । बेशक मैं इस बात को जानती हूं और यह भी मानती हूं कि कदा-
चित् धोखे ही में भूतनाथ से वह काम हो गया हो, परन्तु आप ही बताइए कि
क्या इस अधर्म को छिपाने के लिए भूतनाथ को हम लोगों का पीछा करना चाहिए ?

दारोगा० । हां, यह बेशक उसकी भूल है, इसके लिए मैं उसे ताड़ना दूंगा
परन्तु मैं तुम्हें सच्चे दिल और हमदर्दी के साथ राय देता हूं कि तुम भूतनाथ के
साथ दुश्मनी का खयाल छोड़ दो नहीं तो पछताओगी और तुम्हारा सख्त नुकसान
होगा क्योंकि तुम भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकतीं । तुम अबला और निर्बल
ठहरीं और वह होशियार ऐयार, तिस पर उसके दोस्त भी बहुत गहरे लोग हैं ।

जमना । मैं जानती हूं कि उसके और हमारे बीच हाथी और चिऊंटी का सा
फर्क है और आप ऐसे समर्थ लोग उसके दोस्त भी हैं और इस बात को भी मानती
हूं कि मैं उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती, परन्तु आप ही बताइये कि ऐसी अवस्था
में वह हम अबलाओं से डरती ही क्यों है ?

दारोगा० । सिर्फ बदनामी के खयाल से डरता है, क्योंकि अगर यह झूठा
कलंक उस पर लग जायगा और वह दयाराम का घाती मशहूर हो जायगा तो
फिर वह दुनिया में किसी को मुंह न दिखा सकेगा और अगर तुम उसे माफ कर
दोगी तो वह खुशी से किसी रियासत में रह कर अपनी जिन्दगी बिता सकेगा और
जन्म भर तुम्हारा मददगार भी बना रहेगा ।

जमना० । मुझे उसकी मदद की कोई जरूरत नहीं है और न मेरे दिल का
बहुत बड़ा जख्म जो उसके हाथों से पहुंचा है आराम हो सकता है । समझ लीजिए
कि अब चूहे और बिल्ली में दोस्ती कायम नहीं हो सकती ।

दारोगा० । यह समझना तुम्हारी नादानी है । मैं कह चुका हूं कि ऐसा करने
से तुम्हें सख्त तकलीफ पहुंचेगी ।

जमना० । बेशक ऐसा ही है, तभी तो मैं कैद करके यहां लाई गई हूं ।
अगर तुम मार ही

दारोगा० । तुम खुद ही सोच लो कि यह कैसी बात है,
बदला लेने वाला कौन रह
डाली जाओगी तो फिर दुनिया में इसके लिए उससे
जायगा ?

जमना० । मेरे पीछे उसका पाप उससे बदला लेगा या इस बात के मशहूर
हो जाने ही से वह दीन दुनिया के लायक न रहेगा और यही उस बात का बदला
समझा जायगा । आपने उसकी मदद की है और इसलिए हम लोगों को यहां कैद
कर लाये हैं तो बेशक हम लोगों को मार कर अपना कलेजा ठंडा कर लीजिये,

हम लोग तो खुद अपने को मुर्दा समझे हुई हैं, मगर इस बात को समझ रखियेगा कि हम लोगों के मारे जाने से उसकी बदनामी का झंडा जो बड़ी मजबूती के साथ गाड़ा जा चुका है गिर न पड़ेगा और उस झंडे के उड़ाने वाले तथा उससे बदला लेने वाले कई जबर्दस्त आदमी कायम रह जायंगे।

दारोगा०। यह तुम्हारा खयाल ही खयाल है, जिस तरह तुम उसकी केवल इच्छा मात्र से गिरफ्तार कर ली गई हो उसी तरह उसके और दुश्मन भी बात की बात में गिरफ्तार हो जायंगे।

जमना०। इस बात को मैं नहीं मान सकती।

दारोगा०। नहीं मानोगी तो मैं मना दूंगा क्योंकि इसका काफी सबूत मेरे पास मौजूद है।

जमना०। हां, अगर मेरा दिल भर जाने के लायक कोई सबूत मिल जायगा तो मैं जरूर मान जाऊंगी।

दारोगा०। अच्छा अच्छा, पहिले मैं तुमको इस बात का सबूत दे लूंगा तब तुमसे बात करूंगा।

इतना कह कर दारोगा अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उस जगह जहां खम्भे के साथ ये तीनों औरतें बंधी हुई थीं उस खम्भे में से जमना सरस्वती और इन्दुमति को खोला मगर उनकी हथकड़ी तथा बेड़ी नहीं उतारी, हां बेड़ी की जंजीर जरा ढीली कर दी जिसमें वे धीरे धीरे कुछ दूर तक चल सकें। इसके बाद उन तीनों को लिए सामने की दीवार के पास गया जहां एक छोटा सा दर्वाजा था और उसमें मजबूत ताला लगा हुआ था। दारोगा ने कमर में से ताली निकाल कर दर्वाजा खोला और उन तीनों को लिए हुए उसके अन्दर घुसा। यह रास्ता सुरंग की तरह था जो कि दस बारह कदम जाने के बाद खतम हो जाता था अस्तु उसी अंधकारमय रास्ते में उन तीनों को लिए हुए दारोगा चला गया। जब रास्ता खतम हुआ तब उसने एक खिड़की खोली जो कि जमीन से छाती बराबर ऊंची थी। उस खिड़की के खुलने से उजाला हो गया और तब दारोगा ने उन औरतों को नीचे की तरफ झांक कर देखने के लिए कहा।

उस समय जमना सरस्वती और इन्दुमति को मालूम हुआ कि वे तीनों जमीन के अन्दर किसी तहखाने में कैद नहीं हैं बल्कि उनका कैदखाना किसी मकान के ऊपरी हिस्से पर है।

खिड़की की राह से नीचे की तरफ झांक कर उन्होंने देखा कि एक छोटा सा

मामूली नजरबाग है जिसके चारो तरफ की दीवारें बहुत ऊंची ऊंची हैं । उस बाग में एक टूटे पेड़ के साथ हथकड़ी बेड़ी से मजबूर प्रभाकरसिंह बंधे हुए हैं । उन्हें देखते ही इन्दुमति का कलेजा कांप गया और जमना तथा सरस्वती के रोंगटे खड़े हो गये । उस समय दारोगा ने जमना की तरफ देख कर कहा—

दारोगा० । तुम लोगों ने अच्छी तरह देख लिया कि तुम्हारे प्यारे प्रभाकर-सिंह जो तुम लोगों के बाद भूतनाथ पर कलंक लगा सकते थे तुम लोगों के साथ ही गिरफ्तार कर लिए गए, बताओ अब तुम्हें किस पर भरोसा है ?

जमना० । भरोसा तो हमें केवल ईश्वर पर ही है मगर फिर भी इतना जरूर कहूँगी कि मेरे मददगार कोई और ही लोग हैं जिनका नाम तुम्हें किसी तरह भी मालुम नहीं हो सकता !

दारोगा० । तुम्हारा यह कहना भी व्यर्थ है, मुझसे और भूतनाथ से कुछ भी छिपा नहीं है ।

इतना कह कर दारोगा ने खिड़की बन्द कर दी और वहां पुनः अंधकार हो गया । इसके बाद उन तीनों को लिए हुए उसी पहिले स्थान पर चला आया और उसी खम्मे के साथ पुनः तीनों को बांध कर पैर की जंजीर कस दी ।

प्रभाकरसिंह को कैद की हालत में देख कर वे तीनों बहुत ही परेशान हुईं और उनके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं । दारोगा ने पुनः जमना की तरफ देख कर कहा—

दारोगा० । मैं फिर कहता हूं कि भूतनाथ से दुश्मनी रख कर तुम लोग इस दुनिया में सुखी नहीं रह सकतीं ।

जमना० । (ऊंची सांस लेकर) अब मेरे लिए इस दुनिया में क्या रक्खा है । किस सुख के लिए मैं जीवन की लालसा कर सकती हूं, दुनिया में अगर लालसा है तो केवल इस बात की कि भूतनाथ से बदला लूं ।

दारोगा० । सो हो नहीं सकता और न भूतनाथ ने वास्तव में तुम्हारा कुछ बिगाड़ा ही है । तुम खुद सोच लो और समझ लो, मैं सच कहता हूं कि भूतनाथ अब भी तुम्हारी खिदमत करने के लिए हाजिर है । अगर तुम उसे अपना तावेदार मान लोगी तो तीन दिनों में वह उद्योग करके तुम्हारे पति के घातक को भी खोज निकालेगा, नहीं तो अब तुम लोग उसके पंजे में आ ही चुकी हो । तुम लोग मुफ्त में अपनी जान दोगी, और अपने साथ बेकसूर इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को भी बर्बाद करोगी क्योंकि इन दोनों की जान का सम्बन्ध भी तुम्हारी जान के साथ है ।

मैं तुमको दो घंटे की मोहलत देता हूं तब तक तुम अपने भले बुरे को अच्छी तरह सोच लो, दो घण्टे के बाद जब मैं आऊंगा तो भूतनाथ भी मेरे साथ होगा, उस समय या तो तुम लोग भूतनाथ को अपना सच्चा दोस्त समझ कर उनके निर्दोष होवे का एक पत्र उसे लिख दोगी और या फिर दूसरी अवस्था में तुम तीनों ठंडे ठंडे दूसरी दुनिया की तरफ रवाना हो जाओगी और प्रभाकरसिंह भी तुम तीनों के साथ ही साथ खबरदारी के लिए वहां रवाना कर दिये जांयगे।

इतना कह कर दारोगा वहां से रवाना हो गया और जब वह बाहर हो गया तो पुनः उस जहन्नुमी कैदखाने का दर्वाजा बन्द हो गया और बाहर से भारी जंजीर की आवाज आई।

॥ तीसरा भाग समाप्त ॥

G.NO 9320

Swaminathan S.

२७ वां संस्करण] १९७५ ई० [१५०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।